जम्मू के पवित्र स्मारक

केवल कृष्ण 'शाकिर'

With regards to
Sh. Sohail Kazmi ji
K.K. Shakir
24/10/16

जम्मू के पवित्र स्मारक

(शीलवंतियां, लोक देवता, लोकनायक, महापुरुष)

केवल कृष्ण 'शाकिर'

••••••••••••••••••••••••••••••••

प्रकाशक
साहित्य संगम पब्लिकेशन्स्
कच्ची छावनी, जम्मू

दो शब्द

हिन्दी में प्रकाशित ''जम्मू के पवित्र स्मारक'' मेरी चौथी पुस्तक है जिस में मैंने डुग्गर की कुछ शीलावंतियों (सजावतियों, कुलदेवताओं तथा लोकनायकों की संकेतात्मक जानकारी पाठकों तक पंहुचाने का छोटा सा प्रयास किया है। डुग्गर प्रदेश की शीलावंतियां अपने पतिव्रत धर्म के साथ-साथ लोक लाज और वंश की मान मर्यादा का पालन करते हुए प्राणों की आहुति दे कर अमर हो गई। अन्य महापुरुषों तथा लोकनायकों ने भी बिना किसी भेदभाव के समस्त मानव जाति की भलाई बेहतरी के लिए कई प्रकार के कष्ट सहन किये और भूले भटके लोगों को धर्ममार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इन महान आत्माओं ने अपने चमत्कारों तथा मधुर वाणी से लोगों में आपसी प्यार और भाइचारे की भावना को बढ़ावा दिया। उन्होंने गरीबों, बेसहारा और दुखियों की सहायता की। अत्याचारी शासकों और जागीरदारों के जुल्मों का सामना करने में उन का मार्गदर्शन करते हुए अपनी जीवन लीला समाप्त कर ऐसी मिसाल कायम की जो युगों युगों तक आने वाली पीड़ियों के लिए प्रेरण स्रोत रहेगी। उन के जीवन, शिक्षा तथा बलिदान से प्रभावित होकर उन की याद में लोगों ने स्मारकों, समाधियों तथा देहरियों का निर्माण करके उनमें सजावतियों, उनके परिवारों और लोक नायकों की मूर्तियों तथा मोहरों की स्थापना की जहां समय समय पर हवन-यज्ञों, मेलों तथा भण्डारों का आयोजन किया जाने लगा। आज भी श्रद्धालु वहां जाकर उनकी मूर्तियों, मोहरों तथा संगलों की पूजा करते हैं। शीश झुकाते और श्रद्धासुमन अर्पित करके, भाव-भीनी श्रद्धांजली अर्पित कर अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। उन्होंने अपने चमत्कारों से मानव जाति के कल्याण तथा उत्थान के लिए जितना कुछ किया उन सब का उल्लेख छोटे से लेख में संभव नहीं। मैंने इन महान आत्माओं के बारे में संक्षिप्त सी जानकारी उनके पवित्र समारकों पर नियुक्त सेवादारों, पुजारियों, प्रबंधकों तथा उस क्षेत्र के वरिष्ठ लोगों से प्राप्त की है जिसे पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास कर रहा हूं ताकि हम अपने अतीत से जुड़ें रहें और उन महान आत्माओं के प्रवचनों तथा बलिदानों को याद रखें। यह भी हो सकता है कि उनके जीवनकाल में घटी कुछ घटनाओं की जानकारी छूट गई हो।

मेरे यह लेख दैनिक कश्मीर टाइम्स, रोज़नामा 'तसकीन' (उर्दू), स्टेट टाइम्स (अंग्रेजी), श्री गंगा संग्रेह, धर्ममार्ग, दैनिक जागरण तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

'जम्मू के पवित्र स्मारक' - डुग्गर की अनमोल विरासत

श्री केवल कृष्ण 'शाकिर' हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, डोगरी तथा अंग्रेजी के जाने माने कवि तथा लेखक हैं जो इन भाषाओं में अब तक एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिख चुके हैं। पिछले 62 वर्षों के अपने साहित्यिक सफर में इन्होंने जम्मू तथा इसके आस-पास के धार्मिक तथा ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा करके लगभग 300 लेख लिखे जो जम्मू से निकलने वाले समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं। अपने इन लेखों द्वारा श्री शाकिर जी ने पाठकों को प्राचीन मन्दिरों, ऐतिहासिक स्मारकों, महापुरुषों की समाधियों के बारे में संक्षिप्त सी जानकारी देकर एक सराहनीय कार्य कर के पाठकों को डुग्गर की सांस्कृतिक परम्पराओं, अनुष्ठानों तथा विरासत से रूबरू कराने का प्रयास किया है। अपनी नई हिन्दी पुस्तक "जम्मू के पवित्र स्मारक" में शाकिर जी ने जम्मू की कुछ अध्यात्मिक तथा सामाजिक विभूतियों के जीवन तथा उनकी शिक्षा पर आधारित लेखों में इस क्षेत्र की शीलावंतियों, महापुरुषों, लोकनायकों तथा लोक देवताओं की याद में निर्मित स्मारकों का उल्लेख किया है जिन्होंने जनता की भलाई के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर भूले भटके लोगों को जागरूक किया और उनको धर्म मार्ग पर चलने, अन्याय के विरुद्ध लड़ने तथा आपसी भाईचारे को बनाए रखने की प्रेरणा दी, इसके साथ ही इन पवित्र स्मारकों के धार्मिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व पर भी प्रकाश डाला गया है जिसे डुग्गर संस्कृति का दर्पण माना जा सकता है। शोध कर्ता इस पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं।

"जम्मू के पवित्र स्मारक" एक ज्ञान वर्धक पुस्तक होने के साथ-साथ डुग्गर की अनमोल विरासत का प्रतीक भी है।

आशा है कि शाकिर जी अपनी साहित्यिक यात्रा जारी रखते हुए प्राचीन धार्मिक स्थलों और ऐतिहासिक स्मारकों पर और अधिक लेख तथा पुस्तकें लिख कर पाठकों की जानकारी में वृद्धि करेंगे।

शुभकामनाओं के साथ।

डा. सुनीता भडवाल
सैनिक कालोनी जम्मू

विषय सूची

मन्दिर बावा ब्रह्म देव जी-चक जंडेली

देव भूमि जम्मू पर कई महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने अपने चमत्कारों से मानव जाति का उद्धार किया और यहां के लोगों को धर्म के रास्ते पर चलने और अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए उनका मार्ग दर्शन किया। उन महापुरुषों के आशीर्वाद से ही इस क्षेत्र की उन्नति तथा यहां के लोगों का आर्थिक विकास संभव हुआ। पुरुषों के साथ-साथ इस क्षेत्र की स्त्रियों ने भी प्रभुभक्ति के साथ साथ लोगों को बुराई के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा दी और अपनी आध्यात्मिक शक्ति से ऐसे चमत्कार दिखाये कि लोग हैरान रह गये। इन महान स्त्रियों ने देवियों का स्थान प्राप्त किया और घर-घर उनकी पूजा होने लगी। मंदिरों में उनकी मूर्तियां स्थापित की गईं और लोग उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करने लगे। उनकी याद में मेलों का आयोजन किया जाने लगा। उनकी समाधियों पर भजन कीर्तन, हवन, यज्ञ तथा भण्डारे होने लगे। उनके मंदिरों को सुन्दर ढंग से सजाया गया और वहां आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सराएं बनाई गई ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। स्त्रियों तथा पुरुषों के अतिरिक्त यहां के बच्चों ने भी प्रभु भक्ति में नाम पैदा किया। उन्होंने हंसते-हंसते अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली और लोगों के दिलों में प्यार की ऐसी जोत जलाई जिससे समस्त संसार जगमगा उठा। आपसी भाईचारे का जो रास्ता उन्होंने दिखाया उस पर चल कर मानव जाति का उद्धार हुआ। सभी धर्मों के मानने वाले लोग आध्यात्मिक शांति के लिए दूर दूर से इन पवित्र स्थानों पर आने लगे।

ऐसा ही एक पवित्र स्थान सांबा से 7 किलोमीटर दूर बसंतर नदी के किनारे चक जंडेली गांव में है जहां पर एक बहुत ही सुंदर मंदिर का निर्माण करके उसमें बावा ब्रह्मदेव तथा उनकी माता लक्ष्मी जी की मूर्तियां स्थापित की गई हैं। बड़ी मूर्ति के पीछे पांच मुखी शेषनाग जी की मूर्ति बनाई गई हैं। पिछले आठ सालों में इस स्थान का बहुत अधिक विकास हुआ है। सारा मंदिर सफेद संगमरमर से बनाया गया है। मंदिर के सामने बहुत बड़ा हाल बना हुआ है जहां सैंकड़ों श्रद्धालु एक साथ बैठ कर भजन कीर्तन कर सकते हैं। बड़ी मूर्ति के दोनों ओर वैसी ही छोटी छोटी दो मूर्तियां हैं जिनके एक ओर हनुमान जी तथा दूसरी

सालों लग जाते थे। कुछ लोग तो यात्रा के दौरान ही भगवान को प्यारे हो जाते थे। इतनी कष्टदायक यात्रा में वह बावा ब्रह्मदेव को अपने साथ कैसे ले जा सकते थे। इसलिए उन्होंने बावा जी को यहां के राजा जन्मेज के पास छोड़ दिया और पति-पत्नी यात्रा के लिए निकल पड़े। राजा जन्मेज के सात बेटे और एक बेटी थी। बावा ब्रह्मदेव उनके साथ राजमहल में रहने लगे।

वह सारा दिन राजकुमारों के साथ खेलते रहते थे। राजा भी ब्रह्मदेव को अपने पुत्रों की तरह ही प्यार करता था और उनको भी तमाम सुख प्राप्त थे जो राजकुमार भोगते थे। बावा ब्रह्मदेव भी राजकुमारों को अपना भाई समझते तथा उनसे बहुत प्यार करते थे। परन्तु राजकुमारी देवकी बावा ब्रह्मदेव की राजमहल में उपस्थिति से अप्रसन्न थी। ज्यों-ज्यों ब्रह्मदेव की आयु बढ़ती गई राजकुमारी के दिल में उनके लिए घृणा भी बढ़ती गई। ब्रह्मदेव जी अब 12 साल के हो चुके थे। सातों राजकुमार बावा जी से प्यार करते थे। परन्तु राजकुमारी अपने भाईयों को बावा जी के विरुद्ध भड़काती रहती थी। एक दिन राजकुमारी ने अपने भाईयों को कहा कि ब्रह्मदेव बड़ा हो रहा है। पिता जी उसको अपने बेटे की तरह ही पाल पोष रहे हैं। उसके माता पिता को यात्रा पर गए वर्षों बीत चुके हैं। पता नहीं वे जीवित भी हैं या नहीं। यदि वह और बड़ा हो गया तो पिता जी से अपना हक भी मांग सकता है। मैं नहीं चाहती कि तुम सात भाईयों के अतिरिक्त कोई और इस राज्य या यहां की सम्पत्ति का अधिकारी बने। इसलिए जितनी जल्दी हो सके उसे रास्ते से हटा देना चाहिए। राजकुमारी ने बावा ब्रह्मदेव के विरुद्ध अपने भाईयों के ऐसे कान भरे कि उन्होंने बावा जी की हत्या करने का निश्चय कर लिया।

एक दिन राजकुमारों ने दूर जंगल में शिकार खेलने का कार्यक्रम बनाया। वे बावा जी को भी अपने साथ ले गए। बावा जी का कुत्ता भी उन सब के साथ चल पड़ा। वे शिकार खेलने के लिए जण्ड़ेली के जंगल में आए और यहां राजकुमारों ने बावा जी को मार कर उन्हें जमीन में दबा दिया और स्वयं राजमहल में आ गए। उन्होंने बहन देवकी को बता दिया कि बावा ब्रह्मदेव (भागी) की हत्या कर दी गई है। यह सुनकर वह बड़ी खुश हुई। बावा जी की मृत्यु का सारा दृश्य कुत्ते ने भी देख लिया था। परन्तु वह बावा जी को बचा न

सका। राजा के पूछने पर कि ब्रह्मदेव कहां है राजकुमारों ने झूठ बोला और कहा कि वह तो रास्ते में ही हमसे बिछड़ गया था। आप चिंता क्यों करते हैं।

रास्ता भूल गया होगा या फिर इधर-उधर घूम रहा होगा, आ जाएगा। एक रात राजा जन्मेज सोया हुआ था कि कालू कुत्ता उसके पास आया और कपड़े से पकड़ कर खींचता हुआ उसे जंगल में ले गया। कुत्ते ने अपने पंजों से मिट्टी हटाई तो उसे भागी (ब्रह्मदेव) का मृत शरीर दिखाई दिया। उसे ब्रह्म हत्या का डर लगने लगा। वह सोचने लगा कि अब वह वासुदेव तथा माता लक्ष्मी की अमानत कैसे लौटाएगा। उसने मृत शरीर को निकाल कर विधिपूर्वक भागी का अंतिम संस्कार कर दिया। परन्तु राजा के दिल में एक भय पैदा हो चुका था। उसे सोते जागते बावा ब्रह्मदेव ही दिखाई देता था और सपने में भी माता लक्ष्मी तथा वासुदेव अपने पुत्र के लिए विलाप करते दिखाई देते।

उधर वासुदेव जी और माता लक्ष्मी जी जब तीन-चार सालों के बाद हरिद्वार पहुंचे तो उन्होंने श्रद्धापूर्वक आस पास के तीर्थों की यात्रा भी की और जो दान पुण्य करना था वह भी किया। वहीं पंडित वासुदेव जी बीमार पड़े और उनका स्वर्गवास हो गया और अस्थियों को गंगा में प्रवाह कर लक्षमी माता वापस घर की ओर चल पड़ी। वह जल्दी से जल्दी अपने गांव पहुंच कर अपने पुत्र से मिलना चाहती थी। एक रात माता लक्ष्मी ने बड़ा भयानक सपना देखा। सपने में बावा ब्रह्मदेव जी आए और कहा 'माता आप तो आराम से सौ रही हैं।' मुझे मारकर जमीन में दफना दिया था। मुझे राजा जन्मेज ने निकालकर मेरा दाह संस्कार किया था यह भयानक सपना देखकर माता लक्ष्मी 'राम, राम' करती उठ बैठी। फिर कई दिनों की यात्रा के बाद वह चक जण्डेली पहुंची। अलगे दिन वह राजा जन्मेज के दरबार में गई और प्रार्थना की, 'राजन, मैं अपना भागी आप से लेने आई हूं। उसके पिता तो अब रहे नहीं अब वही मेरे जीवन का सहारा है। अब तो मुझे उसी के सहारे जीवन गुजारना है।' राजा ने उत्तर दिया कि तुम्हारा भागी तो अब रहा नहीं। तुम जितना भी धन दौलत लेना चाहो, मुझ से ले सकती हो। राजपाठ ले लो, जो इच्छा है ले लो परन्तु भागी नहीं मिल सकता। भागी की माता दरबार में ही विलाप करने लगी तो राजा ने भागी का पुतला बना कर माता लक्ष्मी की गोद में डाल दिया। वह बच्चे को गोद में

उठाकर गांव कटैड़ा पहुंची तो वहां उसने घड़ा तोड़ा और फिर उत्तरवाहिनी की ओर चल दी। वहां उसने चिता तैयार की और बेटे के पुतले के साथ चिता पर बैठ गई। फिर उसने वहां से गुजर रहे मांडे से कहा कि चिता को आग लगाओ। मांडा डर गया परन्तु माता ने कहा कि यदि आग न लगाई तो तुम्हारा सब कुछ नष्ट हो जाएगा और यदि आग लगाओगे तो तुम्हारे सारे कष्ट दूर हो जाएंगे।

जो लोग यहां अपने बच्चों के मुंडन करने आएंगे वे तुझे सवा रुपया दिया करेंगे। यह बात याद रखना कि तुम आग न भी लगाओ आग फिर भी लग जाएगी। मांडे ने चिता को आग लगाई। वहां से आग की लपटें उठीं और राजा के दरबार में आग लग गई। अस्तबल में घोड़े जल गए। कहीं बारातें जा रही थीं तो घोड़ों पर सवार दुल्हे जल गए। गलियों में बच्चे खेल रहे थे वे मर गए। राजा को ब्रह्म हत्या लगी और चारों तरफ-हा-हा कार मच गई। फिर राजा जन्मेज को आवाज आई कि तुम सब अपनी जातियां बदल कर यहां से भाग जाओ तब तुम्हारी जान बच सकती है वरना नहीं। उस समय से सब लोग अपनी जातियां बदल कर इस स्थान को छोड़कर आस-पास तथा देश के अन्य भागों में रह रहे हैं। 37 से अधिक जातियों ने बावा जी को अपना कुल देवता मान कर उनकी पुजा शुरू की।

बावा जी के चमत्कारों का उल्लेख करते हुए श्री पूर्ण चंद जी ने कहा कि जब यहां पर चढ़तल को संभाल कर रखने का प्रबंधन न था तो चढ़तल आस पास के लोग ले जाते थे। मंदिर के पास ही एक दुकान थी। अच्छा काम था। बावा जी की चढ़तल का सामान वह दुकानदार ले जाता था। उसे बावा जी की पकड़ हुई और उसका सारा कारोबार समाप्त हो गया। उसने बाबा जी के दरबार में आकर क्षमा मांगी तब जा कर उकी हालत सुधरी।

एक बार एक व्यक्ति ने मन्नत मांगी कि यदि उसके घर कोई खुशी होगी तो वह छगला चढ़ाएगा। उसकी मनोकामना पूरी हुई। बावा जी ने उसे खुशी दी। जब वह छगला लेकर चढ़ाने आया तो बावा जी ने कहा कि यह छगला चोरी का है यहां नहीं चढ़ सकता। बाद में पता चला कि वह छगला किसी पवित्र स्थान से चुराया हुआ था। परन्तु उस श्रद्धालु को इस बात का कोई ज्ञान न था।

जिन जातियों ने बावा जी को अपना कुल देव माना है उनकी लड़कियां बावा

जी के दरबार में उपस्थित नहीं हो सकतीं। इसका कारण शायद यही है कि राजा की लड़की के उकसाने पर ही राजकुमारों ने बावा जी की हत्या की थी। बावा जी के श्रद्धालु अपने बेटों के मुंडन संस्कार यहां आ कर ही करते हैं। उस समय बालों पर केवल कैंची का ही प्रयोग किया जाता है। सारे बाल काट दिए जाते हैं केवल दो लटें रख ली जाती हैं। उनमें से एक लट कटैड़ा के मंदिर परिसर में आ कर छोटे पत्थरों से काटी जाती है और दूसरी को टहनियां काटने वाली द्रांती (डोगरी भाषा में दराट) से काटा जाता है। उसी दिन बच्चे तथा उसकी मां को रंग दार वस्त्र पहनाए जाते हैं। तब तक उसको सफेद वस्त्रों में ही रहना पड़ता है।

जो बावा जी की आज्ञा के अनुसार कार्य करते हैं उनको हर काम में तथा हर स्थान पर सफलता मिलती है। इस पवित्र स्थान के विकास के लिए एक कमेटी का गठन किया गया है जो इस स्थान को और अधिक सुंदर तथा आकर्षक बनाने का यत्न कर रही है ताकि यहां आने वाले बावा जी के श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि हो और सबकी मनोकामनाएं पूर्ण हों।

मंदिर बुआ तृप्ता-अम्बारां

देव भूमि जम्मू प्राकृतिक सुन्दरता तथा स्वच्छ वात।वरण के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहां के ऊंचे ऊंचे पर्वत बर्फ से लदी चोटियां कल-कल करती नदियां, झरने तथा हरे भरे वनों में उगे वृक्ष तथा रंग बिरंगे फूल हर मानव को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यही कारण है कि इस ऐकान्त क्षेत्र में ऋषियों, मुनियों तथा पीरों फकीरों ने ईश्वर की आराधना करके मानसिक शांति को प्राप्त किया और अपने आध्यात्मिक ज्ञान से यहां के भूले भटके लोगों का मार्गदर्शन किया। यहां देवी देवताओं के मन्दिरों के साथ-साथ महान पुरुषों तथा स्त्रियों के भी स्मारक हैं जिन्होंने अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाई और कुल देवियों की तरह पूजी जाने लगीं। उनकी याद में समय-समय पर मेलों का आयोजन किया जाता है जहां श्रद्धालु दूर दूर से आकर उनकी प्रमिताओं पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

ऐसा ही एक पवित्र स्थान जम्मू से लगभग 30 किलोमीटर दूर चंद्रभागा (चिनाब) नदी पर बने पुल से तीन किलोमीटर उत्तर की ओर गांव अम्बारां तहसील अखनूर में है। इस मन्दिर में पांच मोहरों की स्थापना की गई है। जिनमें कृष्ण लाल नाद के अनुसार एक मोहरा बुआ तृप्ता का, दूसरा उनके भाई कान्हा का, तीसरा माता का, चौथा पिता का और पांचवां उनकी बहन बुआ पोतो का है जो पुरोहित तथा राजा के मंत्री श्री हंसराज की पहली पत्नी थी। यह पवित्र स्थान कोई 200 साल पुराना है जब अम्बारां पर पवार वंश के अंतिम राजा राय किशोर का शासन था। उन्होंने ही अम्बारां राज्य महाराजा गुलाब सिंह के पास अमानत के तौर पर रखा। कुछ लोगों का मानना है कि यह स्थान इससे भी अधिक प्राचीन है। मोहरों के सामने फर्श से लेकर छत तक ऊंचा एक थम (खंभा) है जिसे लाल रंग की किनारी, गोटा लगे सुन्दर वस्त्रों से सजाया गया है। श्रद्धालु बुआ जी के मोहरों के साथ साथ इस खंभे की भी पूजा करते हैं। मंदिर का भीतरी भाग धूप, दीप तथा चंदन की सुगंध से महक रहा होता है। मंदिर परिसर में बहुत से छायादार वृक्ष हैं जहां स्थानीय लोग तथा श्रद्धालु विश्राम करते हैं, मन्दिर के सामने एक बड़ा तालाब है जो स्थानीय लोगों की

तमाम आवश्यकताओं को पूरा करता था। यहां स्नान करने के बाद श्रद्धालु मंदिर में भगवती तृप्ता के दर्शनों को जाते थे। अब यह तालाब सूख चुका है। तालाब के किनारे कोई 400 साल पुराना पीपल का वृक्ष है। उसके साथ ही भगवान शिव का मंदिर है जहां शिव लिंग की स्थापना की गई है। सामने सफेद संगमरमर की छोटी सी नन्दी गण की प्रतिमा स्थापित है। अब तालाब की खुदवाई करके उसे पानी से भरने की योजना है। मंदिर परिसर को और अधिक आकर्षक बनाने का पूरा यत्न किया जा रहा है। यहीं एक सराय का निर्माण भी किया गया है ताकि आवश्यकता पड़ने पर श्रद्धालु वहां ठहर सकें। यह सारा काम एक कमेटी की निगरानी में किया जाता है। जो बुआ जी के मंदिर की देखभाल तथा यहां का प्रबंध देखती है। मंदिर के विकास कार्यों में बुआ के श्रद्धालु, नाद बिरादरी तथा स्थानीय लोग तन, मन तथा धन से सहयोग कर रहे हैं। यद्यापि बुआ तृप्ता नाद जाति के ब्रह्मणों की बहु तथा कुल देवी है परन्तु उनकी मान्यता और भी कई जातियों में होती है। मंदिर परिसर, उसके आसपास तथा बाहर विकास कार्यों के लिए क्षेत्र के लोग पूर्ण सहयोग देते हैं।

बुआ तृप्ता के परम भगत श्री जोगेन्द्र शर्मा नाद ने बड़े परिश्रम से नाद बिरादरी से संबंधित परिवारों की खोज की है जो जम्मू-कश्मीर के विभिन्न भागों में रहते हैं। उनमें कई बड़े सरकारी पदों, पर काम कर रहे हैं, कुछ अपना कारोबार कर रहे हैं। परन्तु अधिकतर कृषि में व्यस्त हैं। उन्होंने बुआ तृप्ता के जीवन तथा बलिदान पर आधारित पुस्तक लिखकर श्रद्धालुओं को बुआ जी की कथा से अवगत कराने का यत्न किया है। इस पुस्तक में उन्होंने नाद बिरादरी के लगभग 150 परिवारों की एक सूची भी प्रकाशित की है।

उनका कहना है कि कुछ वर्ष पहले तक उनको भी पता नहीं था कि उनकी कुल देवी का स्थान कहां है। वह अपने माता पिता के साथ डोडा में रहते थे। अच्छा करोबार था। किसी वस्तु की कमी नहीं थी। एक बार पिता जी किसी शारीरिक रोग से पीड़ित हुए। बहुत उपचार किया परन्तु कोई आराम न आया। उनकी बीमारी के कारण सारा परिवार चिंतित था। एक बार किसी बुजुर्ग ने पिता जी से कहा कि आप अपनी कुल देवी को भूल चुके हैं। जिसके कारण आपको यह कष्ट उठाना पड़ रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि नाद बिरादरी की कुल

देवी बुआ तृप्ता का पवित्र स्थान अखनूर के आस पास है। उसके दरबार में जा कर शीश झुकाओ, माथा रगड़ो, उससे क्षमा मांगो तब कष्ट मुक्त हो सकते हैं। परिवार के कुछ सदस्य बुआ के पवित्र स्थान की खोज में निकल पड़े। अखनूर के आस-पास सभी गांवों से पता किया परन्तु कोई पता न चला। घूमते फिरते टरगवाल पहुंचे तो वहां नाद बिरादरी के एक परिवार ने बताय कि बुआ तृप्ता का पवित्र स्थान अम्बारां में है। इस प्रकार उनको बुआ के दरबार का पता चला। दरबार पहुंच कर अपनी भूल के लिए क्षमा मांगी, पुजारी जी के कहने के अनुसार बुआ जी की पूजा की और उसकी कृपा से पिता जी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए। तब़ से परिवार के सभी सदस्य यहां समय समय पर विशेष कर मेल के मौके पर अवश्य आते हैं। बुआ जी की कृपा से अब घर में सुख शांति है। पहले तो यहां छोटी सी देहरी थी परन्तु अब एक मन्दिर के साथ सुर्गल देवता का स्थान भी है।

प्रचलित कथा के अनुसारं बुआ जी का नाम तृप्ता, पिता का नाम पलादो, मां का नाम भड़ोली तथा भाई का नाम कान्हा था जो गांव गौर ब्लाक भलवाल में रहते थे। बुआ के ननिहाल बीरपुर में थे। अम्बारां के निवासी पंडित हंस राज अम्बारां के राजा के पुरोहित तथा मंत्री थे। उनके पिता का नाम छज्जू राम तथा मां का नाम प्रीता था और वह चिनाब नदी के दायें किनारे एक ऊंचे स्थान पर रहते थे। यहां से दूर दूर तक प्राकृतिक सुन्दरता के मन मोहक दृश्य दिखाई देते थे। राज दरबार में उनका मान सम्मान था। राजा हर काम उनके परामर्श से ही करता था। वह पुरोहित जी की ईमानदारी तथा स्वामी भक्ति से बड़ा प्रसन्न था। परन्तु राजा के कुछ मंत्री तथा दरबारी पुरोहित जी की लोकप्रियता से जलते थे इसलिए वे राजा से उनकी बुराई करते थे। राजा ने कभी भी उनकी बातों की ओर ध्यान न दिया। कई बार राजा ने उन चुगल खोरों को डांट भी दी परन्तु वे बाज नहीं आते थे। पुरोहित जी बड़े कोमल हृदय तथा गरीबों और दीन दुखियों के हितैषी थे। उनके दिल में असहाय लोगों के लिए हमदर्दी थी। कहते हैं कि पुरोहित जी का विवाह हो चुका था परन्तु उनके घर संतान नहीं थी। इसलिए वह कभी कभी उदास हो जाते थे। घर में भी उनका दिल नहीं लगता था। राजा उनकी परेशानी तथा मानसिक पीड़ा को समझता था। इसलिए उसने पुरोहित

जी को दूसरा विवाह करने की सलाह दी। पहले तो वह नहीं माने परन्तु राजा के बार बार कहने पर वह राजी हो गए और गांव गौर में पलादों की बेटी बुआ पोतो की छोटी बहन बुआ तृप्ता से रिश्ता पक्का हो गया। यह स्थान गांव अम्बारां के सामने पूर्व की ओर चिनाब नदी की दूसरी ओर तीन चार किलो मीटर की दूरी पर एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित है। निश्चित तिथि पर हिन्दु रीति के अनुसार विवाह सम्पन्न होने के बाद पुरोहित जी दुल्हन की डोली लेकर अम्बारां की ओर चल पड़े। लकड़ी के बने हुए बेड़े की सहायता से चिनाब नदी को पार करके बारात तथा डोली अम्बारां पहुंची। कुछ देर आराम करने के लिए डोली को एक पीपल के वृक्ष के नीचे रखा जहां आज बुआ जी का मंदिर है। बुआ जी के साथ उनके मायके से नायन, झीवरी तथा बुआ का भाई भी आए ताकि रास्ते में बुआ जी की देख भाल हो सके। उन दिनों लोग प्रायः पैदल ही आते जाते थे और नई नवेली दुल्हन के साथ मायके वाले आम तौर पर दो तीन व्यक्ति खास कर स्त्रियां जरूर भेज देते थे जो दुल्हन के ससुराल में भी दो तीन दिन तक दुल्हन के साथ रहती थीं। इन दो तीन दिनों में दुल्हन अपने ससुराल वालों से परिचित हो जाती थी।

थोड़ी देर के बाद गांव के लोगों ने नाचते गाते बारात तथा दुल्हन को पुरोहित जी के घर तक पहुंचाया। द्वार पर घर की बजुर्ग महिलाओं, पुरुषों तथा गांव के लोगों ने दुल्हा दुल्हन का स्वागत किया। दुल्हन को एक कमरे में बिठाया गया। पुरोहित जी का घर वहीं था जहां बुआ तृप्ता का सती स्थान है और जहां आज एक मंदिर का निर्माण किया गया है। बुआ के सती स्थान पर संगमरमर का छोटा सा चबूतरा बना है जिसके इर्द-गिर्द लोहे का सुन्दर जंगला लगाया गया है।

राजा को जब पता चला कि बारात वापस आ गई है तो उन्होंने पुरोहित जी को राज महल में बुलावा भेजा। पुरोहित जी क्योंकि राजा के विश्वास पात्र थे। इसलिए वह पूछना चाहते थे कि किसी चीज की आवश्यकता तो नहीं। सिपाही घर में संदेश देकर आ गया। पुरोहित जी को राजा पर क्रोध भी आया कि अभी तो उनकी शादी हुई है और राजा साहब को काम की पड़ी है। उन्होंने शादी के वस्त्र उतारे और राजमहल में चले गए। राजा ने पुरोहित जी को मुबारक दी और

कुशल आदि पूछी। उनकी बात चीत चल ही रही थी कि अस्तबल से एक घोड़ा खुल गया और उपद्रव मचाने लगा। उसके साथ ही कुछ और घोड़े भी खुल गये और एक दूसरे के पीछे भागने लगे जिससे सारे गांव में भगदड़ मच गई। सिपाहियों ने बहुत कोशिश की परन्तु उन पर काबू न पा सके। जिस कारण पुरोहित जी को देर हो गई। शोर सुनकर बुआ तृप्ता घबरा गई। उन्होंने अपने साथ आई स्त्रियों को पुरोहित जी का पता करने के लिए भेजा परन्तु वे दोनों तमाशा देखने में मस्त हो गई। बुआ जी सामाजिक बंधनों के कारण घर से बाहर नहीं निकल सकती थी। उनके दिल में अपने पति के प्रति बुरे विचार आने लगे। उसी समय किसी ने कहा कि तू यहां दुल्हन बनी बैठी है और वहां तुम्हारे पति का वध हो गया है। यह सुनते ही बुआ जी ने भी सती होने का निश्चय कर लिया। उन्होंने सूखी लकड़ी ली और पास पड़े दीपक से जलाकर अपने परांदे को आग लगा दी। क्षण भर में ही आग लकड़ी के खंभे को लग गई। थम पर एक नाग देवता विश्राम कर रहे थे वह भी आग में भस्म हो गए। बहन को आग में जलते देख बुआ जी का भाई कान्हा भी आग में कूद गया। इस प्रकार देखते ही देखते सारा कमरा जल कर राख हो गया। बुआ तृप्ता, उनका भाई और नाग देवता भी भस्म हो गए। यही कारण है कि बुआ जी के मंदिर में श्रद्धालु बुआ जी के साथ साथ उनके भाई तथा नाग देवता की भी पूजा करते हैं।

तारीख डोगरा देश के अुनसार एक कथा कुछ इस प्रकार भीहै कि राजा राय पवार के दरबारी हर समय राजा को पुरोहित जी के विरुद्ध भड़काते रहते कि पुरोहित जी दुश्मनों से मिलकर आपके विरुद्ध षड्यंत्र बना रहे हैं। एक बार जब पुरोहित जी की नई नई शादी हुई थी तो वह पत्नी को लेने ससुराल गए हुए थे तो किसी कारण उनको वहां कुछ दिन रुकना पड़ा। दरबारियों को राजा के कान भरने का अच्छा मौका मिल गया। उन्होंने राजा से कहा कि पुरोहित जी को गए कितने दिन हो गए हैं जरुर कोई गड़बड़ दिखाई देती है। राजा को भी उनकी बातों पर विश्वास हो गया और उसने उसी समय पुरोहित जी के घर संदेश भेजा कि वह जब भी आएं उन्हें उसी समय राज महल में भेजा जाए। पुरोहित जी दुल्हन के साथ जब घर आए तो उनको राजा का संदेश दे दिया गया। उन्होंने अपनी दुल्हन से कहा कि राजा गुस्से में दिखाई देते हैं। इसलिए मुझे जान का

खतरा महसूस हो रहा है। इसलिए जब राजमहल की ओर से कोई शोर सुनाई दे तो समझ लेना कि राजा ने मुझे मरवा दिया है और तुम सती हो जाना। राजमहल में जब राजा तथा पुरोहित जी में बातचीत हो रही थी तो तोपखाने से एक खच्चर मुंह जोर होकर भाग निकली चारों ओर पकड़ो पकड़ो का शोर होने लगा। जब शोर की आवाजें पुरोहित जी (मंत्री) की धर्म पत्नी ने सुनीं तो उसने समझा कि उसके पति पर कोई आपत्ति आ गई है। बुआ तृप्ता ने चिता बनाने की बजाए मकान को ही आग लगा दी। आग पर तो काबू पा लिया गया परन्तु बुआ का जीवन न बच सका। बुआ की मृत्यु राय पवार वंश के लिए अभिशाप सिद्ध हुई। उस वंश के लोगों को कई प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ा। बड़ी संख्या में पवार अम्बारां छोड़कर गुजरात, सेयाल कोट, पठानकोट, भद्रवाह, किश्तवाड, रियासी तथा दूर दूर पहाड़ी क्षेत्रों में चले गए। जो बाकी बचे उन्होंने 'बुआ तृप्ता' को अपनी कुल देवी मानकर उसे पूजना शुरु कर दिया। कईयों ने बुआ के प्रकोप से बचने के लिए अपनी जातियां बदल लीं। उस समय 22 जातियां थीं और आज बुआ जी को मानने वाली नाद जाति समेत लगभग 51 जातियां हैं।

बुआ तृप्ता के पवित्र स्थान पर हर साल चेत्र महीने के नवरात्रों के पहले सोमवार को मेल लगती है। जिसमें नाद बिरादरी के ब्राहाणों के अतिरिक्त राजपूत बिरादरी तथा अन्य जातियों के लोग भी बड़ी गिनती में बुआ के दरबार में आते हैं। उस दिन यहां बड़ी चहल-पहल होती है। श्रद्धालु यहां उस दिन भजन कीर्तन, हवन, यज्ञ तथा भण्डारों का आयोजन करते हैं। इन जातियों के लोग अपने बच्चों के मुंडन, संस्कार भी यहीं करते हैं और सोआनियां देते हैं। सोआनियां डोगरी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ सात सुहागिनों को भोजन खिलाना, इन सुहागिनों में तरखान, जोगी, पुरोहित, पंडित, कुम्हार महाशा तथा सन्यारा आदि बिरादरी की सुहागिनें शामिल हैं। नाद बिरादरी के लड़के की शादी के बाद नाद जोड़ा बुआ जी का आशीर्वाद लेता है। वह तीन बार मंदिर के बाहर तथा एक बार अन्दर थम की परिक्रमा करते हैं। यदि नाद बिरादरी की लड़की की शादी हो तो उसे विदा करने से पहले मंदिर में स्थापित थम की एक परिक्रमा लेनी होती है।

जिन श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी होती हैं वे सहपरिवार यहां आते हैं और झंडे, किनारी गोटा लगी चूनरियां, फल, मिठाई तथा यथा शक्ति चढ़ावा चढ़ाते हैं।

मेले वाले दिन बुआ जी के दर्शनों के लिए श्रद्धालु पंक्तियों में खड़े दिखाई देते हैं। इस शुभ अवसर पर नाथ जी ढोल के मधुर स्वरों पर बुआ जी की कथा कारकों के रूप में गाते हैं। जिन्हें भक्त जन बड़ी श्रद्धा से सुनते हैं। इस पवित्र स्थान का मुसलमान भाई भी उचित आदर करते हैं और वे भी समय समय पर यहां आते हैं। बुआ तृप्ता जी को सच्चे दिल से याद करने तथा उसकी पूजा करने से श्रद्धालुओं को कष्टों से मुक्ति मिलती है और वे सुखमय जीवन व्यतीय करते हैं। बुआ रानी अपने भक्तों के भंडार भरती है और उनको किसी वस्तु की कमीं नहीं आने देती है। बुआ के भक्तों के लिए कुछ नियमों का पालन करना अति आवश्यक है।

समाधि साईं चुप्प-जम्मू

जम्मू शहर धर्मनिर्पेक्षता तथा आपसी भाईचारे की एक मिसाल रहा है जहां हिन्दू, मुस्लमान, सिख, ईसाई, जैनी तथा अन्य धर्मों के मानने वाले सदियों से मिलजुल कर रह रहे हैं। इस शहर के रहने वाले ईद, दीपावली, क्रिसमिस, गुरुपूर्व तथा अन्य त्यौहार बड़ी श्रद्धा तथा प्रेमभाव से मनाते हैं। पर्वों के मौके पर जम्मू शहर के बाजारों की रौनक देखते ही बनती है। जिनको रंग बिरंगी झंड़ियों, रोशनियों तथा सुन्दर द्वारों से सजाया जाता है और जहां से धार्मिक जलूस गुजरते हैं वहां छबीलें तथा स्टाल लगाये जाते हैं और बाजारों की दोनों ओर खड़े होकर लोग झांकियों का हार्दिक स्वागत करते हैं। धार्मिक दृष्टि से भी जम्मू एक महत्वपूर्ण शहर है। क्योंकि यहां अनगिनित मन्दिरों के अतिरिक्त कई मस्जिदें, गुरुद्वारे, गिरजाघर, महात्माओं के आश्रम तथा पीरों फकीरों की दरगाहें हैं जहां समय समय पर मेलों तथा धार्मिक सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। यहां के राजाओं तथा महाराजाओं ने भी बाहर से आने वाले साधु संतों तथा पीरों का स्वागत किया और जम्मू शहर में रहने के लिए उनको हर प्रकार की सुविधा प्रदान की। साधु संतों तथा पीरों फकीरों के आशीर्वाद से ही जम्मू शहर विदेशी आक्रमणों से सदा सुरक्षित रहा।

जम्मू शहर के शहीदी चौक के पास एक महल्ला बाबा जीवन शाह जी के नाम से प्रसिद्ध है जहां बाबा जीवन शाह की दरगाह है। प्यार से लोग उनको सच्ची सरकार कहकरभी पुकारते थे। क्योंकि जो बात उनके मुख से निकलती थी वह सदा सच्च होकर रहती थी। वह मन वचन तथा कौल के सच्चे थे। वह आज से लगभग 125 साल पहले अपने पैतृक गांव सालेपुर चपराड़ जिला सेयालकोट (पाकिस्तान) से जम्मू पधारे थे। वह अपने गुरु की आज्ञा से जनता की भलाई तथा लोगों के दुख दूर करने के लिए इस क्षेत्र में आए और 24 वर्ष तक ईश्वर की कठिन आराधना करने के बाद इस महल्ले में उस स्थान पर कुटिया बना कर रहने लगे जहां अब उनकी दरगाह है। बाबा जीवन शाह जी पहुंचे हुए फकीर थे और बचपन से ही उनको दुनियादारी के कामों में कोई रुचि न थी। वह हर समय ईश्वर की भक्ति में लीन रहते थे। वह मानव जाति के

कल्याण के लिए धरती पर आए थे। जम्मू-कश्मीर के महाराजा प्रताप सिंह उनका बड़ा आदर करते थे और कई बार वह पैदल चलकर बाबा जी के दरबार में उपस्थित हुए थे।

राजेन्द्र बाजार के अंत में शहीदी चौक से महल्ला जीवन शाह में प्रवेश करते ही बाईं ओर बाबा जीवन शाह की दरगाह से कुछ मीटर पहले उनके शिष्य सोहने शाह जी की समाधि है। जो साईं चुप्प के नाम से प्रसिद्ध थे। इस पवित्र स्थान पर भी भक्तों की भीड़ रहती है। हर वीरवार को बड़ी गिनती में श्रद्धालु साईं चुप्प की समाधि पर आकर शीश झुकाते हैं। साईं चुप्प जी बाबा जीवन शाह के प्रिय शिष्यों में से थे जो हर समय बाबा जी की सेवा में व्यस्त रहते थे। बाबा जीवन शाह जब भी जम्मू या जम्मू के बाहर अपने शिष्यों से मिलने जाते तो साईं जी उनके साथ होते थे। कहते हैं कि साईं जी का संबंध राजपूत परिवार से था,जिससे यह प्रमाण मिलता है कि बाबा जीवन शाह धर्मनिर्पेक्षता के प्रतीक थे और सबसे, प्यार करते थे। उनके दरबार में सभी धर्मों के लोग उपस्थित होते थे। अपने गुरु की तरह साईं चुप्प भी हुक्का पीते और कौडियां खेलते थे और अपने शिष्यों को चिलम भरने के लिए कहते थे। ऐसा विश्वास था श्रद्धालुओं के दिलों में कि जिस शिष्य को वह चिलम भरने के लिए कहते उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती थी। मोहल्ले के लोग जब बाबा जीवन शाह के दरबार में उपस्थित होते तो वहां उनको साईं चुप्प के दर्शन भी हो जाते थे। साईं जी बहुत कम बोलते थे और खामोश रह कर ही ईश्वर की आराधना करते थे।

दरगाह बाबा जीवन शाह के गदी नशीन श्री असलम जी ने साईं चुप्पा के बारे में बताते हुए कहा कि साई जी बचपन से ही भक्ति मार्ग पर लच पड़े थे। घंटों प्रभु की आराधना में लीन रहते थे। छोटे से बालक को प्रभु भक्ति के रंग में रंगा देख सबको हैरानगी होती थी। घर बाले इस बात से परेशान थे कि बाबा जी घर के काम काज में रुचि नहीं लेते थे और सारा दिन प्रभु का गुणगान करते रहते थे। माता पिता ने सोचा कि यदि बालक ने घर के काम काज में रुचि नहीं ली तो सब कुछ चौपट हो जाएगा। घरवालों ने सोचा कि हो सकता है कि विवाह हो जाने पर साईं जी अपनी जिम्मेदारियों को समझें और बाल बच्चों की देखभाल में लग जाएं। इसलिए उनका विवाह पक्का कर दिया गया। निश्चित

तिथि पर साईं जी की बारात घर से निकली। बाराती अभी थोड़ी ही दूर गए थे कि उधर से बाबा जीवन शाहका गुजर हुआ। बाजे बज रहे थे। बाराती खुशी में नाच रहे थे। सच्ची सरकार बाबा जीवन शाह जी की नजर जब दुल्हे पर पड़ी तो बोले, 'टेकेया तूं ते सिर स्वाह पानी सी' अर्थात तूने तो फकीर बनना था मगर तू दुल्हा बन कर घोड़ी पर सवार हो गया है। साईं जी के कानों में जब यह शब्द पड़े तो वह घोड़ी से उतर गए। सेहरा तथा शादी का जोड़ा उतार कर दूर फेंक दिया और कहा नहीं करनी मैंने शादी, मेरी शादी तो हो गई है। साईं जी ने बाबा जीवन शाह को देखा तो उन पर मोहित हो गए। उनको ऐसा लगा जैसे उनको वह सब मिल गया हो जिसकी उन्हें तलाश थी। बाबा जीवन शाह एक सच्चे मार्ग दर्शक के रूप में उनके सामने थे। परिवार तथा बारात में शामिल बजुर्गों ने उनको बहुत समझाया परन्तु वह न माने और बार बार यही कहते जा रहे थे, मेरी शादी तो हो गई है। मैं तो चला फकीर बनने। यह कह कर साईं जी बाबा जीवन शाह के कदमों में गिर गए। बाबा जी ने उनको आशीर्वाद दिया और वहां से वापस जम्मू अपनी कुटिया की ओर चले आए। उनके पीछे-पीछे साईं जी भी बाबा जीवन शाह की कुटिया में पहुंच गए। बाबा जीवन शाह जी मस्त कलंदर थे। उनको तो किसी की परवाह नहीं होती थी। जो कह दिया सो कह दिया। उनकी बात जिसकी समझ में आ गई उसका तो जीवन सुधर गया। साईं जी बाबा जीवन शाह के दरबार में एक कोने में बैठकर चुप्प चाप ईश्वर की भक्ति करने लगे। सातवें दिन बाबा जी ने पूछा, 'तुम यहां क्या कर रहे हो?' उत्तर में साईं जी ने कहा सरकार में आप के चरणों में रहना चाहता हूं।' बाबा जीवन शाह ने कहा,'यदि तुम्हारी यही इच्छा हे तो यहां रहकर ईश्वर की आराधना करो और खुदा के बंदों को सत्यमार्ग पर चलने की प्रेरणा दो। कहते हैं कि साईं जी सात साल तक बाबा जीवन शाह के दरबार के एक कोने में प्रभु भक्ति करते रहे। सच्ची सरकार ने उनकी भक्ति तथा सेवा भाव से प्रसन्न होकर साईं जी पर बड़ी कृपा की और उनका नाम 'साईं चुप्प' रख दिया।' साईं चुप्प भी बाबा जी के आशीर्वाद से भक्तों में बड़े प्रसिद्ध हो गए। साईं जी देखने में भी सुन्दर थे इसलिए सच्ची सरकार उनको सोहने शाह के नाम से भी पुकारते थे। आम आदमी को शाह बनाना सरकार का ही काम था।

बाबा जीवन शाह ने साईं जी को इसी महल्ले में अपनी कुटिया से कुछ दूर स्थान ले दिया और उनको कहा कि यह महल्ला बाबा जीवन शाह का है यहां किसी बुरी चीज का प्रवेश नहीं होना चाहिए। यहां कोई अपवित्र कार्य नहीं होना चाहिए। कोई भूत प्रेत नहीं आना चाहिए। बाबा जी ने साईं जी को इस महल्ले की चौकीदारी दे दी। वह इस महल्ले की रखवाली करने लगे। सच्ची सरकार के दर्शन के बाद श्रद्धालु साईं चुप्प जी के पास भी आते थे। साईं जी अपने शिष्यों को मांस लाने के लिए कहते थे। सब के सामने वह मांस को हवा में फैंकते थे और मांस देखते ही देखते अदृश्य हो जाता था। ऐसा विश्वास है कि हवा में उछाला गया मांस भूत प्रेत खा जाते थे और वापस चले जाते थे। इस महल्ले में प्रवेश नहीं करते थे। महल्ले के लोगों में विशेष तौर पर बाबा जीवनशाह तथा 'साईं चुप्प' के लिए बड़ी श्रद्धा है। साईं चुप्प की समाधि पर प्रति वर्ष 25 ज्येष्ठ को भण्डारे का आयोजन किया जाता है। जब जम्मू के अतिरिक्त पंजाब से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां आते है। भण्डारे में हलवा, पूरी, मीठे चावल, दाल चावल तथा अन्य वैष्णों भोजन तैयार किए जाते हैं। जब लंगर का भोजन बाबा जीवन शाह की दरगाह पर चढ़ाया जाता है उसके बाद ही श्रद्धालु खाना शुरु करते हैं। भंडारे से पहले यहां भजन कीर्तन होता है। श्रद्धालु मन्नतें मांगते हैं और जिनकी मनोकामना पूरी होती है वे यथा योग्य चढ़ावा चढ़ाते हैं।

यहां तीन समाधिां है। बड़ी समाधि साईं चुप्प जी की, छोटी समाधि उनके प्रिय शिष्य मलूक शाह जी की और वहीं एक कोने में माता शान्ति जी की समाधि है। साईं चुप्प की समाधि के पास ही एक स्थान पर उनका हुक्का रखा हुआ है। समाधि में अखंड जोत जलती रहती है। कहते हैं कि जोत का तेल शरीर पर लगाने से कई शारीरिक कष्ट दूर हो जाते हैं। समाधियों के आस पास का वातावरण धूप द्वीप तथा पुष्पों की सुगंध से सदा शुद्ध रहता है। समय समय पर श्रद्धालु समाधियों पर नये वस्त्र चढ़ाते हैं। एक अन्य कमरे में साईं चुप्प जी की गद्दी है जहां बैठकर वह ईश्वर की आराधना करते थे। कोडियां खेलते थे और अपने भक्तों को एक अच्छा इंसान बनने तथा मिलजुल कर रहने की प्रेरणा देते थे। गद्दी के आस-पास कई देवी देवताओं के चित्र लगे हैं। जहां श्रीमती

सिम्मी देवी तथा उनके परिवार के लोग प्रतिदिन सुबह शाम पूजा करते हैं। सिम्मी जी के अनुसार एक बार जो साईं चुप्प की शरण में आता है वह सदा उनका हो जाता है। इस दरबार में कई दुखी तथा रोगी आते हैं। जो स्वस्थ होकर घरों को लौटते हैं। जिन लोगों का कारोबार नहीं चलता, घरेलू परेशानियों से घिरे होते हैं, निसंतान होते हैं। जिन पर भूत प्रेत की छाया होती है और जो डाक्टरों के इलाज से तंग आ जाते हैं वे सभी यहां से प्रसन्न होकर साईं चुप्प का गुणगान करते घरों को जाते है। यहां सबके बिगड़े काम बनते हैं। श्री मलूक चंद और माता शान्ति देवी जी साईं चुप्प के परम भक्त थे और सदा उनकी सेवा में लगे रहते थे। माता शान्ति देवी विधवा थी और जम्मू के पास ही एक गांव में रहती थी। एक बार वह इस पवित्र स्थान पर आई तो अंतिम सांस तक यहीं रही। साईं चुप्प के चमत्कारों से प्रभावित होकर उनके भक्तों की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती गई। साईं चुप्प ने 87 वर्ष की आयु में यह शरीर छोड़ा और यहीं उनकी समाधि बनाई गई। सिम्मी जी ने बताया कि एक बार एक स्त्री यहां आई। उसके पति का कारोबार समाप्त हो चुका था और परिवार ऋण के बोझ तले दबा हुआ था। उस स्त्री ने रो-रो कर साईं जी की गद्दी के सामने विनती की। उसकी दुख भरी कहानी सुनकर साईं जी की गद्दी का फूल उसे दिया गया। उस स्त्री ने फूल को आंखों से लगाया। उसको चूमा और साईं जी को प्रणाम करके चली गई। साईं जी की कृपा से कुछ ही दिनों में उसके पति का कारोबार ठीक हो गया और सारा ऋण भी उतर गया।

सिम्मी जी ने कहा कि हम वही कहते हैं जो साईं चुप्प जी का आदेश होता है। उनके चमत्कार से ही भक्त अपनी मनोकामनाएं परी करते हैं। इस महल्ले में रहने वालों के अतिरिक्त जो भी इस मोहल्ले में प्रवेश करता है या महल्ले से बाहर जाता है वह बाबा जीवन शाह की दरगाह तथा साईं चुप्प जी की समाधि पर अवश्य शीश झुकाकर इन महान आत्माओं का आशीर्वाद प्राप्त करता है।

बाबा बीरम शाह जी

भारत की पुण्य भूमि पर कई संतों तथा फकीरों ने जन्म लिया। जिन्होंने समस्त मानव जाति का कल्याण किया और बिना किसी भेद-भाव के सब को धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस पवित्र धरती पर हमें स्थान स्थान पर देवी देवताओं के मंदिर तथा महापुरुषों की समाधियां तथा यादगारें देखने को मिलती हैं जहां समय समय पर मेलों तथा भण्डारों का आयोजन किया जाता है। लोग इन पवित्र स्थलों पर शीश झुकाते हैं और अपने अपने ढंग से पूजा अर्चना करके अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

भारत के महान संतों में बाबा बीरम शाह जी का नाम भी बड़े आदर से लिया जाता है। बाबा जी का संबंध दत्त वंश से था। इसी परिवार के मनजीत दत्ता के अनुसार बाबा बीरम शाह जी के पिता का नान बाबा कैलोराम तथा माता का नाम श्रीमती राम देवी था और वह जिला सेयालकोट (पाकिस्तान) के एक गांव 'कंजरूड़ दत्तां' के रहने वाले थे। बाबा कैलो राम के घर का वातावरण बड़ा शुद्ध था और वह ईश्वर के बड़े भक्त थे। घर में हर समय भगवान का भजन होता रहता था। ईश्वर की कृपा से जब उनके घर लड़के ने जन्म लिया तो घर में बहुत खुशी मनाई गई। सारे गांव में मिठाई बांटी गई और गांव के लोग बाबा कैलो राम के घर मुबारक देने आए। बच्चे के गृह आदि जानने के लिए विद्वानों को बुलाया गया। सब ने कहा कि बच्चा बड़ा भाग्यशाली है और बड़ा होकर या तो राजा बनेगा या एक महान संत होगा जिसकी हर जगह पूजा होगी और बड़ा नाम होगा। बच्चे का नाम बीरू रखा गया।

पांच साल की आयु में उनकी स्कूल भेजा गया। वह इतने तीव्र बुद्धि के थे कि जो पाठ उनकी गुरु जी पढ़ाते उसे जवानी याद कर लेते थे। उनके गुरु भी हैरान थे। उनको भी यही भविष्य वाणी थी कि बड़ा होकर यह बच्चा नाम कमाएगा। स्कूल जाने के थोड़ी देर बार ही उनके पिता का देहान्त हो गया। मां पुत्र अकेले रह गये। जब बीरू 11 साल का हुआ तो उसकी माता भी इस दुनिया को छोड़ कर चली गई। अब बीरू बिल्कुल अकेला हो गया। मां की मृत्यु के बाद बीरू अपना गांव कंजरुड़ छोड़ कर मीरपुर चला गया। वहां उसकी

जान पहचान के लोग रहते थे। बीरू एक मंदिर में चला गया। पुजारी ने पूछा तुम कौन हो तो बीरु ने उत्तर दिया, मैं दत्ता वंश का ब्राह्मण हूं। मेरे माता पिता का देहांत हो चुका है और मैं घर छोड़कर यहां आ गया हूं। पुजारी ने कहा कि तुम यहां रहो और यहां के लोगों को पानी पिला दिया करो। एक दिन एक धनी पुरुष वहां आए और उसने भी बीरू को हर प्रकार की सहायता देने का वचन दिया। बीरू वहां रहने लगा और लोगों की सेवा करने लगा। बीरू को इस बात पर दृढ़ विश्वास था कि ईश्वर की प्राप्ति जनता की सेवा से ही हो सकती है। बीरू को प्रभु भक्ति की लगन तो बचपन से ही थी मंदिर में भी वह हर समय राम नाम का जाप करता रहता था। अब बीरू बड़ा हो गया था और वह आस पास के गांवों में भी आने जाने लगा। एक दिन वह चोमक गांव में था कि एक व्यापारी ने वहां से घी खरीदा। बर्तन भारी था इसलिए वह बर्तन उठाने के लिए किसी मजदूर को ढूंढने लगा। बाबा जी ने वह बर्तन उठाया और व्यापारी के पीछे पीछे चल पड़े। मीरपुर के पास पहुंच कर व्यापारी ने पीछे देखा तो हैरान रह गया कि घी का बर्तन बीरू के सिर से कुछ ऊपर था। व्यापारी ने सोचा कि बीरू कोई मामूली बालक नहीं बल्कि कोई पहुंचे हुए संत हैं और मेरी मजबूरी को देखकर मेरी सहायता के लिए आए हैं वह बड़ा शर्मिंदा हुआ और बीरू के चरणों में गिर गया और हाथ जोड़कर विनती की, महाराज मैं तो आपको साधारण बालक समझ रहा था। मुझ से गलती हो गई, मुझे क्षमा कर दें। मीरपुर पहुंच कर व्याकारी ने बाबा जी के चमत्कार के बारे में जब लोगों को बताया तो उनके दर्शन करने के लिए बड़ी संख्या में लोग आने लगे। उन्हीं दिनों छठे गुरु हर गोविंद जी भी उधर आए हुए थे। लोगों ने गुरु जी से कहा कि यहां एक सिद्ध रहता है जो हर समय कोई जप करता रहता है। परन्तु किसी को पता नहीं चलता कि वह क्या बोलता है। गुरु जी ने लोगों से कहा कि वह उनकी सभी शंकाएं दूर कर देंगे पहले उसे मेरे पास लाओ। लोगों ने कहा कि वह यहां आया हुआ है और दूर एक कोने में बैठा हुआ है। गुरु जी ने बीरू को अपने पास बुलाया। जब दोनों की नजरें मिलीं तो गुरु महाराजा ने कहा कि यह बीरू नहीं। आज के बाद यह बाबा बीरम शाह कहलाएगा। उस समय सब के सामने गुरु हर गोविन्द जी ने जपजी साहिब की पहली पौड़ी बाबा बीरम शाह को जवानी याद कराई और उनको गुरु मंत्र देकर

अपना शिष्य बना लिया। जब बाबा जी ने गुरु मंत्र लिया तो वह लोगों में और भी प्रसिद्ध हो गए। बाबा जी के दर्शन के लिए लोग दूर दूर से आने लगे। अब बाबा जी ने सोचा कि यहां रहना उचित नहीं। यदि यहां रह कर लोगों को चमत्कार ही दिखाते रहेंगे तो प्रभु भक्ति कैसे होगी। इसलिए बाबा जी कैनी के जंगलों में चले गए। कैनी मीरपुर से कुछ दूर था। कैनी के जंगल में तरह-तरह के जंगली जानवर रहते थे जिसके कारण वहां लोगों का आना जाना बहुत कम था। वहां एक प्राचीन गुफा थी। बाबा जी को भक्ति के लिए यह गुफा बहुत पसंद आई। यहां की प्राकृतिक सुन्दरता तथा शांत वातावरण से वह बड़े प्रभावित हुए और वहां डेरा जमा लिया। बाबा जी गुफा के अन्दर आसन जमा कर ईश्वर की भक्ति करने लगे। उन्होंने केवल ओंकार का सहारा लिया। उसी का जाप करते रहे और प्रभु भक्ति में लीन रहने लगे। खाना पीना छोड़ दिया। ओंकार शब्द का सुमिरन किया और सच्चे ज्ञान की प्राप्ति की। उनको ओंकार, शब्द में सारा ब्रह्माण्ड दिखाई दिया। बाबा जी ने बारह वर्ष तक उस गुफा में प्रभु की भक्ति की।

उस समय दिल्ली के मुगल शासकों के अत्याचारों से हिन्दू बहुत परेशान थे। इसलिए वे अपनी सुरक्षा के लिए अपने घर बार छोड़कर जंगलों में रहते थे। उन्हीं दिनों कैनी के जंगल में भी कुछ परिवार आकर रहने लगे। उसमें पगलार जाति से संबंधित एक परिवार भी था। उस परिवार का लड़का एक दिन अपने पशु चराता हुआ उस गुफा के पास चला गया जहां बाबा बीरम शाह जी तपस्या करते थे। लड़का गुफा के पास चला गया जहां उसने लम्बी जटाओं वाले महात्मा को देखा जो प्रभु भक्ति में लीन थे। जिनके सामने नाग देवता अपने फन फैलाए बैठे थे। लड़का यह दृश्य देकर डर गया और अपने पशुओं को वहीं जंगल में छोड़कर घर की ओर भागा। घर आकर उसने मां से कहा कि उसने जंगल में एक अजीब दृश्य देखा है। वह अपनी मां को भी गुफा के पास ले गया। उसने भी जब यह दृश्य देखा तो कुछ देर के लिए वह भी डरी परन्तु फिर हिम्मत बांध कर वह बाबा जी के पास गई। उनको नमस्कार किया और उसके बाद वह प्रतिदिन वहां जा कर गुफा की सफाई करने लगी। उसे बाबा जी के दर्शन करके तथा उनकी सेवा करने में आनन्द प्राप्त होता था। जब बाबा जी की

समाधि टूटी और उन्होंने अपनी आंखें खोलीं तो बाबा जी का सुन्दर रूप देख कर वह बड़ी प्रसन्न हुई। बाबा जी ने उसे पूछा, तुम कौन हो और यहां किस लिए आई हो? उस स्त्री ने उत्तर दिया, महाराज हम पगलार जाति के ब्राह्मण हैं। हम अपना घर बार, गांव तथा जमीन जायदा छोड़कर कैनी के जंगल में डेरा जमा कर बैठे हैं। परिवार में मेरा पति एक लड़का तथा जवान लड़की है। दूर उन पहाड़ियों में हमने डेरा जमाया है। बाबा जी ने कहा, तुमने इस पवित्र स्थान की बहुत सेवा की है। मैं तुम्हारे भक्ति भाव से प्रसन्न हूं मांगो जो तुम्हें चाहिए । तुम्हारी हर इच्छा पूर्ण होगी। उस स्त्री ने कहा महाराज मैं चाहती हूं कि आप मेरी लड़की से विवाह कर लें। बाबा जी ने उत्तर दिया कि दुनियादारी के बंदनों को छोड़कर मैंने भक्ति मार्ग को अपनाया है और तुम मुझे पुनः उन बंदनों में जकड़ना चाहती हो। मेरी 12 वर्ष की भक्ति निष्फल हो जाएगी। मैं साधु संत हूं। मुझे शादी विवाह से क्या लेना देना। मेरा कोई ठिकाना नहीं, घर नहीं, कोई काम काज नहीं जो तुम्हारी लड़की को खुश रख सकूं। मैंने अपने शरीर पर बोरी बांध रखी है फिर तुम्हारी लड़की को क्या दूंगा। स्त्री ने कहा, यदि आप वचन पूरा नहीं कर सकते थे तो वर मांगने के लिए क्यों कहा था ? बाबा जी सोच में पड़ गए। यदि विवाह करता हूं तो दुनियादारी के जंजाल में फंस जाऊंगा। बाबा जी बड़ी उलझन में थे। कुछ देर के बाद बोले, कुछ दिनों की मोहलत दो। मैं अपने गुरु जी से पूछ कर उत्तर दूंगा।

बाबा जी ध्यान में मगन हो गए और गुरु जी को याद किया। उनसे प्रार्थना की कि मुझे इस दुविधा से निकालो। कुछ समय के बाद एक नूरानी आवाज उनके कानों में गूंजी, 'बबा बीरम शाह', तुम्हारे पास सब कुछ है। संसार की हर नेमत तुम्हारे अधीन है। तुम्हारे पास संसार के सारे खजाने हैं। अब तुम ने मुझे किस लिये याद किया है? बाबा जी ने गुरु महाराज से विनती की कि मैंने दुनियादारी को छोड़कर आपकी शरण ली थी। मैं भूले से किसी को वचन दे चुका हूं और यदि पूरा नहीं करता तो झूठा कहलाता हूं। मेरा मार्ग दर्शन करें कि मुझे क्या करना चाहिए? गुरु जी ने कहा कि वचन तो पूरा करना ही पड़ेगा। यह कह कर गुरु जी अदृश्य हो गये।

दोचार दिन के बाद वह स्त्री फिर बाबा जी के पास आई। बाबा जी ने उस

स्त्री से कहा कि गुरु जी का फैसला तुम्हारे हक में है, इसलिए तुम्हारी लड़की का रिश्ता स्वीकार करता हूं। परन्तु आज के बाद तुम यहां नहीं आओगी। बैसाख महीने का मुहूर्त ठीक रहेगा। तिथि निश्चित करके पुरोहित के साथ संदेश भेजना। पुरोहित का नाम ढेरा था और वह मीरपुर का रहने वाला था। निश्चित दिन को वह लाल रंग के रूमाल में शगुन लेकर बाबा जी के पास पहुंच गया। जंगल में आकर क्या देखता है कि बाबा जी जमीन पर आसन लगाकर प्रभु की आराधना में लीन हैं। पुरोहित ने सोचा कि लड़की का तो जीवन बरबाद हो जाऐगा। लड़की के माता पिता ने क्या देखा है। इस साधु के पास तो कुछ भी नहीं है। कुछ समय तक वह चुप बाबा जी की ओर देखता रहा। बाबा जी की समाधि टूटी तो अपने सामने पुरोहित को देखकर कहने लगे, 'पुरोहित' जी आप मेरा रिश्ता लेकर आए हैं। मेरा तो कोई घर बार नहीं है। मैं तो आपकी यथा योग्य सेवा भी नहीं कर सकता। फिर भी मेरी ओर से यह भेंट, स्वीकार कीजिए। यह कह कर बाबा जी ने बोरी के नीचे से स्वर्ण मुद्राओं की एक़ मुट्ठी भरी और पुरोहित जी को दे दी और पुरोहित खुशी खुशी अपने घर लौट गया। वही पुरोहित जो पहले बाबा जी की बुराई कर रहा था, अब उनकी प्रशंसा करने लगा। अब तो वह यह कहते नहीं थक रहे थे कि लड़की बाबा जी के साथ पूर्ण सुख भोगेगी। लड़की राज करेगी। मीरपुर के लोगों को जब पता चला कि पानी पिलाने वाला बीरू जो यहां रहता था और जिसने सिखों के छठे गुरु, गुरु हर गोविन्द जी से गुरु मंत्र प्राप्त किया था। जिसे गुरु जी ने ही बाबा बीरम शाह नाम दिया था कैनी के जंगलों में 12 वर्ष तक साधना करने के बाद एक महान संत बन गये हैं तो बड़ी संख्या में मीरपुर के लोग जिनसे स्त्रियां, पुरुष, बच्चे बूढ़े सभी शामिल थे एक जत्थे के रूप में बाबा जी के दर्शन करने के लिए कैनी की ओर चल पड़े। बाबा जी को जब पता चला कि बड़ी संख्या में मीरपुर के लोग उनके दर्शन को आ रहे हैं तो उन्होंने अपने भावी ससुराल वालों को संदेश भेजा कि मीरपुर से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए खाने पीने का प्रबंध करें। इस संबंध में जब उनकी भावी पत्नी के माता पिता ने अपनी मजबूरी बताई तो बाबा जी ने एक मनका उनको दिया और कहा कि इस मनके को राशन वाले बर्तन में डाल दें और वहां से राशन निकालते जायें। ईश्वर की कृपा से सब ठीक होगा। सब ने

पेट भरकर भोजन किया और बाबा जी की जय जय कार करने लगे। लोगों ने वहीं बाबा जी के लिए एक कुटिया भी बना दी। बाबा जी ने सभी श्रद्धालुओं को शादी पर आने के लिए आमंत्रित किया। विवाह का मुहूर्त बैसाखी को ही निकला था। जब बाबा जी को सेहरा बांधा गया तो उनकी आंखों से आंसू निकल आए। उनके माता-पिता भाई बहन या संबंधी कोई भी वहां नहीं था। उनको अपने स्वर्गवासी माता-पिता की बहुत याद आई। बाबा जी को उदास देख कन्याऐं, स्त्रियां तथा पुरुष बहनों, माताओं तथा संबंधियों के रूप में उनके विवाह की रस्मों को पूरा करने लगे और यह शुभ कार्य हंसी खुशी सम्पूर्ण हुआ। उस समय कैनी के जंगल में बड़ी चहल पहल थी। बाबा जी की सास का नाम माता भोली तथा धर्मपत्नी का नाम संजोगता था। विवाह के बाद लोगों ने कैनी के जंगल को आबाद किया। बहुत से लोगों ने बाबा जी की कुटिया के आस पास अपने घर बना लिये। कैनी का जंगल एक बारौनक गांव में तब्दील हो गया। कहते है कि उस समय के मुगल बादशाह ने आदेश जारी किया कि सभी साधुओं को पकड़कर जेल में बंद कर दिया ज़ाए। उस समय एक फकीर शाह दौला भी कैनी के समीप एक स्थान पर रहते थे। बादशाह के सिपाही शाह दौला फकीर के पास आए और कहा, 'चलो बादशाह ने बुलाया है। तुम लोग फकीरों के बेस में लोगों को ठगते हो।' शाह दौला ने कहा कि मैं तो इतना बड़ा फकीर नहीं परन्तु कैनी में एक बड़ा संत है। सिपाही दोनों को पकड़ कर दिल्ली ले गए। जाने से पहले बाबा बीरम शाह ने अपने भक्तों से कहा कि लंगर तथा भजन कीर्तन जारी रखना में सदा आप के साथ रहूंगा। दिल्ली लाकर उनको जेल में बंद कर दिया। वहां पहले भी बहुत से साधु तथा फकीर बंद थे। बाबा जी जेल में थे परन्तु कैनी में अपने भक्तों के साथ भी दिखाई देते थे। सभी साधु चक्कियों में आटा पीस रहे थे। इन दोनों के सामने भी चक्कियां रख दी गई और आटा पीसने को कहा गया। बाबा जी ने शाह दौला को कहा कि चक्की को हाथ लगाओ। फिर उन्होंने कोई मंत्र पढ़ा और चक्की अपने आप चलने लगी। सभी साधु उनके चरणों में गिर गए । बाबा जी ने सबको कहा कि अपनी अपनी चक्की को हाथ लगाओ। उन्होंने यूंही चक्कियों को हाथ लगाया सबकी चाक्कियां भी अपने आप चलने लगीं। इस चमत्कार की सूचना जब मुलग

शहनशाह को मिली तो वह स्वयं कारागार में आए। और हाथ जोड़कर बाबा बीरम शाह जी से क्षमा मांगी। इसके बाद बादशाह ने बाबा बीरम शाह तथा फकीर शाह दौला के साथ सभी साधुओं और फकीरों को रिहा करने का आदेश दिया। बाबा बीरम शाह फकीर शाह दौला के साथ एक दीवार पर बैठ गए। दीवार को एड़ी लगाई और वह दोनों कैनी पहुंच गए। बाबा जी के चमत्कारों को देख उनके श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि होने लगी।

बाबा जी को पता चल गया था कि उनका अंतिम समय समीप आ रहा है। इसलिए उन्होंने अपने जीवन काल में ही कैनी की गद्दी अपने पुत्र बाबा गरीब दास को सौंप दी और स्वयं उनको गुरु मंत्र दिया। 80 वर्ष की आयु में बाबा, बीरम शाह जी इस संसार को छोड़कर चले गए। कैनी गांव जहां बाबा जी की समाधि है इस समय पाक अधिकृत कश्मीर में है। बाबा बीरम शाह जी की याद में वार्षिक भण्डारा बैसाखी के दिन आयोजित किया जाता है। मंजीत दत्ता के पिता श्री सुखदेव दत्ता के अनुसार उनके पिता भाई भक्त राम दत्ता जी ने बाबा जी की प्रेरणा से ही बाबा जी की जीवन कथा ग्वालियर में कविता के रूप में लिखी थी।

बुआ दाती शीलावंती-अखनूर

जम्मू क्षेत्र में हमें स्थान-स्थान पर देवी देवताओं के मंदिर देखने को मिलते हैं जिससे यह प्रतीत होता है कि प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र साधु संतों की तपस्या स्थली रहा है। कुछ मंदिर तथा देहरियां ऐसी भी हैं जो उन महान आत्माओं की याद में हैं जो मानव कल्याण के लिये इस धरती पर पधारीं और डुग्गर वासियों को सच्चाई तथा धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन के चमत्कारों से लोग इतने प्रभावित हुए कि उनको कुल देवता या कुल देवी मान कर उनकी पूजा करने लगे और समय समय पर उनकी याद में बनाए गए मंदिरों या देहरियों पर मेलों का आयोजन करके उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करने लगे। कुल देवताओं तथा कुल देवियों की कृपा से श्रद्धालुओं के दुखः दूर होने लगे और मनोकामनाएं पूरी होने लगीं। कुल देवताओं की कृपा से निसंतानों को संतान, निर्धनों को धन मिला और मानसिक तथा शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिली। कुल देवताओं के आशीर्वाद से लोगों के घरों में सुख शांति का वास हुआ और उनके बिगड़े काम बनने लगे। डुग्गर की कुल देवियों में बुआ दाती शीलावंती का विशेष स्थान है जो टंगोत्रा बिरादरी की कुलदेवी है। जिनके दरबार से कोई खाली हाथ नहीं लौटता और जो सब के मन की मुराद पूरी करती है। बुआदाती शीलावंती का पवित्र स्थान प्राचीन कामेश्वर मंदिर अखनूर परिसर में है जहां दाती जी के पवित्र मोहरे पंचमुखी हनुमान जी के मंदिर के साथ एक छोटे से मंदिर में स्थापित किए गए हैं। एक मोहरे में दाती जी को पति के साथ दिखया गया है। इन दोनों मोहरों के मध्य दाती जी का ही एक प्राचीन मोहरा है। इस मंदिर को बने हुए 28 साल हुए हैं परन्तु दाती जी का प्राचीन स्थान बकोर में है जो तीन सौ साल पहले का प्रतीत होता है। वहीं से दाती जी के मोहरों को यहां लाया गया है। यहां साल में दो बार मेल लगती है। जिसमें टंगोत्रा बिरादरी के लोग शामिल होते हैं। पहली मेल बैसाख महीने के चानने सोमवार तथा दूसरी मेल मार्ग शीर्ष महीने के चानने सोमवार को लगती है। यूं तो समय समय पर दाती के दरबार में श्रद्धालु हवन यज्ञों तथा भंडारों का आयोजन करते रहते हैं परन्तु मेल वाले दिन यहां बहुत रौनक होती है। मंदिर के आस-पास का

वातावरण बड़ा सुहावना तथा मन को मोहने वाला है। मंदिर के सामने श्रद्धालुओं के बैठने तथा भजन कीर्तन, करने के लिए खुला स्थान है। पास ही जिया पोता का प्राचीन वृक्ष है जिसकी शीतल छाया गर्मियों में श्रद्धालुओं को अपनी और आकर्षित करती है। जिन भक्तों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं वे चढ़ावे चढ़ाते हैं। कुछ लोग बैंड बाजों के साथ दाती के दरबार में उपस्थित होते हैं। दाती के मोहरों की पूजा तथा दाती की आरती उतारने के बाद सभी श्रद्धालु पंक्तियों में बैठक कर दाती का प्रसाद ग्रहण करते हैं। इस अवसर पर बिरादरी के सभी लोग इक्टठे मिल कर बैठते हैं जिससे आपसी भाईचारे को बढ़ावा मिलता है।

टंगोत्रा बिरादरी की वृद्ध महिला श्रीमती कौशलया देवी जी के अनुसार दाती जी बकोर की थीं और वहीं अपने पुत्र तथा पति के साथ चिता में जल कर स्वर्ग सिधारी थीं। गांव के लोगों ने दाती जी की याद में एक छोटी सी देहरी बनवाई और उसमें दाती जी, उनके पुत्र तथा पति के मोहरों की स्थापना की। टंगोत्रा बिरादरी के लोग दाती जी को कुलदेवी मानकर श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा करने लगे। समय गुजरने पर बिरादरी के लोग बकोर छोड़कर जम्मू के अन्य भागों में चले गए जिसके कारण देहरी की ओर किसी ने उचित ध्यान न दिया। इसलिए मोहरे मिट्टी में दब गए तथा इधर-उधर बिखर गए।

श्रीमती कौशलया देवी ने कहा कि मेरे पति मेजर श्री दीनानाथ जी,देवर श्री दुर्गा प्रकाश जी तथा आत्मा राम जी सब की शादी तो हो चुकी थी परन्तु किसी ने भी दाती जी की देहरी की परिक्रमा नहीं की थी। परिवार के बजुर्गों के आदेशानुसार तीनों भाई तथा तीनों बहुएं दाती की देहरी पर परिक्रमा करने के लिए बकोर पहुंचे परन्तु हमें दाती जी की देहरी का पता न चल सका। आखिर बकोर के चंद बजुर्गों से पूछताछ करने के बाद हम दाती जी की देहरी तक पहुंचने में सफल हो गए। दाती की देहरी की परिक्रमा तथा पूजा करके दाती का आशीर्वाद प्राप्त किया। उस समय टंगोत्रा बिरादरी की ही बुआ देहरी की पुजारन थी जो प्रतिदिन नियम पूर्वक देहरी में स्थित मोहरों की पूजा किया करती थी। दाती के दरबार से प्रसाद ग्रहण करके सबको प्रसन्नता प्राप्त हुई और शाम को हम सब अखनूर लौट आए। उसके बाद टंगोत्रा बिरादरी के लोग वहां नियम पूर्वक जाने लगे।

1947 में बकोर के लोगों को अपना गांव छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाना पड़ा। पाकिस्तानी आक्रमणकारियों ने दाती जी की देहरी को तोड़फोड़ दिया। शांति स्थापित होने के बाद देहरी का पुनः निर्माण किया गया और मोहरों की स्थापना की गई। देहरी के निर्माण तथा मोहरों की पुनः स्थापना में स्वर्गीय श्री कृष्ण दयाल शर्मा जी का बहुत बड़ा योगदान है। 1965 के भारत-पाक युद्ध के समय पाकिस्तानियों ने फिर देहरी को तोड़ दिया। इसके बाद बिरादरी के लोगों ने विचार किया कि दाती के मोहरों की स्थापना किसी सुरक्षित स्थान पर की जाए। दाती जी ने भी मोहरों को बकोर से उठाने की आज्ञा दे दी परन्तु यह भी कहा कि मेरा वास बकोर में भी रहेगा। दाती जी की आज्ञा के अनुसार बिरादरी के सभी लोग इक्ट्ठे हुए और भजन कीर्तन करते हुए बाजों के साथ बकोर पहुंचे। अखनूर से श्रद्धालु गुड़ के चावल बनाकर ले गए थे। वहां पहुंचने पर श्रद्धापूर्वक पूजा करने के बाद मोहरों को एक लकड़ी की चौकी पर रखा गया जिसको मेजर श्री दीनानाथ ने अपने सिर पर रख कर गाड़ी तक पहुंचाया और फिर कीर्तन करते हुए कामेश्वर मंदिर अखनूर के परिसर में पहुंचे और वहां शास्त्रों के नियमों के अनुसार विधि पूर्वक मोहरों की स्थापना की गई।

मेजर श्री दीनानाथ जी ने बताया कि यद्यापि दाती की आज्ञा मिल चुकी थी परन्तु एक सवाल सब के दिल में पैदा हुआ कि मोहरों की स्थापना कहां की जाए। क्योंकि अधिक लोग जम्मू रहते थे इसलिए विचार आया कि जम्मू में बाहुफोर्ट के पास जो देहरियां हैं वहां दाती के मोहरों की स्थापना की जाए। श्री कृष्ण दयाल जी उनके चाचा थे और उन दिनों वह जम्मू के डवीजनल कमीश्नर थे। उनसे प्रार्थना की गई कि बाहुफोर्ट में थोड़ी सी भूमि दाती की देहरी बनाने के लिए अलाट की जाए। उन्होंने कहा कि बाहुफोर्ट के पास स्थान मिलना मुश्किल है। दुर्गा प्रकाश जी ने सलाह दी कि जम्मू की बजाए यदि अखनूर में ही दाती का मंदिर बनाया जाए तो ठीक रहेगा। जम्मू के लोग भी आसानी से अखनूर आ सकते है। फिर सबकी सहमती से अखनूर में ही दाती के मंदिर का निर्माण किया गया। एक और बजुर्ग महिला श्रीमती चंचला देवी जी ने बताया कि अखनूर में दाती जी के मोहरों की स्थापना करने से पहले उनका पवित्र स्थान बकोर में था। जनश्रति के अनुसार दाती जी अपने पति तथा पुत्र के साथ सुखमय

जीवन बिता रही थीं। उनके पति सीधे सादे व्यक्ति थे और खेती बाड़ी करके परिवार का पालन पोषण कर रहे थे। एक बार वह किसी काम के लिए बाहर गए। शाम तक जब वह न लौटे तो दाती जी को चिंता हुई। अगले दिन किसी ने झूठी खबर फैला दी कि उनके पति की मृत्यु हो गई है। खबर सुनते ही दाती जी विलाप करने लगीं और फूट-फूट कर रोने लगीं। उन्होंने सोचा कि पति के बिना जीवन व्यर्थ है। इसलिए उन्होंने घर में ही चिता तैयार की और अपने पुत्र के साथ चिता में बैठकर अपनी जीवन लीला समाप्त करने का निश्चय कर लिया। लोगों ने उनको बहुत समझाया परन्तु वह अपने निश्चय पर अटल रहीं। उन्होंने अपने हाथों से चिता को अग्नि दी और देखते ही देखते आग की लपटों ने उनको भस्म कर दिया। इतनी देर में उनके पति भी गांव में आ गए। घर के अंदर का दर्दनाक दृश्य देखकर वह बहुत दुखी हुए और उन्होंने भी उसी चिता में कूद कर अपना शरीर त्याग दिया। गांव के लोगों ने इन पुण्य आत्माओं की याद में एक देहरी बना दी और उनकी पूजा करने लगे। क्योंकि दाती जी सुहागन गई थी इसलिए बिरादरी के लोग हर शुभ-कार्य के आरम्भ में मां-बेटे तथा पति पत्नी को भोजन खिलाते है और उनकी पूजा की जाती है। उन्होंने कहा कि दाती शीलावंती जी बड़ी दयालू हैं। वह सब पर कृपा करती हैं और अपने भक्तों को कष्ट में नहीं देख सकतीं। चंचला देवी जी ने कहा कि जब हम दाती जी के मोहरों को बकोर से ला रहे थे तो वहां एक स्त्री को उन्होंने रोते हुए देखा। जब रोने का कारण पूछा तो उस स्त्री ने कहा कि मैं नहीं जातनी थी कि यह किस बिरादरी की दाती है परन्तु यह दाती है बड़ी सच्ची और सच्चे दिल से जो भी कामना यहां की जाती है वह अवश्य पूरी होती है। आप दाती को यहां से ले जा रहे हैं। बिरादरी के लोगों ने उस स्त्री से कहा कि चिंता की कोई बात नहीं। दाती जी की इच्छा है कि वह बकोर में भी वास करेंगी। इसलिए बकोर की देहरी में भी उनकी पूजा होगी और श्रद्धालु यहां भी उनकी पूजा कर सकेंगे। दाती जी के चमत्कारों का वर्णन करते हुए दाती जी के सेवक श्री नरेश शर्मा ने कहा कि उनकी पत्नी हृदय रोग से पीड़ित थी। उसे जम्मू के बत्रा अस्पताल में उपचार के लिए दाखिल करवाया गया। डाक्टरों ने कहा कि हृदय का बड़ा आप्रेशन होगा जिस पर लगभग दो लाख रुपए खर्च होंगे। रकम बहुत अधिक थी जिसका

प्रबंध करना उनके लिए संभव नहीं था। आशा की कोई किरण दिखाई नहीं देती थी। आखिर दाती जी के दरबार में आकर प्रार्थना की कि हे दाती जी अब उनकी पत्नी का जीवन आप के हाथ में है। उसे बचा लें। दो चार दिन में डाक्टरों ने कहा कि आप की पत्नी के आप्रेशन के लिए पैसा जमा हो चुका है। दाती के इस चमत्कार को देखकर उनका हृदय खुशी से नाच उठा और उन्होंने दाती का धन्यवाद किया जो अपने बच्चों पर इतनी दयावान है। आप्रेशन सफल रहा और आज उनकी पत्नी पूर्ण रूप से स्वस्थ है। बिरादरी को एक जुट करने तथा दाती जी के मंदिर का निर्माण करने में टंगोत्रा बिरादरी के सभी सदस्यों का योगदान है परन्तु श्री आत्मा राम जी इस शुभकार्य में विशेष रूचि लेते हैं और समय समय पर दाती के दरबार में भजन कीर्तन तथा भंडारों का आयोजन करवाते रहते हैं। अखनूर के श्री कृष्ण लाल जी, खौड़ के श्री अमृत राज शर्मा तथा रियासी के श्री साईंदास जी ने भी बिरादरी के सदस्यों की प्रशंसा कि जो दूर दराज रहने वाले टंगोत्रा वंश के लोगों को एक जुट करने का यत्न कर रहे हैं। उनके यत्नों से दाती की मेल में शामिल होने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। दाती के आशीर्वाद से टंगोत्रा बिरादरी दिन प्रतिदिन उन्नति तथा समृद्धि की ओर अग्रसर है।

लोकनायक-राजा मंडलीक

जम्मू का सारा क्षेत्र साधु संतों की तपस्या स्थली है। यहां के शांत वातावरण तथा प्राकृतिक दृश्यों ने महात्माओं तथा ऋषियों मुनियों को अपनी ओर आकर्षित किया है। जम्मू क्षेत्र में स्थान-स्थान पर देवी देवताओं के मंदिर, महात्माओं की समाधियां तथा वीर योद्धाओं के स्मारक बने हुए हैं जहां समय समय पर मेलों का आयोजन् किया जाता है। इन समारोहों में उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है और मानव जाति के कल्याण हेतु किए गए उनके कामों को याद किया जाता है। महात्माओं की समाधियों पर बड़ी संख्या में धर्म प्रेमी आकर शीश झुकाते है और उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। जम्मू क्षेत्र और विशेष रूप से डुग्गर प्रदेश में कुछ महापुरुषों ने अपने समय के अत्याचारी शासकों के विरुद्ध आवाज उठाई और अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए किए गए संघर्षों में जनता का मार्ग दर्शन किया। उन महान पुरुषों ने अपना बलिदान देकर लोगों को न्याय दिलाया। शताब्दियां गुजर जाने पर भी लोग उन महापुरुषों को भूल नहीं पाए। ऐसे महापुरुषों में बावा जित्तो तथा दाता रणपत जी का नाम बड़े आदर से लिया जाता है क्योंकि उन्होंने अन्याय के सामने झुकने से इंकार किया और सत्य मार्ग पर चलते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। जम्मू क्षेत्र के जिन वीर योद्धाओं ने मातृभूमि की रक्षा के लिए शक्ति शाली राजाओं से टक्कर ली उनमें मियां डीडो का नाम बड़े आदर से लिया जाता है जिसने चंद साथियों के साथ लाहौर दरबार के विरुद्ध आवाज उठाई और डोगरों को सम्मान के साथ जीना सिखाया। मियां डीडो मरते दम तक लाहौर दरबार के सैनिकों का सामना करता रहा। ऐसे महात्माओं के सेवा भाव तथा योद्धाओं की वीरता तथा बलिदानों को देखते हुए लोगों ने उन को लोक देवताओं तथा लोक नायकों के रूप में पूजना शुरु कर दिया और उनके आदेशों पर चलते हुए अपना जीवन सफल बनाया। स्थानीय, कवियों, लोक गायकों और जोगियों ने कविताओं, कारकों तथा बारों के रूप में उनकी वीरता के कारनामों को आम लोगों तक पहुंचाया। पूजा के साथ लोगों ने उनकी याद में मंदिरों का निर्माण भी किया।

लोक देवता डुग्गर संस्कृति तथा सभ्यता का अटूट अंग हैं। इन लोक

देवताओं का डुग्गरवासियों के दिलों में वास है और वे सच्चे दिल से उनको पूजते हैं। हर वंश तथा हर परिवार का अपना कुल देवता है जिसे डुग्गरवासी अन्य देवी देवताओं के साथ श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और कोई भी शुभ कार्य करने से पहले कुल देवता का आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है।

डुग्गर के लोक देवताओं में राजा मंडलीक को विशेष स्थान प्राप्त है। राजा मंडलीक का संबंध बेशक राजस्थान से है परन्तु राजा मंडलीक के जितने मंदिर डुग्गर प्रदेश में हैं उतने शायद ही कहीं हों। डुग्गर प्रदेश में राजा मंडलीक के नाम से प्रसिद्ध लोक देवता को भारत के उत्तरी भागों जैसे पंजबा, उत्तर प्रदेश, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश में गुग्गा चुहान, जाहिर पीर, गोगा चौहान, गोगा राजस्थानी आदि नामों से याद किया जाता है। इस राजस्थानी लोक नायक ने राजस्थान की धरती पर वीरता के ऐसे कारनामे किए जिनको रहती दुनिया तक याद रखा जाएगा। परन्तु इस संबंध में बहुत कम जानकारी प्राप्त हो सकी है। आज तक यह भी पता नहीं चल सका कि गोगा राजस्थानी कब हुआ। इस बात का भी दुख है कि उस समय के इतिहासकार उस योद्धा की महत्वपूर्ण लड़ाईयों का ब्योरा संभालने में असफल रहे।

ऐसी मान्यता है कि गोगा चौहान की गाथा जम्मू के पर्वतीय क्षेत्र में उस समय प्रसिद्ध हुई होगी जब ग्यारहवीं शताब्दी में महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण किए। गजनी के सुलतान के आक्रमणों का प्रभाव यूं तो सारे भारत पर हुआ परन्तु गुजरात तथा राजस्थान के लोग आक्रमणों के कारण अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगे और अपनी जन्म भूमि को छोड़कर आस-पास के राज्यों में आकर बस गए। उस जमाने में वीरों की पूजा की जाती थी और राजस्थानी लोक गाथा गाने वालों का भी हर संभव यही प्रयास होगा कि गोगा राजस्थानी को एक वीर के रूप में अमर बना दिया जाए। पूरे राजस्थान में गोगा चौहान की वीरता के गीत गाए जाने लगे। राजस्थान के लोग पलायन के दौरान अपने लोक देवता को भी पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश के साथ-साथ जम्मू क्षेत्र में ले आए। जम्मू के धर्म प्रेमी लोगों ने खुशी से गोगा चौहान को एक लोक देवता के रूप में स्वीकार कर लिया और अन्य स्थानीय लोक देवताओं के साथ उसकी भी पूजा करने लगे। इस बात का पता नहीं चल

सका कि राजा मंडलीक की डुग्गर प्रदेश में एक लोक देवता के रूप में पूजा कब शुरू हुई। पद्मश्री राम नाथ शास्त्री जी के अनुसार इस संबंध में शायद सबसे पुराना प्रसंग बावा जित्तो की कारक में मिलता है। बावा जित्तो का समय राजा अजब देव का शासनकाल है और बावा जित्तो ने जून-जुलाई 1458ई. में आत्म बलिदान दिया था। बावा जित्तो की लोकगाथा से पता चलता है कि कटड़ा के पास अगहार गांव में बावा जित्तो के घर राजा मंडलीक का स्थान था जो इस बात का प्रमाण है कि राजा मंडलीक बावा जित्तो से बहुत पहले जम्मू के लोक देवताओं में शामिल हो चुके थे।

- **तलियें उप्पर चुक्की कन्या 'थान' राजे दे आई।**
- **उप्पर डडलै जाई खडोते, बावे गी धिक्का काराई**
- **राजा मंडलीकै, काली बीरै, चौपड़ बाजी लाई।**
- **बोलै राजा बचन करै, काली बीरै गी गल्ल सुनाई।**

श्री शिव निर्मोही ने अपनी पुस्तक 'डुग्गर के कुल देवता' में 'राजदर्शनी' के हवाले से लिखा है कि जम्मू के राजा बाजदेव (1164-1215ई.) के शासनकाल में स्वयं गुग्गा चौहान जम्मू के पर्वतीय क्षेत्र में आया और यहां के लोगों को अपना शिष्य बनाया जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि राजा मंडलीक ने आज से लगभग आठ सौ साल पहले अपने वजीर काली वीर के साथ जम्मू क्षेत्र का भ्रमण किया होगा। डुग्गर में जहां जहां भी राजा मंडलीक का पवित्र स्थान है वहां कालीवीर को भी साथ दिखाया गया है। प्राचीन मोहरों तथा मूर्तियों में राजा मंडलीक को नीले घोड़े पर और काली वीर को घोड़े के आगे देखा जा सकता है।

राजा मंडलीक के दरबार में उपस्थित होकर सच्चे दिल से प्रार्थना करने पर भक्तों के दुःख दूर होते हैं और उनकी मनोकामनाएं पूरी होती है। राजा मंडलीक पद्म नाग का रूप हैं। इसलिए उनकी पूजा सर्पदंश से रक्षा करने वाले देवता के रूप में की जाती है।

कहते है यदि किसी को सांप काट ले और वह व्यक्ति राजा मंडलीक के पवित्र स्थान पर जाकर शीश झुकाए और देव स्थान की मिट्टी शरीर के उस भाग पर लागाए जहां सांप ने काटा है तो सांप के विष का प्रभाव समास हो जाता

है और पीड़ा से मुक्ति मिलती है। राजा मंडलीक की कृपा दृष्टि से भक्तों को सुख की प्राप्ति होती है। उनको संतान का सुख मिलता है और धन दौलत की कमी नहीं रहती । उनके रुके हुए काम बनते हैं और शत्रु उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। परिवार में सुख-शांति तथा राजदरबार में मान-सम्मान मिलता है। राजा मंडलीक के आशीर्वाद से भूत-प्रेत तथा जादू टोने का प्रभाव भी समाप्त हो जाता है। जम्मू के पर्वतीय क्षेत्र में राजा मंडलीक के विषय में जो दन्तकथा प्रचलित है उसके अनुसार गढ़ दुद्धन्तर (ददरेवा) के राजा झेवर (जेवर सिंह) की दो रानियां थीं जिनके नाम बाछला (बाछल)काछला (काछल)थे। दोनों बहनें थीं और दोनों के हां संतान नहीं थी। राजा जेवर सिंह प्रजा पालक तथा धार्मिक विचारों के थे। उनके शासनकाल में प्रजा बड़ी सुखी थी और राज्य में किसी चीज की कोई कमी नहीं थी फिर भी वह उदास रहते थे। उनकी उदासी का कारण यह था कि उनके हां कोई पुत्र न था। वह यही सोचते रहते कि उनके बाद राज गद्दी पर कौन बैठेगा। उनकी रानी बाछला ने भी उनको समझाया कि संतान तो प्रभु की कृपा से होती है। जब प्रभु की इच्छा होगी संतान अवश्य होगी। बाछला की बहन काछला बड़ी कपटी थी और इस ताक में रहती थी कि किस तरह बड़ी बहन को अपने कपट जाल में फंसाए।

एक महंत ने रानी बाछला से कहा कि गुरु गोरख नाथ की सेवा करने से संतान की प्राप्ति होगी। उन दिनों गुरु गोरखा नाथ जी अपने चौदह सौ चेलों के साथ ददरेवा पहुंचे। रानी बाछला को जब इस बात का पता चला तो उसने अपने महल के झरोखे से गुरु गोरख नाथ जी तथा उनके चेलों के दर्शन करके अपनी आंखें तृप्त कीं। वह खुशी में फूली नहीं समा रही थी। वह सोचने लगी कि अब उनकी मनोकामना पूरी होगी। वह मां बनेगी और उसका महल राजकुमार की किलकारियों से गूंजेगा। जितने दिन गुरु जी वहां रहे वह उनकी सेवा करती रही। गुरु गोरख नाथ जी रानी बाछला के सेवा भाव से प्रसन्न हुए और उसने अगले दिन प्रातः सूर्य निकलने से पहले आकर फल प्राप्त करने को कहा। बाछला सीधी सादी स्त्री थी। उसके दिल में कोई छल कपट नहीं था, इसलिए उसने यह बात अपनी बहन से भी कह दी। उसकी बहन भला यह कैसे सहन कर सकती थी कि उसकी बड़ी बहन के घर संतान हो और वह बांझ रहे। अगले

दिन सूर्य निकलने से पहले ही काछला अपनी बड़ी बहन के वस्त्र पहन कर गुरु जी की सेवा में उपस्थित हो गई। दोनों बहनों की शक्त मिलती थी। इसलिए गुरु जी पहचान न सके और संतान प्राप्ति का फल काछला को दे दिया। बाछला जब गुरु जी के पास पहुंची तो गुरु जी समझ गए कि काछला ने कपट किया है। वह बाछला को भी निराश नहीं करना चाहते थे। उन्होंने बाछला को भी फल दे दिया और कहा कि उसके घर जो लड़का पैदा होगा वह अपने मौसेरे भाईयों से अधिक शक्तिशाली होगा और संसार में लोग देवता के तौर पर उसकी पूजा होगी। बड़े-बड़े शूरवीर उनकी बहादुरी का लोहा मानेंगे।

बाछला गर्भवती हुई तो उसकी ननंद ने अपने भाई जेवर सिंह से चुगली की कि रानी बाछला चोरी-चोरी नाथों के आश्रम में जाती है। राजा ने झूठा बहाना बना कर बाछला को मायके भेज दिया। परन्तु गर्व में से ही गोगा ने माता को नाना के घर जाने से रोक दिया। बाछला मायके से वापिस आ गई। रानी बाछला को संतान प्राप्ति का वरदान देने से पहले गुरु गोरख नाथ जी राजा वासुकि के पास गए और कहा था, हे राजन! मैंने अपनी एक भक्त को संतान का वरदान देना है कि उसके घर ऐसा पुत्र पैदा हो जिसकी भारत वर्ष के अतिरिक्त विदेशों में भी पूजा हो इसलिए मुझे पदमनाग, की आवश्यकता है। वासुकि ने पदमनाग को बुलाया और गुरु गोरख नाथ के हवाले कर दिया। गुरु गोरख नाथ ने पदमनाग को आशीर्वाद देते हुए कहा, बेटा तुम्हारी सारे संसार में पूजा होगी। तुम मेरे धूने पर जाकर वेद मंत्रों द्वारा सिद्ध की हुई गूगल में अपने सूक्ष्म शरीर से समा जाओ। जब रानी बाछला उसका सेवन करे तो तुम उसके गर्व में प्रवेश कर जाना। पदमनाग ने गुरु की आज्ञा का पालन किया और जब गुरु गोरख नाथ की समाधि टूटी तो क्या देखते हैं कि रानी बाछला तन, मन धन से गुरु सेवा में लगी हुई है। गुरु जी बोले तुम्हारी तपस्या पूरी हुई और यह कह कर गुरु जी ने रानी को वरदान दे दिया।

कुछ समय के बाद छोटी रानी काछला के घर दो पुत्रों ने जन्म लिया। जिनके नाम अर्जुन तथा सुर्जन थे। रानी बाछला के घर गुग्गा ने जन्म लिया। एक दिन गुग्गा नीले घोड़े पर सवार होकर बंगाल गया। वहां उसने राजकुमारी श्रीयल (सुरगला) को देखा और उस पर मोहित हो गया। श्रीयल की माता को पता

चला तो उसने बेटी को बहुत समझाया कि बिना सोचे किसी अनजाने से सम्बंध स्थापित करना उचित नहीं। राजकुमारी श्रीयल ने कहा कि वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि एक राजकुमार हैं और देवताओं के अंशी हैं। दोनों का विवाह हो गया और विवाह के बाद राजा मंडलीक श्रीयल, के साथ गढ़बंगाल में ही रहने लगा। जब मंडलीक को पता चला कि उसके राज्य पर गजनी के बादशाह ने आक्रमण किया है और उसकी कपला गाय को भी ले गया है तो वह श्रीयल के साथ ददरेवा आ गाय। एक बड़ी सेना के साथ गजनी पर आक्रमण किया और कपला गया को भी छुड़ा लिया। कश्मीर के राजा ने राजा मंडलीक और उसके सेनापति कालीवीर को कारागार में बंद कर दिया। एक और कथा के अनुसार राजा मंडलीक का विवाह केलमदे के साथ हुआ है।

बेशक राजा मंडलीक कश्मीर में कैद था परन्तु वह अपनी पत्नी से मिलने रात को ददरेवा आता था। शाम होते ही श्रीयल हार सिंगार करके अपने पति की प्रतीक्षा करती। राजा मंडलीक की माता बाछला अपनी बहू पर शक करने लगी। बहू ने कहा कि उसके पति हर रात उसे मिलने के लिए आते हैं। रानी ने बहू की बात पर विश्वास नहीं किया। एक रात वह महल के मुख्यद्वार के पीछे छुप गई। रात को जब राजा मंडलीक घोड़े पर सवार होकर अपनी पत्नी से मिलने आया तो उसने द्वार के पीछे खड़ी माता को देख लिया। वह उसी समय वहां से लुप्त हो गया। श्रीयल ने अपनी सास से कहा कि आपको देखकर मेरे पति यहां से चले गए हैं। आपके कारण ही आज में विधवा हो गई हूं। अब मेरा जीवित रहना भी उचित नहीं। अब मैं भी यहां नहीं रह सकती। इतना कह कर वह सर्पिणी बन कर धरती में समा गई।

एक बार राजा मंडलीक ने अपने मौसेरे भाईयों के साथ चौपड़ खेला और अपना राज भी दाव पर लगा दिया। वह अपना राज हार गया परन्तु उसने मौसेरे भाईयों को राज देने से इंकार कर दिय। इस पर दोनों में लड़ाई हुई जिसमें राजा मंडलीक ने दोनों भाईयों की हत्या कर दी। इस बात पर बाछला ने राजा मंडलीक को प्रताड़ित किया। गोगा वीर यह अपमान सहन न कर सका और उसी समय अपने घोड़े के साथ धरती में समा कर समाधि ले ली और पाताल चला गया। राजा मंडलीक अपनी पत्नी के साथ धरती के अंदर चलता-चलता

मंत्रों की शक्ति से गुरु गोरख नाथ जी के टीले पर पहुंच गया और गुरु जी के चरणों को स्पर्श करके कहने लगा, महाराज, मेरी पत्नी भी मेरे साथ आ मिली है। उसे भी मंत्र देकर अपनी शिष्या बना लीजिए। गुरु जी बोले तुम दोनों को मेरा अशीर्वाद है। धरती में समाने के बाद गोगा वीर अपने परिवार तथा मित्रों से जा मिला।

राजा मंडलीक (गुग्गा) की पूजा रक्षाबंधन से लेकर गुग्गा नवमीं तक होती है। गुग्गा नवमीं की पहली रात को श्रद्धालु देवता के पवित्र स्थान पर इक्ट्ठे होकर सारी रात भजन कीर्तन करते हैं। मनौतियां मांगते हैं और जिन लोगों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं वह चढ़ावे चढ़ाते हैं।

मंदिर बावा जियो नाथ जी

प्राचीनकाल से ही जम्मू क्षेत्र साधु संतों तथा महात्माओं की तपस्या स्थली के रूप में जाना जाता है। इस पवित्र धरती पर महान आत्माओं ने जन्म लिया जिन्होंने डुग्गर वासियों के कष्ट दूर करने के साथ-साथ उनको धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इन महान आत्माओं ने लोगों पर होने वाले हत्याचारों को समाप्त करने के लिए अपना बलिदान दिया जिसके कारण कई जातियों के लोगों ने उनको कुल देवता या कुलदेवी के रूप में मान्यता दी और अपने घरों तथा गांवों में मंदिर या देहरियां बनाकर उनकी मूर्तियां तथा मोहरे स्थापित किए जहां समय समय पर मेलों का आयोजन होने लगा। कोई भी शुभ कार्य करने से पहले इन देवी देवताओं का आशीर्वाद लिया जाता है ताकि कार्य बिना किसी विघ्न के भलीभांति सम्पन्न हो। लोगों का पूर्ण विश्वास है कि संगट की हर घड़ी में यही देवी देवता उनकी सहायता करते हैं और उनकी कृपा से ही जीवन सुखमय होता है। ऐसे पवित्र स्थान आम तौर पर शहरों की भीड़ भाड़ से दूर जंगलों या पहाड़ों की गुफाओं में स्थित है जहां के सुन्दर तथा प्राकृतिक वातावरण में श्रद्धालुओं को असीम आनन्द का अनुभव होता है। इन पवित्र स्थानों तथा तीर्थ स्थानों की यात्रा करके श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति मिलती है।

अखनूर से लगभग 6 किलोमीटर पश्चिम की ओर एक छोटा सा गांव है भलवाल ब्राहमणा जो धर्म निर्पेक्षता तथा आपसी भाई चारे का प्रतीक है क्योंकि यहां सभी जातियों के लोग मिलजुल कर बड़े ही प्रेम भाव से रहते हैं और एक दूसरे के सुखदुख में बराबर शरीक होते हैं। कंडी क्षेत्र होने के कारण जमीन पत्थरीली और पानी की कमी है। अधिकतर लोगों का व्यवसाय खेती बाड़ी है परन्तु इस काम में उनको बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। कुछ युवक अब शिक्षा प्राप्त करके सेना में भर्ती हो गए हैं और कुछ सरकारी नौकरियों में ऊंचे पदों पर नियुक्त हैं। लोगों के परिश्रम तथा सरकार के सहयोग से गांव में विकास कार्य आरंभ हो चुके हैं जिन से गांव उन्नति के पथ पर अग्रसर है। 1947 से पहले और उसके कुछ देर बाद तक गांववासियों को तीन किलोमीटर का फासला तय करके चिनाब दरिया से पानी लाने के लिए जाना पड़ता था और

खेती के लिए वर्षा के जल पर निर्भर रहना पड़ता था। बेशक गांव में एक बहुत बड़ा तालाब था जो लोगों की छोटी मोटी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काफी था, परन्तु इसके सूख जाने पर लोगों को बड़ी कठिनाई होती थी। तालाब के किनारे अनगिनित छाया दार वृक्ष थे जिनकी छाया में गांववासी दोपहर गुजारते थे। प्रातः तालाब पर स्नान करने वालों की भीड़ होती थी। तालाब के किनारों पर वट वृक्षों के नीचे शिव लिंगों की स्थापना की गई थी। स्नान करने के बाद श्रद्धालु शिव लिंगों पर जल चढ़ाते और भगवान शिव की पूजा करते थे। यह सिलसिला आज भी जारी है। तालाब के पास ही एक छोटी सी प्राकृतिक बनी में जियो नाथ जी का पवित्र स्थान है जहां कुछ साल पहले बावा जी की सफेद संगमरमर की सुन्दर मूर्ति की स्थापना की गई थी। जिसे गुलाबी रंग के संदुर वस्त्रों से सजाया गया है। इससे पहले श्रद्धालु बावा जी के मोहरों की पूजा करते थे। सड़क से मंदिर तक जाने वाले रास्ते के दोनों ओर हरे-भरे वृक्ष इस स्थान की शोभा तथा आकर्षण में वृद्धि करते हैं। बावा जी की मूर्ति के नीचे बने छोटे से चबूतरे पर बावा जी के प्राचीन मोहरे है। एक ओर उन नाथों के मोहरे है जो बावा जी की सहायता के लिए आए थे और बावा जी की चिता में कूद कर भस्म हो गए थे। मंदिर के भीतरी भाग में अन्य कई देवी देवताओं के चित्र भी देखने को मिलते हैं। जिस स्थान पर बावा जी की मूर्ति है उसी स्थान पर बावा जी का अंतिम संस्कार किया गया था। एक हवन कुण्ड भी है यहां वार्षिक मेल तथा धार्मिक पर्वों पर हवन यज्ञ किया जाता है। मंदिर परिसर में प्राचीन वट वृक्ष तथा एक छोटा सरोवर भी है। इस सरोवर में स्नान करने से कई शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिलती है।

बावा जी की पवित्र बनी में वार्षिक मेल दिसंबर महीने में (मार्गशीर्ष महीने की अमावस्या के बाद आने वाले रविवार) उसी दिन लगती है जिस दिन बीरपुर में दाता रणपत देव जी के मंदिर में लगती है। मंदिर के पुजारी पं. मदन लाल जी के अनुसार बावा जी हिमाचल प्रदेश के गांव चुरमट चम्बा के रहने वाले थे। घर का वातावरण धार्मिक था। उनके पिता का नाम बावा रत्तो था जो बड़े विद्वान तथा वेदों शास्त्रों तथा धार्मिक ग्रंथों के ज्ञाता थे। बहुत सी जातियों के पुरोहित होने के नाते हर स्थान पर उनका आदर होता था और उनके घर यजमानों का

आना जाना लगा रहता था। उनके हां संतान नहीं थी इसलिए लोगों को यह चिंता सताने लगी कि बावा रत्तो के बाद उनका पुरोहित कौन होगा जिसके मार्गदर्शन में उनके धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। एक दिन कुछ लोग बावा रत्तो जी के पास आए और कहने लगे, बाबा जी आप का बुढ़ापा समीप आ रहा है आपके बाद हमारा पुरोहित कौन होगा। इसकी हमें बहुत चिंता है। बावा जी अपने प्रति लोगों का स्नेह देखकर दिल ही दिल में बड़े प्रसन्न हुए और संतान प्राप्ति के लिए उन्होंने गुरु गोरख नाथ जी की आराधना शुरु कर दी। गुरु जी के आशीर्वाद से बावा रत्तो के घर बावा जियो नाथ जी ने जन्म लिया। अपने पुरोहित के घर बालक का जन्म होने पर सारे गांव में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। बड़ी संख्या में लोग बावा रत्तो को मुबारक देने आए। बच्चे के ग्रह आदि देखने के लिए पंडितों को बुलाया गया। सबकी यही राय थी कि बालक बड़ा तेजस्वी, धर्मात्मा तथा भगवान का ही रूप है जो बड़ा होकर वंश का नाम रोशन करेगा। देवताओं की भांति उसकी पूजा होगी और दुःखों से पीड़ित समस्त मानव जाति का कल्याण करेगा। बालक का नाम जियो रखा गया। इससे पहले भी माता कपली और परिवार के अन्य सदस्यों के घर संतान होती थी परन्तु नवजात शिशुओं को डायनें खा जाती थीं। अब की बार बावा रत्तो तथा माई कपली की भक्ति से प्रसन्न होकर गुरु गोरख नाथ जी ने यह वरदान भी दिया कि उनके घर जो बालक जन्म लेगा वह डायनों तथा प्रेतात्माओं का नाश करने वाला होगा और उनके दरबार में आकर सच्चे दिल से प्रार्थना करने वाले की हर मनोकामना पूरी होगी। बावा जियो नाथ जी जब बड़े हुए तो उनके दिल में भी अपने माता पिता की तरह गुरु गोरख नाथ जी के दर्शन करने की इच्छा पैदा हुई इसलिए वह उनके आश्रम में चले गए। गुरु गोरख नाथ जी उन दिनों किसी साधना में व्यस्त थे। उन्होंने जियो नाथ को अपनी कुटिया के बाहर बिठा दिया और कहा, मेरी तपस्या भंग न हो इसलिए जो भी मुझ से मिलने आए उसे बाहर ही बिठाना कुटिया के अन्दर न आने देना। गुरु गोरख नाथ की भक्ति करने तथा उनके शिष्य बनने के लिए कुछ साधु आश्रम में आए तो आश्रम वासियों ने उनको गुरु जी की कुटिया का रास्ता दिखाया। कुटिया के बाहर बावा जियो नाथ को देखकर वे बड़े प्रसन्न हुए और उनको ही गुरु गोरख नाथ समझ कर

उनके चरणों में झुक गए। बावा जियो नाथ जी भूल गए कि गुरु जी ने किसी को भी कुटिया में प्रवेश करने के लिए मना किया है। उन्होंने भक्तों से कहा, गुरु गोरख नाथ जी कुटिया में तपस्या कर रहे हैं, मैं तो उनका शिष्य जियो नाथ हूं। उन्होंने गुरु जी को प्रमाण किया जिससे उनकी समाधि टूट गई। बाहर आकर गुरु जी ने बावा जियो से कहा, जब तुम्हें मना किया गया था कि किसी को अन्दर न आने देना तो फिर यह लोग कुटिया में कैसे आए? बावा जियो ने गुरु जी के चरणों में गिर कर क्षमा मांगी और कहा कि, गुरु जी मैं भूल गया था। भविष्य में ऐसी गलती नहीं करुंगा।

कुछ समय तक आश्रम में रहने के बाद बावा जियो नाथ वापिस हिमाचल अपने घर आ गए और वे साधु भी अपने क्षेत्र की ओर प्रस्थान कर गए। आश्रम से विदा होने पर गुरु जी ने अपने शिष्यों को उपदेश दिया कि आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे की सहायता करने के लिए सदा तैयार रहना और जहां कहीं भी किसी को कष्ट में देखें उसका साथ देना।

घर आकर भी बावा जियो प्रभु की भक्ति में लीन रहने लगे। ईश्वर की भक्ति के सिवाए उनको कुछ भी नहीं भाता था। कुछ लोग उन से हंसी मजाक भी करने लगे। उनको गांव का वातावरण अच्छा नहीं लगा इसलिए वह तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े। बहुत से तीर्थों की यात्रा करने के बाद जब वह हरिद्धार पहुंचे तो वहां उनकी भेंट बीरपुर के दाता रणपत देव जी से हुई। वहीं गंगा मैया को साक्षी बनाकर दोनों ने एक दूसरे से पगड़ी बदली और धर्म के भाई बन गए। इसी मित्रता तथा भाईचारे के कारण ही दोनों महान आत्माओं की मेल दिसम्बर महीने में एक ही दिन आयोजित की जाती है। (दाता रणपत जी की साल में दो बार मेल लगती है।)

देश के विभिन्न गांवों तथा शहरों में घूमने के बाद बावा जियो जी अखनूर क्षेत्र में आए। यहां आकर वह चिनाब नदी को पार करना चाहते थे परन्तु उन दिनों नदी पार करने के साधन बहुत कम थे। उन्होंने नदी के किनारे खड़े होकर भगवान को याद किया और लकड़ी के एक तख्ते पर बैठ कर चिनाब नदी को पार किया। कहते हैं जिस स्थान से बावा जी ने नदी को पार किया वह घाट उन्हीं के नाम से जिया पोटा घाट कहलाने लगा। जिया पोटा वही पवित्र घाट है

जहां महाराजा रणजीत सिंह ने गुलाब सिंह के माथे पर तिलक लगाकर उनको जम्मू का राजा घोषित किया था। अखनूर से चल कर बावा जी पलवां पहुंचे वहां तालाब के किनारे एक वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे कि मोरां नाम की एक स्त्रि जो चिनाब नदी से पानी लाकर लौट रही थी उनके पास आई और पूछने लगी, ''महाराज आप कहां से आए है और आपको कहां जाना है। मैं अकेली हूं और लोगों के घरों में काम करके अपना पेट पालती हूं। यदि आप मेरे पास रहें तो मैं अपने आपको बड़ा भाग्य शाली समझूंगी'। बावा जी मोरां की बातों से बड़े प्रभावित हुए और उसके घर आ गए। घर में मोरां ने बावा जी का बड़ा आदर सत्कार किया। गर्मियों के दिन थे। बावा जी को मिसरी का ठंडा शरबत पिलाया। बावा जी भी मोरां के भक्ति भाव से बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने मोरां को धर्म की मां मान कर उसकी सेवा करने का मन बना लिया। वह मोरां तथा अन्य गांववासियों की गाएं चराने के लिए प्रातः जंगल में चले जाते और शाम को घर लौटते थे। शाम को वह लोगों के घरों से रोटियां इक्टठी करते। नर्म रोटियां वह धर्म माता मोरां को खिलाते और सख्त स्वयम् खाते थे। पलवां के पास ही एक गांव गढ़ में दो जातियों का झगड़ा चलता रहता था। किसी न किसी बात को लेकर आपस में दोनों पार्टियों की मार कटाई होती रहती थी। जिसके कारण गांव में रहने वाला हर व्यक्ति अपने आप को असुरक्षित महसूस करता था। किसी ने सलाह दी कि यदि किसी ब्राह्मण युवक की बली दी जाए तो गांव में होने वाले लड़ाई झगड़े बंद हो सकते हैं। गांव में शांति हो सकती है। दोनों पार्टियों के कुछ लोग बली के लिए युवक की तलाश में निकल पड़े। जब वे पलवां पहुंचे तो किसी ने उनसे कहा कि इस गांव में एक गरीब महिला मोरां रहती है। उसका एक पालक लड़का है। यदि मोरां को लालच दिया जाए तो हो सकता है कि वह उस लड़के को आप के पास बेच दे। इससे मोरां की गरीबी भी दूर हो जाएगी और आप का काम भी बन जाएगा। मोरां के घर पहुंच कर उन्होंने सात अल्लियों (शायद स्थानीय सिक्का) में बावा जियो को खरीद लिया। उन्होंने मोरां को और भी बहुत कुछ देने का वायदा किया। मोरां शायद अन्दर की बात नहीं जनती थी कि यह लोग बावा जियो को अपने साथ क्यों ले जा रहे हैं। वह तो इस बात पर प्रसन्न थी कि उसका भविष्य आराम से गुजर जाएगा।

मोरां जंगल में बावा जी के पास गई और कहा, मैंने तुम्हें बेच दिया है। अब यह तुम्हारा धर्म है कि इन लोगों के साथ चले जाओ। बावा जी ने अपना डंडा तथा चादर मोरां को दी और उन लोगों के साथ चल पड़े। मोरां ने एक मीठा रोट (बड़ी रोटी) पका कर उन लोगों को दिया और कहा कि बावा जी को मीठा बड़ा पसंद है। यदि यह कहीं पर रुक जाएं तो मीठे रोट का एक टुकड़ा इसे खाने को दे देना। बावा जी उन लोगों के पीछे ऐसे चल रहे थे जैसे कोई बकरा कसाइयों के पीछे चलता है। कुछ समय के बाद वे गढ़ पहुंचे। अगले दिन बावा जी की बली देने के लिए दोनों पार्टियों के लोग गांव के बाहर निश्चित स्थान पर पहुंच गए। उन्होंने खेतों में काम करने वाले एक नौकर के हाथ में छुरी देते हुए कहा कि इस बालक की गर्दन को काट दो। नौकर छुरी को हाथ में लेकर सोचने लगा कि मैं ब्रह्म हत्या का पाप अपने सिर क्यों लूं। वह बोला, छुरी तेज नहीं में कुछ आगे चलकर एक पत्थर पर इसे तेज करता हूं। यह कहकर वह पत्थर की तलाश में उन लोगों से कुछ आगे निकल गया और छुरी को फैंककर वहां से भाग निकला। फिर उन लोगों ने एक कटार से बावा जी की गर्दन पर वार किया। बावा जी की गर्दन कट कर धड़ के साथ लटकने लगी। बावा जी पर वार करने वाले वहां से भाग खड़े हुए और बावा जी भी उनके पीछे भागने लगे। वहां कलसी जाति का एक व्यक्ति जंगल में लकड़ियां काट रहा था। उसने कुछ लोगों को भागते हुए अपनी ओर आते देखा तो डर गया। जब वे लोग पास आए तो उन्होंने लकड़हारे को कहा, हमारे पीछे एक धड़ आ रहा है जिसके साथ गर्दन लटक रही है। यदि वह हमारे बारे में पूछे तो कहना कि इधर से कोई नहीं गुजरा और यदि तू ने सच्च बोला तो हम तुम्हारी गर्दन भी काट देंगे। जब बावा जी लकड़हारे के पास पहुंचे तो उन्होंने पूछा कि यहां से कुछ लोग तो नहीं गुजरे। उत्तर में लकड़हारे ने झूठ बोल दिया। बावा जी को महसूस हुआ कि यह व्यक्ति झूठ बोल रहा है। लकड़हारा उसी समय अन्धा हो गया। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। वह जोर जोर से चिल्लाने लगा। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और बावा जी को याद करके कहने लगा, मैंने झूठ बोला है, मुझे क्षमा कर दें। यदि मुझे दिखाई देने देगा तो मेरी आने वाली पीढ़ियां आपको कुल देवता के रूप में मानेंगी। बावा जी ने उसे क्षमा कर दिया और वह ठीक हो

गया। उस समय बावा जी बड़े कष्ट में थे। उन्होंने गुरु गोरखनाथ जी को याद किया। गुरु जी ने बावा जी की सहायता के लिए अपने शिष्यों को भेज दिया।

बिच बनी दे आले मारे बोली ओह जियो भाई।
नाथा जे छड़ाए धड़ा दा मुंडी तूं मेरा धर्म दा भाई।।

नाथों ने थैले में से छुरी निकाली और गर्दन को धड़ से अलग कर दिया। बावा जी का धड़ अब भी भाग रहा था। जब धड़ तालाब के पास पहुंचा तो वहां कुछ स्त्रियां पानी भर रही थीं। बिना गर्दन के धड़ को अपनी ओर आते देख वे डर गईं और घड़े तालाब पर ही छोड़कर घरों को भाग गईं।

गांव के लोग भी तालाब के पास इक्टठे हो गए। धड़ और गर्दन को संस्कार के लिए उस स्थान पर लाया गया जहां बावा जी का मंदिर बना हुआ है। बनी में से लकड़ियों को इक्टठा करके चिता तैयार की गई। बड़े नाथ जी ने बाकी दो नाथों को कहा तुम चलो मैं आता हूं। जब कुछ समय तक बड़े नाथ जी नहीं आए तो दोनों नाथ उस स्थान पर पहुंचे जहां चिता जल रही थी। क्या देखते हैं कि बड़े नाथ जी भी चिता में जल रहे हैं। उनको चिता में जलते देख छोटे दो नाथ भी बावा जी की चिता में जलकर भस्म हो गए।

कहते हैं कि जिस जाति के लोगों ने गढ़ की दोनों पार्टियों को बली के लिए बावा जियो नाथ को खरीदने के लिए मोरां का पता दिया था उसको अनगिनित कष्टों से दोचार होना पड़ा। उनके घरों में अंधी संतान पैदा होती थी। उन्होंने बावा जी के दरबार में जाकर नाक रगड़े, क्षमा मांगी तब जाकर बावा जी ने उन पर दया की और उनको संकटों से मुक्ति दिलाई।

बावा जी के दरबार में सच्चे दिल से जो मांगो मिलता है। मनोकामना पूरी होने पर श्रद्धालु अनाज, मिठाई, फल फूल तथा नकदी चढ़ाते हैं। धोती, गड़वा तथा वस्त्र पुजारियों को देते हैं और ब्राह्मणों को भोजन खिलाते हैं। ब्राहमणों के अतिरिक्त भी कई जातियों के लोग बावा जियो नाथ को अपना कुल देवता मानते हैं और मेल के अतिरिक्त अन्य धार्मिक पर्वों पर बावा जी के दरबार में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। बावा जी के चमत्कारों से निसंतान श्रद्धालुओं को संतान का सुख प्राप्त हुआ और उनके सभी बिगड़े काम बने। बावा जी सदा अपने भक्तों के अंग संग रहते हैं और संकट की घड़ी में उनकी सहायता करते हैं।

मंदिर बावा भरो जी

जम्मू क्षेत्र साधु संतों तथा पीरों फकीरों की तपस्या स्थली रहा है। इस पवित्र धरती पर कई महान आत्माओं ने जन्म लिया जिन्होंने यहां रहने वाले लोगों को धर्म तथा सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। लोगों ने उनकी याद में मंदिरों और देहरियों का निर्माण किया। लोग उनको कुल देवताओं तथा कुल देवियों के रूप में पूजने लगे। उन्हीं महान विभूतियों में बावा भरो का नाम भी बड़े आदर तथा सत्कार से लिया जाता है जिन्होंने मानव जाति के कल्याण तथा दुखियों के दुखों को दूर करने के लिए इस धरती पर जन्म लिया।

बावा भरो का पवित्र स्थान जम्मू से लगभग 20 किलोमीटर दूर जम्मू अखनूर सड़क पर बावे के जाड़ में स्थित है। यह वही भूमि है जो जम्मू के जागीरदार महताबीर सिंह ने बावा जित्तो को खेती बाड़ी के लिए दी थी। बावा जित्तो ने मेहनत करके सदियों वीरान पड़ी उस जमीन से ढेरों अनाज पैदा किया तो बीर सिंह की नीयत खराब हो गई और वह चौथा भाग लेने के बजाए पैदावार का आधा भाग लेने की जिद्द करने लगा। दुखी होकर बावा जित्तो ने वहीं अनाज के ढेर पर अपने पेट में छुरा घौंप पर आत्महत्या की थी। यहां एक सरोवर भी है जिस में स्नान करने से कई शारीरिक कष्ट दूर होते हैं। बावा जित्तो के बाद किसी ने भी उस भूमि पर खेती बाड़ी नहीं की। इस स्थान की पवित्रता को देखते हुए कई जातियों से संबंध रखने वाले लोगों ने अपने कुल देवताओं, कुलदेवियों तथा सजौतियों की देहरियों तथा मंदिरों का निर्माण यहां किया हुआ है। सैंकड़ों की संख्या में यहां छोटे तथा बड़े मंदिर दिखाई देते हैं जहां विभिन्न जातियों के लोग अपनी अपनी सुविधा के अनुसार निश्चित दिनों या त्यौहारों के अवसर पर इक्टठे होकर हवन यज्ञ तथा भंडारों का आयोजन करते हैं और वहां स्थापित मूर्तियों, पिंडियों तथा मोहरों पर श्रद्धा सुमन अर्पित करके पूजा अर्चना करते हैं। इसी पवित्र स्थान पर बावा भरो जी के मंदिर का निर्माण किया गया है जो रतन बिरादरी के कुल देवता हैं। मंदिर के भीतरी भाग को बड़े ही अच्छे ढंग से सजाया गया है। सामनी दीवार के साथ गुलाबी रंग की टायलों के मध्य ऊंचे स्थान पर बावा जी की दो पिंडियों की स्थापना की गई है जिनको सुन्दर वस्त्रों

तथा फूलों से सजाया गया है। दीवारों पर देवी देवताओं के चित्र लगे हैं।

धूप, दीप तथा फूलों की सुगन्ध से आस-पास का वातावरण शुद्ध रहता है।

यहां आकर श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति मिलती है। बावा जी के दरबार में उपस्थित होकर श्रद्धालु अपने परिवार की उन्नति तथा समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। साथ ही बरामदे में एक छोटी सी देहरी में माता सजौती की मूर्ति की स्थापना की गई है। मंदिर परिसर में पवित्र शीशम का वृक्ष है जिस के नीचे श्रद्धालु अपने लड़कों के मुंडन संस्कार करते हैं। यहां एक हवन कुंड भी है जहां मेल के अवसर पर हवन किया जाता है। हवन तथा बावा जी की पूजा के बाद भंडारे का आयोजन किया जाता है। जिसमें बिरादरी के सभी लोग स्त्रियां, पुरुष तथा बच्चे इकट्ठे भोजन करते हैं। अपने घरों को लौटते समय श्रद्धालु कुछ भोजन प्रसाद के रूप में घरों में भी ले जाते हैं। रतन बिरादरी के वरिष्ठ सदस्य तथा बावा जी के मंदिर के प्रबंधों की देख रेख में प. ज्ञान चंद जी की महत्वपूर्ण भूमिका है जो अपने सहयोगियों के साथ मिलकर इस स्थान के विकास में बहुत अधिक रुचि लेते हैं। उनके यत्नों से मंदिर परिसर की शोभा में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। उन्होंने ही बिरादरी के अन्य लोगों को साल में दो बार नवरात्रों में नवमीं के दिन मेल के अवसर पर मिलकर बैठने तथा बिरादरी की भलाई बेहतरी के बारे में सोचने की प्रेरणा दी है। अब विभिन्न शहरों तथा गांवों में रहने वाले रतन बिरादरी के लोग एक दूसरे को जानने तथा पहचानने लगे हैं और मेल के दिन बड़ी संख्या में बावा जी के पवित्र स्थान पर आने लगे हैं।

प. ज्ञान चंद जी के अनुसार बावा भरो रतन बिरादरी के कुलदेव हैं जिनके पूर्वज हिमाचल के रहने वाले थे और कांगड़े वाली माता ब्रजेश्वरी के पुजारी थे। सबसे बड़े बजुर्ग का नाम पं. सुदर्शन था जो वहां के राजा नारायण चंद कटोच के मित्र तथा राज पुरोहित थे। नारायण चंद प्रजा पालक तथा न्याय प्रिय राजा थे और हर समय प्रजा के हित के बारे में सोचते रहते थे। वह धर्म कर्म के कामों में विशेष रूचि लेते थे और इस संबंध में वह पं. सुदर्शन जी से सलाह मशवरा करते थे। महलों में धार्मिक पर्वों का आयोजन किया जाता था और राज परिवार के सदस्य लोगों से मिलकर यह पर्व मनाते थे। इन अवसरों पर गरीबों में अनाज, धन तथा वस्त्र बांटे जाते थे।

एक बार राजा नारायण चंद तीर्थ यात्रा पर गए। जाने से पहले उन्होंने राज गद्दी अपने भाई हरीश चंद्र को दे दी। छ. महीने के बाद यात्रा की समाप्ति पर जब वह अपने परिवार के सदस्यों के साथ वापिस लौटे तो उन्होंने अपने भाई को राज गद्दी वापिस देने को कहा। राज गद्दी तो एक तरफ उसने नारायण चंद को पूछा तक नहीं। कुछ दिनों के बाद पं. सुदर्शन जी राजा नारायण चंद से मिलने गए। उनकी हालत को देखकर सुदर्शन जी भी दुखी हुए। उन्होंने नारायण चंद से पूछा कि अपने भाई से राज गद्दी वापिस क्यों नहीं ली ? नारायण चंद ने उत्तर दिया, मैंने उसे राज गद्दी वापिस करने के लिए कहा तो था परन्तु उसने साफ इंकार कर दिया। जब से हम तीर्थ यात्रा से लौटे हैं उसने हमारी कोई खबर नहीं ली और न ही उसके परिवार वाले हमारी कुशलता पूछने आए हैं। मैंने तो भाई समझ कर उसे गद्दी पर बिठाया था परन्तु वह तो मेरे साथ शत्रु जैसा व्यवहार कर रहा है। जिस जगह पाप है अधर्म है और अपने पराय हो जाएं वहां रहना उचित नहीं। जहां न्याय नहीं वहां से चले जाना ही अच्छा है। यदि लड़ते हैं या मुकदमे बाजी करते हैं तो लोग तमाशा देखेंगे। खानदान की बदनामी होगी कि भाई आपस में लड़ रहे हैं। यह सुनकर सुदर्शन जी ने कहा कि यदि आप यह स्थान छोड़ रहे है तो मैं भी आपके साथ चलूंगा आप के बिना मैं यहां रहकर क्या करुंगा। आप मेरे मित्र हैं जहां आप रहेंगे वहीं मैं भी रहूंगा।

जब दोनों परिवार कांगड़ा से चले तो उन्होंने माता ब्रजेश्वरी से प्रार्थना की, हे माता, हमारी रक्षा करना। हमारे अंग संग रहना। हम यहां से प्रस्थान कर रहे हैं। उस समय आकाशवाणी हुई। यदि मुझे मानोगे तो मैं तुम्हारी रक्षा करुंगी। राजा नारायण चंद तथा पं. सुदर्शन ने कहा, हे माता, आपने आवाज़ तो दी परन्तु बाहर रह कर हम आपकी स्तुति किस प्रकार करें। आप तो हमारी पूजनीय हैं। प्रदेस में हमारे सिर पर दया का हाथ रखना। माता ने कहा विधि पूर्वक मेरी पूजा करते रहो। जिस समय किसी बच्चे का विवाह करो तो हवन या बुटने के साथ मेरे नाम की छिल्ली (बकरी का बच्चा) के दर्शन करना। धूप जला कर पुष्प आदि छिल्ली पर चढ़ाना। उसकी पूजा करना (जैसे बाहुफोर्ट जम्मू में होती है) तो मैं अवश्य आपको दर्शन दूंगी। उस समय आप की हर प्रार्थना स्वीकार होगी। दोनों मित्रों ने माता के दरबार में यह प्रण किया कि जब तक चांद सितारे रहेंगे तब तक

वे एक साथ रहेंगे। उनकी दोस्ती की साक्षी माता ब्रजेश्वरी जी हैं। राजा नारायण चंद ने अपने पुरोहित के दायें पैर का अंगूठा धुलाया और तीन चुलियां पुरोहित जी से चरणामृत के रूप में ग्रहण करके माता के सामाने पं. सुदर्शन के कुल पुरोहित और मित्रता के संबंध को और दृढ़ बना लिया था।

दोनों मित्र सपरिवार थोड़े बहुत सामान तथा नकदी के साथ कांगड़ा छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर रहने के लिए चल पड़े। चलते चलते वे जम्मू राज्य के पास स्थित अम्बारां गांव पहुंचे। राजा नारायण चंद के दिल में विचार आया कि जम्मू में राजपूत राजा का शासन है क्यों न उसकी सहायता ली जाए। ऐसा विचार करके वे जम्मू के राजा के पास गए परन्तु उसने उनकी प्रार्थना पर कोई ध्यान न दिया इसलिए राजा नारायण चंद तथा पं. सुदर्शन वापिस अम्बारां आ गए। चंद दिनों के बादे वे अम्बारां को छोड़कर किसी और स्थान की ओर चल दिये। चलते चलते वे भिम्बर तहसील के एक गांव लूरा पहुंचे। वे छः महीने तक उसी गांव में रहे। जो रुपया पैसा वे अपने साथ लाए थे वह समाप्त होने लगा इसलिए वे आभूषण बेचने पर मजबूर हो गए। राजा नारायण चंद ने अपने एक नौकर को बाजार में आभूषण बेचने के लिए भेजा। जब नौकर जोहरी की दुकान पर गया तो आभूषणों को देखकर जोहरी हैरान रह गया। वह नौकर से बोला, यह आभूषण तो किसी राज परिवार के मालूम होते हैं। तुम्हारे पास यह कैसे आए। तुमने जरूर इनको चुराया है। मैं अभी तुम्हारी शिकायत करता हूं। जोहरी ने नौकर को राज दरबार में पेश कर दिया। नौकर ने सारी बात राजा श्रीपद को सुना दी। नौकर की बात सुरकर राजा ने अपने सिपाहियों को आज्ञा दी कि राजा नारायण चंद को दरबार में पेश किया जाए। नारायण चंद अपने पुत्र चिबे चंद के साथ दरबार में उपस्थित हुए। उनकी बात सुनकर राजा श्रीपद को भी दुख हुआ। उसने राजा नारायण चंद से कहा कि तुम्हें आभूषण बेचने की आवश्यकता नहीं। अब तुम मेरे पास मेरे सलाहकार बनकर रहोगे। राजा नारायण चंद के साथ उनका बेटा चिबेचंद भी था। अपने सामने सुन्दर युवक को देखकर राजा श्रीपद को बड़ी प्रसन्नता हुई और उसने दिल ही दिल में राजकुमारी पूजा का विवाह चिबेचन्द से करने का फैसला कर लिया। वह कई महीनों से परेशान था क्योंकि राजकुमारी के लिए कोइ योग्य वर नहीं मिल रहा था। जब उसने राजा

नारायण चंद से बात की तो उन्होंने भी यह प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया। कुछ दिनों के बाद चिबे चंद और पूजा का विवाह हो गया। राजा श्रीपद ने अपने इच्छा पत्र (वसीयत) में लिख दिया कि उनकी मृत्यु के बाद चिबे चंद ही राज गद्दी पर बैठेगा। राजा श्रीपद ने अपने संबंधियों के रहने के लिए भी महल बनवा दिया। एक दिन चिबे चंद ने राजा श्रीपद से कहा कि उनके कुल पुरोहित पं. सुदर्शन भी सपरिवार अपना घर छोड़कर हमारे साथ आए हैं। हम चाहते है कि उनको भी यहां रहने के लिए जगह मिलनी चाहिए। पं. सुदर्शन जी पिता के मित्र भी हैं। हम चाहते हैं कि वह भी हमारे साथ रहें। राजा श्रीपद ने कहा, लूरा ब्राहमणों का गांव है। वहां हमारी दाई नैनावती रहती है। बहुत बड़ी जयदाद की मालिक है वह। उससे मांगो। यदि वह गांव में कुछ स्थान दे देती है तो पं. सुदर्शन जी वहां रह सकते हैं। मैं उससे कहूंगा मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह जरूर मान जाएगी। चिबे चंद और पं. सुदर्शन जी नैनावती के पास गए और गांव में रहने के लिए कुछ स्थान मांगा जहां वह अपना घर बना कर रह सके। नैनावती ने कहा कि वह अकेली है। आप को जितनी जमीन चाहिए ले सकते हैं। मेरे मरने के बाद जो भी है सब आपका है। आप सहर्ष यहां रह सकते हैं। जहां मकान बनाना चाहें बना सकते हैं। क्योंकि पं. सुदर्शन जी ने रहने के लिए मांग कर स्थान लिया था इसलिए वह गांव बाद में लूरा के स्थान पर मंगलूरा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। वहीं राजाओं के पुरोहित रहने लगे। श्रीपद के बाद चिबे चंद ने वहां जो महल बनवाया उसका नाम कांगड़ा महल रखा।

चिबे चंद के बाद उसकी दस पीढ़ियों ने वहां राज किया और अंतिम राजा धर्म चंद्र हुआ। इसके बाद पारिवारिक झगड़ों के कारण वहां बहुत समय तक अफरातफरी का वातावरण रहा। मंगलूरा के पुरोहित भी वहां से निकल गए। अंत में उस लड़ी के बजुर्ग बावा भरो ही मंगलूरा रह गए। उनका परिवार बढ़ता गया। बावा भरो जी बड़े मेहनती तथा ईमानदार व्यक्ति थे। जिमींदारी के साथ-साथ वह साहूकारी भी करते थे। खेती बाड़ी के साथ साथ प्रभु भक्ति में लीन रहते थे। माता ब्रजेश्वरी की उन पर अपार कृपा थी। वह अपने दिव्य चमत्कारों से दुखियों के कष्ट दूर करते और सबके सुखी जीवन की कामना करते थे। उनके दरबार से कोई खाली नहीं हाथ नहीं लौटता था वह सबकी मनोकामनाएं

पूरी करते थे। एक बार भारत के किसी भाग से कोई व्यापारी उस क्षेत्र में आया जहां बावा भरो जी रहते थे। उसको व्यापार में घाटा पड़ गया या व्यापार के लिए पैसे की कमी महसूस हुई तो उसने कुछ लोगों से आर्थिक सहायता मांगी परन्तु किसी ने उसकी सहायता नहीं की। किसी ने उसको बावा भरो का पता दिया। व्यापारी पूछताछ करता बावा जी के पास पहुंचा। अपने सामने एक साधारण व्यक्ति को देख व्यापारी समझा कि लोगों ने उसके साथ मजाक किया है। परन्तु जब उसे असलियत का पता चला तो उसने बावा जी से आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थना की। बावा जी ने छः खचरों पर लाद कर चांदी के सिक्के व्यापारी को दे दिए। व्यापारी अपने देश को चला गया। बावा के घर वाले बावा से नाराज हो गए कि उन्होंने बिना लिखे पढ़े इतनी बड़ी राशि एक अनजान को दे दी। बावा जी साफ दिल के व्यक्ति थे और इस बात पर विश्वास करते थे कि जिस प्रकार मैंने सच्चे दिल से उसको राशि दी है वह भी उसी प्रकार ईमानदारी से मुझे यह धन लौटा देगा। कई महीने बीत गए परन्तु वह व्यापारी राशि वापिस करने नहीं आया। बावा जी को घर वालों की बातें सुननी पड़ रही थीं। इसलिए बावा जी एक दिन उस शहर की ओर निकल पड़े जहां व्यापारी रहता था। वह दिल ही दिल में प्रार्थना कर रहे थे कि माता मेरी लाज रखना। जब बावा ज़ी जम्मू के करीब पहुंचे तो उन्होंने व्यापारी के मैनेजर को अपनी ओर आते देखा। जब वह पास आया तो उसने बावा जी को प्रणाम किया और सारी धन राशि बावा जी के हवाले कर दी जो उसके कारिन्दों ने अपने कंधों पर उठाई हुई थी। बावा जी राशि लेकर मंगलूरा लौट आए। वह इस बात पर प्रसन्न थे कि उनकी इज्जत माता ने बचा ली। उन्होंने सोचा कि अब यह जीवन बेकार है। उन्होंने नाई को बुलाया। हजामत करवाई और एक शीशम के वृक्ष के नीचे ही खड़े-खड़े अपने प्राण त्याग दिए। नाई ने अन्य गांववासियों की सहायता से बावा जी का अंतिम संस्कार किया। प्राण त्यागते समय बावा जी ने कहा कि मेरी बिरादरी के लोग अपने लड़कों के मूंडन संस्कार इसी शीशम के वृक्ष के नीचे किया करेंगे। नाई को कह दिया कि यह संदेश सब तक पहुंचा देना। जिस स्थान पर बावा जी का संस्कार हुआ था वहां उनकी याद में एक देहरी का निर्माण किया गया और बिरादरी के सभी लोग उनको कुलदेवता के रूप में मानने

लगे। बावा दया राम जी भिम्बर गए और वहां से एक पत्थर (पिंडी) ले आए जिसे देवा के ठाकुर द्वारे में रखा गया। इसके दो महीने बाद 1947 के फसाद शुरू हो गए तो बिरादरी के लोगों को अपने घर छोड़कर अम्बड़्याल, मथुरा, वृन्दावन जम्मू तथा देश के अन्य भागों में जाना पड़ा। सारी बिरादरी बिखर गई। पं. ज्ञान चंद जी ने कहा कि एक बार उनकी कमर में दर्द उठा जो थमने का नाम ही नहीं लेता था। फौजी अस्पताल में भी इलाज करवाया परन्तु कोई लाभ न हुआ। आखिर उन्होंने बावा जस देव के दरबार में जाकर प्रार्थना की तो वहां चेले ने कहा कि पहले वह अपने कुल देवता को मनाएं तब दर्द से छुटकारा मिल सकता है। उन्होंने बिरादरी के लोगों को सूचित कि बावे (बावा जित्तो) के जाड़ में बावा भरो की पिंडियों की स्थापना करनी है। इसलिए सब सहां इक्ट्ठे हो जाएं। फिर उन्होंने कुछ ईटें, सीमेंट तथा थोड़ा सा सरिया एक रेहड़े पर लाद कर बावे के जाड़ तक पहुंचाया और देहरी का काम शुरू करवा दिया। देहरी के निर्माण हेतु पहले बावा जित्तो के मंदिर के पास खुदाई करवाई गई तो वहां से दो नाग निकले इसलिए उस स्थान को छोड़ दिया। इसके बाद वर्तमान स्थान पर 4 X 4 फुट की एक छोटी सी देहरी का निर्माण करके वहां बावा भरो की याद में 2 पिंडियों की स्थापना की। पिंडियों को जीवा दान देने के लिए नवरात्रों की नवमीं का दिन निश्चित हुआ उस दिन बिरादरी के बहुत से लोग इस स्थान पर आऐ और विधि पूर्वक हवन यज्ञ के साथ भण्डारे का आयोजन भी किया गया।

बावा जी के परिवार की ही एक बजर्ग महिला ने किसी को जगा दिया कि बावा जी का स्थान तो बन गया परन्तु उसकी आत्मा अभी भटक रही है। इसलिए उसका स्थान बना कर उसकी भी पूजा कि जाए ताकि उसकी आत्मा को भी शांति मिले। उसकी पूजा करने से बिरादरी के सब लोग फलें फूलेंगे। मां सजौती की इच्छानुसार बावा जी के मंदिर के साथ ही उसकी भी देहरी बनाई गई, जिसमें मां सजौती की मूर्ति की स्थापना की गई। रतन बिरादरी (भारद्वाज गोत्र) के लोग सपरिवार साल में दो बार नवरात्रों की नवमीं के दिन यहां आते हैं और बावा भरो जी की पूजा, हवन यज्ञ तथा भण्डारे का आयोजन करते हैं। बावा जी का दरबार बिना किसी भेद भाव के सब के लिए खुला है। सच्चे दिल से की गई प्रार्थना बावा जी स्वीकार करते हैं और सबकी मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

मंदिर मां सजौती-कीर पिंड

जम्मू क्षेत्र में रहने वाले डुग्गर वासी अपनी वीरता के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं जो मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति देने से भी पीछे नहीं हटते। अपनी आन तथा शान को कायम रखने के लिए वे अपना सिर कटा सकते हैं परन्तु शत्रु के आगे घुटने टेक कर गिड़गिड़ाना उनको स्वीकार नहीं। डुग्गर के वीर जवानों के साथ साथ यहां रहने वाली महिलाएं भी आत्म रक्षा के लिए बड़ा बलिदान देने को तैयार रहती हैं। इन महिलाओं ने भी अपने देश, धर्म तथा पतिव्रत धर्म की खातिर ऐसे ऐसे बलिदान दिए हैं जिनको रहती दुनिया तक याद रखा जाएगा। इन महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर डुग्गर वासियों पर होने वाले अत्याचारों तथा अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और उस समय के शासकों के क्रोध का शिकार हुईं। उनको अत्याचारी शासकों द्वारा पीड़ित किया गया परन्तु जन हित के लिए उन्होंने हर पीड़ा सहन की और अंत में अन्याय करने वाले शासकों को झुकने पर मजबूर कर दिया। अंत में अत्याचार तथा अन्याय करने वालों को अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी। जिन महिलाओं ने सत्य मार्ग पर चलते हुए जनता की खातिर कष्ट सहन किए और बलिदान दिए उनको लोगों ने देवियों के रूप में पूजना शुरु कर दिया। कुछ महिलाओं ने पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए आत्म बलिदान दिया। उनको डुग्गर में सजौती, सेकती तथा सतबैंती आदि नामों से याद किया जाने लगा और उनसे संबंधित परिवारों ने उनकी याद में देहरियां तथा मंदिरों का निर्माण करके वहां उनके मोहरों तथा मूर्तियों की स्थापना की और उन पवित्र स्थानों पर मेलों तथा भण्डारों का आयोजन किया जाने लगा। पति की चिता पर बैठकर सती होने वाली स्त्रियों को गृहदेवी के रूप में पूजने की परम्परा न केवल डुग्गर देश बल्कि भारत के कई भागों में प्रचलित थी। बेशक हर परिवार अथवा वंश में उन कुल देवियों को पूजने की विधि अपनी अपनी है परंतु उनकी मान्यता हर स्थान तथा क्षेत्र में एक जैसी है। कुल देवियों के रूप में पूजी जाने वाली इन सतियों ने अपनी इच्छा से बिना किसी दबाव के पति के साथ अपनी जीवन लीला को समाप्त किया। उनके विचार में पति के बिना नारी अधूरी है और जीवन अर्थहीन।

वे यह समझती थीं कि पति के बिना संसार के सब सुख व्यर्थ हैं। हर शुभ कार्य करने से पहले परिवार के लोग अपनी इन कुल देवियों का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और कार्य की सफलता के लिए प्रार्थना करते हैं। उनके दरबार में उपस्थित होकर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। विवाह के बाद वर-वधु एक साथ इन कुलदेवियों की देहरियों अथवा मंदिरों में स्थापित उन के मोहरों अथवा मूर्तियों की परिक्रमा करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस अवसर पर घर के बजुर्ग तथा बच्चे भी वर-वधु के साथ आते हैं और पारिवारिक रीति के अनुसार इन देवियों की पूजा अर्चना करते हैं। कुल देवियों के पवित्र स्थानों पर यूं तो श्रद्धालुओं का आना जाना लगा रहता है परन्तु विशेष अवसरों तथा मेलों के समय यहां बड़ी चहल पहल होती है। कई स्थानों पर साल में दो बार मेले लगते हैं ऐसे अवसरों पर श्रद्धालु नया अन्न कुल देवी को अर्पण करने के बाद ही स्वयं उस का प्रयोग करते हैं। डुग्गर की जिन महान स्त्रियों ने अपने पति की चिता में बैठकर बलिदान दिया उनमें कीर पिंड गांव की मां दाती गर्बो का नाम बड़े आदर तथा सत्कार से लिया जाता है जो आज से लगभग चार सौ साल पहले पतिव्रत धर्म का पालन तथा पति के प्रति अपनी श्रद्धा तथा प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए गांव फत्तूचक्क (पाकिस्तान) में अपने पति की चिता में बैठकर सती हो गई। दाती जी का संबंध क्योंकि ककड़ बिरादरी से था इसलिए इस बिरादरी के लोगों ने दाती गार्बो को कुल देवी के रूप में मान्यता दी और कीर पिंड (आर.एस.पुरा) में देहरी बना कर वहां दाती के मोहरों की स्थापना की।

बिरादरी के बजुर्गों के अनुसार बहुत समय पहले कीर पिंड में ककड़ बिरादरी के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहते थे। उन की पत्नी का नाम गर्बो था। परिवार के लोगों का जीवन बड़ा सादा था। यह परिवार समृद्ध होने के साथ साथ धार्मिक विचारों तथा प्रभु भक्ति में पूर्ण आस्था रखता था। इस दानी परिवार के द्वार से कोई ख़ाली हाथ नहीं लौटता था। ईश्वर की कृपा से घर में किसी वस्तु की कमी नहीं थी। दुखियों का दुख दूर करके और भूखों को भोजन खिलाकर परिवार के सदस्यों को असीम प्रसन्नता का अनुभव होता था। द्वार पर हर समय साधुओं की भीड़ रहती थी। जो इच्छा अनुसार भोजन करते थे। घर की आय का बड़ा भाग दान पुण्य में चला जाता था। दाती गर्बो के पति सेना में थे। एक बार वह

एक लड़ाई में गए। वहां शत्रु के सैनिकों ने उनका सिर काट दिया। वह इस बात से भली भांति परिचित थे कि एक सैनिक की मृत्यु अकसर युद्ध क्षेत्र में ही होती है। उसकी यह भी इच्छा थी कि मृत्यु के बाद उनका अंतिम संस्कार उनकी अपनी जन्मभूमि में हो इसलिए जब उनका सिर धड़ से अलग हो गया तो एक दिव्य शक्ति से उन्होंने अपने सिर को हथेली पर रखा और घोड़े पर सवार हाथ में तलवार लिए अपने गांव की ओर चल पड़े। घोड़ा भी तेज गति से दौड़ता हुआ अपने मालिक के शरीर को जल्दी से जल्दी गांव तक पहुंचाना चाहता था ताकि मालिक का अंतिम संस्कार इच्छानुसार उनके गांव में हो सके। एक लंबा फासला तय करने के बाद जब घोड़ा फत्तूचक गांव के पास खेतों से गुजर रहा था तो कुछ स्त्रियां वहां उपले थाप रही थीं। उन स्त्रियों ने सिर को हथेली पर रखे हाथ में तलवार लिए घोड़ सवार को देखा तो हैरान रह गईं। सब एक दूसरी की ओर इशारे करके बातें करने लगीं। काम छोड़कर सब एक स्थान पर इक्टठी हो गईं और इस वचित्र दृश्य को देख दिल ही दिल में डर महसूस करने लगीं क्योंकि ऐसा दृश्य उन्होंने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। सभी बिना आंख झपकाए उधर देख रही थीं कि उसी समय धड़ धरती पर गिर गया। जब यह समाचार गांव पहुंचा तो गांव के लोग भी उस स्थान पर पहुंए गए जहां धड़ पड़ा हुआ था। कुछ लोगों ने घुड़सवार को पहचान लिया। उसी समय कीर पिंड संदेश भेजा गया। मृत्यु का समाचार सुनकर परिवार में मातम छा गया। गांव के कुछ लोगों के साथ दाती गर्बो फत्तू चक पहुंची ताकि पति का अंतिम संस्कार किया जा सके। लोग उनकी प्रतिक्षा कर रहे थे। इन लोगों के पहुचते ही विधि पूर्वक चिता तैयार की गई और बाबा जी के शव को उस पर रखा गया। पति को चिता पर देख दाती जी की आंखों से आंसुओं की झड़ी छूट पड़ी। वह सिर पीट पीट कर रोने लगी। उसे अपने चारों ओ अंधेरा दिखाई देने लगा। दाती को रोते देख वहां उपस्थित सभी लोगों की आंखें भीग गईं। पति के शव को सफेद वस्त्र में लिपटे चिता पर देख दाती परेशान हो गई। वह इस सोच में पड़ गई कि पति के बिना वह अकेली इस संसार में कैसे रहेगी। कौन उसकी इच्छाओं की पूर्ति करेगा। किस के सहारे अब वह जीवन के बाकी दिन गुजारेगी। जैसे जैसे वह इन बातों पर विचार करती उसका दिल डूबता जाता। दाती ने पक्का निश्चय कर

लिया कि वह अपने पति की चिता में बैठकर स्वर्ग सिधार जाएगी। उसके संबंधियों तथा अन्य लोगों ने बहुत समझाया परन्तु दाती ने किसी की न मानी और अपने निश्चय पर अटल रही क्योंकि महान आत्माएं जो निश्चय करती हैं सोच समझ के बाद करती हैं और एक बार यदि वह कुछ करने का प्रण कर लें तो संसार की कोई शक्ति उनके रास्ते में वाधा नहीं डाल सकती।

लोगों के लाख समझाने पर भी दाती चिता पर बैठ गई और चंद ही मिन्टों में अपने पति के साथ इस दुनिया को छोड़ कर स्वर्ग लोग की ओर प्रस्थान कर गई। सब लोग भीगी आंखों से पति पत्नी को विदा कर अपने अपने घरों को लौट आए। जिस स्थान पर अंतिम संस्कार किया गया था उस स्थान पर एक देहरी का निर्माण करके वहां दाती तथा उनके पति के मोहरों की स्थापना की गई जहां समय समय पर दाती के संबंधी तथा बिरादरी के लोग पूजा अर्चना के लिए जाते रहे। बिरादरी के वरिष्ठ सदस्य तथा दाती के सेवक श्री के.एल ककड़ के अनुसार उनके बजुर्ग कोई 200 साल तक फत्तू चक में देहरी पर जाते रहे। क्योंकि बिरादरी के लोग कीर पिंड रहते थे और देहरी फत्तूचक में थी जहां उसकी देखभाल ठीक ढंग से नहीं हो रही थी इसलिए बिरादरी के लोगों ने फैसला किया कि दाती के मोहरों को फत्तूचक से लाकर कीर पिंड में स्थापित किया जाए। दाती के मोहरों को लाने के लिए श्री ककड़ के परदादा श्री दयाला जी पुरोहित के साथ फत्तूचक गए दाती के मोहरों को इक्ट्ठा कर एक चौकी पर रखा। श्री दयाला जी ने पुरोहित जी को चौकी उठाने के लिए कहा। पुरोहित ने उत्तर दिया, शाह जी, मुझे मोहरे उठाने में कोई संकोच नहीं परन्तु दाती जी के मोहरे यदि आप सिर पर उठा लेते तो ठीक था। श्री दयाला ने उत्तर दिया कोई अंतर नहीं पड़ता, जैसा कहता हूं वैसा ही करो। पुरोहित जी ने मोहरों को उठा लिया और कीर पिंड की ओर चल पड़े। दाती जी को शायद बुरा लगा कि उसकी अपनी बिरादरी तथा परिवार के एक सदस्य ने मोहरे उठाने से इंकार कर दिया है। इसलिए कीर पिंड पहुंचते ही श्री दयाला जी की आंखों की रोशनी चली गई। वह समझ गए कि उनके अंधे होने का कारण दाती जी के मोहरों का निरादर है। इसलिए मोहरों को घर में ही रखकर श्री दयाला जी उनकी पूजा करने लगे। सुबह शाम वह मोहरों के सामने धूप दीप जलाते और नाक रगड़कर

क्षमा मांगते। एक सप्ताह तक उन्होंने बिना कुछ खाए पिए दाती की आराधना की और प्रण किया कि भविष्य में कभी ऐसी भूल नहीं करेंगे। दाती उनके भक्ति भाव से प्रसन्न हुई और उनकी प्रार्थना स्वीकार करली और उन्हें क्षमा कर दिया। उसी समय उनकी आंखों की रोशनी लौट आई। दाती का यह चमत्कार देखकर परिवार के सभी सदस्य बड़े प्रसन्न हुए और दाती की जय जय कार करने लगे। अब वह पूर्ण रूप से दाती के मोहरों के दर्शन कर सकते थे। उन्होंने दाती का धन्यवाद किया औरश्रद्धापूर्वक मोहरों के सामने शीश झुकाया। इसके बाद गांव कीर पिंड में स्कूल के साथ तालाब पर देहरी बनाकर वहां दाती के मोहरों की स्थापना की गई। कुछ समय के बाद वह देहरी गिर गई और मोहरों को उठाकर घर में ही स्थापित किया गया।

कोई पचास साल पहले बिरादरी के बजुर्गों ने दाती की नई देहरी बनाने का फैसला किया जिसके लिए गांव के बाहर हरे भरे खेतों के मध्य एक सुंदर तथा रमणीक स्थान का चयन किया गया। उस समय कीर पिंड में ककड़ बिरादरी के केवल पांच घर थे। प्रत्येक परिवार से 32 रूपए इकट्ठे करके 160 रूपए में वर्तमान देहरी का निर्माण किया गया और हवन यज्ञ तथा मंत्रों के उच्चारण के साथ विधिपूर्वक देहरी में दाती के मोहरों की स्थापना की गई। इस अवसर पर भण्डारों का आयोजन भी किया गया जिसमें ककड़ बिरादरी के अतिरिक्त गांव के लोगों ने भी प्रीति भोज किया। तब से इस पवित्र स्थान पर बिरादरी के सदस्य सपरिवार साल में दो बार दाती के दरबार में उपस्थित होकर दाती का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। दाती के दरबार में बिना किसी भेदभाव के सबकी मनोकामनाएं पूरी होती है। दाती सबके भंडार भरती है। सबको संतान का सुख देती है और कष्टों से मुक्ति दिलाती है। जब किसी पर कोई संकट आता है या किसी का बना बनाया काम बिगड़ जाता है तो वह दाती के दरबार में आकर श्रद्धापूर्वक शीश झुका कर जब दाती का गुणगान करता है तो उसके सभी दुख दूर हो जाते हैं और सब बिगड़े काम भी बन जाते हैं। सच्चे दिल से दाती को याद करने तथा उसकी पूजा करने से घर में सुख तथा शांति का वास होता है। दाती बड़ी दयालु है। सब भक्तों पर उसकी कृपा रहती है। वह सबको बढ़ते फूलते तथा समृद्ध होते देखना चाहती है।

दाती शीला वंती-दुभुज

जम्मू की पवित्र धरती पर जहां देवी देवताओं के मन्दिर, साधु संतों तथा पीरों, फकीरों की समाधियां और दरगाहें हैं वहीं उन महान पुरुषों तथा स्त्रियों की याद में बने मंदिर तथा देहरियां भी हैं जिन्होंने अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और बेरहम शासकों के सामने झुकने की बजाए अपना बलिदान दे दिया।

ऐसे महान व्यक्तियों ने इतिहास बदल डाले और अपने पीछे ऐसे पद-चिन्ह छोड़ गए जिन्होंने आने वाली पीढ़ियों का मार्ग दर्शन किया और उनको ठीक ढंग से जीने और मानवता की सेवा करने की प्रेरणा दी। सदियां गुजर जाने के बाद भी उन महान आत्माओं की यादगारों पर मेले लगते हैं और श्रद्धालु उन पवित्र स्थानों पर हवन यज्ञ और भण्डारे करके उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और उनका आशीर्वाद लेकर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। इस प्रकार के बलिदान देने वालों में स्त्रियां भी पुरुषों से पीछे नहीं रहीं और अन्याय के विरुद्ध अपने प्राणों की आहुति देकर अपना नाम सदा सदा के लिए अमर कर गईं। ऐसी महान आत्माओं की आज घर-घर पूजा होती है। दाती शीलावंती भी ऐसी ही एक महान स्त्री थी जिसने सलमेरी गढ़ के राजा लाजपाल के जुल्मों से तंग आकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली जिसे भिनालोच तथा रैणा बिरादरी के ब्राहमणों के अतिरिक्त कई दूसरी बिरादरियों के लोग कुलदेवी के रूप में पूजते हैं।

दाती शीला वंती का पवित्र स्थान जम्मू से लगभग तीस किलोमीटर जम्मू-पठानकोट राजमार्ग पर यख गांव के सामने वाली सड़क पर यख से कोई चार किलोमीटर दूर बहुत ही सुन्दर तथा आकर्षक वातावरण और हरे भरे वृक्षों के मध्य दुभुज गांव में है। इसी स्थान पर दाती अपनी दो बेटियों, नाग देवता तथा श्यामा चिड़िया के साथ आग में जलकर भस्म हो गई थी। मन्दिर में जो चित्र रखा गया है उसमें इन सबके अतिरिक्त दाती के भाई लैना का चित्र भी दिखाया गया है जो अपनी बहन तथा भांजियों की मृत्यु का समाचार सुनकर अपने गांव बगुना में ही शहीद हो गया था। बगुना में उस स्थान पर भी मन्दिर का निर्माण किया गया है जहां दाती के भाई ने शरीर त्यागा था। दाती शीलावंती के पर

प्रतिवर्ष निर्जला एकादशी के बाद आने वाली पूर्णमाशी को भारी मेला लगता है। भिनालोच बिरादरी के लोग सपरिवार यहां आते हैं। इसके अतिरिक्त दूसरी जातियों के लोग भी अधिक संख्या में दाती मां के दर्शन करने के लिए आते हैं। मेले के दिन यहां बहुत चहल-पहल होती है। दाती के दरबार में सारा दिन भजन कीर्तन होता रहता है। यूं तो यहां श्रद्धालुओं का आना-जाना लगा ही रहता है। परन्तु त्यौहारों के समय यात्रियों की संख्या अधिक होती है और मेले वाले दिन तो भारत के हर भाग से दाती के श्रद्धालु यहां आते हैं। सभी लोग दाती के पवित्र कुण्ड के जल में स्नान करके मंदिर में धूप दीप जलाकर दाती का पूजन करते हैं और साथ ही अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। दाती के नाम का रोट (आटे की मीठी रोटी) और खिचड़ी बनाई जाती है। फिर दाती मां को भोग लगाकर भण्डारा खोल दिया जाता है जहां सभी श्रद्धालु इक्टठे बैठकर भोजन करते हैं। इस समय कन्या पूजन भी किया जाता है। सायं दाती का प्रसाद लेकर श्रद्धालु खुशी खुशी अपने घरों को लौटते हैं। दाती मां सच्चे दिल से मांगी हुई हर प्रार्थना स्वीकार करती है और अपने भक्तों के घर बार अन्न और धन से भर देती है। दाती शीलावंती के भक्त हर शुभ कार्य करने से पहले दाती के दरबार में उपस्थित होकर कार्य की सफलता के लिए प्रार्थना करते हैं। जिससे उनके कार्य बिना किसी विघ्न के सम्पन्न हो जाते हैं। जिन लोगों ने दाती शीलावंती को कुलदेवी माना है वे अपने लड़कों के मुंडन संस्कार यहीं करते हैं। फिर दाती की पूजा अर्चना करने के बाद सहभोज का आयोजन किया जाता है। जिसमें सगे संबंधियों को भोजन करवाया जाता है।

इस प्राचीन तथा पवित्र स्थान के साथ कई दंत कथाएं जुड़ी हुई हैं जो वहां के पुजारी लोगों को सुनाते हैं। इसके अतिरिक्त दाती के दरबार में जोगी कारकों द्वारा दाती की कथा श्रद्धालुओं को सुनाते हैं जिसे सुनकर दाती के भक्त प्रसन्नता अनुभव करते हैं और दाती के महान बलिदान को याद करके अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं जिसने बलिदान की एक शानदार मिसाल कायम की और एक शक्तिशाली राजा से टक्कर लेकर यह सिद्ध कर दिया कि सच्चाई का सदा ही बोल बाला होता है। दाती शीलावंती के जीवन तथा बलिदान के बारे में श्री विजय बाक्रा जी ने एक नाटक लिख श्रद्धालुओं को इस पवित्र स्थान के बारे में

जानकारी दे कर बहुत बड़े पुण्य का काम किया है। उसी के आधार पर संक्षिप्त में यह पवित्र स्थान कई सौ साल पुराना है। यह क्षेत्र किसी समय सलमेरी राज्य के अधीन रहा होगा।

उन दिनों सलमेरी का राजा राज पाल था जो प्रजा की भलाई से विमुख भोग विलास और ऐश प्रस्ती में मस्त रहता था। गरीब जनता पर कई प्रकार के कर लगा रखे थे। उसके मंत्री तथा अधिकारी भी लोगों से जबरदस्ती धन वसूल करते ओर उन पर तरह तरह के जुल्म करते थे। राजा राजपाल प्रजा की किसी वस्तु पर जो उसे पसंद आ जाती अपना अधिकार समझता था और उसे प्राप्त कर लेता था उसके लिए चाहे किसी गरीब पर कितनी भी सख्ती क्यों न करनी पड़े। राजा के सामने मुंह खोलने या उसकी आज्ञा न मानने की किसी में हिम्मत न थी।

दाती शीला वंती एक विधवा ब्राहमणी थी जो अपने भाई तथा दो बेटियों के साथ बगुना गांव में रह रही थी। उसका बचपन का नाम काली था। वह सदा ईश्वर भक्ति में लीन रहती और अपने छोटे से परिवार के साथ जीवन के दिन काट रही थी। उसने एक गाय पाल रखी थी जिसकी वह प्रति दिन पूजा करने के बाद ही अन्न जल ग्रहण करती थी। उसका भाई लैना प्रति दिन गाय को चराने के लिए दूर जंगल में ले जाता था। दाती ने गाय का नाम कपिला रखा था। जिसे वह बहुत प्यार करती थी।

एक रात राजा राजपाल को सपना आया कि उसकी गौशाला में एक काली गाय आई है जो सभी मनोरथ पूर्ण करती है। अगले दिन वह अपने मंत्री केदार सिंह के साथ बाहर निकलता है। घूमते घूमते वह बगुना की ओर चले जाते हैं। वहां एक जंगल में चारवाहे गाय, भैंसें चरा रहे होते हैं। कुछ समय पहले दाती का भाई दंगल देखने अखनूर चला जाता है। गौओं के समूह में राजा को काले रंग की गाय दिखाई देती है। बिल्कुल वैसी ही जैसी उसने सपने में देखी थी। राजा मंत्री केदार सिंह की ओर संकेत करता है। केदार सिंह अपने एक चरवाहे को आज्ञा देता है कि काले रंग की गाय को बांध कर महल में ले चलो। सभी ग्वाले चुप होकर सारा तमाशा देखते हैं परन्तु किसी की हिम्मत नहीं होती की गाय को छुड़ाने का यत्न करें। दाती को पता चलता है तो वह मजबूर हो कर

स्वयं राजा के पास जाती है और उससे प्रार्थना करती है कि गाय को छोड़ दें। राजा उसे कहता है कि साधारन सी गाय के लिए तुम इतनी चिंतित क्यों हो। मैं तुम्हें इससे भी अच्छी गाय ला कर देता हूं। दूसरा यह गाय मैंने चोरी नहींकी बल्कि सबके सामने लाई है। दाती शीलावंती कहती हे मुझे मेरी कपिला गाय ही चाहिए। जब से गाय इधर आई है मैंने कुछ नहीं खाया-पिया। क्योंकि मैं उसकी पूजा किए बिना कुछ खाती ही नहीं। मेरी बेटियां भी भूखी हैं। आप मुझे मेरी गाय दे दीजिए। जब रानियों को पता चलता हैं कि जो गाय महल में लाई गई है वह एक विधवा की है तो वे राजा से आग्रह करती है कि गाय को छोड़ दिया जाए। परन्तु राजा नहीं मानता। महल में आने के बाद गाय ने भी खाना-पीना छोड़ दिया। उसकी आंखों से भी दिन रात आंसू बहते रहते थे। राजा दाती को वचन देता है कि सात दिन तक गाय तुम्हारे घर पहुंचा दी जाएगी। शीलावंती घर वापस आ जाती है और गाय के आने की प्रतिक्षा करने लगती है। दस दिन हो गए परन्तु गाय नहीं आई। गांव की स्त्रियां भी उसका मजाक उड़ाने लगीं। तंग आकर दाती शीलावंती फिर राजा के महल में जाती है और उसे कहती है कि आपने सात दिन तक गाय को छोड़नेका वचन दिया था परन्तु आज दस दिन हो गए हैं। राजा तो झूठ नहीं बोलते। राजा, उसका मंत्री तथा शीलावंती वहां पहुंचे जहां गाय बंधी थी। गाय दस दिनों की भूखी थी। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह दाती को देखने के लिए ही अब तक जीवित थी। शीला वंती को देखते ही गाय ने अपने प्राण त्याग दिए।

मृत गाय को देखकर दाती को बहुत क्रोध आया। उसने राजा की कटार छीन ली और अपने शरीर के अंगों को काटती हुई महल से बाहर निकल आई। वह गांव की तरफ भागने लगी और साथ ही राजा को बदसीस देने लगी-"राजा तुझे गाय की हत्या के साथ साथ मेरी हत्या का पाप भी लगेगा। गांव वाले भी हैरान थे और उसे समझा रहे थे कि वह ऐसा न करें। दाती श्रपनी बेटियों को लेकर दुभुज पहुंच गई। रास्ते में उसे नाग देवता मिलते हैं और कहते हैं, मां मैंने भी कपिला गाय का दूध पिया है इसलिए में भी तुम्हारे साथ चलूंगा। फिर एक चिड़िया मिलती है, वह भी कहती है मां, मैंने भी तुम्हारे हाथ से दाना खाया है मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी। दुभुज पहुंच कर दाती चिता तैयार करती है और अपनी

दोनों बेटियों के साथ उस चिता पर बैठ जाती है।'' चिता को आग लगाई जाती है। नाग देवता तथा चिड़िया भी आग में कूद जाते हैं और कुछ ही क्षणों में जलकर भस्म हो जाते हैं। मरने से पहले दाती, नाग देवता, चिड़िया तथा बच्चियां राजा को श्राप देती है, राजा तुझे पांच जीवों की हत्या लगेगी, तुम सारी सम्पत्ति से वंचित हो जाओगे, तुम्हें कुष्ठ रोग होगा और तुम्हारे यहां कोई संतान नहीं होगी।

कुछ दिनों के बाद दाती का भाई लैना अखनूर से वापस आता है, जब उसे पता चलता है कि उसकी बहन तथा भांजियों के साथ यह जुल्म हुआ है तो वह भी बगुना में अपना घर गिरा कर उसकी लकड़ी से चिता तैयार करता है और उसमें बैठ कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेता है। मरने से पहले वह भी श्राप देता है कि राजा राजपाल एक वर्ष के अंदर तेरा राजपाठ सब नष्ट हो जाएगा।

मरने के बाद दाती परोहित से कहती है कि मेरे साथ चलो और भारत के सभी तीर्थ स्थानों पर हमारे पिंडदान करो ताकि हम सब की आत्माओं को शांति मिले। परन्तु राजा के लोभ के कारण वह नहीं मानता। दाती शीला वंती जोगी लाडो के साथ सारे तीर्थ करती है और हर तीर्थ स्थान पर पिंडदान करने के बाद दुभुज लौटती है और जहां उसने आत्मदाह किया था वहां एक बावली के रूप में प्रगट होती है। राजा राजपाल, पुरोहित तथा जिन लोगों ने दाती की सहायता करने से इंकार किया था और उसका मज़ाक उड़ाया था सबको कुष्ठ रोग हो जाता है।

पुरोहित कुष्ठ रोग से पीड़ित पागलों की भांति इधर-उधर घूमता रहता है और दिन रात दाती से क्षमा के लिए प्रार्थना करता है। एक दिन भागते भागते वह बावली के पास आता है। उसे ठोकर लगती है और मूर्छित होकर गिर जाता है। उस समय दाती उसे दर्शन देती है और कहती है, ''पुरोहित जी मैं तुम्हें क्षमा करती हूं। इस बावली में स्नान करो, तुम्हारा कुष्ठ रोग दूर हो जाएगा और फिर ठीक होने के बाद इस पवित्र स्थान का प्रचार करना।'' यह कहकर दाती अदृश्य हो गई। जिन लोगों को कुष्ठ रोग हुआ था उन सबने बावली में स्नान किया और सभी स्वस्थ हो गए। हर स्थान पर दाती शीला वंती का गुणगान होने

लगा। इस पवित्र स्थान की महिमा दूर दूर तक फैल गई और श्रद्धालु यहां आकर बावली में स्नान करने के बाद मंदिर में दाती की पूजा करके अपने कष्टों से मुक्ति पाने लगे।

जिस दिन वार्षिक मेल लगती है उसी दिन लाड़ो जोगी ने पूर्णमाशी को दाती के कहने पर उसका पहला श्राद्ध किया था। अब तो यहां यात्रियों के रहने के लिए कमरे भी बना दिए गए हैं और हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। दाती शीलावंती के इस स्थान को और अधिक सुन्दर तथा आकर्षित बनाने के यत्न किए जा रहे है। दाती के श्रद्धालुओं में दिन प्रति दिन वृद्धि होती जा रही है। दाती सब का कल्याण करती है।

देहरी मंदिर दाती सत्यावती जी-छन्नी हिम्मत

जम्मू क्षेत्र में अनगिनत पवित्र स्थान देखने को मिलते हैं जहां सुबह शाम प्रभु भक्तों की भीड़ रहती है और भजन कीर्तन होता रहता है। इस क्षेत्र में देवी देवताओं के मंदिरों के अतिरिक्त विभिन्न जातियों की कुलदेवियों तथा कुल देवताओं की देहरियां और मंदिर भी है जहां समय समय पर उन जातियों के लोग अपने परिवारों के साथ आ कर पूजा अर्चना कर अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। इन पवित्र स्थानों पर प्रतिवर्ष या साल में दो बार मेलों का आयोजन भी किया जाता है। लोग अपने कुल देवताओं और कुल देवियों के दरबार में उपस्थित होकर परिवार के सुख तथा समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं।

ऐसा ही एक पवित्र स्थान कुल दाती बंगवाथिया महाजन बिरादरी छन्नी हिम्मत जम्मू में है जहां प्रति वर्ष विजय दशमी के दिन छन्नी के बंगवाथिया बिरादरी के महाजनों की मेल लगती है जिसमें करथोली, भूरेचक्क, जम्मू, कोटभलवाल तथा अन्य शहरों तथा गांवों में रहने वाले श्रद्धालु बड़ी संख्या में दाती का आशीर्वाद प्राप्त करने छन्नी आते हैं। दाती की पवित्र देहरी के सामने एक सरोवर है जो किसी समय पवित्र जल से भरा रहता था। गांव के लोग इस जल का प्रयोग करते थे और श्रद्धालु इसमें स्नान करने के बाद दाती के दरबार में स्थापित मोहरों की पूजा करते थे। अब यह सरोवर सूख गया है। दाती की देहरी पर बहुत बड़े पक्के हाल का निर्माण किया गया है जहां मेले के अवसर पर चार-पांच सौ श्रद्धालु बैठकर भंडारे का प्रसाद ग्रहण कर सकते हैं। देहरी के अंदर दाती तथा उनके पति के मोहरों की स्थापना की गई है। क्योंकि दाती सोमवार के दिन ही अपने पति की पगड़ी के साथ देवस्थान पुरमंडल में चिता पर बैठकर सती हुई थी इसलिए उसकी आज्ञा के अनुसार सोमवार शाम को विशेष रूप से इन मोहरों की पूजा की जाती है और धूपदीप जलाया जाता है।

मंदिर परिसर का वातावरण बड़ा शुद्ध तथा सुहावना है। यहां एक प्राचीन वट वृक्ष है जो शायद उसी समय का है जब दाती सती हुई थी। वट वृक्ष के साथ ही शिवलिंग की स्थापना की गई है। देहरी के भीतरी भाग को सुन्दर ढंग से सजाया गया है जहां दीवारों पर कई देवी देवताओं के चित्र लगे हैं। दाती के

दरबार में स्थापित मोहरों के दर्शन तथा उसकी पूजा करके श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति मिलती है और उनके दिल में बार-बार यहां आने की चाह पैदा होती है। दाती ने अपनी देहरी बनाने के लिए यह स्थान उस समय चुना था जब वह सती होने के लिए पुरमंडल जा रही थी और यहां थोड़ी देर के लिए रुकी थी। उसकी इच्छा के अनुसार सरतुन तालाब छन्नी हिम्मत के पास दाती की देहरी का निर्माण किया गया। उन दिनों यह स्थान बड़ा प्रसिद्ध था। रतनुचक्क, बीरपुर, पुरमंडल, चौआदी तथा अन्य गांवों के लोग इसी रास्ते से होकर जम्मू आते जाते और उसी तालाब के किनारे उगे वृक्षों की छाया में आराम करते और खाना खाने के बाद अपनी अगली यात्रा शुरू करते थे। तालाब के किनारे उन दिनों खूब चहल पहल होती थी। गर्मियों के दिनों में गांव के लोग भी इसी तालाब के किनारे दोपहर गुजारते थे।

यूं तो बंगवाथिया बिरादरी के लोग देश के हर बड़े शहर में मौजूद हैं और जब अखिल भारतीय बंगवाथिया बिरादरी की मेल बिश्नाह में कार्तिक की पूर्णिमा तथा बैशाख की पूर्णिमा को लगती है तो छन्नी में रहने वाले बंगवाथिया बिरादरी के महाजन भी उसमें शामिल होते हैं परन्तु छन्नी में रहने वालों की अलग मेल केवल विजयदशमी के दिन ही छन्नी में दाती के पवित्र स्थान पर लगती है।

छन्नी हिम्मत में रहने वाले बंगवाथिया बिरादरी के 88 वर्षिय श्री चूनी लाल जी के अनुसार उनके पूर्वज श्री मुरारी शाह, मंगा शह, जसो शाह आदि सरोर के रहने वाले थे जो वहां व्यापार करते थे।

जरूरत पड़ने पर लोगों की आर्थिक सहायता करते और उनकी गिनती क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्याक्तों में होती थी। बड़े-बड़े अधिकारियों से उनका मेल-मिलाप था और लोग उनका बड़ा आदर करते थे। कहते हैं कि एक बार वहां का जैलदार बागी हो गया और उसने सरकार को जमीन का मालिया तथा अन्य कर देने से इंकार कर दिया। उसको पकड़ने के लिए महाराजा रणवीर सिंह ने एक फौजी अधिकारी जोरावर सिंह के नेतृत्व में 200 सैनिक सरोर भेजे जो 15-20 दिन तक उस क्षेत्र में रहे। उनके खाने पीने तथा रहने का प्रबंध मुरारीशाह जी ने ही किया। जोरावर सिंह छन्नी हिम्मत का रहने वाला था और बंगवाथिया

महाजनों के साथ उनके अच्छे संबंध थे। वह जब भी सरोर जाता उसी परिवार का अतिथि होता था। उसी के कहने पर जसो शाह सरोर छोड़कर छन्नी हिम्मत में आकर बस गए जहां उनको रहने तथा व्यापार करने के लिए हर प्रकार की सुविधा दी गई। जसो शाह के तीन बेटे थे मोहर सिंह, बाबा प्रभु तथा अवतारा शाह बाबा मोहर सिंह, का विवाह तहसील सांबा के गांव नंगा में ब्योत्रे महाजनों के घर हुआ था। उनकी पत्नी का नाम बूंदां देवी था जो सती होने के बाद छन्नी में रहने वाले बंगवाथिया परिवार की कुल देवी दाती सत्यावती के नाम से प्रसिद्ध हुई। जब बूंदां देवी डोली में बैठकर छन्नी आई तो परिवार की स्त्रियों तथा अन्य सदस्यों ने उस समय के रीति रिवाजों के साथ दुल्हन का स्वागत किया। दाती की सुन्दरता ने सब का मन मोह लिया। गांव के लोग जसो शाह को मुबारक बाद देने के लिए आऐं और सारे गांव में मिठाई बांटी गई। दो दिन के बाद मोहर सिंह जी दाती को मायके छोड़ आए।

दाती मायके में थी। इधर मोहर सिंह जी बीमार हुए और कुछ दिनों के बाद स्वर्ग सिधार गए। दाती ने रात को डरावना सपना देखा कि उसके पति की मृत्यु हो गई है और लोग उसके घर शोक प्रकट करने के लिए आ रहे है। सपना देख जब दाती की आंख् खुली तो वह जोर-जोर से रोने लगी। बाहों में पहनी लाल रंग की कांच की चूड़ियां टूट गई। दाती को रोते देख घर के सभी सदस्य उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गए। छन्नी से नंगा संदेश भेजा गया। उन दिनों आने जाने के साधन नहीं थे इसलिए संदेश पहुंचने और दाती के देर से छन्नी आने के कारण मोहर सिंह का अंतिम संस्कार कर दिया गया। दाती मायके से सफेद कपड़ों में छन्नी आई। पति के बिना घर उसे काटरने को आ रहा था फिर भी उसने अपने आपको संभालने का यत्न किया और कुछ दिनों के बाद घर के काम काज में व्यस्त हो गई। रात के समय दाती की देवरानियां बावा प्रभु तथा अवतारे शाह की पत्नी सास की सेवा हेतु उसकी चारपाई पर बैठ घर की बातें भी करतीं। एक दिन दाती भी सास की सेवा के लिए उसकी चारपाई पर बैठी और उसकी टांगें दबाने लगी तो सास ने कहा, बूंदां समझ में नहीं आ रहा है कि मैं तुझे आशीर्वाद दूं या ... सास के यह शब्द सुनकर दाती को महसूस हुआ कि उसका अपमान हुआ है। वह चारपाई से उठकर कमरे में चली आई और

सुबक-सुबक कर रोने लगी। वैसे भी पति की मृत्यु के बाद कुछ लोग उनसे सीधे मुंह बात भी नहीं करते थे। घर में रह का अपमानित होने की बजाए दाती ने दिल ही दिल में अपने पति की पगड़ी के साथ सती होने का फैसला कर लिया। जब घर वालों को उसके निर्णय का पता चला तो सब हैरान रह गए। कुछ संबंधियों ने दाती को अपना निर्णय बदलने को कहा परन्तु वह न मानी। दाती ने अन्न जल छोड़ दिया और तब तक मरनव्रत रखने की घोषणा की जब तक घर वाले उसे सती होने की आज्ञा नहीं देते। दाती के गिरते स्वास्थ्य को देख उसे मायके भेज दिया गया। वहां भी दो महीने तक उसने कुछ नहीं खाया पिया। दाती की बिगड़ती दशा को देख ससुराल वालों ने उसे सती होने की आज्ञा दे दी। दाती को सफेद पालकी में छन्नी लाया गया। छन्नी हिम्मत पहुंचने से पहले दाती छन्नी कमाला में कुछ देर के लिए ब्राह्मणों के घर रुकी। वहां से उसने किसी व्यक्ति को छन्नी हिम्मत में ससुराल वालों के घर भेजा कि जा कर देख आए वहां का वातावरण कैसा है ? क्या वे बेटे की मृत्यु से दुखी हैं या मौजमस्ती में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उस व्यक्ति ने वापिस आ कर कहा कि वहां तो किसी प्रकार का शोक नहीं। सभी हंस खेल रहे हैं। स्त्रियां चरखे कात रही हैं और परिवार के अन्य सदस्य आमलों के साथ मजे से पठूरे खा रहे हैं। दाती को क्रोध आया। वह सोचने लगी कि जिनको अपने बेटे की मृत्यु का दुख नहीं वे मेरे साथ कैसा व्यवहार करेंगे। यदि में इस घर में रहूं। सती होने की तिथि निश्चित हो गई। दाती ने कहा कि वह यहां नहीं बल्कि भगवान शिव के पवित्र स्थान पुरमंडल में सती होगी। दाती को पालकी में बिठाकर पुरमंडल ले जाने की तैयारी हो गई। उसके साथ उस का देवर अवतारे शाह तथा घर के कुछ लोग भी चल पड़े। अन्तिम समय तक अवतारे शाह दाती से प्रार्थना करता रहा कि वह सती होने का निर्णय बदल कर उसके परिवार के साथ रहे और जो रूखी-सूखी वे खाएंगे उसे भी देते रहेंगे और बड़ी होने के नाते उसका आदरमान भी करते रहेंगे। परन्तु दाती अपने निर्णय पर अटल रही। जाते हुए दाती की पालकी थोड़े समय के लिए उसी स्थान पर रुकी जहां छन्नी में उसकी देहरी बनी हुई है। दाती को अपने दूसरे देवर बाबा प्रभु पर क्रोध आया जो जाते समय उसको मिलने तक नहीं आया। दाती ने प्रभु को श्राप दिया और अवतारे शाह को वरदान दिया कि

उसका खानदान फले फूलेगा। क्योंकि संकट की घड़ी में उसने मेरा पूरा साथ दिया है। पुरमंडल पहुंच कर दाती ने पवित्र देविका में स्नान किया। भगवान शिव पर जल चढ़ाया और मंदिर के सामने ही चिता बनवाई। दाती चिता पर बैठ गई और चिता के पास ही हवन शुरू हो गया। सती होने से पहले दाती ने छन्नी के बंगवाथिया परिवार के लोगों से कहा कि वे बेओत्रे महाजनों के घर बच्चों की शादी न करें और न ही उनसे किसी प्रकार का संबंध स्थापित करें। परिवार की स्त्रियां कांच की चूड़ियां न पहनें। तीनों काले वस्त्र धारण न करें और न ही शादी के समय दुल्हन के हाथों और पैरों पर मेहंदी लगाई जाए। यही कारण है कि छन्नी के बंगवाथिया महाजन लड़के का जहां विवाह निश्चित होता है लड़की वालों को संदेश भेज देते हैं कि दुल्हन के हाथों तथा पैरों पर मेहंदी न लगाऐं। विवाह के बाद नए जोड़े उसका अशीर्वाद लेने के लिए देहरी की परिक्रमा करें। हवन की आग पहले दाती के हाथों और फिर पैरों को लगी और देखते ही देखते सारी चिता में फैल गई। कुछ ही मिन्टों में दाती का शरीर चिता की आग में जल कर भस्म हो गया। बाबा प्रभु दो विवाह करने के बावजूद निसंतान ही इस संसार को छोड़कर चला गया जबकि अवतारे शाह का वंश दाती के आशीर्वाद से फलता फूलता गया। इस समय छन्नी में उसी का ही परिवार है। बंगवाथिया परिवार की पूरी वंशा वली छन्नी निवासी मास्टर मोहन लाल गुप्ता के सुपुत्र हिन्दू भूषण के पास है। इस वंशवली में छन्नी में 2002 विक्रमी को केवल पांच परिवार थे जिनकी संख्या अब 32 के करीब है और दाती की कृपा से सभी समृद्ध हैं।

दाती के चमत्कार का वर्णन करते हुए श्री चूनी लाल जी ने कहा, दाती की आज्ञा के अनुसार हर सोमवार शाम को देहरी पर दीप जलाया जाता है। एक बार किसी कारण वश शाम की बजाए रात को जब अशोक कुमार अपने एक साथी के साथ दरबार में दिया जलाने के लिए जा रहा था तो रास्ते में उसको सांप ने काट लिया। सूचना मिलते ही परिवार के लोगों ने अशोक को अस्पताल में पहुंचाया। सब परेशान थे और दाती से अशोक के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहे थे। उसी रात दाती ने चूनी लाल जी को सपने में दर्शन दिए और कहा, आप सब अपने कामों में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि देहरी पर शाम को दिया

जलाना भी याद नहीं रहता। मेरे लिए आपके पास समय नहीं होता। चिंता मत करो, तुम्हारा लड़का ठीक हो जाएगा परन्तु भविष्य में ऐसी गल्ती न हो, सारे परिवार ने दाती की देहरी पर जा कर नाक रगड़े और अशोक तीसरे दिन पूर्ण रूप से स्वस्थ हो यगा। दाती की देहरी टूट रही थी। परिवार के लोग हर सोमवार को देहरी के पास जा कर मीटिंग करते। सोच विचार होता परन्तु मरम्मत की ओर किसी ने भी ध्यान न दिया। देहरी पर होने वाले खर्च को देख कर कोई भी आगे नहीं हो रहा था। एक रात मास्टर केवल जी को जगा हुआ। दातीने कहा कि प्रतिदिन देहरी के पास बिरादरी के सदस्य इकट्ठे होते हैं परन्तु अभी तक देहरी की मरम्मत नहीं हो सकी। आप सब लोग परिवार के साथ बड़े-बड़े भवनों में सुख से जीवन व्यतीत कर रहे हैं और में सर्दी, गर्मी, वर्षा तथा धूप में रह रही हूं। मेरी देहरी स्थान-स्थान से टूट रही है। याद रखो आपकी शान, इज्जत तथा प्रतिष्ठा मेरे ही आर्शीर्वाद से है। यदि मैं मुश्किल में रहूंगी तो आप भी आराम से नहीं रह सकते। सबको अपनी गलती का एहसास हुआ और अगले दिन देहरी की मरम्मत का काम शुरू कर दिया।

कहते है कि एक बार एक शिकारी देहरी के आस-पास जंगल में शिकार खेलने आया। उसने तीर चलाया जो किसी जानवर को लगने की बजाए दाती के मोहरे को लगा। शिकारी उसी समय अंधा हो गया। उसने दाती के दरबार में उपस्थित होकर दाती के मोहरों की पूजा की और खंडित मोहरे के स्थान पर नए मोहरे बनवा कर विधि पूर्वक वहां स्थापित करवाए। दाती से क्षमा मांगी और उसकी आंखों की रोशनी पुनः लौट आई। इस प्रकार दाती के चमत्कारों से प्रभावित होकर अपने कष्टों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए अन्य जातियों के लोग भी दाती की पूजा करके उसका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए दाती के दरबार में आने लगे। दाती बड़ी दयावान है। सबको कष्ट मुक्त करती है और सबको फलते-फूलते देखकर प्रसन्न होती है। सबका भला चाहती है। समस्त मानव जाति का कल्याण करती है और अपने वंश की वृद्धि देखकर फूली नहीं समाती है।

पवित्र स्थान दाती शीलावंती-मकवाल

जम्मू क्षेत्र में स्थान-स्थान पर देवी देवताओं के अतिरिक्त कुल देवियों तथा कुल देवताओं के मंदिर और देहरियां हैं जहां समय-समय पर मेलों तथा भंडारों का आयोजन करके श्रद्धालु वहां स्थापित मूर्तियों तथा मोहरों की पूजा करते हैं। कुल देवियों तथा कुल देवताओं का संबंध किसी विशेष जाति या सम्प्रदाय से होता है जिन्होंने अन्याय तथा अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई और समय के शासकों से भी टक्कर ली और बड़े से बड़ा बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटे। कुछ महान आत्माओं को अपनी जाति तथा धर्म और वंश की मानमर्यादा एवं बढ़ाई के लिए अपनी जान की आहुति भी देनी पड़ी। ऐसी महान आत्माओं ने केवल अपनी जाति का ही नहीं बल्कि बिना किसी भेदभाव के समस्त मानव जाति का कल्याण किया। उनके दरबार से कोई खाली हाथ नहीं लौटा और उनकी कृपा से सबकी मनोकामनाएं पूरी हुईं। उनके चमत्कारों से प्रभावित होकर विभिन्न जातियों के लोगों ने उनकी यादगारें कायम कीं और उनके द्वारा निर्धारित रीति रिवाजों पर चलने का प्रण किया ताकि परिवार तथा वंश की वृद्धि हो।

ऐसी ही महान आत्माओं में दाती शीलावंती जी का नाम भी बड़े आदर तथा सत्कार से लिया जाता है जिन्होंने मलगोत्रा बिरादरी के महाजनों की बहू होने के नाते उस बिरादरी का मान बढ़ाया और पति की मृत्यु पर उसके साथ चिता में जलकर भस्म हो गई। जिस स्थान पर दाती सती हुई थी वहां पहले तो एक छोटी सी देहरी थी परन्तु अब देहरी पर ही एक बड़े मंदिर का निर्माण किया गया है। इस पवित्र स्थान पर वर्ष में दो बार यानि कार्तिक महीने की पूर्णिमा के बाद बुधवार तथा बुद्ध पूर्णिमा के बाद आने वाले बुधवार को मलगोत्रा बिरादरी की मेल लगती है। जिसमें हजारों की संख्या में जम्मू-कश्मीर तथा अन्य राज्यों से बिरादरी के लोग सपरिवार दाती के दरबार में उपस्थित होकर परिवार की उन्नति तथा समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं और दाती का आशीर्वाद प्राप्त कर घरों को लौटते हैं।

दाती शीलावंती का पवित्र स्थान जम्मू से लगभग 16 किलोमीटर दूर जम्मू

तहसील के गांव मकवाल में है। वहां तक जाने के लिए हर समय बस तथा मैटाडोर उपलब्ध है। मंदिर के आस-पास का वातावरण बड़ा शुद्ध तथा सुहावना है। शहर के शोर शराबे तथा गहमा-गहमी से दूर इस एकांत स्थान पर पहुंचकर श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति मिलती है और वे अपने आपको बड़े भाग्यशाली मानतो हैं। मेल पर यहां हवन यज्ञ तथा भंडारे का आयोजन भी किया जाता है और सारे क्षेत्र में खूब चहल-पहल होती है। मंदिर में स्थापित दाती तथा उनके पति के मोहरों के दर्शन तथा उनके सामने शीश झुकाकर भक्त खुशी से फूले नहीं समाते है।

नाथ, बीरू नाथ जी के अनुसार मलगोत्रा बिरादरी की कुल देवी, पूजनीय दाती शीलावंती का जन्म आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व तहसील अखनूर के एक गांव कलीठ में जडेल्यान महाजन परिवार में श्री रामदास के घर हुआ था। उनकी माता का नाम द्रोपदी था। दाती के जन्म पर घर में खुशियां मनाई गई और गांव में मिठाई बांटी गई। कन्या के दिव्य रूप को देख गांव तथा परिवार के लोग चकित थे। बचपन से ही वह बड़ी चतुर थी। छोटी आयु में ही उसने घर के काम काज में अपनी माता का हाथ बटाना शुरु कर दिय था और ऐसे ऐसे काम करती जो अक्सर बड़े ही कर सकते थे। सात वर्ष की आयु में उसने चरखा कातना सीख लिया था और अपनी तोतली जवान से बातें करके सबका दिल खुश करती थी। घर के लोग उसे गोदी या कंधों पर उठाकर घुमाने ले जाते और दाती भी सबके साथ घुल मिल कर रहना पसंद करती थी। कुछ बड़ी हुई तो पिता ने कन्या के भविष्य तथा विवाह के बारे में पंडितों से पूछा तो उन्होंने सलाह दी कि कन्या जब घर के काम काम में निपुन्न हो जाए तो उसका विवाह कर देना चाहिए। कन्या बड़ी भाग्यशाली है और जिस वंश में जाएगी उसका नाम रोशन करेगी। पंडितों के कहे अनुसार माता पिता ने कन्या के लिए वर की तलाश शुरू कर दी और इसी संबंध में दाती के पिता लाला राम दास को मकवाल में लाला परस राम के घर जाना पड़ा। उनका लड़का उत्तम चंद उनको पसंद आ गया। गांव के कुछ लोगों से पूछ ताछ करने पर जब उनको पूरी तसल्ली हो गई तो वह अपने गांव कलीठ आ गए।

घर आकर उन्होंने दाती की माता से कहा कि वह लड़का देख आए हैं।

लड़का गुणवान है और कारोबार में अपने पिता का हाथ बटाता है। किसी प्रकार का अवगुंण उसमें नहीं। यदि वह चाहे तो वहां लड़की का रिश्ता पक्का कर दें। दाती की माता ने उत्तर दिया, 'दाती मेरी ही नहीं आप की भी बेटी है आप जैसा उचित समझें करें। यदि आपको लड़का पसंद है तो देर किस बात की।' लाला राम दास ने पुरोहित जी को बुलाया और कहा कि वह अपनी कन्या के लिए लड़का देख आए हैं इसलिए आप जाएं और मकवाल में लाला परस राम के घर जाकर उसके लड़के उत्तम चंद से हमारी कन्या का रिश्ता पक्का कर आएं। अगले दिन पुरोहित जी लाला परस राम के घर आए। पंडित जी को भी वहीं बुला लिया गया ताकि विवाह तिथि निकाल कर शगुन के साथ ही भेजी जा सके तिथि निकाली और पुरोहित जी शगुन तथा विवाह की तिथि लेकर लौटे।

अगले दिन परस राम जी ने बरादरी के लोगों के साथ-साथ गांव वासियों को भी घर बुलाया। गुड़ का टोकरा लेकर वह कमरे में बैठे और सबका मुंह मीठा करवाया। धार्मिक रीति रिवाजों तथा वेद मंत्रों के साथ विधिपूर्वक पुरोहित जी ने उत्तम चंद के माथे पर तिलक लगाया और शगुन के थाल से छुहारा निकालकर उस के मुंह को लगाया। गांव के पंडित जी ने बिरादरी के लोगों को विवाह की तिथि पढ़कर सुनाई और सब लोग परस राम जी को मुबारकबाद देकर अपने घरों को चले गए।

निश्चित तिथि को बारात कलीठ पहुंची। दुल्हन के लिए कपड़े, गहने तथा सुहाग पुड़ा, संदूक में रखा हुआ था। बारात का शानदार तरीके से स्वागत किया गया। अगले दिन प्रातः पंडितों ने मंत्रों के साथ हवन कुंड के इर्द-गिर्द सात परिक्रमाएं करवा कर दुल्हा-दुल्हन को शादी के बंधन में बांध दिया। तीसरे दिन बारात दुल्हन की डोली के साथ मकवाल पहुंची। दुल्हन का मुंह देखने के लिए गांव की स्त्रियां इक्ट्ठी हो गई। सभी दुल्हन की सुन्दरता की प्रशंसा कर रही थीं। उत्तम चंद की माता ने अपने गले से हार उतार कर दुल्हन को पहना कर आशीर्वाद दिया। दूसरे तीसरे दिन उत्तम चंद जी दुल्हन को मायके छोड़ आए।

एक साल के बाद दाती के पिता ने दाती के ससुराल संदेश भेजा कि लड़की को ले जाएं। उत्तम चंद अपनी बहू को लेने कलीठ पहुंचा तो ससुराल वालों ने उसकी बड़ी आव भगत की। दाती भी चोर नजरों से अपने पति को निहार रही

थी और दिल ही दिल में कई सपने संजो रही थी। रात को देर तक परिवार के लोग उत्तम चंद से बातचीत तथा हंसी मजाक करते रहे।

अगले दिन प्रातः दाती के भाई ने उत्तम चंद से कहा, जीजा जी चलो बाहर घूम आते हैं। उत्तम चंद के पिता मकवाल के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। कारोबार भी अच्छा था और घर में किसी प्रकार की कोई कमी न थी। आवश्यकता पड़ने पर वह लोगों की आर्थिक सहायता भी करते थे इसलिए उत्तम चंद जब ससुराल आया तो उसके गले में सोने का हार, उंगलियों में अंगुठियां और कानों में सोने की वालियां। (डोगरी भाषा में नैनतियां) थीं। कमीज में सोने के बटन आदि देख दाती का भाई उत्तम चंद को गांव से कुछ दूर झाड़ियों में ले गया। वहां उसका वध कर दिया और सारे आभूषण उतार लिए। वध करने के बाद शव को एक वृक्ष पर लटका दिया ताकि देखने वाले यही समझें कि उत्तम चंद ने आत्म हत्या की है। जब दाती का भाई घर वापिस आया तो घर वालों ने पूछा कि उत्तम चंद जी कहां हैं जिनको तुम अपने साथ घुमाने ले गए थे तो वह तरह-तरह के बाहने बनाने लगा। कभी कहता कि वह मकवाल चले गए हैं।

रात को उत्तम चंद ने दाती को दर्शन दिये और कहा, तू आराम की नींद सो रही है और मेरा शव वृक्ष पर लटक रहा है। मुझे तेरे ही भाई ने मारा है। उसी समय दाती की आंख खुल गई और वह जोर जोर से रोने लगी। उसको रोते देख घर के सभी सदस्य उसके पास जमा हो गए। दाती विलाप कर रही थी। माता मेरे पति को प्रातः मेरा भाई घुमाने ले गया था। उसने ही उसको मार दिया है। उन्होंने मुझे स्वप्न में दर्शन दिए हैं। वह मेरे साथ झूठ नहीं बोल सकते। जो उन्होंने कहा है वही मैं भी कह रही हूं। लोग उत्तम चंद को ढूंढने निकल पड़े। कुछ समय तक तालाश करने के बाद उसका शव एक वृक्ष के साथ लटकते देखा। शव को उतारा गया और उसकी मृत्यु की सूचना मकवाल भेजी गई। शव के साथ दाती भी रोती चिल्लाती मकवाल आई। जिस स्थान पर मंदिर में दाती तथा उसके पति के मोहरे रखे हुए हैं वहीं उत्तम चंद का अंतिम संस्कार हुआ था और वहीं दाती अपने पति के साथ सती हुई थी। सती होने से पहले दाती ने अपने ससुराल वालों से कहा, मैं आपकी खातिर, आपकी इज्जत की खातिर सती हो रही हूं। मेरे पति को मेरे ही भाई ने मारा है। कल को आप यह न समझें कि गांव

में कैसी बहू आई जो उनके बेटे को खा गई। आज के बाद मायके वालों से आप कोई मेल मिलाप नहीं रखेंगे।

मृत्यु के बाद दाती की आत्मा धर्मराज के दरबार में पहुंची तो धर्मराम का सिंहासन डोलने लगा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो किसी दिव्य शक्ति ने दरबार में प्रवेश किया है। धर्मराज ने दाती को स्वर्ग तथा नरक की सैर करवाई और पूछा कि वह कहां वास करना चाहती है तो दाती ने उत्तर दिया, मुझे न स्वर्ग चाहिए न नरक मैं तो उन छत्रुओं से बदला लेना चाहती हूं जिन्होंने मेरे पति का वध किया है और मुझे सती होने पर मजबूर किया है। धर्म राज ने दाती से कहा कि वह तीर्थ यात्रा करके आए तब यह निश्चित किया जाएगा कि आप को कहा रहना है। दाती ने कहा कि वह अकेली तीर्थयात्रा कैसे कर सकती है। धर्मराज ने दाती को उसके पति से मिलाया और वह दोनों 12वर्ष तक गंगा, गोदावरी, गया तथा अन्य तीर्थ स्थानों की यात्रा करने के बाद पुरमंडल आए। जहां उन्होंने पवित्र नदियों का जल भगवान शिव पर चढ़ाया। दाती ने अपने पति से कहा जरा अपने घर की ओर ध्यान करें और देखें कि वे सब हमें याद करते हैं या भूल गए हैं। उत्तम चंद ने देखा कि उसके घर वाले रंग रलियों में मस्त हैं। कोई उसे या बहू को याद नहीं कर रहा। दाती को गुस्सा आया और बोली, मैं तो दूसरे घर से आई थी परन्तु जिनका लड़का शहीद हुआ है वे भी अपने बेटे को भूल गए हैं। दाती के प्रकोप से उसके ससुराल वालों को कई प्रकार के कष्टों से दो चार होना पड़ा। तंग आकर उन्होंने पंडित जी को बुलाया जिसने बताया कि उसके कुल में कोई सती हुई है उसको मनाओ तब जाकर परिवार में शांति होगी। दाती के ससुराल वालों ने अबदू जोगी को बुलाया ताकि दाती को मनाने का उपाय किया जा सके। अबदू जोगी ने आठ दिन तक उस स्थान पर व्रत रखा जहां दाती सती हुई थी। अबदू का स्वास्थ्य बिगड़ते देख दाती ने सोचा कि मैंने तो अपने पति के लिए प्राण त्यागे थे और यह मेरे लिए अपनी जान दे रहा है। दाती ने अबदू को दर्शन दिएं तो अबदू ने कहा, दाती जी अपने परिवार के सदस्यों पर कृपा करो, उनको कष्ट मुक्त करो। यदि यही नहीं रहेंगे तो आपका नाम कौन लेगा। यह नादान थे जो आपको भूल गए। इनको क्षमाकर दो ताकि आपका नाम चलता रहे और मलगोत्रा बिरादरी फलती फूलती रहे। इसमें वृद्धि

हो। दाती ने कहा, जिस स्थान पर मैं अपने पति के साथ सती हुई थी वहां मेरा भवन बने और हम दोनों के मोहरे वहां स्थापित किए जाएं। क्योंकि में भी बावा भोतो को मानती हूं इसलिए बावा भोतो की मेल के बाद आने वाले बुधवार को मलगोत्रा बिरादरी के सदस्य मेरे दरबार में भी मेल का आयोजन कर मेरे दरबार में उपस्थित होकर कुल की वृद्धि तथा शांति के लिए मेरा आशीर्वाद प्राप्त करें और कुल देवी के रूप में मेरी पूजा करें। सबने सहर्ष दाती के प्रवचनों का पालन करने का विश्वास दिलाया। दाती तथा उसके पति के मोहरों की एक देहरी में स्थापना की गई और मलगोत्रा बिरादरी के पुरोहित ने देहरी की सेवा संभाली। तबसे पुरोहित पुरुषोतम दास जी के बाद नृसिंह दास जी उनके बाद पं. सोभा राम जी और उनके बाद अब श्री प्रेम नाथ खजूरिया जी और उनका परिवार पूरी श्रद्धा तथा निष्ठा से इस पवित्र स्थान की पूजा तथा देख-रेख कर रहा है।

दाती के दरबार में सबको सुख तथा शांति मिलती है और वह सब की मनोकामनाएं पूरी करती है। दुखियों के दुख दूर करती है और निसंतान जोड़ों को संतान का सुख तथा सबको माला माल करती है उसके दरबार से कोई निराश नहीं लौटता।

मलगोत्रा बिरादरी के सदस्य बावा भोतो की मेल में भी शामिल होते हैं। वे अपने लड़कों के मुंडन बावा भोतों जी के पवित्र स्थान रठोआ में करते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य परिवारिक तथा धार्मिक अनुष्ठान भी वहीं करते हैं परन्तु दाती के दरबार में मुंडनों को छोड़ बाकी सभी अनुष्ठान पुनः दाती के दरबार में भी करने पड़ते हैं।

मंदिर बाबा जसदेव जी-रायपुर सतवारी

ऋषियों, मुनियों, साधु संतों तथा पीरों फकीरों की पवित्र धरती तथा महात्माओं की तपस्या स्थली के रूप में प्रसिद्ध जम्मू क्षेत्र में समय-समय पर कई महापुरुषों तथा सिद्ध योगियों ने जन्म लिया जिनके आशीर्वाद से यहां के रहने वालों को धर्म के मार्ग पर चलने तथा आपस में मिलजुल कर रहने की प्रेरणा मिली। उन महान आत्माओं ने अपनी दिव्य शक्ति से अपने भक्तों की मनोकामनाएं पूरी कीं। दुखियों के दुःख दूर किए। निसंतान दंपतियों को संतान तथा बुद्धिहीनों को ज्ञान की दौलत से माला-माल किया। उन की शरण में जो भी आया वह खाली हाथ नहीं लौटा। उनके दरबार में राजा और रंक, सब एक समान थे। उनका जन्म समस्त मानव जाति के कल्याण तथा भलाई के लिए था। उन महान आत्माओं की याद में लोगों ने मंदिरों का निर्माण किया और समय समय पर वहां मेलों का आयोजन किया जाने लगा जहां दूर दूर से श्रद्धालु आकर उनका गुणगान करने के साथ साथ आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने लगे।

ऐसी ही एक महान आत्मा तथा दिव्य शक्ति बाबा जसदेव का जन्म आज से लगभग 400 साल पहले जिला हमीरपुर तहसील भिम्बर के एक गांव देवा में एक प्रतिष्ठित चिब परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम रतन देव तथा माता का नाम शीलावंती था। यह महान आत्मा 12 वर्ष की अल्प आयु में ही भगवान को प्यारी हो गई और अपने भक्तों में बाबा जसदेव के नाम से प्रसिद्ध हुई। बाबा जसदेव जी का मंदिर जम्मू से दस किलो मीटर दूर रायपुर सतवारी में है जहां अधिकतर चिब बिरादरी के लोग रहते हैं। यह लोग बाबा जी को कुल देवता के रूप में पूजते हैं। उनके अतिक्ति अन्य जातियों तथा समुदायों के लोग भी बाबा जी के दरबार में आकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। मंदिर के आस पास का वातावरण बड़ा सुंदर तथा आकर्षक है। हरे भरे खेतों के मध्य बने इस मंदिर की शोभा देखते ही बनती है। भक्तों के बैठने तथा भजन कीर्तन करने के लिए मंदिर के सामने खुला बरामदा है। यात्रियों के ठहरने तथा विश्राम करने के लिए यहां कमरों का निर्माण किया गया है। मंदिर परिसर में 15 सतियों की देहरियां हैं जिन्होंने अपने पतियों की मृत्यु के बाद उनकी तलवार, पगड़ी या उनके किसी

वस्त्र के साथ जलती चिता में बैठकर अपने प्राणों की आहुति दी थी। इन देहरियों में सतियों के साथ उनके पतियों के मोहरों की स्थापना भी की गई है। संबंधित परिवार उन मोहरों की भी पूजा करते हैं। 1971ई. तक बाबा जसदेव जी का पवित्र स्थान देवा में ही था परन्तु 1971 के बाद जब वह क्षेत्र पाकिस्तान के अधिकार में आ गया तो बाबा जी के मंदिर का निर्माण रायपुर सतवारी में किया गया। मंदिर में इस समय बाबा जसदेव जी की सुंदर प्रतिमा की स्थापना की गई है जो घोड़े पर सवार हैं। उनके साथ ही उनके एक सेवक की प्रतिमा भी हैं। मंदिर के भीतरी भाग को सुन्दर ढंग से सजाया गया है जहां अन्य देवी देवताओं के चित्र लगे हुए हैं।

मंदिर में 24 घंटे अखंड ज्योति प्रज्जवलित रहती है। पुजारी श्री कुलदीप राज कुल के वरिष्ठ सदस्यों तथा बावा जी के सेवक प्रकाश सिंह के साथ सुबह शाम बाबा जी की आरती उतारते हैं। पूजा के समय बाबा जी के अन्य सेवक तथा गांववासी भी मंदिर में उपस्थित होकर भजन कीर्तन करते हैं। चिब बिरादरी के पुरोहित पं. ज्ञान चंद जी भी समय समय पर आकर यहां चल रहे विकास कार्यों की देखरेख करते हैं। मंदिर परिसर के विकास तथा इसे और अधिक सुंदर तथा आकर्षक बनाने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया है जो गांव वासियों तथा बिरादरी के सदस्यों के सहयोग से यहां निर्माण कार्य करती है। इस पवित्र स्थान पर साल में दो बार मेल लगती है। जिसमें जम्मू-कश्मीर राज्य के अतिरिक्त पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, मुंबई, हिमाचल प्रदेश तथा देश के अन्य भागों से चिब बिरादरी के लोग तथा बाबा जी के भक्त यहां आते हैं। एक मेल मार्गशीर्ष की पूर्णिमा से एक दिन पहले चौदश को लगती है। मेले पर यहां खूब रौनक होती है। हवन यज्ञ तथा भंडारे का आयोजन भी किया जाता है। जिसमें 10 हजार से भी अधिक श्रद्धालु शामिल होते हैं। जिन लोगों की मनोकामनाएं पूरी होती है वे ढोल तथा बाजों के साथ बाबा जी के दरबार में आते हैं। नए शादी शुदा जोड़े बाबा जी के मंदिर की परिक्रमा करके अपने सफल गृहस्थ जीवन की प्रार्थना करते हैं।

चिब राजपूत बिरादरी के कुल पुरोहित पं. ज्ञान चंद जी के अनुसार बाबा जसदेव के पिता रतन देव के पांच पुत्र थे बाबा सदे, सरवार, मानसिंह, बसो तथा

जस्सो यानि जसदेव। घर के सभी सदस्य धार्मिक विचारों के थे और ठाकुरों की पूजा के बाद ही अन्न जल गृहण करते थे। इसलिए बाबा जसदेव पर भी प्रभु भक्ति का रंग चढ़ा हुआ था। घर के लोग जब ठाकुरों की पूजा करते तो बाबा जी भी उनके साथ बैठकर प्रभु का भजन करते थे। बारह वर्ष की आयु में ही वह कई धार्मिक ग्रंथों का पाठ करना सीख गए थे। बाबा जी बड़े सुन्दर तथा भक्ति भाव से ओत-प्रोत थे। एक दिन वह स्नान करके घर आए तो अपने सिर के बालों को झाड़ने लगे। पानी की कुछ बूंदें उनकी भाभी पर पड़ीं जो आंगन में बैठी हुई थी। इतनी देर में बावा जी के बड़े भाई सदे ने घर में प्रवेश किया तो बाबा जी की भाभी ने अपने पति से शिकायत की जिसे सुनकर उसे गुस्सा आ गया और उसने जोर से एक थप्पड़ बाबा जी के गाल पर मारा। बाबा जी जमीन पर गिर पड़े और उनके मुंह से लहू बहने लगा। मां ने जब बाबा जी के मुंह से लहू बहते देखा तो उसे बड़ा कष्ट हुआ। उसने मुंह पर पट्टी बांदी। दो चार दिन के बाद जब कुछ आराम आया तो बाबा जी बाहर बच्चों के साथ खेलने निकले। कुछ बच्चों ने उनकी हंसी उड़ाई कि वह अपनी भाभी से दांत तुड़वा कर आए हैं।

बाबा जी को बड़ा क्रोध आया और तालाब की ओर भाग गए। दिल ही दिल में उन्होंने अपने प्राण त्यागने का निश्चय कर लिया था। वह सोच रहे थे कि जब तक वह जीवित रहेंगे लोग उनका मजाक उड़ाते रहेंगे। तालाब में स्नान के बाद उन्होंने पानी का लौटा भरा। घर आकर ठाकुरों की पूजा की और उनसे प्रार्थना की कि वह अब जीना नहीं चाहते इसलिए यह चरणामृत पीने से उनकी मृत्यु हो जानी चाहिए। वह जीवन भर लोगों की बातें सहन नहीं कर सकेंगे। प्रभु मुझे अपने पास बुला ले।

बाबा जसदेव की प्रार्थना भगवान ने स्वीकार कर ली और चरणामृत पीते ही उन की मृत्यु हो गई। माता ने जब ठाकुरों की चौकी के पास बाबा जी का शव देखा तो वह भी विलाप करने लगी। घर में रोना धोना देख लोग इक्ट्ठे हो गए। सब ने मिलकर बाबा जी का अंतिम संस्कार किया। देव जाति के एक ब्राह्मण का बाबा जी के घर में आना जाना था। बाबा जी की माता ने उस ब्राहम को कुछ रुपए दिए और उसे बावा जी की अस्थियों को हरिद्धार जाकर गंगा में

प्रवाहने को कहा। उस ब्राहाण ने बाबा जी की माता से अस्थियों की पोटली ले ली और मनावर की ओर चला गया। उसने वहां एक दलदल में बाबा जी की अस्थियों को फैंक दिया और स्वयं अपने संबंधियों के पास जाकर मौज मस्ती करने लगा।

बाबा जी के कुल पुरोहित पं. बिहारी लाल जी को जब बाबा जी की मृत्यु का पता चला तो वह मंगलूरा से अफसोस करने के लिए देवा आए। उसी रात बावा जसदेव अपनी माता के स्वप्न में आए और बोले, माता जी, आप तो चारपाई पर बड़े आराम से सो रही हैं और मैं गंदे पानी में पड़ा हूं। मेरी अस्थियां मनावर में एक दल दल में पड़ी हैं। उस ब्राह्मण ने मुझे यहां फैंक दिया है। इसलिए अब उस जाति से हमारा कोई संबंध नहीं रहा। उनसे मिलना जुलना, उनके साथ खाना पीना अब बंद कर दें। हमारे कुल पुरोहित यहां आए हैं। उनसे कहो कि मेरी अस्थियां हरिद्धार ले जाकर गंगा जी में प्रवाह दें। माता बोली, हम उन अस्थियों को कैसे ढूंढेगें ? तो बावा जी ने उत्तर दिया कि वह सफेद रंग का पक्षी बनकर वहां चक्कर लगाऐंगे और जिस स्थान पर वह डुबकी लगाएंगे वहां से आपको अस्थियों की पोटली मिल जाएगी। जब पं. बिहारी लाल जी अफसोस करने घर आए तो बाबा जी की माता ने स्वप्न में बाबा जी से हुई सारी बात उनको सुना दी।

पं. बिहारी लाल जी वहां गए और दलदल के पास जाकर दायें बाएं देखने लगे। कुछ देर के बाद एक पक्षी दिखाई दिया जिसने पानी में डुबकी लगाई। बावा बिहारी लाल पानी में गए और वहां से बाबा जी की अस्थियों की पोटली बाहर निकाली। पोटली लेकर पं. बिहारी लाल जी हरिद्धार चल पड़े। पैसा उनके पास नहीं था। चलते चलते प्यास लगी बाबा जसदेव जी मनुष्य रूप धारण कर एक लौटे में दूध लेकर पुरोहित जी के सामने खड़े हो गए। फिर दोनों एक वृक्ष की छाया में बैठ गए। पुरोहित जी ने कहा, मुझे प्यास तो लगी है परन्तु मैं नहीं जानता कि आप है कौन ? बावा जी ने उत्तर दिया कि वह आपके हितैषी है इसलिए आप बिना किसी झिझक के दूध पी लें। पं. बिहारी लाल जी बोले, आपने मुझ पर बड़ा उपकार किया है। इसलिए आपका नाम रहती दुनिया तक कायम रहेगा। तुम्हारा सदा गुणगान रहेगा। तुम्हारा यश दूर-दूर तक फैलेगा।

दूध पीकर पं. जी आगे चल पड़े तो बाबा जी ने पुरोहित जी से कहा कि यह लोटा भी अपने साथ ले जाएं आप काम देगा। पुरोहित जी ने लोटा ले लिया। लोटे के अन्दर झांक कर देखा तो उसमें सोने की मोहरें थीं। पुरोहित जी ने इधर-उधर देखा परन्तु बावा जी वहां से अदृश्य हो चुके थे।

हरिद्धार पहुंचकर पं. बिहारी लाल जी ने गंगा में स्नान किया। पंडे को बुलाकर पिंड दान किया और अस्थियों को गंगा में प्रवाह दिया। पानी का लोटा भरकर पं. बिहारी लाल जी 'हर की पौड़ी' पर खड़े थे तो बाबा जी उनको पुनः मनुष्य के रूप में दिखाई दिए। इसके बाद बिहारी लाल जी पिंडदान करने के लिए पेहवा तथा गया चले गए और बावा जी अपनी बिरादरी तथा भाईयों को कष्ट देने लगे। परिवार के लोगों को तरह तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। तंग आकर परिवार के लोग बावा मेइमल के दरबार में उपस्थित हुए। वहां से पता चला कि परिवार में कष्ट का कारण बावा जसदेव की अकाल मृत्यु है। इसलिए जब तक उनको नहीं मनाया जाएगा घर में शांति नहीं हो सकती। परिवार के लोगों ने बिरादरी के बजुर्गों के साथ सोच विचार करके पं. बिहारी लाल जी की सहायता से बाबा जसदेव के मोहरे बनवा कर देवा गांव में स्थापित किए। मोहरों की पूजा की जिम्मेदारी भी पं. बिहारी लाल जी को ही सौंपी गई। इसके बाद परिवार के सारे कष्ट दूर हो गए और घर में शांति हो गई। पं. बिहारी लाल जी के बाद परसिंह दास, कनैहया लाल, देवी सहाय, रुड़ा राम और फिर भुल्ला राम जी बाबा जी के मोहरों की पूजा करते रहे। इस परिवार के सभी सदस्यों की बाबा जी पर पूर्ण आस्था है और वह श्रद्धापूर्वक अपनी जिम्मेदारी को निभा रहे हैं। इस समय श्री भुल्ला राम के पुत्र पं. ज्ञान चंद जी बाबा जी के पवित्र स्थान का प्रबंध पं. बिहारी लाल जी के वंश के सभी सदस्यों की सहायता से देखते है और बिरादरी के पुरोहित के तौर पर यजमानों का मार्ग दर्शन भी कर रहे हैं। पं. ज्ञान चंद जी अपने परिवार के सभी सदस्यों की सहायता से कर्तव्यों का पालन करते हुए बाबा जसदेव के पवित्र स्थान की सेवा कर रहे हैं। पंडित देवी सहाय जी के चार पुत्र थे पं. रुड़ा राम, पं. भगत राम पं. जगत राम तथा पं. दया राम। इस समय इन सभी भाईयों के परिवारों के सदस्य भी बाबा जी के दरबार में पूजा अर्चना तथा इसकी देखभाल करते हैं।

1971ई. के बाद देवा जब पाकिस्तान के पास चला गया तो बाबा जी वहां अकेले रह गए। तब बिरादरी के लोगों को इक्ट्ठा किया गया ताकि किसी उचित स्थान पर बाबा जसदेव जी का मंदिर बनाकर वहां उनकी मूर्ति अथवा मोहरों की स्थापना की जाए। चिब बिरादरी की एक मीटिंग बुलाई गई। रायपुर सतवारी में जगीरी सिंह जी ने यह स्थान दिया और 1972 में मंदिर निर्माण का कर्या आरम्भ किया गया जो 1973 में पूरा हुआ तो विधिपूर्वक मंदिर में बाबा जसदेव जी के मोहरों की स्थापना की गई। इसके बाद 11 फरवरी 1997 में मंदिर में बाबा जी की मूर्ति की स्थापना की गई। उस समय बहुत बड़े भंडारे का आयोजन भी किया गया था। मंदिर के साथ ही बाबा जी की भाभी बदी की देहरी है जिसके कारण बाबा जी की मृत्यु हुई थी। मरने से पहले बदी ने बाबा जी से अपनी गल्ती की क्षमा मांगी थी और प्रार्थना की थी कि बाबा जी आपका नाम तो अमर हो गया है परन्तु मुझ पापिन को कौन याद करेगा। बाबा जी ने बड़ी भाभी को क्षमा कर दिया था और विश्वास दिलायां था कि तुम्हें भी लोग याद रखेंगे। मंदिर में मेरी मूर्ति की पूजा करने के बाद श्रद्धालु तुम्हारे दर्शन भी करेंगे। तभी उनकी यात्रा पूर्ण मानी जाएगी। इसलिए श्रद्धालु बाबा जसदेव के मंदिर में पूजा करने के बाद बदी की देहरी पर भी जाते है परन्तु वहां का चढ़ावा बाबा जी के पुजारी नहीं ले सकते।

बाबा जी के अनगिनित चमत्कारों से लोग बड़े प्रभावित हैं और उनके श्रद्धालुओं की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। जो सच्चे दिल से बाबा जी को याद करते है उनकी हर आशा ब़ाबा जसदेव जी पूरी करते हैं। रायपुर सतवारी में बाबा जी का मंदिर एक तीर्थ का रूप धारण कर चुका है। जिसकी यात्रा के लिए प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग आते हैं।

मंदिर बुआ दाती-चोआदी

महापुरुषों के साथ साथ डुग्गर देश में कुछ महान स्त्रियों ने भी जन्म लिया जिन्होंने अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने जालिमों के जुल्म सहने की बजाए अपने जीवन का बलिदान दिया और आने वाली पीढ़ियों को नेकी तथा सच्चाई पर चलने की प्रेरणा दी। उन महान स्त्रियों ने देवियों का स्थान प्राप्त किया और घर घर उनकी पूजा होने लगी। उनके वंशज उनको कुल देवी के रूप में मानने लगे। उनकी याद में श्रद्धालुओं ने मंदिरों तथा भवनों का निर्माण किया और समय समय पर उनके पवित्र स्थानों पर मेलों, यज्ञों तथा भंडारों का आयोजन किया जाने लगा। उनके चमत्कारों का लाभ न केवल किसी जाति विशेष बल्कि सभी जातियों तथा धर्मों के मानने वालों को हुआ और सब उनके दरबार में उपस्थित होकर उनकी कृपा से अपना जीवन सुखमय बनाने लगे। ऐसा ही एक पवित्र स्थान जम्मू से लगभग छः किलो मीटर दूर वर्तमान सैनिक कालोनी के पास चोआदी गांव में है जहां एक मंदिर में बुआ जी तथा बावा जी की मूर्तियां स्थापित हैं और जहां कार्तिक महीने की पूर्णमाशी यानि झिड़ी मेले से एक दिन पहले बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें मगोत्रा बिरादरी के ब्राहमणों के अतिरिक्त अन्य लोग भी बड़ी संख्या में बुआ जी तथा बावा जी के दरबार में उपस्थित होकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। मेले के दिन तो यहां श्रद्धालुओं की इतनी भीड़ होती है कि तिल धरने को भी जगह नहीं मिलती। उस दिन जम्मू-कश्मीर तथा भारत के विभिन्न भागों में रहने वाले तथा विदेशों से भी मगोत्रा बिरादरी के लोग कुल देवी के दर्शन को यहां आते है। सभी श्रद्धालु अपने हाथों में फल, फूल मिठाई तथा धूप दीप लेकर कतारों में खड़े बुआ जी तथा बाबा जी के दरबार में जाने के लिए अपनी बारी का इंतजार करते दिखाई देते हैं। इस स्थान की खास बात यह है कि यहां एक बहुत बड़ा बोह्ड़ का वृक्ष है जो तीन सौ साल से भी अधिक का प्रतीत होता है और छः कनाल भूमि से भी अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है। लोगों का मानना है कि यदि ऐशिया महाद्वीप में नहीं तो कम से कम भारत में इतना बड़ा बोहड़ का वृक्ष शायद ही कहीं हो। इस वृक्ष के तने का घेरा कई फुट है। थोड़े थोड़े फासले पर इस वृक्ष की टहनियां

जमीन में धंस कर जड़ों का रूप धारण कर चुकी हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो यह जड़ें तने की तरह ही वृक्ष का बोझ उठाए हुए हैं। आज भी बोहड़ का यह वृक्ष हरा भरा है और फलता फूलता जा रहा है। वृक्ष के कारण भी इस पवित्र स्थान की शोभा में कई गुणा वृद्धि हो गई है। इसी वृक्ष के नीचे एक छोटे से मंदिर में बुआ जी तथा बावा जी की सुन्दर मूर्तियां स्थापित हैं। मूर्तियों के ऊपर एक चित्र लगा है जिस में दाती जी को बावा जी के साथ सती होते दिखाया गया है। साथ ही प्राचीन समय के मोहरे हैं जिन पर बुआ जी तथा बावा जी के चित्र बने हैं। मंदिर के सारे रास्तों तथा परिक्रमा में संगमरमर लगा हुआ है।

मंदिर परिसर के बाहर जिस स्थान पर बुआ जी अपने पति के साथ सती हुई थी वहां एक तालाब है जिस का पवित्र जल कई शारीरिक कष्टों को दूर करता है। कहते हैं इस तालाब पर भी एक बड़ा बड़ा वृक्ष होता था जो अब गिर गया है। श्रद्धालु घरों को वापस जाते समय इस तालाब से मिट्टी (शक्कर) तथा जल (शरबत) चरणामृत तथा प्रसाद के रूप में ले जाते हैं। मंदिर के मुख्य द्वार के ऊपर गणेश जी की मूर्ति है। थोड़ा आगे दाईं ओर शिव मंदिर है जहां शिव लिंग की स्थापना की गई है और सामने नन्दी गण की मूर्ति है। मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए कमरों का निर्माण भी किया गया है। इस पवित्र स्थान को और अधिक सुन्दर तथा आकर्षक बनाने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया है। जो बुआ जी के भक्तों के सहयोग से जहां हो रहे निर्माण कार्यों की देख भाल करती है।

इस समय इस पवित्र स्थान के पुजारी पं. राम दास जी बड़गोत्रा हैं। यह परिवार लम्बे समय से ही इस मंदिर की सेवा कर रहा है। बुआ जी का जन्म जम्मू के पास एक गांव पटोली मगोत्रेयां में हुआ था। उनकी शादी चोआदी के समीप गांव सूंजवां में जम्बाल ब्राह्मणों के घर हुई। यूं तो यह परिवार बहुत बड़ा था। परन्तु बुआ जी का पति अपने माता पिता का इक्लौता बेटा था। अच्छा कारोबार था और गांव का प्रतिष्ठित परिवार होने के नाते सब लोग उनका आदर करते थे। गांव के साहुकार भी थे और जरूरत पड़ने पर लोगों की आर्थिक सहायता भी किया करते थे। अपने काम काज के संबंध में बावा जी को अक्सर सूंजवां के आस पास के गांवों में भी जाना पड़ता था। शादी के कुछ ही समय

बाद एक दिन बावा जी ने बुआ जी से कहा कि मुझे कुछ लोगों से पैसे लेने के लिए जाना है। हो सकता है कुछ दिन लग जाएं इस लिए तुम मायके चली जाओ। काम होने पर तुम्हें मायके से ले आऊंग। इस लिए बावा जी बुआ जी को पटोली छोड़ आए। अगले दिन वह चौआदी गांव में जुलाहों के घर पैसे लेने के लिए गए। हो सकता है उनके पास पैसे न हों या वे टाल मटोल से काम ले रहे हो। या उनके दिल में कोई बेईमानी हो इसलिए उन्होंने बावा जी से कहा कि हमारे पास पैसे नहीं। बावा जी ने बार बार उनसे कहा परन्तु उन्होंने पैसे देने से इंकार कर दिया। बावा जी भी जिद्द पर अड़े रहे कि जब तक आप पैसे नहीं देंगे में तब तक अपने घर नहीं जाऊंगा यहीं बैठा रहूंगा। बावा जी बड़े ठंडे स्वभाव के थे इसलिए उन्होंने अपने मुंह से कोई बुरा शब्द नहीं निकाला और अपने आप पर काबू रखा। जुलाहा पास ही राजपूतों के घर गया और उस परिवार के एक जाने माने सदस्य से कहा मियां जी हमारे घर चलो बावा जी हमारे घर बैठे है और इस बात पर अड़े हुए है कि जब तक हम उन्हें उनका उधार नहीं लौटाएंगे तब तक वह हमारे घर से नहीं उठेंगे। मियां ने उत्तर दिया। मैने अभी खाना खाया है कुछ देर के लिए आराम करना चाहता हूं इसलिए तुम्हारे साथ नहीं जा सकता। उस कमजोर ब्राहमण से क्या डरना। दो तीन धक्के दो और घर से बाहर निकाल दो। क्या कर लेगा तुम्हारा। जुलाहा घर लौट आया। देखा बावा जी अभी बैठे हैं। गुस्से से बोला, हमारे पास पैसे नहीं, कहां से दें, कर लो जो करना है। इस प्रकार आपसी बोलचाल के बाद झगड़ा बढ़ गया और जुलाहों ने बावा जी को मारना शरू कर दिया। फिर क्या था उनको इतना पीटा कि उनकी मृत्यु हो गई। साथ ही एक छोटा सा तालाब था वहां एक गड्डा था। गड्डे को खोद कर कुछ गहरा किया और वहीं बावा जी को दफन कर दिया और अपने घर लौट आए। बावा जी के साथ एक कुत्ता भी था। उसने यह सब कुछ अपनी आंखों से देखा था। कुत्ते ने समझादारी से काम लेते हुए पटोली की ओर भागना शुरू कर दिया और बुआ के घर पहुंच गया। बुआ रानी उस समय चर्खा कात रही थीं। कुत्ता अपने पंजों से सूत की तार को बार बार तोड़ता और बुआ के दुपट्टे के पल्लू को मुंह में डालकर बाहर की ओर खींचता। बुआ रानी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

वह कुत्ते को अपने हाथ से पीछे धकेल देती। आखिर बुआ जी की माता अन्दर आई और पूछा कि यह क्या हो रहा है। बुआ ने कहा कि यह वही कुत्ता है जो बारात में भी आया था। हमारे ही घर का कुत्ता है। मां ने कहा हो सकता है तुम्हारे पति ठीक न हों और यह तुम्हें बुलाने आया हो।

बुआ रानी की माता ने पुरोहित से कहा कि लड़की के साथ जाओ तो पुरोहित ने उत्तर दिया कि मेरे पास समय नहीं है। बुआ रानी ने पुरोहित से कहा कि आप ने नहीं जाना तो न जाओ परन्तु जब मेरा कोई दिनवार होगा तो तुम्हें कोई मुंह नहीं लगाएगा। फिर उसने भरजाई को साथ चलने के लिए कहा तो उसने उत्तर दिया कि तुम्हारा भाई घर नहीं मैं उससे पूछे बिना कैसे जा सकती हूं। बुआ ने कहा जा मैं जीते जी तेरे मुंह नहीं लगूंगी। इस लिए मगोत्रों की बहूओं को कपड़े के अन्दर से मूर्तियां तथा तस्वीरें नजर आ जाएं तो और बात है वे नंगे सिर मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकतीं। जब कोई बुआ के साथ नहीं आया तो वह अकेली ही जम्वालों के घर आ गई। उनका यह कर्त्तव्य था कि बुआ की सहायता करते परन्तु बुआ के साथ किसी ने बात तक न की। उस समय बुआ ने कहा कि मगोत्रों की लड़कियां जम्बालों के घर की बहूऐं नहीं बनेंगी हां जम्वालों की लड़कियां मगोत्रों की बहूएं बन सकती हैं। बुआ रानी कुत्ते के साथ उस स्थान पर पहुंची जहां बावा जी का मृत शरीर दफनाया गया था। कुत्ते ने अपने पंजों से मिट्टी हटाकर शव को बाहर निकाला। उस समय बड़गोत्रा परिवार के कुछ बच्चे वहां मवेशी चरा रहे थे। बुआ ने बच्चों से लकड़ियां इक्ट्ठी करने को कहा और चिता बनाई। शव को ऊपर रखा और स्वयं भी चिता पर बैठ गई और बच्चों ने कहा कि आग लगाओ बच्चों ने उत्तर हम जीवित मनुष्य को जला कर पाप अपने सिर नहीं लेना चाहते। बुआ ने कहा कि मैं खुशी से अपने पति के साथ जल रही हूं। जो मुझे मानेगा वह आपको भी मानेगा। बच्चों ने चिता को आग लगा दी तब से बड़गोत्रा परिवार इस स्थान की पूजा करता आ रहा है।

पं. राम दास जी ने बताया कि बुआ जी तथा बावा जी की मृत्यु के बाद जुलाहों के परिवार के सदस्य मरने लगे । उनके घरों को आग लगने लगी। जिस कारण वे सब यह स्थान छोड़कर चले गए। जिन लोगों ने बावा जी को मारने की सलाह दी थी वह भी बुआ जी तथा बावा जी के क्रोध से बच न सके।

उन लोगों को भी बहुत कष्ट उठाने पड़े। उन्होंने बाबा जी से अपनी गलती की माफी मांगी।

पं. राम दास जी ने कहा कि एक बार एक गुज्जरी ने उनको दाती के तालाब से मिट्टी (शक्कर) निकलवाने के लिए 5 रूपए दिये। उन्होंने रुपए जेब में डाल लिए और तालाब से शक्कर निकलवाना भूल गए। उनके शरीर में दर्द होने लगा। बहुत इलाज करवाया परन्तु कोई लाभ न हुआ। दाती के तालाब की शक्कर भी लगाई। परन्तु दर्द दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। एक दिन उन्होंने चादर ओढ़ी और दाती के दरबार में बैठ गए। आंखें बंद करके बुआ जी से प्रार्थना की। हे बुआ रानी मुझ से क्या गलती हो गई है। शक्कर लगाने से यदि मैं ही ठीक नहीं हो रहा तो मेरे हाथ से शक्कर कौन लेगा? उसी समय उनको याद आ गया कि एक श्रद्धालु ने उनको मिट्टी निकालने के लिए 5 रुपए दिए थे। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया इस लिए यह कष्ट हो रहा है। उसी समय उन्होंने तालाब से थोड़ी सी शक्कर निकाली और बुआ जी से गलती की क्षमा मांगी। कुछ दिनों के बाद वह स्वस्थ हो गए। तालाब की मिट्टी (शक्कर) की एक विशेषता यह भी है कि जो बच्चे मिट्टी खाते हैं उनको यहां लाओ और तालाब से जी भर कर मिट्टी खा लेने दो। इस के बाद वे मिट्टी खाना छोड़ देते हैं।

मंदिर परिसर में बोह्ड़ का वृक्ष कैसे पैदा हुआ इस विषय में उन्होंने कहा कि जब बुआ जी सती होने लगीं तो किसी ने कहा कि बुआ की जल्दी ही शादी हुई है क्यों कि लाल चूड़ा उस समय उनकी बाहों में था। उसी समय बुआ जी ने चूड़ा उतार कर फैंक दिया। जिस स्थान पर चूड़ा पड़ा वहां बोह्ड़ का वृक्ष पैदा हो गया।

पहले मगोत्रा बिरादरी के लोग घर से नहा कर आते थे और घर जा कर फिर नहाते थे। वे नंगे पांव यहां आते थे। पैर को कांटा भी चुंभ जाए तो स्वयं नहीं निकालते थे कोई निकाल दे तो निकाल दे। दूध पीने वाले बच्चे को दूध देते थे परन्तु कोई बड़ा यहां कोई चीज नहीं खाता था। श्रद्धालुओं को बहुत कष्ट होता था। जब मंदिर का निर्माण हुआ तो बिरादरी की उपस्थिति में कमेटी के सदस्यों ने दाती से प्रार्थना की कि तुम्हारे श्रद्धालु कष्ट में हैं। तेरा बाल बच्चा बड़ा तंग है अपने स्वभाव को नर्म करो। प्रसाद तथा चरणामृत लेने की आज्ञा दो। हलवे का

प्रसाद बनाया गया। दो चिट्ठियां बनाई गईं। एक पर इन तमाम कार्यों की स्वीकृति लेने की आज्ञा तथा दूसरी पर लिखा नहीं। दोनों चिट्ठियों को गोल करके दाती के चरणों में रखा गया फिर एक छोटी सी कन्या को एक चिट्ठी उठाने के लिए कहा गया। कन्या ने वह चिटठी उठाई जिस पर चरणामृत तथा प्रसाद खाने की स्वीकृति लिखी थी। इस प्रकार तब से यहां प्रसाद आदि खाने की आज्ञा है। इससे पहले यहां आने वाले रास्ते में किसी से बात भी नहीं करते थे।

इस स्थान पर पहले तो छोटी सी देहरी थी परन्तु बिरादरी तथा अन्य श्रद्धालुओं तथा बुआ रानी तथा बावा जी के भक्तों के सहयोग से अब यहां एक भव्य मंदिर का निर्माण किया गया है जहां सभी धर्मों के मानने वाले बड़ी श्रद्धा से दरबार में शीश झुका कर दाती जी और बावा जी का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

स्मारक बावा अम्बो जी-बाहु फोर्ट

जम्मू नगर तथा इस के आस पास कई महापुरुषों के स्मारक समाधियां तथा मंदिर हैं जिन्होंने सदा सच्चाई तथा ईमानदारी को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और लोगों को नेक इंसान बनने की प्रेरणा दी। उनका जीवन बड़ा सादा था। जो भी उनके सम्पर्क में आया और उनके बताए हुए रास्ते पर चला उसने सफलता प्राप्त की। उन महापुरुषों को दिखावे तथा बनावट से घृणा थी। वे जो काम करने का निश्चय करते उसे करके दिखाते। उसके लिए उन को चाहे कितना भी कष्ट क्यों न उठाना पड़ता। गरीबों तथा बेसहारा लोगों की सहायता करके उनको असीम आनंद का अनुभव होता था। किसी से अन्याय होता देख वे सहन नहीं कर सकते थे। लोगों को न्याय तथा अधिकार दिलाने में वे बड़ी से बड़ी शक्ति से भी टकरा जाते थे। उच्च कर्मों तथा मानव जाति के उत्थान के लिए किए गए यत्नों के कारण उन महापुरुषों की पूजा होती थी। कई जातियों के लोग उन महापुरुषों को अपने कुल देवता के रूप में भी पूजने लगे।

ऐसे ही एक महापुरुष थे अभिमन्यु गोत्र के खजूरिया पुरोहित बावा अम्बो जी जिन्होंने एक निर्दोष को न्याय दिलाने की खातिर बहुत बड़ा बलिदान दिया। उन्हें केवल इस बात की प्रसन्नता थी कि उन्होंने एक प्रतिष्ठित तथा निर्दोश व्यक्ति को राजा की कैद से छुड़ाया। यहीं नहीं बावा जी ने अपने जीवन काल में और भी महान कार्य किए जिन पर समस्त खजूरिया जाति को गर्व है।

जिस स्थान पर बावा जी रहते थे वहां आज एक मंदिर का निर्माण किया गया है जहां माघ महीने की संक्रन्ति के अगले दिन खजूरिया बिरादरी की मेल लगती है जिसमें इस बिरादरी के हजारों पुरुष, स्त्रियां तथा बच्चे बावा जी के दरबार में उपस्थित होकर पूजा अर्चना करते हैं। उस समय भजन कीर्तन, यज्ञ तथा भंडारे का अयोजन भी किया जाता है। सब लोग अपने कुलदेवता का आशीर्वाद लेते हैं और मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। बावा जी की कृपा से जिन श्रद्धालुओं की मनो कामनाएं पूर्ण होती हैं वे बाजों तथा ढोलों के साथ यहां आते हैं और यथा शक्ति चढ़ावा चढ़ाते तथा दान करते हैं। मंदिर के भीतरी भाग को बड़े ही सुन्दर ढंग से सजाया गया है। यहां बावा जी, माता

जी, नाग देवता, बावा जी के परिवार, गणेश जी, कालीवीर जी तथा अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां भी स्थापित की गई हैं जो उस समय के स्थानीय शिल्पकारों की बनाई हुई प्रतीत होती हैं। एक चौकी पर लाल वस्त्र में लिपटे पवित्र झुंडे हैं। जिनकी प्रतिदिन पूजा की जाती है। पास ही त्रिशूल है। मंदिर की भीतरी दीवारों को रंग-बिरंगी रोशनियों तथा देवी-देवताओं के चित्रों से सजाया गया है। सामने खुला आंगन है जहां दीवार के साथ अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां रखी गई हैं। यात्रियों के ठहरने के लिए कमरों का निर्माण भी किया गया है।

पद्म श्री प्रो. राम नाथ शास्त्री जी के अनुसार बावा अम्बोजी आज से लगभग 300 साल पहले बाहु किले के पास रहते थे। उस समय जम्मू पर राजा ध्रुवदेव का शासन था और बावा जी राजपुरोहित थे। जम्मू छोटा सा नगर था और राजमहल वर्तमान पुरानी मंडी में थे। राजा ध्रुव देव का लड़का रंजीत देव भी यहीं हुआ। मंदिर बनने से पहले यहां सात आठ मरले भूमि में बावा जी की छोटी सी देहरी थी जो बाहु में रहने वाले कुल लोगों के सपुर्द थी जो साल छः महीने के बाद यहां सफेदी करवाते थे और आस पास की सफाई का प्रबंध भी करते थे। लोहे का छोटा सा द्वार होता था। धूप आदि जलाने के बाद द्वार बंद कर दिया जाता था। केवल मेल के समय ही यहां रौनक होती थी। बावा जी तीन भाई थे। बावा अम्बो सबसे बड़े थे। इनसे छोटे बावा सम्बो जो शायद शम्बू का बिगड़ा हुआ नाम था और तीसरे थे बाबा सिद्ध जी जिनका का स्थान जम्मू में शिक्षा बोर्ड के पास राजपुरा मगोत्रेयां में हैं। बावा अम्बो जी के बारे में जो थोड़ी बहुत जानकारी मिली है वह जोगियों की कारकों से मिली है। उन दिनों राजाओं महाराजाओं का इतिहास तो लिखा जाता था। परन्तु इन लोगों की कहानी किसी ने नहीं लिखी। उस समय जोगियों तथा गारडियों ने इस क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया था। वे इन लोगों की कहानी को कविता में बांद कर जवानी याद करके लोगों को सुनाते थे। उनकी कारकों से ही बावा जी के जीवन के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है। राज पुरोहित के नाते बावा अम्बो जी अक्सर राजमहल में आते जाते रहते थे और राजा ध्रुव देव के साथ चौपड़ की बाजी भी लगाते थे। कभी कभी राजा, ध्रुवदेव सलाह मश्वरे के लिए भी बावा अम्बो जी को बुला लिया करते थे। राजा ध्रुव देव प्रजा पालक थे और बाकी राजाओं की तरह

घमंडी नहीं थे। वह स्वयं भी बड़ी सूझ-बूझ वाले थे और विद्वानों का बड़ा आदर करते थे। बाहु से राजमहल तक आने के लिए तवी नदी को पार करना पड़ता था। सुरजन नाम का मलाह नाव द्वारा लोगों को आर पार ले जाता था। बावा जी बड़े मनस्वि पुरुष थे। पूजा-पाठ करने में व्यस्त रहते थे। छोटा सा परिवार था जिसमें उनकी पत्नी, एक लड़की तथा जाट नौकर । थोड़ी बहुत जमींनदारी भी थी जिससे उनका निर्वाह अच्छे ढंग से हो रहा था। लोग भी उनका दिल से आदर करते थे।

एक घटना है जिससे बावा अम्बो जी प्रसिद्ध हुए और सदा के लिए अमर हो गए। कहते है कि एक दिन दो सिपाही एक व्यक्ति को किसी दूर के गांव से पकड़ कर राजा ध्रुवदेव के दरबार में ले जा रहे थे। वे सब उसी रास्ते से गुजरे जहां बावा जी का घर था। जिस व्यक्ति को पकड़ कर ला रहे थे वह रल्ली खतरी था और अपने क्षेत्र का प्रसिद्ध व्यापारी था और कपड़े की दुकान करता था। उस व्यक्ति को प्यास लगी हुई थी इस लिए वह बावा जी के घर के सामने रुक गया। दरबाजा खटखटाया और वहीं बैठ गया। सिपाहियों ने उसे चलने के लिए कहा परन्तु प्यास से उसका बुरा हाल हो रहा था। सिपाहियों ने उसे कहा अरे यह तो बावा अम्बो जी का घर है। बावा जी को क्यों कष्ट देते हो चलो आगे चल कर पानी पिताले हैं। बावा जी का नाम सुन कर उस व्यक्ति के दिल में बावा जी के दर्शन करने की उत्सुकता बढ़ गई। उसने पुनः दरवाजा खटखटाया।

बावा जी उस समय पूजा कर रहे थे इसलिए माता जी ने दरवाजा खोला और पूछा आप कौन हैं। खतरी ने कहा माता पहले पानी पिलाओ मेरा गला सूख रहा हे। पानी पीने के बाद में सारी बात आपको सुनाऊंगा। माता जी ने उसे पानी पिलाया। उस व्यक्ति ने पूछा घर मैं कोई और भी है तो माता जी ने कहा कि बावा जी घर में हैं परन्तु इस समय पूजा कर रहे है। बावा जी ने सुना तो पूजा छोड़ कर बाहर आ गए और आने का कारण पुछा।

सिपाहियों ने कहा कि राजा की आज्ञा से हम इसे पकड़ कर ले जा रहे हैं। इसे प्यास लगी थी, इसलिए पानी पीने के लिए यहां रुक गए। अपने सामने बावा जी को देखकर उस व्यक्ति ने बावा जी को प्रणाम किया और हाथ जोड़कर बोला में कोई चोर या ठग नहीं, मैंने कोई अपराध भी नहीं किया।, पूर्ण

रूप से निर्दोष हूं, प्रतिष्ठित व्यक्ति हूं और कपड़े का व्यापार करके बच्चों का पेट पालता हूं। आप मुझे बचा लें, मेरी इज्जत अब आपके हाथ है। आप राज पुरोहित हैं और राजा ध्रुवदेव आप की बात टाल नहीं सकते। बावा जी बोले कोई बात तो अवश्य होगी, बिना कारण किसी को कैसे पकड़ा जा सकता है। खतरी बोला बावा जी क्या बताऊं बड़ी देर की बात है उस समय ध्रुव देव राजकुमार थे और अक्सर दुकान पर कपड़ा खरीदने आते थे। एक बार उन्हें कपड़े के पैसे देने में कुछ देर हो गई और मैंने आदमी भेज कर अपने पैसे मांग भेजे। उन्होंने चिट्ठी भेजी कि जम्मू आ कर पैसे ले जाओ। मैं कुछ ठीक नहीं था इसलिए हरकारे को कहा कि जल्दी भी क्या है। दुकान पर दूसरा आदमी भी नहीं इस लिए मैं जम्मू नहीं आ सकता। राजकुमार जी को कहना जब चाहे पैसे भेज देना। हरकारे ने गुस्सा किया और वापस राजमहल चला गया वहां जाकर उसने राजकुमार को पता नहीं क्या कहा कि दूसरे तीसरे दिन उन्होंने पैसे भेज दिए। बात आई गई हो गई। परन्तु ऐसा लगता था कि वह इस घटना को नहीं भूले थे। मैं समझता हूं कि राजा जी को वही पुराना गुस्सा है। मेरी इज्जत तो खाक में मिल गई है। मैं बिल्कुल सच्च बोल रहा हूं। मुझे देवी देवताओं की सौंगंध है। मेरा कुल नष्ट हो जाए यदि में झूठ बोलूं। बावा जी ने उसे यकीन दिलाया कि यदि यह बात सच्च है तो मैं अवश्य तुम्हारी सहायता करुंगा। आप डरें मत हमारे राजा जी ताकत का दुरुपयोग नहीं करते। फिर सिपाहियों से कहा कि आप राजमहल चलें मैं अभी आता हूं। राजा जी को मेरा संदेश देना कि मैं आ रहा हूं। मैं इस निर्दोष को छुड़ाने के लिए उनसे प्रार्थना करुंगा। सिपाही राज दरबार की ओर चल दिए और बावा जी कमरे में आकर राजमहल जाने की तैयारी करने लगे। उस समय भोजन भी तैयार था। माता ने कहा कि भोजन करके जाएं तो बावा जी बोले कि वह जल्दी ही खतरी को छुड़ाकर आजाएंगे और वापस आकर ही खाना खाएंगे। माता जी ने कहा, यदि राजा ने आपकी बात नहीं मानी तो आप क्या करेंगे ? क्योंकि राजा, अग्नि, तथा जल को अपना रुख बदलते देर नहीं लगती। बावा जी ने उत्तर दिया कि यदि राजा मेरी बात नहीं मानेगा तो मेरी दुहाई देने वाले को दुख होगा। इसलिए मैं जीवित घर नहीं लौटूंगा। माता जी ने कहा यदि आप वापस नहीं आए तो हम जी कर क्या करेंगे,

परन्तु हमें, कैसे पता चलेगा कि आपकी बात नहीं मानी गई।

यदि शोर सुनाई दिया तो समझ लेना कि मैंने अपनी इज्जत की खातिर अपने प्राणों का त्याग कर दिया है। बावा जी राजमहल में पहुंचे। राजा ध्रुव देव ने उनको प्रणाम किया। एक दूसरे की कुशलता पूछने के बाद बावा जी ने कहा कि आपके सिपाही एक निर्दोष व्यापारी को पकड़ कर लाए हैं मैं उसे छुड़ने के लिए यहां आया हूं। उसकी बात सुनने के बाद मुझे विश्वास हो गया था कि उसने कोई अपराध नहीं किया है। इसलिए उसे छोड़ दिया जाए यही प्रार्थना करने यहां आया हूं। राजा ध्रुव देव ने कहा कि सिपाहियों ने मुझे सब कुछ बता दिया है। वह आप की दुहाई दे रहा था। इसलिए हमने उसे छोड़ दिया है। अभी यहीं कहीं होगा। इतने में खतरी भी आ गया। उसने भी बावा जी के पैरों को हाथ लगाया और सहायता के लिए धन्यवाद किया। बावा जी ने राजा से कहा कि आपने मेरी इज्जत रख ली है। अब आज्ञा दें कि मैं जल्दी घर वापस जाना चाहता हूं। राजा ने कहा पुरोहित जी, अभी आए अभी वापस चल दिए। चौपड़ की बाजी तो लगाते जाइए। राजा ध्रुव देव के कहने पर बावा जी राज महल में रुक गए। फिर खतरी की ओर मुड़ कर बोले कि आप वापसी पर मेरे घर संदेश देना कि मुझे आने में देर हो जाएगी। इसलिए चिंता मत करना। बावा जी चौपड़ खेलने में व्यस्त हो गए और खतरी अपने घर के लिए निकल पड़ा।

राजा ध्रुवदेव तथा बावा जी चौपड़ खेल रहे थे कि बाहर शोर सुनाई दिया। राजा ने कमेदान को बुलाकर कारण पुछा तो उसने कहा, सरकार अस्तबल से घोड़े खुलकर बाजार में चले गए हैं और लोगों को मार रहे है। इसलिए लोगों में भगदड़ मची हुई है। लोगों का शोर अधिक हो गया। क्योंकि उन दिनों बहुत कम मकान थे इसलिए जम्मू शहर का शोर बाहु तक साफ सुनाई देने लगा। थोड़ी देर के बाद सिपाही घोड़ों को पकड़ कर बांद देते हैं। शोर कम हो जाता है और बावा जी घर की ओर चल पड़ते हैं। वापसी पर तवी पार करने के लिए जब वह नाव पर बैठे तो मलाह से पूछा, सुरजन। तुम इतने घबराए हुए क्यों हो, सब कुशल तो है ? सुरजन बोला पुरोहित जी, आप तो ठीक है फिर यह सूचना यहां कैसे पहुंची कि आपने आत्महत्या कर ली है। भराए हुए गले से उसने कहा कि माता ने जब शोर सुना तो वह समझ गई कि आप की बात नहीं मानी गई और

आपने अपने प्राण त्याग दिए हैं। उन्होंने अन्दर से दरवाजा बंद करके मकान को आग लगा दी। आग की लपटों को देखकर गांव के लोग इकट्ठे हो गए। बहुत यत्न किए परन्तु माता जी, बूरानी, आपका नौकर जाट, कालू कुत्ता तथा दूसरे जीव जन्तू जो मकान में रहते थे सब जलकर राख हो गए।

बाबा जी समझ गए कि रल्ली खतरी ने घर संदेश नहीं दिया होगा। जम्मू में होने वाले शोर को सुनकर ही यह घटना हुई होगी। फिर बोले, यदि मेरा परिवार ही नहीं रहा तो मैंने जीवित रह कर क्या करना है। यह कह कर बावा जी भी घर की और दौड़ पड़े और आग में छलांग लगाकर अपने आपको समाप्त कर लिया।

इस प्रकार बाबा अम्बो जी ने न्याय की खातिर अपनी तथा अपने परिवार की आहुति दे दी। जब रल्ली खतरी को पता चला कि उसकी गलती से बाबा जी का परिवार समाप्त हो गया है तो उसे बड़ा दुःख हुआ। वह अपने आपको इस घटना का जिम्मेदार समझने लगा।

वह सोचने लगा कि जिस महापुरुष ने मेरी इज्जत बचाई उसी के परिवार की मृत्यु का कारण मैं बना। प्रायश्चित के तौर पर उसने सह परिवार यहां आकर क्षमा मांगी और बावा अम्बो तथा उस परिवार की याद में देहरी का निर्माण करवाया। इस घटना की चर्चा दूर दूर तक फैल गई। अब रल्ली बिरादरी के लोग भी बावा अम्बो को अपने कुल देवता की तरह ही मानते हैं और समय समय पर यहां आकर चढ़ावे चढ़ाने के साथ साथ उस गलती की क्षमा भी मांगते हैं जो उनके पूर्वजों से हुई थी। बावा अम्बो जी का यह स्मारक (मंदिर) बाग-ए-बाहु के मुख्यद्वार से कुछ मीटर की दूरी पर है जहां पहुचने के लिए हर समय मैटाटोर मिल सकती है। खंजूरिया बिरादरी के कुलदेव बावा अम्बो जी के मंदिर में मेल के अतिरिक्त पूर्णिमा तथा दूसरे त्यौहारों पर भी श्रद्धालु पूजा अर्चना के लिए आते हैं। श्री पवन खजूरिया जी के अनुसार जब बावा अम्बो जी घर पहुंचे तो उन्होंने परिवार के कुछ सदस्यों तथा घर में रहने वाले अन्य जीव जन्तुओं को मृत देखा तो उनको बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने इस दुःखद घटना के लिए रल्ली खतरी को जिम्मेदार ठहराया जिसने बावा जी का संदेश परिवार के सदस्यों तक नहीं पहुंचाया। वह सोचने लगे कि इन सब के बिना मेरा ज़ीवित रहना कठिन है इस लिए उन्होंने भी आत्मदाह कर अपनी जीवन लीला समाप्त करली।

महान संत-बाबा बिरपा नाथ जी

जम्मू से लगभग बीस किलोमीटर पूर्व की ओर प्रकृति की गोद में छोटी-छोटी पहाड़ियों तथा हरे भरे वनों से घिरा एक बहुत ही सुन्दरत गांव है बीरपुर यह गांव अपनी सुन्दरता तथा शुद्ध वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। यह गांव न केवल ऐतिहासिक अपितु धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस गांव में दाता रणपत देव जी का पवित्र स्थान है जहां सढ़ोत्रा तथा राजपूत बिरादरी के अतिरिक्त कई, अन्य जातियों के लोग भी समय समय पर यज्ञ, भण्डारे, करके दाता रणपत जी का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। जम्मू-कश्मीर के महाराजा प्रताप सिंह जी ने इसी गांव में विवाह किया था जिस कारण इस गांव को उन दिनों तमाम सुविधाएं प्रदान की गई थीं। उस समय का बना हुआ राजमहल, राधा कृष्ण जी का मंदिर तथा एक बड़ा तालाब आज भी यहां मौजूद है। यहां रहने वाले लोग मेहनती, बहादर तथा धार्मिक विचारों के हैं और देवी देवताओं तथा कुल देवताओं की पूजा अर्चना पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। इसी पवित्र धरती पर एक महान संत ने जन्म लिया जो बाद में बाबा बिरपानाथ के नाम से प्रसिद्ध हुए।

बीरपुर गांव के मध्य बाबा बिरपा नाथ जी की एक छोटी सी समाधि है। जिसमें किसी स्थानीय शिल्पी की बनाई हुई बावा जी की मूर्ति स्थापित है। इस पवित्र स्थान पर नवरात्रों के दिनों में मेला लगता है जहां आस पास के गांवों से भी लोग आकर बाबा जी की समाधि पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। उस समय यहां हवन यज्ञ, भजन, कीर्तन तथा भंडारों का आयोजन किया जाता है। सच्चे दिल से मांगी हुई हर मुराद यहां पूरी होती है और बाबा जी अपने श्रद्धालुओं के कष्ट दूर करके उनकी झोलियां खुशियों से भर देते हैं। बीरपुर निवासियों के दिलों में उनके लिए जो श्रद्धा है उसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि गांव वालों ने बाबा जी के नाम पर ही गांव का नाम 'बीरपुर' रख दिया था।

एक दंत कथा के अनुसार आज से कोई 550 साल पहले इस गांव में बाबा लद्धा नाम के एक ब्राहमण रहते थे। उनका परिवार गांव का एक समृद्ध परिवार था जहां किसी चीज की कोई कमी न थी परन्तु उनको संतान का सुख प्राप्त न

था। संतान प्राप्ति के लिए उन्होंने देवी देवताओं के मंदिरों तथा तीर्थस्थानों पर जाकर प्रार्थना की। पीरों फकीरों की दरगाहों पर सजदे किए। आखिर ज्योतिषियों के आदेश अनुसार संतान प्राप्ति के लिए ब्राह्मा (वट वृक्ष, पीपल) की आराधना की। घोर तपस्या के बाद ब्राह्मा जी बावा लद्धा तथा उनकी पत्नी पर प्रसन्न हुए। उस समय आकाश वाणी हुई 'आपको संतान प्राप्ती तो होगी, परन्तु पुत्र जन्म के बाद लक्ष्मी आपसे रूठ जाएगी और आप निर्धन हो जाएंगे। आपको भोजन के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ेगा। बोलो यह बात स्वीकार है तो बावा लद्धा ने उत्तर दिया, 'प्रभु हमने बहुत जी लिया है। संतान के बिना हमारा जीवन अधूरा है और चाहते हैं कि हमारा वंश चले इसलिए हम गरीबी का दुःख भी सहन कर लेंगे और पुत्र रत्न के सहारे हम जीवन के बाकी दिन गुजार लेंगे। फिर आकाशवाणी हुई कि तुम्हारे घर जो पुत्र होगा उसका नाम बीरू रखना। वह बालक एक बहुत बड़ा संत तथा ईश्वर भक्त होगा जो तुम्हारे वंश का नाम रोशन करेगा और समस्त मानव जाति का कल्याण उसके हाथों होगा ।

कुछ समय के बाद बावा लद्धा के घर एक बालक ने जन्म लिया इसके साथ ही उनके घर से लक्ष्मी लुप्त होने लगी। यहां तक कि उनको रोटी के लिए भी गांव वासियों का मोहताज होना पड़ा। आखिर वह लोगों के घरों में काम करने पर मजबूर हो गए। बीरू जब बड़ा हुआ तो गांव वालों की गाऐं भैंसें चराने लगा। इस प्रकार जो थोड़ा बहुत अनाज या नकदी मिलती उससे परिवार का निर्वाह होता। एक दिन बीरू बलोल नाले के पास जंगल में गाऐं चरा रहा था। गर्मियों के दिन थे और वह एक वृक्ष की छाया में विश्राम करने के लिए बैठा था, क्या देखता है कि गुरु गोरखनाथ जी अपने कुछ शिष्यों के साथ उधर से जा रहे हैं। जब वे सब बीरू के पास आए तो बीरू ने गुरु गोरखनाथ जी को श्रद्धापूर्वक प्रमाण किया। गुरु गोरखनाथ जी भी शिष्यों सहित विश्राम करने के लिए वहां बैठ गए और बीरू को पानी पिलाने के लिए कहा। बीरू ने पास ही एक बावली से पानी लाकर साधुओं को पिलाया। सभी साधु उस बालक पर बहुत प्रसन्न हुए। उस समय गुरु गोरख नाथ जी ने बीरू को आशीर्वाद देते हुए कहा कि बेटा तुमने हमारी सेवा की है, तुझे बहुत प्रसिद्धि प्राप्त होगी और तुम्हारा नाम रहती दुनिया तक लोगों की जुबान पर रहेगा। इसी प्रकार का सेवा भाव अपने मन में

सदा रखना और प्रभु की भक्ती करते रहना। जब तुम पर कोई संकट आए तो हमें अवश्य याद करना हम तुम्हारी सहायता के लिए आएंगे।

एक विचार यह भी है कि गुरु गोरखनाथ जी ने वृक्ष की छाया में बैठे-बैठे ही एक गाय की ओर संकेत करते हुए बीरू से कहा कि वह उस गाय का दूध पीना चाहते हैं। बीरू ने कहा महाराज वह गाय तो बांझ है उससे दूध प्राप्त नहीं हो सकता। किसी दूसरी गाय का कहें तो ला देता हूं। गुरु जी ने कहा कि लोटा लेकर जाओ तो सही। बीरू ने गुरु जी की आज्ञा का पालन किया और लोटा लेकर दूध धोने के लिए बैठ गया। यूं ही उसने थनों को हाथ लगाया दूध की धारा निकलने लगी और क्षण भर में ही लोटा दूध से भर गया। बीरू ने दूध गुरु जी को भेंट किया। गुरु जी प्रसन्न हुए उन्होंने बीरू को आशीर्वाद दिया और कहा कि जिस समय भी तुम याद करोगे वह अवश्य तुम्हारी सहायता के लिए आएंगे। यह कर कर गुरुगोरख नाथ जी वहां से अदृश्य हो गए।

कहते हैं कि उसी समय के आस पास जम्मू राज्य दो हिस्सों में विभाजित हुआ। तवी नदी के दायें किनारे जम्मू राज्य और बाएं किनारे बाहु राज्य स्थापित हुआ। बाहु राज्य का अधिक भाग पहाड़ी था और इस इलाके में पीने के पानी की कमी थी। इस बात को देखते हुए राजा ने एक कुआं खुदवाया परन्तु उसमें पानी न आया। बहुत यत्न किए । उसे और अधिक खोदा गया परन्तु पानी का नामो निशान न मिला। राज ज्योतिषि को बुला कर इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा जिस स्थान से पानी आना है वहां एक राक्षस बैठा है जो पानी को रोक रहा है। उसे वहां से हटाने और उसकी शक्ति को नष्ट करने के लिए एक ब्राह्मण बालक, की बलि की आवश्यकता है तब जाकर वह राक्षस वहां से हटेगा और कुएं में पानी आऐगा। बालक भी ऐसा हो जिसका कोई भाई बहन न हो और रंग भी गोरा हो। उसकी बलि के बिना कुएं में पानी नहीं आ सकता।

यह सुनकर राजा को दुःख हुआ कि ऐसा करने से उसे ब्रह्म हत्या का पाप लगेगा और यह पाप हर जन्म में उसका पीछा करता रहेगा। फिर उसने सोचा कि प्रजा की भलाई के कार्य करना भी तो एक राजा का कर्व्य है। एक बलि से यदि हजारों लोगों को लाभ हो सकता है तो कोई बात नहीं। राजा ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि बालक की तालाश की जाए परन्तु यह बात याद रखें कि यदि

ऐसा बालक मिले तो उसके माता-पिता की इच्छा से ही यहां लाना। उसे जबरदस्ती उठाकर मत ले आना। याद रहे कि नरबलि की प्रथा हमारे समाज में शताब्दियों से चली आ रही है और कई देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नर बलि दी जाती थी। यही नहीं आज के वैज्ञानिक युग में भी कुछ लोग अपने कार्यों की सिद्धि के लिए नर बलि देते हैं। यह प्रथा आज भी प्रचतिल हैऔर कई पिछड़े इलाकों में लोग देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नरबलि देते हैं।

राजा के सिपाही बालक की तलाश में निकल पड़े। घूमते-घूमते वे बलोल नाले के किनारे बसे बीरपुर गांव में पहुंचे। सिपाहियों की नजर चरवाहे बीरू पर पड़ी और उसमें वह सारे लक्ष्ण दिखाई दिए जिनका उल्लेख ज्योतिषियों ने किया था। सिपाही बीरू के पिता बाबा लद्धा के पास पहुंचे। उन्होंने बावा लद्धा से कहा कि तुम्हारे बीरू को राज दरबार में बुलाया है। हो सकता है कि राजा उसे कोई नौकारी दे दें। इतनी देर में बीरू भी घर आ गया। बीरू का गरीब पिता खुश था कि उसका बेटा राज दरबार में जा रहा है। सिपाहियों ने बाबा लद्धा को बीरू के वजन के बराबर सोना दिया और बीरू को ले गए। राज दरबार में उसे खूब खलाया-पिलाया गया। बीरू बच्चा ही था यह सब देख कर खुश हो रहा था। अगले दिन उसे वहां ले जाया गया जहां उसकी बलि लगनी थी। वहां हवन आदि का प्रबंध किया गया था बीरू को भी वहां बिठाया गया। उसके माथे पर तिलक लगाया गया और उससे पूछा गया कि तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है। बीरू वहां का वातावरण दे कर डर गया। काले रंग का एक बड़ा सा जल्दाद हाथ में तलवार लिए वहां खड़ा था। वह समझ गया कि उसे यहां मारने के लिए लाया गया है। थोड़ी देर उधर इधर देखने के बाद उसने कहा, मुझे कुछ समय दिया जाए। ताकि मैं अपने गुरु जी की आराधना कर सकूं।

राजा ने उसे पूजा करने की आज्ञा दे दी। बीरू एक ओर बैठ गया। उसने दिल ही दिल में गुरु गोरखनाथ जी को याद किया और प्रार्थना की हे गुरुदेव, मुझ पर संकट की घड़ी आई है। यह लोग मेरी जान लेना चाहते हैं। मैंने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा फिर मेरी ही बलि क्यों दी जा रही है। आपने संकट के समय सहायता करने का वचन दिया था। मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए। गुरु गोरखनाथ जी उसकी पुकार सुनकर भंवरे के रूप में प्रकट हुए और उसे कहा

कि चिंता की कोई बात नहीं मैं तुम्हारे अंग संग रहूंगा। तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। उन्होंने बीरू के कान में कुछ कहा ओर चले गए। बीरू ने भी गुरु गोरखनाथ जी को नमस्कार किया और अपने स्थान पर बैठ गया। बीरू ने राजा से पूछा कि आप मुझे क्यों मारना चाहते हैं। राजा ने कहा कि तुम्हारी बलि लगने से कुएं में पानी आएगा। जिससे प्रजा को लाभ होगा। बीरू डरते डरते बोला, आपको पानी चाहिए या मेरी जान। राजा ने कहा हमें तुम्हारी जान लेते हुए दुख हो रहा है, यदि कुंऐ में पानी आ जाए तो हम तुम्हें छोड़ देंगे। हम ब्रह्मन हत्या अपने ऊपर नहीं लेना चाहते, परन्तु क्या करें मजबूरी है।

राजा की बात सुनकर बीरू ने पास ही खड़े एक सिपाही की तलवार खींच कर अपने बाएं हाथ की छोटी उंगली पर चीरा लगाया तो खून की धार वह निकली। बीरू ने बाबा गोरखनाथ जी का ध्यान करके खून की तीन बूंदें कुऐं में डालीं। उसी समय कुएं में पानी आना शरू हो गया। वहां खड़े लोग यह चमत्कार देखकर हैरान रह गए। सब खुशी से झूम उठे। लोगों को बीरू में भगवान का रूप दिखाई देने लगा। बीरू की जय जयकार होने लगी। बीरू की सुंदर छवि ने सबके मन को मोह लिया। राजा ने भी बीरू के चमत्कार पर प्रसन्नता व्यक्त की और बीरू से अपने महल में चलने तथा वहीं रहने का आग्रह किया।

परन्तु जिसको प्रभु की लगन लगी हो और जिसने प्रभु का चमत्कार क्षण भर के लिए ही देखा हो उसे सांसारिक मोह नहीं रहता। उसे कोई भी लोभ प्रभावित नहीं कर सकता। वे तो उस प्रभु की शरण में ही जाना चाहते हैं। बीरू भी गुरु की सेवा करना चाहता था जिसने उसको मौत के मुंह से बचाया था। राजा ने बीरू को छोड़ दिया। जब गांव वालों को पता चला था कि राजा के सिपाही बीरू को बलि पर चढ़ाने के लिए ले गए हैं तो वे भी वहां पहुंच गए थे। उन्होंने भी बीरू से आग्रह किया कि गांव चल कर हमारे साथ रहे परन्तु वह न माना। उसने लोगों से कहा कि मैंने अब घर को त्याग दिया है। अब में एक फकीर के रूप में गुरु गोरखनाथ जी की सेवा करूंगा और उनके आदेश का पालन करूंगा। उनके संदेश को घर घर पहुंचाऊंगा। यही बीरू बाद में बाबा बिरपा नाथ जी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बीरु तो गांव नहीं आया। उसके माता

पिता भी कुछ समय के बाद स्वर्ग सिधार गए। उनका मकान भी गिर गया। अब उसी स्थान पर बाबा बिरपा नाथ का देहरा है जहां गांव के लोग बड़ी श्रद्धा से शीश झुकाते है। बाबा जी की पूजा करते और उस महान आत्मा को याद करते हैं। अब वहां भव्य मंदिर का निर्माण किया गया है।

कहते हैं कि गांव के लोगों ने बीरू की याद में ही इस गांव का नाम बीरपुरा रखा ताकि उस महान संत तथा योगी की याद सदा के लिए उनके दिलों में बनी रहे।

बाबा दीवान चंद जी

जम्मू की पवित्र धरती पर कई महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने भूले भटके लोगों को सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन महान आत्माओं ने सबका कल्याण किया और दीन दुखियों के कष्ट दूर किए। उन संतों तथा महात्माओं की याद में लोगों ने मंदिरों तथा स्मारकों का निर्माण किया जहां समय समय पर मेलों तथा भंडारों का आयोजन किया जाने लगा। ऐसे अवसरों पर श्रद्धालु इन पवित्र स्थानों पर इक्ट्ठे होकर संतों के आशीर्वाद से अपनी मनोकामनाएं पूरी करने लगे। उन पवित्र स्थानों की यात्रा से भक्तों को आध्यात्मिक शांति मिलती थी और वे अपने आपको बड़े भाग्य शाली समझते थे। उन ऋषियों मुनियों तथा पीरों फकीरों का संदेश किसी जाति विशेष अथवा सम्प्रदाय के लिए नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए था।

ऐसी महान आत्माओं का जन्म उस समय होता है जब लोग धर्म के मार्ग को त्याग कर सामाजिक कुरीतियों के वशी भूत बुरे काम करने में व्यस्त हो जाते हैं। जब संसार में अंधकार छा जाता है और लोग अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं तो प्रभु स्वयं किसी न किसी रूप में अवतार लेते हैं और संसार में फैले अन्याय तथा अत्याचारों का खात्मा करके भक्तों का उद्धार करते हैं।

ऐसे ही पूर्ण संत थे बाबा दीवान चंद जी महाराज जिनका जन्म 12 दिसंबर 1922 ई. को तहसील रणवीर सिंह पुरा के एक गांव जोड़ा में हुआ। बाबा जी ने भक्ति मार्ग को ही सबसे उत्तम मानकर अपने शिष्यों को भी उस पर चलकर संसार में रहते हुए नेक कमाई करके जीवन व्यतीत करने को कहा। उनका विचार था कि मनुष्य जन्म ईश्वर की भक्ति के लिए मिला है और छोटे से जीवन में अधिक से अधिक कल्याण कार्य करना हर प्राणी का धर्म है। बावा जी की माता का नाम चूडादेवी तथा पिता का नाम श्री मधर दास था। घर का वातावरण भक्ति भाव से पूर्ण था। उनके जन्म पर सारे गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। सभी गांव वासी श्री मधर दास जी के घर मुबारक बाद देने के लिए आए। बालक के ग्रह आदि देखने के लिए पंडितों को बुलाया गया। सबकी यही राय थी कि बालक ईश्वर की दिव्य ज्योति है जो बड़ा होकर माता-पिता के नाम को

चार चांद लगाने के साथ साथ जगत का भी कल्याण करेगा। परिवार के धार्मिक वातावरण का प्रभाव बच्चे पर स्वभाविक था इसलिए बाबा जी बचपन से ही खामोश रहकर साधना में लगे रहते थे। उनकी माता ने उनको गायत्री मंत्र का जाप करना सिखा दिया था इस लिए जब भी उनके माता पिता प्रभु का भजन करने बैठते तो बाबा जी भी उनके साथ बैठकर गायत्री मंत्र का जाप शुरू कर देते थे। छोटी आयु में ही वह धार्मिक विचारों के थे और ईश्वर पर उनको अटूट विश्वास था।

कुछ बड़े हुए तो उनको स्कूल में दाखिल करा दिया गया। अध्यापक उनकी योग्यता पर हैरान थे क्योंकि वह ऐसे प्रश्न पूछते थे जो इतनी छोटी आयु के बालक से कभी आशा भी नहीं की जा सकती थी। उनके अधिकतर प्रश्न संसार की रचना, प्रभु भक्ति तथा समाज में फैले अन्याय तथा भ्रष्टाचार के बारे में ही होते थे। वह यह जानना चाहते थे कि जब ईश्वर की नजर में सब एक समान हैं तो फिर यह भेदभाव, ऊंच नीच और एक दूसरे से घृणा क्यों ? यह ऐसे प्रश्न थे जिनका उत्तर देना हर एक के लिए संभव नहीं था। इसलिए उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और घर पर ही विद्वान पंडितों से धार्मिक शिक्षा तथा गीता का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने महसूस किया कि भक्ति मार्ग पर चलने तथा प्रभु से साक्षात होने के लिए गुरु की आवश्यकता है जो उनका उचित ढंग से मार्ग दर्शन कर सके। वह ऐसे पथ प्रदर्शक की तलाश में थे जिनके आशीर्वाद से वह अपनी मंजिल तक पहुंचने में सफल हो सकें। क्योंकि वह ऐसा समाज देखने के इच्छुक थे जहां हर एक को बराबर का अधिकार मिले, जहां सब बिना किसी भेद-भाव के भाईयों की तरफ रहें और एक दूसरे के सुख दुःख में शामिल हों। ऐसा समाज जहां सब सुखी जीवन व्यतीत करें और कोई भूखा न रहे:-

ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिले सबको अन्न।
छोटा बड़ा सब बसें, दीवान जी रहे प्रसन्न।

सच्चे गुरु की तालाश में उन्होंने कई स्थानों की यात्रा की। आखिर उनको अखनूर में बाबा भजन दास जी महाराज के दर्शन हुए जो धर्म प्रचार के साथ-साथ लोगों को जागृत भी कर रहे थे और उनको प्रभु भक्ति तथा संतों के दिखाए हुए सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रहे थे। बाबा भजन दास जी रमते योगी थे

जो मानवता का संदेश घर घर तक पहुंचा रहे थे।

अखनूर में एक सत्संग के दौरान जब उनको बाबा भजन दास जी के दर्शन हुए तो उनका हृदय गद-गद हो उठा। उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। सत्संग की समाप्ति पर वह बाबा भजन दास जी के पास गए। उनके चेहरे की चकम तथा दिव्य तेज देख कर दीवान चंद जी महाराज बड़े प्रभावित हुए और महसूस करने लगे कि जिस सतगुरु की तलाश के लिए वह निकले थे उनको पा लिया है। वह बाबा भजन दास जी के चरणों में गिर गए और बोले:-

महर्षि के दर्शन करी, रहा मन आपन चेत।

जैसे भंवरा पुष्प में, बैठत होए अचेत।

उन्होंने बाबा भजन दास जी से प्रार्थना की कि उनको नाम दान बख्श कर अपना शिष्य बना लें। बावा भजन दास जी ने जब बाबा दीवान चंद जी के मुख पर दृष्टि डाली तो बोले:-

हम क्या कहें तुम्हें उपदेशा।

लागत मोहे रूप महेशा।

अर्थात में तुम्हें क्या उपदेश दूं।

मुझे ऐसा लग रहा है मानों स्वयं ईश्वर का रूप मेरे सामने है। बाबा भजन दास जी ने दोनों हाथों से बाबा दीवान जी को उठाया और प्रेम पूर्वक अपने पास बिठाकर गुरु मंत्र दे दिया।

मैं तोहे देन चाहे वरदान।

तुम्रा करे प्रभु कल्याण

गद्दी तोरी अटल अघाता

कबहू न लागे एह को बाधा

गुरू जी का आशीर्वाद पाकर बाबा

दीवान जी बड़े प्रसन्न हुए:-

बावा दीवान साहिब प्रसन्न भयो ऐसी सुनअसीस।

गद-गद हृदय होए के, गुरु पद् नापो शीश।।

ग्यारह वर्ष की आयु में बाबा जी ने जिस चादर को गृहण किया उनको कभी मैला नहीं होने दिया। बाबा जी दूर से ही भक्तों की पीड़ा को भांप लेते थे और

हजारों मील दूर पड़ी वस्तुओं की जानकारी भी प्राप्त कर लेते थे।

वह अपनी दिव्य दृष्टि से भविष्य में होने वाली घटनाओं का पता भी लगा लेते थे। गुरु मंत्र प्राप्त करने के बाद बाबा दीवान चंद जी ने धर्म प्रचार के लिए स्थान स्थान पर सत्संग किए। अपने प्रचार के लिए उन्होंने आर.एस.पुरा. का क्षेत्र चुना। कुछ समय के लिए वह धारीवाल भी गए परन्तु जल्दी ही वहां से लौट आए। अपनी आध्यात्मिक शक्ति से उन्होंने कई चमत्कार दिखाए जिनसे प्रभावित होकर लोग उनकी शरण में आने लगे।

बाबा दीवान जी प्रभु भक्ति में इतने लीन रहते कि उन्हें सांसारिक काम काम तथा मोह-माया से कोई लगाव नहीं रहता था। परिवार के लोग चाहते थे कि बाबा जी घरेलू काम धंधों में उनका हाथ बटायें परन्तु बावा जी तो अपनी धुन में मस्त रहते थे।

वह सूर्य निकलने से पहले उठते और गायत्री मंत्र का जाप आरम्भ कर देते थे। भक्ति के दौरान उनको कई बार हनुमान जी तथा दुर्गा माता के दर्शन भी हुए। बाबा जी के घर वालों ने उनको सांसारिक बंधनों में जकड़ने के लिए उनका विवाह करा दिया परन्तु बावा जी फिर भी प्रभु भक्ति से विमुख न हुए। वह अपनी पत्नी से दूर रहते थे जिसके लिए उनको लोगों की बातें सुननी पड़ीं। उन्होंने अपना सारा जीवन एक ब्रह्मचारी की भांति व्यतीत किया। उनका कहना था कि ईश्वर भक्ति के साथ-साथ मनुष्य को अपनी रोजी-रोटी के लिए छोटा-मोटा काम भी करना चाहिए। बाबा जी ने कपड़े सीने का काम सीख लिया था और गांव में ही दुकान खोल दी थी। 1947 ई. में उनके परिवार के सभी सदस्य पाकिस्तान चले गए। उन्होंने परिवार के लोगों को बहुत समझाया कि भारत में ही रहें। परन्तु किसी ने उनकी बात नहीं मानी।

बाबा जी अकेले रह गए। इसलिए वह भी गांव छोड़कर आर.एस.पुरा. (नवांशहर) आ गए और अंतिम समय तक वहीं रहे। मेहनत मजदूरी करके लोगों के कपड़े सी कर जो थोड़ा बहुत कमाते जरूरत मंदों की सहायता करने में खर्च कर देते थे। बाबा जी कहा करते थे कि ईश्वर ने सबको एक जैसा बनाया है। उसकी कृपा सब पर है।

ईश्वर की प्राप्ति के लिए किसी विशेष वर्ग जाति या सम्प्रदाय का होना जरुरी

नहीं है।

जो सच्चे दिल से उसकी आराधना करते हैं वही ईश्वर को पा सकते हैं।

उसकी नजर में कोई बुरा नहीं। बुरा तो वह है जो बुराई के रास्ते पर चलता है, बुरे काम करता है। वह कहते थे न हिन्दू बुरा है न मुस्लमान बुरा है।

जो बुरा करता है, वह इंसान बुरा है।।

अपनी दिव्य शक्ति तथा दिव्य दृष्टि से ही बाबा जी अपने भक्तों को रोग मुक्त कर देते थे। जो लोग डाक्टरों के ईलाज से तंग आ जाते थे। जिनकी बीमारी लाइलाज होती थी। जो हजारों रुपए खर्च करके भी स्वस्थ नहीं होते थे वह बावा जी की कृपा तथा उनके आशीर्वाद से चंद ही दिनों में पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाते थे। आपकी दया तथा दृष्टि औषधि का काम करते थे। बावा जी का यही संदेश था कि भक्ति मार्ग पर चलते हुए जहां तक हो सके दीन दुखियों की सेवा करो इसी से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त हो सकता है और वह संसार में यश प्राप्त कर सकता है। बाबा जी के आशीर्वाद से निसंतानों को संतान, निर्धनों को धन तथा मन की शांति प्राप्त हुई। उनका निवास स्थान मंदिर का रूप धारण कर गया जहां समय समय पर धार्मिक पर्वों तथा सत्संग का आयोजन होने लगा। वह कहते थे कि ईश्वर प्राप्ति के लिए दर-दर भटकने की आवश्यकता नहीं। उसका ध्यान करो। उसकी आराधना करो वह हमें अपने अन्दर ही दिखाई देगें। मेहनत करने से सब कुछ घर बैठे ही प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य जीवन एक महासागर के समान है। जिसमें भांति भांति के अनमोल मोती हैं जिनको गृहण करने के लिए सच्ची लगन तथा मेहनत की आवश्यकता है।

बाबा जी ने अपने शिष्यों के लिए कई स्थानों पर आध्यात्मिक केंद्र खोले जिनमें जालन्धर, हिसार, हीरानगर, दरसोपुर, आर.एस.पुरा तथा हजूरी बाग जम्मू विशेष रूप से बड़े प्रसिद्ध हैं। इन केंद्रों में हवन यज्ञ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानों को विधिपूर्वक करने का ज्ञान दिया जाता है।

75 साल तक धर्म प्रचार करने तथा लोगों को सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा देकर बाबा दीवान चंद जी 12 अक्तूबर 1998ई. को अपने हजारों शिष्यों को रोता बिलखता छोड़कर बह्ममलीन हो गए।

बाबा दीवान जी का संबंध उदास मार्ग सम्प्रदाय से था और वह इस सम्प्रदाय

के 22वें गुरु माने जाते हैं।

उन्होंने अपने जीवन काल में ही श्री भगवान दास जी को अपना उत्तराधिकारी (गद्दी नशीन) नियुक्त कर दिया था जो बड़ी श्रद्धा तथा प्रेम भाव से बाबा जी के मिशन को आगे बढ़ा रहे हैं। बाबा जी के निवास स्थान पर मंदिर तथा कुछ ही दूरी पर बाबा जी की समाधि है जिसको सफेद संगमरमर से बनाया गया है। इस सुन्दर तभा भव्य समाधि की शोभा देखते ही बनती है। समाधि मंदिर में बाबा दीवान चंद जी का बड़ा चित्र रखा हुआ है जिसको प्रति दिन फूलों के हार पहना कर सजाया जाता है और सुबह शाम आरती उतारी जाती है। बाबा जी की समाधि तथा मंदिर का प्रबंध सुचारू रूप से चलाने के लिए कमेटी का गठन किया गया है जो इस पवित्र स्थान को और अधिक सुन्दर तथा आकर्षक बनाने में विशेष रुचि ले रही है। यह सभी कार्यक्रम श्री भगवान दास जी के मार्गदर्शन में आयोजित किए जाते हैं। यहां हर रविवार को सत्संग होता है और बड़ी संख्या में श्रद्धालु बावा दीवान जी के दरबार में उपस्थित होते हैं। इसके अतिरिक्त वर्ष में चार बार यहां उच्चस्तर मेलों, भंडारों तथा सत्संगों का आयोजन किया जाता है। पहला कार्यक्रम 12 दिसम्बर को बाबा जी का जन्म बड़ी धूम धाम से मनाया जाता है। दूसरा कार्यक्रम 30 मार्च को भक्ति सम्मेलन, तीसरा कार्यक्रम 12 जून को बाबा भजन दास जी की याद में आयोजित किया जाता है और चौथा कार्यक्रम 12 अक्तूबर को बाबा दीवान चंद जी की पुण्य तिथि के अवसर पर किया जाता हे। जिसमें सभी धर्मों के लोग भाग लेते हैं और बाबा जी के बताए हुए भक्ति मार्ग पर चलने तथा दीन दुखियों की सेवा करने का प्रण लेते हैं।

समाधि सिद्ध बाबा बाज जी

जम्मू की पवित्र धरती पर कई महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने मानवता को अपना धर्म और सबकी भलाई को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। उनके कल्याणकारी कार्यों के कारण आज भी उनका नाम बड़े आदर से लिया जाता है और स्थान स्थान पर उनकी पूजा अर्चना के लिए मंदिरों का निर्माण किया गया है। उनमें से कुछ एक को लोगों ने अपना कुल देवता मानकर उनकी आराधना की और अपने परिवार की प्रसन्नता तथा समृद्धि के लिए उनके आगे आज भी शीश झुकाते हैं। उनकी याद में समय समय पर मेलों का आयोजन किया जाता है जहां उन महान आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

ऐसी ही एक महान आत्मा का जन्म आज से लगभग 400 साल पहले गांव खोजे चक तहसील स्यालकोट (पाकिस्तान) में बजवाथ क्षेत्र के एक बज्जू राजपूत घराने में हुआ। यद्यापि उस महान आत्मा का जन्म तहसील स्यालकोट में हुआ था परन्तु विभाजन के बाद उनको कुल देवता के रूप में मानने वाले बज्जू बिरादरी के राजपूत अब जम्मू तथा आस-पास के क्षेत्र में भी रहते हैं और कुछ एक जम्मू क्षेत्र से बाहर भारत के दूसरे भागों में जा कर बस गए हैं। इस समय उस महान आत्मा की पवित्र समाधि, जम्मू से लगभग बीस किलोमीटर जम्मू अखनूर सड़क पर मिश्रिवाला के पास पखियां गांव में बनाई गई है ताकि बिरादरी के लोग अपने कुल देवता के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त कर सकें। बाबा बाज जी का जन्म एक समृद्ध परिवार में हुआ। उनके माता पिता ईश्वर के परम भक्त थे और ईश्वर की ही कृपा से उनके घर बाबा जी जैसे महाज्ञानी और ईश्वर की आराधना में व्यस्त रहने वाले बालक का जन्म हुआ। उनके जन्म पर बड़ी खुशी मनाई गई और आस पास रहने वाले बज्जू बिरादरी के सदस्यों ने बाबा जी के माता पिता को मुबारक बाद दी। गांव में चारों ओर आनंद का वातावरण था।

बालक के ग्रह तथा राशि फल देखने के लिए विद्वान पंडितों को बुलाया गया। सबने यही कहा कि यह बालक बड़ा भाग्यशाली है और बड़ा होकर अपने वंश का नाम रोशन करेगा। अपने चमत्कारों से लोगों के दुःख दूर करेगा।

पंडितों ने उसके पिता मंगल सिंह जी को बताया कि ऐसे ग्रह किसी महान पुरुष के ही होते हैं। आप बड़े भाग्यशाली हैं कि इस बालक ने आपके घर जन्म लिया है। मंगल सिंह जी यह सुनकर अति प्रसन्न हुए और पंडितों को दान दक्षिणा देकर विदा किया। पंडितों ने यह भी कहा कि इस बालक का नाम बाज सिंह रखना और क्योंकि इसका जन्म भगवान कृष्ण जी के जन्म समय तथा नक्षत्रों के अनुरूप हुआ है इसलिए बड़े बड़े लोग इनके सामने अपना शीश झुकाएंगे। हर स्थान पर इसका मान-सम्मान होगा और इसकी लीला बड़ी अनौखी होगी।

इसके चमत्कारों को देखकर संसार हैरान रह जाएगा। जिस जिस स्थान पर इसके पवित्र पांव पड़ेंगे वहां चारों ओर उजाला हो जाएगा। जिसके सिर पर अपना हाथ रखेगा उसकी कीर्ति में चार चांद लग जाएंगे और जो उसकी आज्ञा के अनुसार चलेगा वह सुख भोगेगा।

सबसे छोटा होने के नाते माता पिता बाबा बाज जी से बड़ा प्यार करते थे। मां हर समय बाबा जी को लोरियां सुनाती और पालने में लिटा कर झूलती रहती थी। वह घर के काम काज के साथ साथ नन्हे बालक का बड़े प्यार से पालन पोषण कर रही थी।

एक दिन बच्चा पालने में रख कर वह किसी काम से बाहर गई। घर के बाकी सदस्य भी खेतों में काम करने के लिए चले गए थे।

घर में सिवाए नन्हे बालक के कोई न था। अचानक घर में आग लग गई और देखते ही देखते सारा घर आग की लप्टों में आ गया। मकान को जलता देख गांव के लोग इकट्ठे हो गए और आग को बुझाने का यत्न करने लगे। बाबा जी की मां जार जार रो रही थी और सबसे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही थी कि जैसे भी हो मेरे बच्चे को बाहर निकालो। उस मकान के अन्दर एक कोने में एक भैंस बंधी हुई थी। आग की गर्मी से भैंस भी उछलने कूदने लगी। रस्सा टूट गया और भैंस अपने सींगों से पालने की छत पर लगी खूंटी को तोड़ बालक समेत बाहर आ आई। यह चमत्कार देखकर सब हैरान रह गए। बाबा जी सकुशल थे। उनकी मां की जान में जांन आई और उसने बाबा जी को सीने से लगा लिया। अब तक लोगों ने आग बुझा दी थी और परिवार के सदस्य भी वहां आ गए थे। लोगों को पंडित जी की बात याद आई कि बाबा जी कोई साधारण

व्यक्ति नहीं, कोई महान पुरुष हैं जिन्होंने लोगों के कल्याण के लिए इस धरती पर जन्म लिया है। उस समय जैसे भैंस का रूप धारण करके स्वयं भगवान ने उनकी रक्षा की हो। यही कारण है कि जब बज्जू बिरादरी के लड़कों के मुंडन संस्कार किए जाते हैं तो भैंस के सिर या उसके सींग की पूजा की जाती है।

इसके साथ ही जलबीर देवता की पूजा के बाद ही मुंडन संस्कार सम्पन्न होते हैं। मुंडन संस्कार आमतौर पर जन्म अष्टमी के दिन किए जाते हैं और उस दिन किसी जीव की बलि नहीं दी जाती और शुद्ध सात्त्विक भोजन बनाकर ही सगे संबंधियों तथा मित्रों को खिलाया जाता है। ऐसे अवसरों पर यदि धार्मिक नियमों का पालन न किया जाए तो कुल देवता नाराज हो जाते हैं। कृष्ण जन्म अष्टमी के दिन किसी जीव की हत्या करना पाप समझा जाता है।

जब बाबा जी पांच साल के हुए तो उनके पिता की मृत्यु हो गई। चार भाईयों में बाबा जी सबसे छोटे थे।

छोटे तथा लाड़ले होने के कारण वह घर का कोई भी काम नहीं करते थे। उनको सांसारिक कार्यों में कोई रूचि नहीं थी। वह सभी बंधनों से मुक्त होकर उस परम पिता की आराधना को ही जीवन का सबसे बड़ा काम समझते थे। वह समझते थे कि ईश्वर ने उनको भक्ती के लिए ही संसार में भेजा है।

बाबा जी कुछ बड़े हुए तो उनके भाई तथा भाभियां उनसे तंग आ गए और कभी कभी यहां तक कह देते थे कि बाबा जी काम तो कुछ करते नहीं मुफ्त की रोटियां तोड़ते हैं। परन्तु वे क्या जानें कि बावा जी किस काम में लगे हुए हैं।

बाबा जी की लगन तो उस सर्वशक्तिमान प्रभु से लगी हुई थी जो संसार का पालनहार है। दस साल की छोटी आयु में ही भाभी ने उनको गाएं चराने के लिए जंगल में भेजना शुरू कर दिया था। वह पशुओं को जंगल में घास चरने के लिए छोड़ देते और स्वयं ईश्वर की आराधना में लगे रहते। शाम को वह पशुओं के साथ घर लौट आते। भाभी उनसे अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। भाई तो नौकरी करते थे।

उनको क्या पता घर में क्या हो रहा है। भाभी बाज जी को चार रोटियां खाने के लिए देती थी। दो वह स्वयं खा लेते और दो कुत्तिया को दे देते जो सदा उनके साथ रहती थी। नदी के किनारे जाकर वह जलबीर के साथ चौपड़ा खेलते रहते

थे। फिर बाबा जी को खाने के लिए केवल एक ही रोटी मिलने लगी। वह रोटी भी बावा जी कुत्तिया को दे देते थे। वह तो भक्ति में लीन रहते और उनके पशु आस पास के खेतों में उगी फसलों को खराब कर देते थे। लोगों ने उनके घर शिकायत की कि बावा जी ध्यान पूर्वक पशु नहीं चराते और हमारे बच्चों को खराब कर रहे हैं। हमारे बच्चे भी बाबा जी की देखा-देखी लापरवाह होते जा रहे है। फिर क्या था घर आने पर बाबा जी की पिटाई भी होती और डांट भी पड़ती। एक दिन बाबा जी जंगल में भक्ती कर रहे थे कि उन्होंने अपने आस-पास कुछ लोगों की आवाजें सुनीं। पास गए तो क्या देखते हैं कि चार साधु चौपड़ खेल रहे हैं। बाबा जी साधुओं के पास जाकर बैठ गए। शाम हुई तो तीन साधु उठकर चले गए परन्तु चौथे वहीं कुटिया में ही रहे। महात्मा ने बाबा जी से कहा कि तुम भी घर जाओ, तो बाबा जी बोले, आज मुझे घर वालों ने घास लाने को कहा है। घास लेकर न गया तो डांट पडेगी। महात्मा जी ने कहा जाओ बच्चा जहां से किसी ने घास काटी है वहां झाडू लगाओं और घास इक्ट्ठी करके घर ले जाओ। बाबा जी ने ऐसा ही किया परन्तु गठ्ढ़ी बड़ी होने के कारण वह उसे उठा न सके। महात्मा जी ने गठढ़ी को आज्ञा दी कि बालक के सिर से थोड़ा ऊपर ही रहना। यह चमत्कार देखकर गांव वाले हैरान रह गए। घरवालों ने उनको उपलों के खोल में बंद कर दिया। परन्तु वह वहां से निकलकर महात्मा जी के पास पहुंच गए और उनसे प्रार्थना की कि मुझे अपना शिष्य बना लीजिए। महात्मा जी ने कहा यदि मेरा शिष्य बनना है तो चार धाम की यात्रा करके पूर्ण रूप से शुद्ध होकर मेरे पास आओ।

उस समय बाबा जी की आयु 12 साल की थी। वह चार धाम की यात्रा करने निकल पड़े। यात्रा के बाद उन्होंने बावा महेश दास जी को अपना गुरु बनाया। कुछ समय पंडोरी धाम में रहने के बाद गुरु जी की आज्ञा से अपने क्षेत्र लौट आए। उस समय उनकी आयु 30 साल की थी। अपने क्षेत्र में आकर उन्होंने चिनाब नदी के मध्य एक टापू में कुटिया बनाई और एक पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ गए। लोगों ने देखा कि महात्मावहां तपस्या कर रहे हैं। फिर कुछ दिन बारिश होने के कारण नदी में बाढ़ आ गई। लोगों ने समझा कि महात्मा अपनी कुटिया के साथ पानी में बह गए होंगे। जब बारिश बंद हुई तो सब लोग

नदी के किनारे गए। क्या देखते हैं कि बाबा जी कि धूनी जल रही है और पीठ के पीछे एक बड़ी लकड़ी आकर रुक गई है। जिस पर एक बड़ा नाग तथा कुत्तिया बैठे थे।

लोगों ने उनको गांव में रहने के लिए कहा। कई दुखियों के दुख उन्होंने दूर किए। बाबा जी की माता भी पुत्र वियोग में अंधी हो गई थी। लोगों ने उनको महात्मा जी के पास जाने की सलाह दी। सारे बजबाथ क्षेत्र में यह बात फैल चुकी थी कि बाबा जी मुंह मांगी मुरादें पूरी करते हैं। उनकी माता किसी का सहारा लेकर बाबा जी के पास पहुंची। बावा जी ने अपनी माता को पहचान लिया और दिल ही दिल में उनको प्रणाम किया। बाबा जी ने बोले, माता रोने से कुछ प्राप्त नहीं होता। जीवन में इस शरीर ने जो कष्ट भोगने हैं वे भोग कर ही छुटकारा मिलेगा। मां ने भी बाबा जी की आवाज को पहचान लिया और बोली कि तुम ही मेरे बाज हो, घर चलो। परन्तु बाबा जी न माने। फिर बाबा जी ने कमण्डल से जल के छींटे अपनी माता की आंखों पर मारे तो उन्हें सब कुछ दिखाई देने लगा।

जब बज्जू बिरादरी को पता चला कि बाबा जी उनकी ही बिरादरी के हैं तो खोजैचक्क वाले कहने लगे कि हमारे पास रहो और पुल बजुआं वाले कहने लगे हमारे पास रहो। बाबा जी ने सबको समझाया कि मैं सबका हूं। मैं सबका भाई हूं। सब मुझे प्यारे हैं। मैं सबकी भलाई चाहता हूं। मैं बज्जू बिरादरी के 45 गांवों तथा कुल मानव जाति का कल्याण चाहता हूं। लोगों ने बाबा जीके वचन सुनकर 10-12 एकड़ जमीन बाबा जी की सेवा में अर्पण कर दी। उन्होंने कहा कि दिन को मेरा वास खोजे चक्क तथा रात को पुल बज्जुआं में होगा। बाबा जी की जमीन में उगे वृक्षों को कोई काट नहीं सकता था। वृक्ष काटना तो एक तरफ कोई उन वृक्षों का पत्ता भी नहीं तोड़ सकता था। वहां कोई चोरी नहीं कर सकता था। सब बाबा जी से डरते थे और जो नहीं डरते थे उनको हानि उठानी पड़ती थी।

बाबा जी नाग के रूप में दर्शन देते थे और सबकी मनोकामनाएं पूरी करते थे। बाबा जी कोई समाए नहीं थे। वह तो सांसारिक लोगों से छुपे हए हैं। वह तो पापियों से छुपकर प्रभु के ध्यान में मस्त सब कुछ देख रहे हैं। एक बार कुछ

लोगों ने बावा जी के स्थान से लकड़ी काट कर बेच दी। उस लकड़ी का पैसा जिस जिस ने लिया उनको कई प्रकार के कष्ट उठाने पड़े। एक व्यक्ति जिसने वहां की लकड़ी को काटने के लिए कुल्हाड़ी चलाई तो उसके बेटे की मृत्यु हो गई। जब उसे पता चला कि यह लकड़ी बाबा जी के स्थान की थी तो उसने बाबा जी के दरबार में जाकर क्षमा मांगी।

एक और घटना का उल्लेख करते हुए श्री उधम सिंह जी ने कहा कि उनकी जमीन बाबा जी के स्थान से लगती थी। दादा जी की चोबरसी के मौके पर उन्होंने अपनी ही जमीन से शीशम का वृक्ष काटा और उसके टुकड़े करके छत पर सूखने के लिए रख दिए। गांव में आग लगी और ऊपरी हिस्से से आग की एक चिंगारी उन लकड़ियों पर पड़ी और छत्त पर पड़ी शीशम की लकड़ियों को भी आग लग गई। उनकी वह जमीन बाबा जी की जमीन से मिलती थी। हो सकता है कि कुछ समय पहले उनके किसी बजुर्ग ने बावा जी की जमीन अपने साथ मिला ली हो। बावा जिस कारण उनके परिवार को बावा जी की नाराजगी झेलनी पड़ी हो। सब परिवार वालों ने बावा जी से क्षमा मांगी तो आग शांत हुई। एक बार किसी व्यक्ति ने बावा जी की जमीन पर उगे वृक्ष को काटना चाहा। जब उसने कुल्हाड़ी चलाई तो वृक्ष से खून बहने लगा और उसके चारों ओर सांप ही सांप जमा हो गए।

उसने बाबा जी को याद किया और अपनी गलती की क्षमा मांगी। देखते ही देखते खून बहना बंद हो गया और सभी नाग छुप गए।

उधम सिंह जी ने कहा कि 1971ई. में भारत-पाक युद्ध के साथ वह पुल बज्जूआं (पाकिस्तान) बाबा जी के पवित्र स्थान को देखने गए थे। वहां पाकिस्तानी मुस्लमान भाईयों ने चार कनाल जमीन बाबा जी के स्थान के लिए छोड़ दी है। वहां कोई हल नहीं चलाता और न ही वहां कोई फसल उगाता है। वहां के रहने वाले आज भी बाबा जी के पवित्र स्थान का यथायोग्य आदर करते है। बाबा जी ने अवश्य उन लोगों को कोई चमत्कार दिखाया होगा नहीं तो आज के युग में कौन उपजाऊ जमीन को छोड़ता है। उन्होंने कहा कि उस समय उनके दिमाग में यह बात नहीं आई कि बावा जी के मोहरे या दूसरी चीजें ही वहां से ले आते। उन्होंने कहा कि उस स्थान को देखकर उनको असीम आनन्द का अनुभव

हुआ।

आखिर बिरादरी के लोगों ने 1980 के दशक में सलाह की कि बाबा जी के पवित्र स्थान पर उनकी समाधि का निर्माण किया जाए जहां समय समय पर बिरादरी के लोग इकट्ठा हुआ करेंगे और कुल देवता के दरबार में सबकी उपस्थिति भी हो जाया करेगी। बिरादरी के कई बजुर्गों को बावा जी ने दर्शन भी दिए हैं और उनसे बार बार पूछा था कि उनका स्थान क्यों नहीं बना रहे। बिरादरी के लोगों के योगदान से एक छोटी सी समाधि बनाई गई और भजन कीर्तन का काम शुरू हो गया। पूजा करने के लिए पुजारी जी रखे गए। जो विधि पूर्वक यहां पूजा करते हैं और समय समय पर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

अब पखियां में बड़ी सुंदर समाधि बनी है। मंदिर परिसर में रंग बिरंगे फूलों के वृक्ष लगे है जो अपनी महक से वहां आने वालों का स्वागत करते हैं। पहले नवरात्रे को बहुत बड़े मेले का आयोजन किया जाता है। जिसमें हजारों की संख्या में बज्जू बिरादरी के अतिरिक्त अन्य जातियों के लोग यहां उपस्थित होकर बाबा बाज जी का आशीर्वाद प्रास करते हैं।

इस पवित्र स्थान की देखभाल तथा विकास के लिए एक कमेटी का गठन किया गया है। जो इस स्थान को और अधिक सुंदर तथा आकर्षक बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

दाती बुआ रानी–भटयाड़ी (सुचानी)

जम्मू क्षेत्र अपनी सुन्दरता तथा प्राकृतिक दृश्यों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र को देव भूमि के नाम से भी पुकारा जाता है क्योंकि यहां के शांत वातावरण, घने वनों तथा पवित्र नदियों के किनारे ऋषियों मुनियों तथा साधु संतों ने ईश्वर की आराधना की और यहां के रहने वालों का मार्ग दर्शन किया। इन ऋषियों मुनियों ने यहां के भूले भटके लोगों को सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। देव भूमि जम्मू में हमें स्थान स्थान पर मंदिर देखने को मिलते हैं। जिनमें विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियां स्थापित की गई हैं जहां सुबह शाम प्रभु भक्तों तथा धर्म प्रेमियों की भीड़ रहती है। देवी देवताओं के मंदिरों के अतिरिक्त यहां महापुरुषों, योद्धाओं तथा उन महान आत्माओं की याद में निर्मित कई स्थान हैं जिन्होंने समाज की भलाई के लिए जनता के हित में अत्याचारी राजाओं तथा जागीरदारों से टक्कर ली और उनको झुकने पर मजबूर कर दिया। उनकी याद में बने हुए मंदिरों तथा समाधियों में उनकी मूर्तियों की स्थापना की गई जहां अत्याचारी शासकों ने शीश झुका कर अपने गुनाहों की क्षमा मांगी और उन महान आत्माओं को अपना कुल देवता या कुलदेवी मान कर पूजा की। यही नहीं पुरुषों के साथ साथ यहां की कुछ स्त्रियों तथा कन्याओं ने भी ऐसे राजाओं तथा जागीरदारों के विरुद्ध संघर्ष किया जो लोगों पर जुल्म ढाते थे और अपनी विलासता के लिए लोगों से जबरदस्ती धन वसूल करते थे। ऐसी महान विभूतियों के बलिदान से अत्याचारी राजाओं तथा जागीरदारों की जड़ें हिल गईं और कईयों का तो नाम–निशान ही मिट गया या फिर उनको तरह तरह के कष्टों का सामना करना पड़ा। इसी क्षेत्र में कुछ ऐसी कन्याओं ने भी जन्म लिया जिन्होंने अपने कुल तथा माता पिता की प्रतिष्ठा के लिए अपना बलिदान दिया। वे अपनी जान पर खेल गईं परन्तु उन्होंने अपने परिवार की प्रतिष्ठा को धब्बा नहीं लगने दिया।

ऐसी कन्याओं को कुल देवियों का स्थान प्राप्त हुआ और सम्बंधित परिवारों के अतिरिक्त अन्य जातियों के लोग भी उनकी पूजा करने लगे। ऐसी कन्याओं की याद में लोगों ने देहरियां तथा मंदिर बनाए जहां उनकी मूर्तियों की स्थापना

की और समय समय पर उनकी याद में मेलों का आयोजन किया जाने लगा। उन देवियों ने ऐसे ऐसे चमत्कार दिखाए कि देखने वाले हैरान रह गए। उन्होंने लोगों के कष्टों को दूर किया और सब की मनोकामनाएं पूरी कीं उन देवियों ने अपनी दिव्य शक्ति से सबका कल्याण किया और जो भी उन के दरबार में आया उसकी झोलियां भर दीं। कोई भी खाली हाथ नहीं लौटा। उन देवियों को दाती मां, शीलावंती, सजौती मां, बुआ रानी तथा अन्य कई नामों से याद किया जाने लगा और श्रद्धालु उनके दरबार में उपस्थित होकर अपने आप को धन्य समझने लगे। निर्मल तथा शांत स्वभाव वाली इन दातियों ने समस्त मानव जाति का कल्याण किया।

ऐसा ही एक पवित्र स्थान सांबा तहसील के गांव सुचानी के मोहड़ा भटयाड़ी में है जहां भगवती मां बुआ रानी का मंदिर है। जिसने अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बचाने के लिए ऐसा बलिदान दिया जिसे याद करके हर व्यक्ति के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और श्रद्धा से शीश उनके कदमों में झुक जाता है। बुआ रानी जिसने अभी बाल्यावस्था के बाद युवा अवस्था में कदम रखा था और अपने दिल में अनगिनित सपने संजोए थे। जिसने एक सुन्दर घर परिवार की कामना की थी परन्तु ईश्वर की इच्छा शायद उनको सांसारिक बंधनों से मुक्त करके देवी के रूप में प्रस्तुत करना था इसलिए धरती माता ने उसे अपनी गोद में समा लिया। अपनी शरण में ले लिया और समस्त दुखों तथा मानसिक पीड़ा से मुक्त कर दिया। इस कन्या का जन्म आज से लगभग सात आठ सौ साल पहले मोहड़ा भटियाड़ी में एक मध्यवर्गिय ब्राह्मण परिवार में हुआ। माता पिता ने कन्या का नाम वैष्णों देवी रखा। जन्म से ही कन्या के चेहरे पर दिव्य प्रकाश था और मां दुर्गा का ही एक अंश प्रतीत होती थी।

कन्या के जन्म पर घर में खुशियां मनाई गई। विद्वान पंडितों को बुला कर कन्या के भविष्य के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि कन्या का जन्म ऐसे शुभ लगन में हुआ है जिससे इसे निश्चित रूप से देवस्थान मिलने की संभावना है और देवी की भांति ही इसकी पूजा होगी। जिस पर परिवार तथा जाति के लोग गर्व करेंगे।

कन्या जब बड़ी हुई तो उसकी किलकारियों से सूने घर में रौनक आ गई।

परिवार के सब लोग उसे जी जान से प्यार करते थे। मुहल्ले के लोग भी उस देव कन्या को देखकर प्रसन्न होते थे। गांव की अन्य कन्याओं के साथ उसने खेलना शुरू किया। माता पिता उसे सखियों के संग खेलते देख खुशी से फूले न समाते थे। जैसे जैसे कन्या बड़ी होती गई माता पिता ने उसके विवाह के सपने देखने शुरू कर दिए। उनकी अब यही इच्छा थी कि बुआ रानी जल्दी से जल्दी अपने घर जाए। वे कभी कभी यह सोचकर दुःखी हो जाते थे कि जिस कन्या को उन्होंने इतने लाड़ प्यार से पाला पोसा वह एक दिन पराई हो जाएगी।

सबको छोड़कर चली जाएगी। यह घर, यह गांव, यह लोग उसके लिए पराय हो जाएंगी फिर यह सोच कर अपने दिल को ढाढंस देते हुए कि लड़कियां तो पराया धन होती हैं। एक न एक दिन तो उनको अपने घर जाना ही है। संसार की यही रीत है। जब से सृष्टि की रचना हुई है ऐसा होता आ रहा है और ऐसा ही होता रहेगा।

एक दिन बुआ जी के पिता ने अपने कुल पुरोहित से बुआ जी के लिए कोई अच्छा सा वर तलाश करने को कहा ताकि अपनी बेटी के हाथ पीले करके वह सुख की सांस ले सकें। पुरोहित जी ने बुआ जी के पिता को विश्वास दिलाया कि वह बुआ जी का विवाह निश्चित कर देंगे। रिश्ता भी पक्का हुआ परन्तु यह पता ना था कि बुआ रानी सबको रोता छोड़कर इस दुनिया से चली जाएगी। माता पिता को अलेका छोड़कर प्रभु को प्यारी हो जाएगी।

श्री रमेश शर्मा तथा डा. भारत भूषण जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार जब बुआ जी की आयु अभी 12 वर्ष की थी तो उनके लिए वर की तलाश पुरोहित जी ने शुरू कर दी। उन दिनों रिश्ते नाते करवाने का काम कुल पुरोहित ही किया करते थे। पुरोहित जी ने एक स्थान पर बुआ जी का रिश्ता पक्का कर दिया। फिर कुछ दिनों के बाद वह दूसरे गांव में गए। वहां यजमानों नें उनकी खूब सेबा की। जहां वह ठहरे हुए थे उनकी लड़कियों का तो विवाह हो चुका था परन्तु लड़का अभी अविवाहित था। उन्होंने पुरोहित जीसे कहा कि हमारे लड़के के लिए भी कोई लड़की देखना। उन दिनों लड़कियों की शादी आसानी से हो जाती थी। परन्तु लड़कों की शादी जरा मुश्किल से होती थी।

पुरोहित जी को शायद याद नहीं रहा । इसलिए उन्होंने बुआ जी का रिश्ता

वहां भी पक्का कर दिया और विवाह की तिथि भी निश्चित कर दी। वही तिथि जो पुरोहित जी ने पहले रिश्ते में निश्चित की थी। यानि पुरोहित जी ने बुआ जी का रिश्ता दो स्थानों पर पक्का कर दिया। इसलिए निश्चित तिथि पर बुआ जी के विवाह की तैयारी शुरू हो गई। इतनी देर में बुआ के पिता को पता चला कि घर में दो बारातें आ रही हैं। बुआ का रिश्ता दो स्थानों पर निश्चित किया गया है। गांव में इस बात को लेकर खूब चर्चा हो रही थी। लोग तरह तरह की बातें करने लगे। बुआ रानी के पिता भी बड़े दुखी हुए। जब बुआ जी स्नान करके घर लोटी तो घर में खामोशी थी। सबके चेहरों पर उदासी छाई हुई थी। बुआ रानी भी हैरान थी कि सबको क्या हो गया है। जब उनके कानों में यह भनक पड़ी कि उनके साथ शादी करने के लिए दो दुल्हे आ रहे हैं तो उनको भी दुख हुआ। वह माता पिता तथा सगे संबंधियों की चुप्पी का कारण समझ गई। उसने अपने भाई की उंगली पकड़ी हुई थी। घर के अंदर आने की बजाए वह भाई के साथ ही वापिस मुड़ गई और पछवाड़ की ओर चल दी। उनको माता पिता की प्रतिष्ठा का ख्याल आ रहा था और भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि मेरे माता पिता की लाज अब आपके हाथ में है। गांव के लोग न जाने क्या बातें कर रहे होंगे। वह भाई के साथ चलती जा रही थी और तरह तरह के विचार उनके दिल में आ रहे थे। जब वह पछवाड़ पहुंची तो ईमली तथा रेहाड़ के वृक्षों के पास खड़ी हो कर उन्होंने सीता माता की भांति हाथ जोड़ कर धरती मां से विनम्र प्रार्थना की कि मुझे अपनी गोद में स्थान दो ताकि मेरे माता पिता की प्रतिष्ठा पर धब्बा न लगे। लोग उन पर उंगलियां न उठाएं इस लिए मुझे अपने अन्दर समा लो। उसी समय धरती फटी और बुआ रानी अपने भाई के साथ उसमें प्रवेश कर गई। बुआ रानी के दुप्ट्टे का कुछ भाग बाहर ही रह गया। बुआ रानी को घर में न पाकर सबको चिंता हुई और गांव के लोग उनकी तलाश में निकल पड़े। किसी ने बुआ रानी के दुप्ट्टे का कोना देखा तो सभी वहां इकट्ठे हो गए। उसी समय आकाशवाणी हुई कि बुआ रानी यहां समा गई है। जिस की निशानी उनके दुप्ट्टे का पल्लू है जो बाहर दिखाई दे रहा है। केवल यह दिखाने के लिए कि बुआ रानी ने कोई ऐसा कार्य नहीं किया जिससे उनकी तथा परिवार की प्रतिष्ठा को धब्बा लगे और लोगों को बातें करने का अवसर मिले। कोई यह न समझे कि बुआ रानी कहीं

चली गई है। कुछ समय के बाद लोगों ने यह देखा कि दुप्ट्टे का वह कोना भी धरती के अन्दर समा गया है। सब लोग ईश्वर के इस चमत्कार को देखकर हैरान रह गए। दोनों बारातें भी यह शोक समाचार सुनकर वापिस लौट गईं और बुआ जी की मृत्यु पर सभी दुख प्रकट करने लगे। इसके बाद गांव के लोगों ने बुआ जी की याद में पत्थरों की एक देहरी का निर्माण किया और उनकी पूजा करने लगे। विशेष कर भटियाड़ जाति के लोग उनको अपनी कुल देवी के रूप में मानने लगे क्योंकि बुआ जी ने भटियाड़ जाति तथा गांव की प्रतिष्ठा के लिए ही यह बलिदान दिया था।

हो सकता है कि उसके बाद इस इलाके में अकाल पड़ा हो या भूकम्प आया हो जिसके कारण लोग इस गांव को छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर चलें गए हों। बुआ रानी के माता पिता भी भटियाड़ी छोड़कर कहीं आगे पीछे चले गए। गांव का कोई भी परिवार मुड़ कर नहीं आया खासकर भटियाड़ जाति का। भटियाड़ जाति के लोग जम्मू के आस पास के क्षेत्रों तथा राज्य के अन्य भागों में रहने लगे और सब ने अपने अपने रीति रिवाज भी बना लिए। इसके बाद भटियाड़ जाति के कुछ लोगों में ऐसी प्रथा बन गई कि जब भी किसी कन्या का विवाह होता लड़के वालों के घर से बुटना लगने की क्रिया से पहले बकरा तथा तेल आना चाहिए ताकि यह निश्चित हो जाए कि बारात उसी घर से आ रही है जहां रिश्ता पक्का हुआ था। बाकी लोगों में यह परम्परा है या नहीं परन्तु जोगी चक (पाकिस्तान) तथा गराहना में रहने वाले भटियाड़ बिरादरी के लोगों में यह परम्परा आज भी है। हो सकता है कि बुआ रानी उसी परिवार से संबंध रखती हो जो आज भी इस परम्परा पर चल रहे हैं। कन्या को बुटना लगाने से पहले बकरे को वहां लाया जाता है और उसके कान के लहु से परिवार के बच्चों के माथे तथा कान पर तिलक लगाया जाता है और इसके बाद ही बच्चियों के कान तथा नाक सिये जाते हैं। तेल बच्चों के शरीर पर लगाया जाता है। उससे पहले बच्चों के शरीर पर तेल लगाना वर्जित है। वही तेल बुटना लगाने से पहले कन्या के शरीर पर भी लगाया जाता है।

डा. भारत भूषण के पिता स्वर्गिय दया राम शर्मा केंद्रीय विद्यालय में प्रिंसिपल थे। 1992 में सेवानिवृत होने के बाद श्री रमेश शर्मा जी के साथ बुआ रानी के

मंदिर के विकास कार्यों में जुट गए और नियमित रूप से बुआ रानी के दरबार में आने लगे। फिर वह भटियाड़ मंडल के मंत्री बनाए गए और साथ ही यहां बने अवेयर स्कूल में काम भी करने लगे। स्कूल जाने से पहले वह मंदिर में आकर धूप दीप जलाते थे। वह मंदिर या किसी धार्मिक स्थान पर बहुत कम जाते थे परन्तु बुआ रानी के आशीर्वाद से उनको ऐसी प्रेरणा मिली कि बुआ रानी के मोहरों के दर्शन किए बिना उनको चैन ही नहीं मिलता था। वहां आकर उनको असीम आनन्द का अनुभव होता था। जब उनका अंतिम समय आया तो वह बुआ रानी को ही याद कर रहे थे। स्वर्गवास होने से पहले जो मेल आई उस समय वह बड़े कमज़ोर थे। रात भर रोते रहे कि पता नहीं बुआ रानी ने मेल पर मुझे बुलाना भी है या नहीं परन्तु मेल वाले दिन वह स्वयं चलकर यहां आए थे।

उस दिन नव निर्मित मंदिर में बुआ रानी तथा उनके भाई की मूर्तियों की स्थापना होनी थी। यहां आकर चक्कर लगाया। बिरादरी के लोगों से मिले और जल्दी ही घर लौट गए। यह सब बुआ जी की ही कृपा थी कि उन्होंने बिरादरी के लोगों से मिल कर सबके सहयोग से इस मंदिर का निर्माण करवाया। मंदिन में बुआ रानी तथा उनके भाई की मूर्तियां स्थापित की गईं। मूर्तियों के बीच नीचे मंदिर में बुआ रानी के माता पिता तथा बहन भाई के प्राचीन मोहरे भी रखे गए है। जिस स्थान पर बुआ रानी का मंदिर है स्थानीय लोग उसे बुआ का जाड़ कहते हैं। सबसे पहले यहां पत्थरों की छोटी सी देहरी थी जिस के अन्दर बैठने के लिए स्थान नहीं था। इसके बाद रमेश जी ने बिरादरी के सहयोग से ईन्टों तथा सीमेंट की देहरी बनवाई जिसमें दो चार व्यक्ति अन्दर बैठकर दिया बत्ती जला सकते थे। परन्तु आस पास झाड़ियों के सिवाये कुछ नहीं था। श्री रमेश जी ने कहा कि 1963 में वह स्वयं पहली बार बुआ रानी की देहरी पर आए। उनके दिल में इच्छा पैदा हुई कि स्वयं चल कर बुआ रानी की देहरी पर कुछ विकास कार्य करें। इस से पहले बेशक वह अपने बज़ुर्गों के साथ आए होंगे। परन्तु उस बार विरेन्द्र जी के साथ गए। देखा कि देहरी कई जगहों से गिर चुकी थी। मुश्किल से एक आदमी अन्दर जा सकता था मोहरे खंडित हो चुके थे। दूसरी बार 1967 में गए इस बार भी उन के चाचा जी के लड़के विरेन्द्र जी उन के साथ थे। देहरी की थोड़ी बहुत मरम्मत श्री दीनानाथ जी ने करवाई थी। क्योंकि

उनकी पत्नी को छाया आती थी और वह हर पूर्णमाशी को यहां आती थी। आस पास बैठने के लिए भी स्थान नहीं था। केवल गरने, ब्रेंकड़ तथा अन्य कांटेदार झाड़ियां ही यहां थीं।

वर्तमान मंदिर का निर्माण कार्य 1998ई. में आरम्भ हुआ था और 2000ई. में पूर्ण हुआ। कैप्टन खजूर सिंह जी के अनुसार पहले तो बहुत कम लोग यहां आते थे परन्तु अब मेल पर बुआ जी के मंदिर पर श्रद्धालुओं की बहुत भीड़ होती है। उस दिन यहां खूब चहल पहल होती है और भटियाड़, बिरादरी के लोग बिश्नाह,हीरा नगर, भटियाड़ जिन्दराह, मनवाल, किष्णपुर, राबता, चौकी चौरा, पौनी, मनीपुर (आसाम) दिल्ली, गुरदासपुर, अमृतसर, मकेरियां, तलवाड़ा, दीनानगर, पठानकोट, चंडीगढ़, बिलावर, हमीरपुर सिद्धर, पुरखू, परगवाल, केश्वेचक, बीरपुर, बसोहली, महानपुर, जम्मू शहर, चनैनी, उधमपुर, मुट्ठी, बनतालाब, गराहना तथा अन्य कई स्थानों से बुआ के भक्त यहां आते थे।

बुआ रानी के दरबार में पहली मेल 1971के नवरात्रों में लगी थी। फिर बिरादरी के सदस्यों ने फैसला किया कि भविष्य में कार्तिक की पूर्णिमा (यानि झिड़ी) पर यहां वार्षिक मेल हुआ करेगी। श्री रमेश जी ने अपने सहयोगियों से मिलकर दिन रात एक करके सब स्थानों पर भटियाड़ बिरादरी के सदस्यों से सम्पर्क किया और सब को मेल पर यहां इकटठा होने को कहा ताकि आपसी भाईचारा बढ़े।

इस पवित्र स्थान के विकास के लिए भटियाड़ मंडल बनाया गया है। ज़िसके अध्यक्ष डा. भारत भूषण तथा मंत्री हीरानगर के भारत भूषण जी हैं जो बिरादरी के सदस्यों के सहयोग से बुआ रानी के मंदिर तथा इस के आस पास के विकास कार्यों में लगे हैं ताकि इस पवित्र स्थान को और अधिक सुन्दर तथा आकर्षक बनाया जा सके। बुआ रानी के मंदिर में आकर जो भी सच्चे दिल से प्रार्थना करता है उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती है और घर में सुख तथा समृद्धि होती है। बिगड़े काम बनते हैं और कष्टों से मुक्ति मिलती है। बुआ रानी उसके अंग संग रहती है और उसकी रक्षा करती है।

मंदिर बाबा बड़गाल जी-कोट भलवाल

जम्मू की पवित्र धरती देवी देवताओं के मंदिरों तथा महापुरुषों की यादगारों से भरी हुई है। इस धरती पर रहने वाले लोगों के दिलों में प्रभु भक्ति की जोत जलाने के लिए समय समय पर कई महापुरुष यहां पधारे। इस कारण हमें डुग्गर भूमि के हर गांव तथा घर में कहीं न कहीं देवी देवता का मंदिर या किसी महापुरुष की समाधि देखने को मिलती है। जब तक वे महापुरुष जीवित रहे लोगों की भलाई करते रहे और उनके स्वर्गवास होने पर लोगों ने उनकी समाधियां बनाकर उनको अपने कुल देवता के रूप में मानना आरम्भ कर दिया। इन पवित्र स्थानों पर निश्चित समय पर मेलों का आयोजन किया जाता है जहां इन महापुरुषों का आशीर्वाद लेने के लिए बड़ी गिनती में लोग आते हैं। इन पवित्र स्थानों पर भक्तों को मानसिक शांति प्राप्त होती है।

जम्मू से लगभग 12 किलोमीटर उत्तर की ओर एक पवित्र स्थान मंदिर बाबा बड़गाल जी के नाम से प्रसिद्ध है जो जम्मू घरोटा, अखनूर सड़क की दाईं और बहुत ही सुन्दर तथा प्राकृतिक वातावरण में स्थित है। इस देव स्थान का मुख्य द्वार सड़क से ही दिखाई देता है और यह कोई 16 कनाल भूमि पर फैला हुआ है। किसी समय यहां जंगल था । कंडी होने के कारण यहां पानी की भी बहुत कमी थी। आने जाने के साधन भी नहीं थे इसलिए लोग यहां पैदल ही आते थे परन्तु आज बाबा बड़गाल जी की कृपा से बाबा जी के श्रद्धालुओं ने इस स्थान के विकास की ओर ध्यान देना शुरू किया है जिस कारण अब यह स्थान एक हरे भरे बागीचे की तरह दिखाई देता है जिसके मध्य बाबा बड़गाल जी का मंदिर बना हुआ है। जिसमें उनकी पिंडियां स्थापित हैं। मंदिर के सामने भी बाबा जी के मोहरे हैं जहां एक बड़ा हाल और हवन कुंड हैं। इस स्थान पर मेलों के समय श्रद्धालु बैठकर हवन करते हैं। उन दिनों यहां बहुत रौनक होती है। श्रद्धालु बाबा जी की पिंडियों पर फल फूल चढ़ाकर और धूप दीप जलाकर पूजा अर्चना करते हैं। मुख्य द्वार से गुजरने के बाद कुछ सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। फिर एक बड़े मैदान की दाईं ओर हरे भरे वृक्षों के मध्य बाबा जी का मंदिर है।

इस देवस्थान पर सैंकड़ों वर्ष पुराने वृक्ष हैं जिनके साए में बैठकर भक्तों को आध्यात्मिक शांति का अनुभव होता है। गर्मियों में श्रद्धालु इन वृक्षों के साए में

बैठकर आराम भी करते हैं।

बाबा बड़गाल भलवाल राजपूतों तथा बड़गोत्रा ब्राह्मणों के कुलदेवता हैं और इस पवित्र स्थान पर हर साल इन बिरादरियों के लोग अपने परिवारों के साथ भारी संख्या में आकर बाबा जी के दरबार में उपस्थित होते हैं।

इसके अतिरिक्त दूसरे लोग भी यहां अपनी मनोकामनाओं की पूर्ती के लिए आते हैं। सभी श्रद्धालु अपने परिवार तथा घरेलु पशुओं की सुरक्षा के लिए भी बाबा जी से प्रार्थना करते हैं। मंदिर परिसर में उगे वृक्षों को काटना वर्जित है और न ही कोई यहां से जलाने के लिए लकड़ी ले जा सकता है। कहते हैं कि एक बार एक गांव वासी यहां से लकड़ी काट रहा था तो मंदिर के पुजारी ने उसे मना किया कि बाबा जी के स्थान से लकड़ी मत काटो परन्तु वह व्यक्ति न माना और लकड़ियां काटता रहा। पुजारी ने उसे बार बार कहा कि ऐसा करने से तुम्हें हानि हो सकती है मगर उसने एक न मानी और लापरवाही से उत्तर दिया क्या कर लेगा बाबा मुझे। मैं तो लकड़ियां कांटूगा। बड़े बाबे देखे हैं। पुजारी ने उसे समझाया कि बाबा जी का अनादर मत करो, वह जानी जान हैं मगर वह न माना। काटी हुई लकड़ियों को इक्टठा करके उसने गट्ठा बांध लिया। जब वह गट्ठा उठाकर जाने लगा तो वह अन्धा हो गया। उसे चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देने लगा। गट्ठा जमीन पर छोड़ते ही उसे फिर दिखाई देने लगा। उसने पुनः गट्ठे को उठाया तो वह फिर अन्धा हो गया। कुछ समय बाद उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने लकड़ियों का वह गट्ठा जंगल में ही छोड़ दिया और बाबा जी के मंदिर में जाकर शीश झुकाया और अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी और बाबा जी को अपना कुलदेवता मान कर उन की पूजा की और अपने तथा परिवार के कल्याण के लिए प्रार्थना की।

एक दंत कथा के अनुसार बाबा गड़गाल जी कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के थे वह अपने चमत्कारों से लोगों के दिलों में इस प्रकार समा गए कि लोग उनको देवता के रूप में मानने लगे।

उस इलाके में बाबा जी का मान सम्मान था। वह सबके कष्ट दूर करते थे। यहां पधारने से पहले ही बाबा जी देवता के रूप में विराजमान थे और लोग उनको कुल देवता के रूप में पूजते थे। उन्होंने घर में बाबा बड़गाल की पिंडी

तथा मोहरों के रूप में स्थापना की थी। उस परिवार में पूर्ण सुख तथा शांति थी और बाबा जी के आशीर्वाद से किसी चीज की कमी न थी।

परिवार के सभी सदस्य सुबह-शाम बाबा जी की पूजा करते और मन चाही मुरादें पाते। कुछ समय के बाद हालात ने पल्टा खाया और उन लोगों की आर्थिक दशा खराब हो गई। सारा काम काज ठप्प हो गया और कमाई का कोई साधन न रहा। प्राकृतिक आपदा या विदेशी आक्रमण के कारण फसल भी खराब हो गई।

बहुत सोच विचार के बाद उन लोगों ने अपना घर छोड़कर काम की तालाश में किसी दूसरे स्थान पर जाने का निश्चिय किया। परिवार के सदस्यों को किसी सुरक्षित स्थान पर छोड़कर चारों भाई रोजगार की तालाश में निकल पड़े। उनके सामने यह सवाल था कि बाबा जी की पिंडियों तथा मोहरों को कहां रखा जाए। अगर उनको वहीं रख दिया गया तो पाप के भागी होंगे। उनको स्नान कौन कराएगा। कौन उनकी पूजा करेगा। उनको भोग कौन लगाएगा तथा उनके वस्त्र कौन बदलेगा। चारों भाईयों ने उस चौकी को जिस पर बाबा जी के मोहरे रखे थे एक पालकी में रखा और पालकी को उठाकर जम्मू की ओर चल पड़े। जहां रात होती वहीं रुक जाते और अगले दिन नहा धोकर बाबा जी की पूजा करने के बाद पालकी उठाकर चलना आरम्भ कर देते। बहुत दिनों के बाद अखनूर तहसील में चिनाब नदी के किनारे स्थित परगवाल के पास निचले भलवाल पहुंचे। कुछ दिन वहां रहे परन्तु कोई काम न मिला इस लिए वे ऊपरी भलवाल और फिर पीरी भलवाल आए। परन्तु यहां भी उनको मायूसी ही हाथ लगी। उनको अपने परिवार की चिंता थी परन्तु उचित कमाई न होने के कारण उन को अपना पेट पालना मुश्किल हो रहा था फिर वे परिवार को क्या भेज सकते थे। किसी ने उनको सलाह दी कि जम्मू के राजा के पास जाकर नौकरी के लिए कहो। वह बड़े दयालु हैं और आपको कोई न कोई काम दे देंगे।

अगले दिन वे चारों भाई सुबह बावा बड़गाल जी की पूजा करने के बाद जम्मू की ओर निकल पड़े। जम्मू पहुंचने पर उन्होंने राजा जी से मुलाकात की। उनको अपनी व्यथा सुनाई और नौकरी के लिए प्रार्थना की। जम्मू के राजा ने चारों भाईयों को नौकरी दे दी। अब वे प्रतिदिन पीरी भलवाल से चलकर जम्मू में नौकरी पर आते थे।

राजा उनके काम काम से बहुत प्रसन्न थे। एक दिन राजा नें उनसे पूछा कि तुम चारों भाई नौकरी करने के लिए किस गांव से आते हो। उन्होंने उत्तर दिया कि हम अखनूर के पास पीरी भलवाल से आते हैं तो राजा ने उनसे कहा कि इतनी दूर से प्रतिदिन यहां आने पर तुम्हें कष्ट होता होगा। क्यों नहीं आप जम्मू के आस पास कहीं रह लेते ताकि आसानी से यहां आ सको। चारों भाईयों को राजा की बात पसंद आई। दूसरे दिन सुबह वे बाबा जी की पालकी उठाकर जम्मू की ओर चल पड़े । उस दिन दशहरा था। वे इस स्थान पर पहुंचे जहां बाबा जी का मंदिर है। एक वृक्ष के नीचे उन्होंने पालकी को रखा और खुद भी आराम करने के लिए बैठ गए। थके हुए थे। इसलिए नींद आ गई। जब उठे तो जम्मू की ओर जाने के लिए पालकी को उठाने लगे। उन्हें यह देख कर हैरानगी हुई कि जिस पालकी को चारों भाई आसानी से उठा सकते थे इतनी भारी हो गई थी कि उठाई न गई। वह सोचने लगे शायद बाबा जी को यह स्थान पसंद आ गया है। इसलिए यहीं रहना चाहते हैं। देव इच्छा को समझते हुए उन्होंने भी बाबा जी के साथ इसी स्थान पर रहने का निश्चिय किया। इसी स्थान पर बावा जी के मोहरे स्थापित किए और पास ही एक छोटा सा मकान बना कर रहने लगे। कुछ समय पश्चात उन्होंने जम्मू के राजा से कुछ जमीन मांगी ताकि थोड़ी बहुत खेती करके अपना निर्वाह कर सकें। राजा ने उनकी इच्छा के अनुसार खेती के लिए जमीन दे दी। उन्होंने अपने परिवार के लोगों को भी यहीं बुला लिया और बावा जी की कृपा से सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। एक बार फिर उनके अच्छे दिन आ गए।

बाबा जी के इस पवित्र स्थान की चर्चा दूर दूर तक फैल गई। श्रद्धालु दूर दूर से चलकर उनके दरबार में उपस्थित होने लगे।

समय के साथ साथ चारों भाई जंगल को काट कर जमीन तैयार करते रहे। फिर तीन भाईयों ने भलवाल तथा एक भाई ने कोट गांव को आबाद किया। कुछ लोगों का कहना है कि दो भाई भलवाल तथा दो भाई कोट रहने लगे परन्तु बावा जी की पूजा अर्चना का काम सभी मिलकर करते थे। कुछ भी हो ऐसा कहा जाता है कि दोनों गांव उन्होंने ही आबाद किए हैं और बाद में आस पास के लोग भी यहां आ कर बस गए। जिनमें सभी जातियों के लोग,शामिल थे। यह दोनों गांव बाबा जी की कृपा से खूब फलने फूलने लगे। भलवाल राजपूतों ने बड़गोत्रा ब्राह्मणों को अपना पुरोहित मान लिया और बड़गोत्रा ब्राहमणों के

पुरोहित पूनिया जाति के ब्राह्मण माने जाने लगे। कोई शुभ कार्य करने से पहले भलवाल तथा बड़गोत्रा बिरादरी के लोग अपने पुरोहितों के साथ यहां आकर बाबा बड़गाल जी का आशीर्वाद प्राप्त करके ही कार्य को आरम्भ करते हैं तब उनको सफलता मिलती है।

इस पवित्र स्थान की मान्यता सभी जातियों के लोग करते हैं परन्तु अधिकतर भलवाल राजपूत तथा बड़गोत्रा ब्राह्मण अपने परिवार की सुख शांति, कुल वृद्धि फसल तथा पशुओं की सुरक्षा के लिए बाबा जी के मंदिर उपस्थित होकर प्रार्थना करते हैं। दशहरे के दिन इस पवित्र स्थान पर बहुत बड़ा मेला लगता है।

उस दिन यहां हवन, भजन कीर्तन, सत्संग तथा विशाल भंडारों का आयोजन किया जाता है जहां सभी श्रद्धालु इक्ट्ठे बैठकर प्रसाद खाते हैं और घरों को भी ले जाते हैं। बिरादरी के वरिष्ठ सदस्य मिलकर इस पवित्र स्थान के विकास बारे सोच, विचार करते हैं और दूर दराज शहरों तथा कस्बों में रहने वालों को एक दूसरे से मिलने का अवसर मिलता है। परिवार में पैदा होने वाले लड़कों के मुंडन संस्कार भी यहीं होते हैं और नए विवाहित जोड़े बाबा जी के मंदिर की परिक्रमा करके पारिवारिक जीवन में सुख की कामना करते हैं। हर छः महीने के बाद नया अनाज प्रयोग करने से पहले उसका कुछ हिस्सा बाबा जी के मंदिर में चढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त घरेलू गाय या भैंस का दूध या घी खाने से पहले यहां चढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी आपत्ति की घड़ी में बाबा जीको याद करने से श्रद्धालुओं को कष्टों से मुक्ति मिलती है। मंदिर परिसर में एक बेरी का वृक्ष है। मंदिर की परिक्रमा करने के बाद नए जोड़े बेरी के वृक्ष की भी परिक्रमा करते हैं।

इस पवित्र स्थान के विकास तथा इसे और अधिक सुन्दर तथा आकर्षक बनाने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया है। कमेटी में भलवाल राजपूत तथा बड़गोत्रा बिरादरी के सदस्य हैं जो आपसी मेल मिलाप से कुल देव बावा बड़गाल जी की महिमा तथा उनके चमत्कारों का प्रचार दूर दूर तक करके सभी के हृदयों में प्यार की जोत जला कर समाज तथा बिरादरी में फैली कुरीतियों को समाप्त करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त कमेटी ने यहां लोगों की भलाई तथा बच्चों की पढ़ाई लिखाई के लिए उचित प्रबंध करने की योजना भी बनाई है ताकि इस क्षेत्र का विकास हो सके और आने वाली पीढ़ियों को लाभ हो।

बाबा रोची राम जी-रांजन

जम्मू से लगभग 22 किलोमीटर उत्तर की ओर एक गांव है रांजन जहां बाबा रोची राम जी की समाधि है। गांव के बाहर आमों के वृक्षों के मध्य बहुत ही सुन्दर वातावरण में बने इस समाधि मंदिर में न केवल स्थानीय अपितु दूर दूर से लोग आकर शीश झुकाते और बाबा जी का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। बाबा रोची राम जी पहुंचे हुए संत थे। जिन्होंने अपना पूरा जीवन जन मानस के कल्याण के लिए लगा दिया और समाने के बाद भी लोगों के कष्टों को दूर कर के उनके जीवन में सुख शांति लाकर समस्त मानव जाति का भला कर रहे हैं। बाबा जी के दरबार से कोई भी खाली हाथ वापस नहीं जाता। यहां सब बराबर हैं और ऊंच नीच का कोई भेद भाव नहीं। यहां सबकी मनोकामनाऐं पूर्ण होती हैं। रविवार के दिन यहां श्रद्धालुओं की भीड़ होती है। उस दिन इस मंदिर के गद्दी नशीन श्री बलवंत सिंह जी जिनमें बाबा जी का प्रवेश है लोगों की शारीरिक तथा घरेलू मुश्किलों को सुनते और उनका समाधान करते हैं। बावा जी की कृपा से सब लोग यहां से ठीक होकर जाते हैं। यह सारा इलाका कंडी है परन्तु बाबा जी के मंदिर में आकर श्रद्धालु जब आमों के वृक्षों की ठंडी छांव में विश्राम करते हैं तो उनकी सारी थकान दूर हो जाती है और वे अपने आपको किसी स्वास्थ्य वर्धक स्थान पर महसूस करते हैं। मंदिर परिसर में खिले फूलों की महक से वहां का वातावरण बड़ा ही सुन्दर तथा सुहावना प्रतीत होता है। श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए कमरे और समाधि मंदिर के सामने भगतों के बैठने तथा कीर्तन करने के लिए एक बड़ा बरामदा है। बलवंत सिंह जी स्वयं तो रांजन से सामेचक, के पास चक महानी चले गए हैं परन्तु हर रविवार को यहां आकर भक्तों को बाबा जी की भभूती तथा धागा आदि देते हैं जिससे उनके कष्ट दूर होते हैं। यहां आकर श्रद्धालु असीम आनंद का अनुभव करते हैं। समाधि के पास पवित्र सरोवर है जिसके आसपास पीपल के बड़े बड़े वृक्ष हैं।

बलवंत सिंह जी के अनुसार बाबा रोची राम जी देहली के आस पास ही कहीं रहते थे जहां लोगों का आना जाना बहुत कम था। वहां एक छोटे से मंदिर में अपना डेरा जमाए हुए थे। सुबह शाम, ईश्वर भक्ति में लीन रहते और जो कोई वहां आता उसको भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते। उन दिनों जम्मू के

आस पास का ही रहने वाला एक युवक जो देहली में कोई काम करता था बाबा जी के सम्पर्क में आया।

बावा जी की भक्ति तथा उनकी शिक्षा से वह बड़ा प्रभावित हुआ इसलिए उसने प्रति दिन वहां जाना आरम्भ कर दिया। वह बावा जी की बहुत सेवा करने लगा। उनके लिए चिलम भरता तथा खाना बनाता। बाबा जी भी उस पर प्रसन्न थे। एक दिन बावा जी अपनी सन्दूकची खोल उसमें से सोने की ईंटें निकाल कर धूप में सुखा रहे थे। उस समय किसी के आने की उम्मीद नहीं थी परन्तु वह युवक वहां आ गया। दूर से ही जब धूप में सोने की ईंटों की चमक देखी तो उसकी आंखें चुंदिया गईं। वह हैरान रह गया कि यह क्या चमत्कार है। पास गया तो सोने की ईंटें देखकर उसका दिल बेईमान हो गय और उसने सन्दूकची में रखी चारों सोने की ईंटों को चुराने की ठान ली। उसने सोचा क्या करना है नौकरी करके यदि सोने की यह ईंटें मिल जाएं तो घर लौट जाऊंगा। इस से मेरे परिवार की आर्थिक दशा भी सुधर जाएगी और उनको जीवन भर कोई काम करने की आवश्यकता भी नहीं रहेगी। हमारा परिवार सारे इलाके में अमीर कहलाने लगेगा और सम्बंधियों में इज्जत मान बना रहेगा। लालच तथा ईंटों को प्राप्त करने की इच्छा से वह बाबा जीके और अधिक समीप आने का यत्न करने लगा। बाबा जी जानी जान थे, समझ गए कि युवक के दिल में क्या है। एक दिन उन्होंने कहा, बेटा मैं जानता हूं कि तुम्हारे दिल में इन ईटों को प्राप्त करने की इच्छा है। तुम ने मेरी बहुत सेवा की है। इसलिए मैं चाहता हूं कि यह ईंटें तुम्हें दे दूं।

युवक डर गया और सोचने लगा कहीं बाबा जी एक तरफ मुझे ईंटें दें और दूसरी तरफ पुलिस में मेरे विरुद्ध चोरी का आरोप लगाकर कैद न करवा दें और में पकड़ा जाऊं। बेहतर है बाबा जी को मारकर इन ईंटों पर अधिकार किया जाए। दूसरे दिन वह हथियार लेकर बाबा जी की कुटिया में गया। बाबा जी सोए हुए थे। यूंही उसने बार करने के लिए हथियार निकाला सामने कुछ भी न था। बाबा जी अदृश्य हो गए थे। उन्होंने अपना असली रूप छोड़ दिया और सन्दूकची में बैठ गए। फिर क्या था युवक ने सन्दूकची को उठा लिया उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि बाबा जी भी सन्दूकची में प्रवेश कर चुके हैं। युवक

ने सन्दूकची को बिस्तर में बांधा और अपने घर की ओर चल दिया । अपने गांव के करीब आकर उसने सोचा कि बिस्तर खोलकर देख तो लूं कि सन्दूकची है भी या नहीं । यूंही उसने सन्दूकची का ढ़क्कन खोला तो देखा कि बावा जी वहां विराजमान हैं । वह परेशान हो गया तो बावा जी ने कहा बेटा जहां जा रहे हो वहां ले चलो । उसने फिर बिस्तर बांधा और चल दिया । वह खुश था कि अपने साथ सोने की ईंटें ला रहा है परन्तु बावा जी से डर भी रहा था क्योंकि उसने जो काम किया था अच्छा नहीं था । फिर दिल को स्वयं ही ढाढस देने लगा कि जो होगा देखा जाएगा । यही सोचते सोचते वह नागबनी के पास समैलपुर अपने घर तक पहुंच गया । यूंही वह मुख्य द्वार से घर में प्रवेश करने लगा उसकी मृत्यु हो गई । वह ईंटों के विषय में किसी को बता भी न सका। घरवालों ने उसका बिस्तर एक ओर रख दिया और उसके अन्तिम संस्कार की तैयारियां करने लगे। रांजन गांव की लड़की जो बलवंत सिंह जी के परिवार की थी इस घर की बहू थी । बुआ ने अपने मायके संदेश भेजा तो रांजन से भी कुछ लोग अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए समैलपुर गए । बुआ ने बिस्तर में रखी सन्दूकची को देख लिया था जिसमें सोने की ईंटें रखी थीं । जब उसके मायके वाले वापस घर जाने लगे तो बुआ ने बिस्तर चोरी से किसी के हवाले कर दिया ताकि ईंटें मायके वालों के घर पहुंच जाएं और वे सुखमय जीवन गुजार सकें । परन्तु हुआ इसके विपरीत । जिस व्यक्ति को बिस्तर दिया उसको भी मालूम न था कि इसमें क्या है । वह व्यक्ति जब बिस्तर के साथ घर में दाखिल हुआ तो उसकी भी मृत्यु हो गई । सारे परिवार को दुःखों ने चारों ओर से घेर लिया । खेती बाड़ी समाप्त हो गई और घर के सदस्य एक-एक करके मरने लगे परन्तु किसी को पता न चल सका कि इसका कारण क्या है । तमाम घर में चारों ओर अन्दर बाहर नाग ही नाग दिखाई देते थे ।

केवल बलवंत सिंह जी के पिता जी ही बाकी बचे । गांव के वृद्धों तथा जादू टोना जानने वालों से पूछा तो पता चला कि घर में किसी चीज का प्रवेश है जो चैन से नहीं रहने दे रही और परिवार की मुसीबतों का कारण बन रही है । उस समय उन की आयु केवल 15 वर्ष की थी । उनको चौकी आने लगी । चार साल तक वह देवी देवताओं के स्थानों पर जाते रहे । सब कुछ छोड़ दिया । सभी ने

कहा घर के अंदर देखो। घर की एक वृद्ध स्त्री की नजर बिस्तर पर पड़ी, खोल कर देखा तो उसमें एक सन्दूकची में सोने की ईंटें थीं।

उसने घर से दूर जमीन खोद कर वह सन्दूकची दबा दी। किसी को सही स्थान का पता न था। बाबा जी ने चौकी के समय कहा कि मेरी सन्दूकची को देहरी बनाकर स्थापित करो।

खोदाई की गई परन्तु कुछ भी हासिल नहीं हुआ। जो जगह खोदी गई वहां तालाब बना दिया गया। दूसरी बार बावा जी ने सही स्थान की जानकारी दी तो वहां से संदूकची को निकाल कर एक देहरी में उसकी स्थापना की गई। इसी देहरी पर अब एक मंदिर का निर्माण किया गया है। देहरी बनने के बाद बलवंत सिंह के पिता श्री संतोख सिंह जी ने बावा जी को अपना कुल देव मानकर उनकी पूजा शुरू की तो बाबा जी प्रसन्न हो गए। घर में सुख शांति आ गई और बाबा जी की कृपा से वह परिवार पहले से भी अधिक समृद्ध हो गया। बाबा जी का क्रोध शांत हो गया और परिवार में वृद्धि होने लगी। भारी संख्या में लोग इस पवित्र स्थान पर आ कर कष्टों से मुक्ति पाने लगे।

बाबा जीकी आज्ञा हुई कि साल में एक बार भण्डारा किया जाए। भंडारे का दिन जन्माष्टमी के दूसरे दिन निश्चित किया गया। भण्डारे से पहले इलाके में जोगियों की तरह फेरी लगाने की भी आज्ञा हुई। बाबा जी ने यह भी आज्ञा दी कि उनकी धूनी घर ले चलो और वहां भी स्थापना करो। भंडारे के समय सवा मन का एक रोट (बड़ी मीठी रोटी) बनता है। संतोख सिंह जी के जीवन काल में ही बलवंत सिंह जी को पकड़ हो गई थी।

बलवंत सिंह जी ने कहा कि मंदिर के निर्माण के समय बाबा जी के श्रद्धालुओं ने दिल खोलकर सेवा की। जितना भी धन इकट्ठा हुआ सब मंदिर तथा कमरों के निर्माण पर खर्च कर दिया गया। भंडारे के समय जो सवा मन का रोट बनता है उसे बलवंत सिंह जी अकेले बनाते हैं उस समय किसी को भी उस कमरे में प्रवेश की आज्ञा नहीं होती। रोट बनाकर घर में पूजा अर्चना करने के पश्चात समाधि मंदिर लाकर श्रद्धालुओं में प्रसाद के रूप में बांटा जाता है। भंडारे वाले दिन यहां मेला लगता है और बहुत रौनक होती है। मेले में शामिल होने तथा बाबा जी का आशीर्वाद लेने दूर दूर से भक्त आते हैं।

अब समैलपुर में भी बाबा जी का देहरा बनाया गया है। वहां मनहास बिरादरी के लोग बाबा जीकी पूजा करते हैं और उनकी आज्ञा अनुसार राह रीत करते हैं। बाबा जी का मुख्य स्थान रांजन में है। इस के अतिरिक्त समैलपुर में जन्माष्टमी के दिन भी भंडारा होता है। बलवं सिंह जी रांजन के भंडारे के अगले दिन समैलपुर भी जाते हैं। इस पवित्र स्थान के विकास की पूरी जिम्मेदारी बलवंत सिंह जी ने अपने ऊपर ली है। कोई कमेटी नहीं बनाई गई। इस शुभकार्य में उनको सबका सहयोग मिल रहा है। उनसे पहले यहां कुछ साधु रहते थे। जो सारा चढ़ावा स्वयं खा जाते थे और इस स्थान के विकास पर कुछ भी खर्च नहीं करते थे।

उनको निकाल कर इस पवित्र स्थान का प्रबंध बलवंत सिंह लंगेह ने अब खुद संभाल लिया है। रविवार के दिन वह स्वंय यहां आकर श्रद्धालुओं को भभूत देते हैं और बाबा जी की आज्ञा से भक्तों के कष्टों का समाधान करते हैं। हर रविवार यहां हलवा बनता है। नाथ भूरी राम तथा सीता राम ढोल पर कारकों द्वारा बाबा जीकी कथा श्रद्धालुओं को सुनाते हैं। इस पवित्र स्थान की देख भाल रांजन के ही रहने वाले मूल राज जी कर रहे हैं, जो बाबा जी के परम भक्त है और यहां आने वाले भक्तों को हर प्रकार की सुविधा प्रदान करने का यत्न करते हैं।

मंदिर मां सजौती देवी-जम्मू

जम्मू क्षेत्र में हमें स्थान स्थान पर देवी देवताओं के मंदिर तथा पीरों फकीरों की दरगाहें देखने को मिलती हैं। जहां समय समय पर मेलों तथा भंडारों का आयोजन किया जाता है। इस पवित्र धरती पर महापुरुषों के अतिरिक्त महान स्त्रियों ने भी जन्म लिया जिन्होंने कुल देवियों का स्थान प्राप्त करके कई जातियों, वंशों तथा समस्त मानव जाति का कल्याण किया। उनके आशीर्वाद से श्रद्धालुओं के कष्ट दूर हुए और उनके परिवारों में उन्नति, समृद्धि तथा प्रसन्नता का वास हुआ। करोबार में वृद्धि हुई और दौलत के ढेर लग गए। उन महान स्त्रियों ने जो बलिदान दिए उनको रहती दुनिया तक याद किया जाएगा। उनकी समाधियों पर आज भी श्रद्धालुओं की भीड़ रहती है। उन्होंने अपने अस्तित्व को मिटा दिया परन्तु जुल्म के सामने झुकने से इंकार कर दिया। उनके क्रोध से जालिमों के वंश तबाह हो गए और उनके परिवार जन पैसे पैसे को मोहताज हो गए। परन्तु जब जालिमों ने अपनी भूल को स्वीकार किया, उन देवियों से क्षमा मांगी तो कोमल, हृदय रखने वाली इन शक्तियों ने उन जालिमों के सारे अपराधों को क्षमा कर दिया और अपनी शरण में लेकर उन पर सुख तथा शांति की वर्षा की। उनके तमाम कष्टों को दूर किया। उन सतियों के दरबार में सब की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और कोई भी वहां से खाली हाथ घर नहीं लौटता।

ऐसा ही एक पवित्र स्थान हैं पंचवक्तर मंदिर परिसर में। यहां एक छोटे से मंदिर में मां सजौती (शीला देवी) उनके पति पीताम्बर दास जी पुत्र कामेश्वर तथा कंघाल बिरादरी की ध्यान(बेटी) की सुन्दर मूर्तियां स्थापित की गई हैं। मूर्तियों के साथ ही वे प्राचीन मोहरे भी स्थापित किए गए हैं जो मीरपुर सिद्धड़ स्थित दाती की देहरी से लाए गए थे। इस छोटे से मंदिर की शोभा देखते ही बनती है। मंदिर का भीतरी भाग सुंदर रंग बिरंगे शीशों तथा रोशनियों से सजाया गया है। जहां अखंड जोत जलती रहती है। पं. सीता राम जी प्रतिदिन नियम पूर्वक इन मूर्तियों तथा मोहरों की पूजा करते हैं और उनको फूल मालाएं पहनाते हैं जिससे मंदिर के आस पास का वातावरण सुगंधित हो जाता है।

यहां आने वाले श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति प्राप्त होती है। इन सुन्दर मूर्तियों के दर्शन मात्र से ही आत्मा को असीम आनंद प्राप्त होती है। मंदिर के

सामने एक बड़ी बावली है। जिसमें श्रद्धालु स्नान करते हैं। बावली के पवित्र जल में स्नान करने से भक्तों को शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। घर जाते समय, श्रद्धालु इस बावली का जल बोतलों में भर कर अपने साथ ले जाते हैं और शुभ कार्यों में इसका प्रयोग करते हैं। इस जल को गंगा जल के समान पवित्र माना जाता है। यहीं एक ओर प्राचीन पीपल का वृक्ष है। यहां सबकी मानसिक चिंताएं दूर होती हैं। निसंतान जोड़ों को संतान प्राप्त होती है और सभी बिगड़े काम बनते हैं। यहां कंघाल बिरादरी की मेल प्रतिवर्ष दीपावली के पंद्राह दिन बाद आने वाली कार्तिक पूर्णिमा के दिन लगती है। जिसमें जम्मू-कश्मीर के अतिरिक्त भारत के अन्य भागों से भी कंघाल बिरादरी से संबंधित स्त्रियां पुरुष बच्चे तथा बूढ़े मां सजौती के दरबार में उपस्थित होते हैं। उस दिन यहां खूब चहल पहल होती है। हवन यज्ञ तथा भंडारों का आयोजन किया जाता है तथा लंगर लगाए जाते हैं।

बिरादरी की एक पुस्तक के अनुसार आज से लगभग 350 वर्ष पहले जम्मू क्षेत्र में मनावर, सुर्खपुर में राम सिंह जागीरदार रहता था। उसके पास बहुत सी जमीन तथा सम्पात्ति थी। सारे इलाके में उसका बड़ा दबदबा था और सभी उसका आदर मान करते थे ।जगीरदार होने के नाते वह लोगों के आपसी झगड़ों के फैसले भी करता था। सबको उसकी बात माननी पड़ती थी। कोई उसके आदेश को टालने की हिम्मत नहीं रखता था। वे सात भाई थे और सभी बड़े समृद्ध थे। उस जागीर में बहुत से गांव थे। इतनी बड़ी जागीर का प्रबंध चलाने तथा जमीनों पर काम करने के लिए कई करिन्दे थे। कई परिवार उनकी जमीनों पर काम करके अपना पेट पालते थे। सात भाईयों में राम सिंह सबसे बड़ा था और बाकी छः भाईयों के नाम थे अमर सिंह, दलेर सिंह, पंजाब सिंह, गरीब सिंह, उत्तम सिंह, वचित्र सिंह। सभी भाई मिल जुलकर बड़े प्रेम से जागीर का प्रबंध चलाते थे। कई गरीब परिवार उनकी छत्तर छाया में पल रहे थे।

कईयों की रोजी रोटी उस जागीर से जुड़ी हुई थी। उसी क्षेत्र में एक गरीब ब्राह्मण पीताम्बर दास जी रहते थे। आर्थिक तंगी के कारण वह कोई बड़ा कारोबार नहीं कर सकते थे। इसलिए परिवार का पेट पालने के लिए जमींदार के खेतों में काम करने के अतिरिक्त कोई चारा न था। वह खेतों में काम करने के

अतिरिक्त उस घराने के अन्य कामों की भी देख रेख करते थे। परिवार में उनकी पत्नी तथा एक नन्हा बालक भी था। पंडित जी की सच्चाई तथा ईमानदारी के कारण सभी भाई उनका आदर करते थे। पंडित जी भी दिल से उस घराने की सेवा करते थे और कभी किसी को शिकायत का का मौका नहीं देते थे। वह अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ हंसी खुशी जीवन व्यतीत कर रहे थे।

जागीरदार के सबसे छोटे भाई वचित्र सिंह की शादी का दिन आया। गांव में खुशियां मनाई जा रही थीं। आस पास के गांवों के लोगों को जमींदार के घर खाना खाने के लिए आमंत्रित किया गया था। बाकी भाई भी लोगों का स्वागत करने में लगे थे। घर के चारों ओर ढोलों तथा बाजों की गूंज सुनाई दे रही थी। गांव के नौजवान ढोल की आवाज के साथ साथ भंगड़ा डाल रहे थे। घर के अंदर दुल्हे को सजाया जा रहा था। घर की स्त्रियां मंगल गीता गा रही थीं और पंडित जी मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे। थोड़ी देर के बाद बारात गांव से निकली। बारात में कुछ मंचले युवक भी थे जो बड़ी मस्ती में झूमते, गाते नाचते बारात के साथ चल रहे थे। बारात जब गांव से बाहर निकली तो वहां खरबूजों के एक खेत में पके हुए खरबूजों को देखकर उनके मुंह में पानी भर आया। वे खेत में जाकर खरबूजे तोड़ने लगे। पंडित पीताम्बर दास जी खेत की रखवाली कर रहे थे। खेत को उजड़ते देख उनसे रहा न गया। उन्होंने बारातियों को मना किया। उनसे प्रार्थना की यदि आप खरबूजे खाना चाहते हैं तो आपको जागीदार साहिब की अनुमति लेनी होगी परन्तु किसी ने भी उन की बात पर ध्यान न दिया और खरबूजे तोड़ते रहे। जब झगड़ा बढ़ गया तो बारातियों ने पंडित जी को बुरा भला कहना शुरु कर दिया। एक बाराती ने एक कच्चा खरबूजा तोड़कर पंडित जी को दे मारा जो उनके शरीर के मर्म स्थान पर लगा। वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। कुछ समय तक जमीन पर तड़पते रहे और फिर वहीं खेत में उनकी मृत्यु हो गई। बारातियों ने भी इस ओर कोई ध्यान न दिया और नाचते गाते आगे निकल गए। जागीरदार जी बहुत पीछे गांव के कुछ प्रतिष्ठित लोगों के साथ आ रहे थे।

बारात जब लड़की वालों के घर पहुंची तो उसका भव्य स्वागत यिा गया। बारात के सारे रास्ते को झंडियों तथा द्वारों और रोशनी से सजाया गया था। मुख्य

द्वार पर लड़की के पिता तथा अन्य संबंधियों ने लड़के वालों से मिलनी की, उनके गले में फूलों के हार डाले और मुंह, मीठा करवाया। बारात को खाना खिलाने के लिए पंक्तियों में बिठाया गया। बारातियों के सामने कई प्रकार के भोजन तथा मिठाइयां परोसी गईं। सबके चेहरों पर प्रसन्नता थी, हर ओर खुशी का वातावरण था। यूंही बारातियों ने खाने की ओर हाथ बढ़ाया तो खाने से दुर्गन्धि आने लगी। चावल बड़े बड़े कीड़े बन गए और सब्जियां लहू में तब्दील हो गईं। बाराती एक दूसरे की ओर देखने लगे। लड़की वाले वहां मौजूद यह सब देख रहे थे सब हैरान थे कि बाराती खाना खाने की बजाए बुरा मुंह बना कर एक दूसरे की ओर देख रहे हैं। आखिर एक बजुर्ग ने उनसे पूछा कि आप खाना क्यों नहीं खा रहे तो एक बाराती ने खाना न खाने का कारण बताया कि यहां तो सिवाये कीड़ों के कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। एक ओर तो बाराती भूख से व्याकुल हो रहे थे दूसरी ओर उनके हाथ खाने की ओर नहीं बढ़ रहे थे। सब परेशान थे। शादी के अन्य कार्यों में भी विघ्न पड़ने लगा। चारों ओर भय का वातावरण था। किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। पंडित पीताम्बर दास जी की हत्या के बाद बाराती तो वहां से आ गए परन्तु उनका शव खेत में ही पड़ा रहा। उनके कुत्ते ने यह सारा दृश्य देखा तो दौड़ता हुआ घर गया और उनकी पत्नी शीला देवी (मां सजौती) का पल्लू मुंह में दबा कर उनको बाहर की ओर खींचने लगा। शीला देवी जी ने समझा की अवश्य कोई अनहोनी घटना घटी है। उन्होंने अपने दूध पीते बच्चे को गोद में उठाया और कुत्ते के साथ साथ उस खेत की ओर चल दी जहां पंडित पीताम्बर दास जी खरबूजों की रखवाली किया करते थे। जब वह वहां पहुंची तो खेत में अपने पति के शव को देखकर विलाप करने लगी और वहीं मूर्छित हो कर गिर पड़ी।

उधर बारात में आए बड़े बूढ़ों ने जब छान बीन की तो पता चला कि किसी बाराती ने रास्ते में ब्राह्म हत्या कर दी है। जिस कारण यह सब विघ्न पड़ रहे हैं। सब इकट्ठे होकर खेत की ओर चल दिए। क्या देखते हैं कि

ब्राह्मण की पत्नी भी पति के साथ सती होने की तैयारी कर रही है। बारातियों ने शीला देवी जी से प्रार्थना की कि वह सती होने का विचार दिल से निकाल दें परन्तु वह न मानीं। उन्होंने बहुत समझाया बुझाया और विश्वास दिलाया कि हम सब आपकी सहायता करेंगे। मां शीला देवी ने उत्तर दिया कि जिस स्त्री का पति ही नहीं रहा, जिसका सुहाग ही लुट गया हो वह जी कर क्या करेगी। शीला देवी जी अपने दूध पीते बच्चे को गोद में लेकर पति के साथ चिता में जल कर भस्म हो गई। सती होने से पहले शीला देवी ने जागीरदार, उसके भाईयों तथा बारातियों को श्राप दिया कि तुम सब बरबाद हो जाओगे। तुम्हारे पास जमीन, जायदाद, धन दौलत नहीं रहेगी। तुम सब कंगाल हो जाओगे। तुम ने मेरे निर्दोष पति की हत्या की है। तुम कभी चैन नहीं पा सकोगे। जिस स्थान पर मां शीला देवी सती हुई वह स्थान मीरपुर सिद्धड के नाम से जाना जाता है।

मां शीला देवी के सती होने पर तो उस वंश पर जैसे कहर टूट पड़ा। इतनी बड़ी जागीर, सैंकड़ों गांव, जमीन जायदाद, धन दौलत सब कुछ समाप्त होने लगा। एक दिन वह भी आया कि सब दाने दाने को मोहताज हो गए। रहने के लिए कोई ठिकाना न रहा। परिवार के सब लोग इकट्ठे होकर किसी विद्वान के पास गए और ब्राह्मण तथा सती के श्राप से मुक्ति पाने का उपाय पूछा। उस विद्वान ने सलाह दी कि तुम सबसे पहले राजपूत जाति बदल कर किसी दूसरी जाति को अपनाओ। फिर सती से अपराध की क्षमा मांगो और अपने रीति रिवाजों तथा अन्य शुभ कार्य करने से पहले सती की मान्यता करें और अपनी कुल देवी के रूप में उसकी पूजा करें। श्रद्धा भाव से अपने आपको उसकी सेवा में अर्पित कर दें तो देवी के श्राप से मुक्त हो सकते हैं। विद्वान के आदेश अनुसार उन्होंने मन्हास जाति को बदल दिया और श्राप अनुसार कंघाल कहलाने लगे। फिर कंघाल बिरादरी के लोगों ने मिल कर उस स्थान पर एक देहरी बनवाई जहां दाती सती हुई थी और वहां उन के मोहरों की स्थापना की गई और उनको अपनी कुल देवी माना

तब जाकर उनको शांति प्राप्त हुई। इसके बाद कंघाल बिरादरी के लोग काम धंधे की तलाश में दूसरे स्थानों पर चले गए। जो भाई जहां गया वहीं बस गया और अपने अपने काम काज में इस प्रकार व्यस्त हो गया कि उनका आपस में कोई ताल मेल न रहा। सब भाईयों ने अपनी सुविधा अनुसार मां सजौती का स्थान अपने पास ही बना लिया और वहीं उनकी पूजा अर्चना करने लगे। परन्तु सती का प्राचीन स्थान जो मीरपुर सिद्धड़ में था उसकी ओर किसी ने ध्यान न दिया।

श्री कृष्ण लाल जी अध्यक्ष कंघाल बिरादरी के अनुसार हमीरपुर सिद्धड़ में जहां माता शीला देवी की देहरी थी वहां एक चम्बे का वृक्ष था इसलिए उसे चम्बे वाली माता भी कहते थे। बजुर्गों का कहना है कि इस पवित्र स्थान पर खिले चम्बे के फूलों का रस आंखों में डालने से आंखों में रोशनी आ जाती थी। चम्बे के फूल अपने आप वृक्ष से टूटकर माता के मोहरों पर चढ़ते थे। यह भी कईयों ने देखा हैं कि सुबह चार बजे एक जोत मां की देहरी से चलकर चिनाब नदी पर आती थी और स्नान करने के बाद वापिस देहरी में आती थी। यह जोत कोई और नहीं बल्कि मां सजौती की ही थी। एक बार श्री अजीत कुमार गुप्ता के पिता स्वर्गवासी श्री हंस राज जी को सपने में मां दाती की आवाज आई कि आप लोग तो अपने अपने घरों में आराम से रह रहे हैं। अपने परिवार में सुख की नींद सोते हैं परन्तु मेरी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। मैं आंधी, तूफान, वर्षा, सर्दी, गर्मी में खुले आसमान के नीचे पड़ी हूं।

क्या सब भूल गए कि आपकी समृद्धि मेरे ही आशीर्वाद से हैं।

हंस राज जी ने इस बात की चर्चा बिरादरी के लोगों से की। बिरादरी की सभा हुई। वहां से मां सजौती के मोहरों को लाया गया और 13 कार्तिक 2017 यानि 28 अक्तूबर 1960 को बिरादरी वालों ने मां की आज्ञा से मंदिर पंचवक्तर जम्मू के परिसर में मंदिर का निर्माण करवा कर विधि पूर्वक मां की मूर्ति तथा मोहरों की स्थापना की और देश भर से कंघाल बिरादरी के लोग कार्तिक पूर्णिमा को यहां इकट्ठे होकर मेल का आयोजन करने लगे उस समय यहां बड़ी रौनक होती है। हवन यज्ञ तथा भंडारा होता है और दाती मां की पूजा अर्चना की जाती है।

जो लोग मां सजौती के दरबार में आकर सच्चे दिल से श्रद्धा सुमन अर्पित

करते हैं उनकी हर मनोकामना पूरी होती है। मां की आज्ञा अनुसार बिरादरी के लोगों को अपने रीति रिवाज तथा रहन सहन में कुछ नियमों के पालन से श्रद्धालुओं पर मां की कृपा बनी रहती है और वे सदा कष्टों से मुक्त रहते हैं। मां की कृपा से ही आज कंघाल बिरादरी के लोग जहां भी हैं प्रसन्न तथा समृद्ध हैं और अच्छा कारोबार कर रहे हैं। मां के आशीर्वाद से फल फूल रहे हैं। दाती उनके अंग संग रहती है और हर संकट में उनकी रक्षा करती है। दाती सब जातियों तथा धर्मों के मानने वालों का कल्याण करती हैं और सबकी झोलियां भरती हैं। दाती के दरबार से कोई भी निराश नहीं लौटता। दाती सबके भंडार भरती है और सबको खुशियां प्रदान करती है।

मंदिर बुआ भजां-बाबा बीबड़ू-रायपुर

जम्मू की पवित्र धरती पर कई साधु संत तथा पीर फकीर हुए हैं जिन्होंने यहां के भूले भटके लोगों को सही दिशा दी और उनके कष्टों को दूर किया।

इस धरती पर कुछ ऐसे वीर भी पैदा हुए जिन्होंने बड़ी-बड़ी कुर्बानियां देकर डुग्गर भूमि की शान को बढ़ाया। यहां के युवकों ने महायुद्धों में अपनी बहादरी के ऐसे जोहर दिखाए जिन्हें आज तक याद किया जाता है। देश की खातिर जान की बाजी लगाने वालों में न केवल पुरुष बल्कि स्त्रियां भी शामिल थीं। उन शहीदों को लोग आज भी आदर की दृष्टि से देखते हैं। उनकी समाधियां तथा यादगारें बनाई गई हैं। जहां समय समय पर मेलों का अयोजन किया जाता है। ऐसे लोग मर कर भी अमर हो गए और उन्होंने सदा सदा के लिए लोगों के दिलों में वास कर लिया। आज बेशक वे हमारे मध्य नहीं परन्तु उनके स्मारक हमें उन की याद दिलाते हैं और हमें देशभक्ति की ओर प्रेरित करते हैं। देश के दूसरे हिस्सों की तरह डुग्गर की धरती पर रहने वाली स्त्रियां भी पुरुषों के हाथों में तलवार देकर उनको खुशी खुशी रणभूमि भेजती थीं और उनको कहती थीं कि रणभूमि में बेशक वीरगति को प्राप्त करना परन्तु शत्रु को पीठ दिखाकर रणभूमि से भागना मत।

जम्मू से लगभग 10 किलोमीटर उत्तर में एक गांव रायपुर है जहां अधिकतर राजपूतों की आबादी है। यहां के जम्वाल राजपूतों ने सेना में भर्ती हो कर अपनी बहादरी के कारण डोगरों का नाम ऊंचा किया है। उन्होंने सेना में ऊंचे-ऊंचे पदों पर काम करके देश की सीमाओं की सुरक्षा की और बहादरी के पुरुस्कार प्राप्त करके इस क्षेत्र की शान बढ़ाई। इन बहादर जानवजों को देश की आबरू और सीमाओं की रक्षा अपनी जान से ज्यादा प्यारी थी इसलिए वे अपनी कर्तव्य पूर्ति के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए तैयार रहते थे। यहां के जागीरदारों को समय आने पर अपने हाकिमों को हाथियार बंद सिपाही देने पड़ते थे तथा कर के रूप में उन्हें रुपया, अनाज तथा उपहार भेजने पड़ते थे।

बदले में जम्मू के शासक उनको सुरक्षा प्रदान करते और उनकी हर प्रकार से सहायता करते थे।

गांव के जागीरदारों की सेना में एक जांबाज सिपाही बाबा बीबड़ू भी था।

उसका संबंध हरिजन परिवार से था और डमवाल कहलाते थे। इस समुदाय के लोगों का व्यवसाय खेतीबाड़ी था परन्तु कुछ लोग स्थानीय जागीरदार की सेना में भी काम करते और लड़ाई के समय जागीरदार के सिपाहियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर शुत्र से लड़ते भी थे। अपने क्षेत्र के कुछ सिपाहियों के साथ बाबा बीबड़ू को भी एक बार किसी लड़ाई में जाने का अवसर मिला तो उसकी पत्नी बुआ भजां ने भी परम्परा के अनुसार अपने पति को खुशी-खुशी विदा करके रणभूमि में भेजा। उसने रणभूमि में अपनी कर्तव्य पूर्ति में पूरी तनदेही से काम किया और अंत में वीरगति को प्राप्त हुआ। आज भी जिस प्रकार रणभूमि में वीरगति प्राप्त करने वाले जवानों के शवों को बड़े आदर के साथ उनके घरों को भेजा जाता है बिल्कुल उसी प्रकार बाबा बीबडू के शव को सम्मान पूर्वक रायपुर में लाया गया। (कुछ लोग कहते हैं उनकी पगड़ी लाई गई) जब बाबा बीबड़ू का शव गांव पहुंचा उस समय बुआ भंजा खेतों में काम कर रही थी।

जब उसे अपने पति की मृत्यु का संदेश मिला तो वह परेशान हो गई। वह अपनी सुध-बुद्ध खो बैठी और चीखती चिल्लाती आंसू बहाती घर आई और पति के मृत शरीर के साथ लिपट कर रोने लगी। उसे अपने वीर पति की जुदाई का बहुत दुख हुआ। उसने महसूस किया कि अब उसका जीवित रहना व्यर्थ है। वह अब इस दुनिया में अकेली रह कर क्या करेगी। उसने दिल ही दिल में निर्णय कर लिया कि वह भी अपने पति के साथ चिता में बैठकर सती हो जाएगी। चिता बनाई गई और उस पर बुआ भुंजा के पति के मृत शरीर को रखा गया। कुछ देर के बाद बुआ भजां भी स्नान करके शमशान घाट पहुंची और सती होने की घोषणा कर दी। यह सुनते ही बाबा बीबडू के संबंधी तथा राजपूत बिरादरी के लोग इक्ट्ठे हो गए। सब ने बुआ भजां को बहुत समझाया और चिता पर बैठने से मना किया। उसे विश्वास दिलाया कि वे उसकी तथा उसके परिवार की हर संभव सहायता करेंगे। सबने मिलकर उसे दिलासा दिया परन्तु वह न मानी और अपने निश्चिय पर कामय रही यहां तक कि रायपुर दमाना के जागीरदार मियां दिवानू ने भी उसे हौसला दिया और कहा कि जो होना था वह तो हो गया अब तू भी यदि सती हो गई तो बच्चों की देखभाल कौन करेगा। तुम्हें जिस चीज की आवश्यकता होगी हम देंगे। इसलिए तुम अपना फैसला बदल

डालो। स्थानीय राजपूत बिरादरी ने भी उसे बहुत समझाया परन्तु बुआ भजां ने किसी एक की भी न सुनी और शमशान घाट में हवन पर बैठ गई और आहुतियां हवन में डालने लगी। गांव के सभी लोग चिता के इर्द गिर्द खड़े यह सब देख रहे थे। उस समय बुआ के कानों से बालियां गिर गईं। उसने पास खड़ी अपनी बेटी चिड़ी को बालियां उठाने के लिए कहा। उसने यह भी घोषणा की कि मेरे मरने के बाद इस स्थान पर एक मंदिर बनाया जाए जिसकी पुजारन भी मेरी बेटी चिड़ी होगी। इस स्थान पर सबकी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। उसने बिरादरी के लोगों को मोहरे बनाने के लिए कहा। उसी समय मोहरे बनावाए गए जिनको बुआ भजां ने स्पर्श किया और बाद में उन मोहरों को पूजास्थल में रखा गया। चिता पर बैठकर हवन करते हुए जब उसने पूर्ण आहुति दी तो आग की एक लपट उठी ओर चिता को आग लग गई। देखते ही देखते बुआ भजां अपने पति के साथ जल कर राख हो गई यह शायद पहला मौका था कि उस बिरादरी की कोई स्त्री अपने पति के साथ सती हुई हो।

बुआ भजां के सती होने पर वहां खड़े तमाम लोगों ने चिता को नमस्कार किया और अपने अपने घरों को लौट आए। सभी दिल ही दिल में बुआ के इस बड़े बलिदान की प्रशंसा कर रहे थे। धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न होने के बाद सबने मिलकर उस स्थान पर एक समाधि बनवाई और वहां बुआ भुजां के मोहरों को स्थापित किया। इस संबंध में रायपुर के जागीरदार मियां दिवानू ने पूरा सहयोग दिया। बुआ भजां की यह समाधि इलाके के तमाम लोगों के लिए एक पवित्र स्थान बन गया जहां तमाम धर्मां के लोग अपनी श्रद्धा के फूल अर्पित करते हैं। कई बिरादरियां खासकर बीबड़ू तथा बुआ भजां के वंशज बुआ को अपनी कुल देवी मानकर पूजा करते हैं। वे लोग अपने सभी रीति रिवाजों के समय बुआ को बराबर याद करते हैं और कोई भी शुभ कार्य करने से पहले यहां आकर शीश झुकाते हैं और अपने कार्य की सफलता के लिए प्रार्थना करते और बुआ का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। बुआ इन शुभ कार्यों के समय अपने श्रद्धालुओं के अंगसंग रहती है। नए शादी शुद्धा जोड़े इस मंदिर की परिक्रमा करके अपने सफल गृहस्थ जीवन की कामना करते हैं। इन बिरादरियों के लोग अपने लड़कों के मुंडन संस्कार भी इस पवित्र स्थान पर करते हैं। इसके अतिरिक्त त्यौहारों के

समय भी श्रद्धालु यहां आते हैं।

इस पवित्र स्थान पर हर साल झिड़ी के बाद आने वाली पूर्णमाशी के दिन बहुत बड़े भंडारे का आयोजन किया जाता है। जिसमें दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और हिमाचल के अतिरिक्त देश के कोने-कोने से श्रद्धालु यहां आते हैं और मनोकामनाएं पूरी करते हैं। बुआ के दरबार से कोई भी खाली हाथ वापस नहीं जाता। उस दिन यहां बहुत रौनक होती है। बिरादरी के लोग उस दिन इस पवित्र स्थान पर इक्टठे होकर बिरादरी की भलाई बेहतरी के लिए सोचते हैं। गांव तथा आस पास के लोग भी भारी संख्या में इस मेले में शामिल होते हैं। उस दिन यहां हवन होता है और श्रद्धालु भजन कीर्तन करते हैं। जिन लोगों की मुरादें पूरी होती हैं वे ढोल तथा बाजों के साथ जहां आते हैं और मिठाई, झंडे, फल तथा श्रद्धानुसार चढ़ावे चढ़ाते हैं। उस दिन जैसे जंगल में मंगल होता है और हलवाइयों तथा खिलोनों की दुकानों पर बहुत भीड़ होती है।

मंदिर की दीवार पर लगी एक सूचना के अनुसार बाबा बीबड़ू दिसम्बर 1841ई. में शहीद हुए थे।

इस पवित्र स्थान के विकास के लिए कई बार कमेटियां बनाई गई परन्तु 1980 में जो कमेटी बनाई गई उसके सदस्यों ने घर-घर जाकर सभी धर्मों तथा जातियों के लोगों से मंदिर के लिए दान इक्ट्ठा किया। एक और कमेटी की निगरानी में 1997 को बुआ भजां की समाधि पर मंदिर का निर्माण करवाया गया। इसके साथ ही एक और समाधि है। मंदिर के आस पास का वातावरण बड़ा शुद्ध है। इस बात की कोशिश की जा रही है कि मंदिर परिसर में छायादार वृक्ष लगवाए जाएं ताकि श्रद्धालु गर्मी के मौसम में इन वृक्षों की छाया में बैठकर आराम कर सकें। मंदिर की परिक्रमा के साथ चार दिवारी बनाई गई है।

श्रद्धालुओं के प्रयोग के लिए वहां एक पानी की टैंकी का निर्माण भी किया गया है। विकास कार्य तो आरम्भ हो गया है परन्तु अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

आवश्यकता इस बात की है कि मंदिर की सारी जमीन की चार दिवारी तथा कमरों का निर्माण किया जाए ताकि सर्दी, गर्मी तथा वर्षा होने पर श्रद्धालुओं को यहां किसी प्रकार की असुविधा न हो।

भंडारे के दिन बुआ की बेटी चिड़ी के परिवार के लड़के ही चरणामृत तथा प्रसाद श्रद्धालुओं को देते हैं। वही समाधि की चड़तल के हकदार हैं जैसा कि सती होने से पहले बुआ भजां ने कहा था। यह समाधि अब मंदिर सती बुआ भजां तथा शहीद बाबा बीबड़ू के नाम से प्रसिद्ध है। बुआ भजां ने सती होने से पहले वहां उपस्थित लोगों को स्त्री का आदर करने को कहा था। बुआ भजां का बेटा जवाहर लाल जागीरदार दिवानू के खेतों में कामकाज की निगरानी करता था। जागीर की जमीन से पैदा होने वाले अनाज को इक्ट्ठा करने और उसे जमींदार के गोदामों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी उसकी थी। जवाहर लाल भी अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से करता था। जागीरदार इसके बदले जवाहर लाल को कुछ अनाज दे देता जिससे जवाहर लाल के परिवार का पालन पोषण आसानी से हो जाता था।

थोडी सी जमीन जवाहर लाल के पास भी थी। उसकी ईमानदारी को देखते हुए जागीरदार जी ने उसे खेतों में काम करने वालों का मुखिया नियुक्त किया और यह सिलसिला बड़ी देर तक चलता रहा। इस जागीर के अंतिम जागीरदार 1974 में लगभग 85 वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधारे।

इस पवित्र स्थान की यात्रा के लिए अब श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। इस के विकास के लिए बनाई गई कमेटी भी मंदिर परिसर को एक सुन्दर तथा आकर्षक स्थान बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

दाती टोडी जी-रतनाल

भारत की पवित्र धरती पर कई महापुरुषों, पीरों फकीरों तथा साधु संतों ने जन्म लिया। जिन्होंने यहां की भोली-भाली जनता को धर्म की राह पर चलने की प्रेरणा दी और सभी भेद-भाव मिटा कर प्रेम का संदेश दिया। उन साधु संतों के बताए हुए नियमों पर चलकर यहां के लोगों ने सफलता प्राप्त की और जीवन को सुखमय बनाया। उनका कहना था कि प्रभु भक्ति के लिए जात की कोई बंदिश नहीं। कोई भी व्यक्ति जो सच्चे दिल से प्रभु की आराधना करता है प्रभु उसी के हो जाते हैं। भगवान हर कार्य में भक्तों की सहायता करते हैं और सबकी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। ऊंच नीच, छोटे बड़े तथा अमीर गरीब का अंतर तो केवल अज्ञानी लोगों ने किया है। धार्मिक ग्रंथों में कई ऐसे महापुरुषों संतों तथा फकीरों का उल्लेख मिलता है जिन्होंने मानव द्वारा बनाई गई निचली जातियों में जन्म लिया परन्तु प्रभु भक्ति तथा ज्ञान प्राप्ति में उन्होंने ऊंची जाति से सम्बंध रखने वालों को भी मात कर दिया। उन्होंने घोर तपस्या करके भगवान के साक्षात दर्शन दिए और प्रभु भक्ति का ढोंग करने वालों से बहुत आगे निकल गए। अपनी बुद्धि तथा ज्ञान के बलबूते पर उन्होंने ऐसी उपाधियां प्राप्त कीं जिन पर ऊंची जाति वाले, अपना अधिकार समझते थे और यह सिद्ध कर दिया कि वे किसी से कम नहीं। एक व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि कर्म से छोटा या बड़ा होता है। उसका कर्म ही उसे समाज में यश या अपयश दिलाता है। अपने कर्मों से ही मानव समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

हमारे देश में कुछ ऐसी पतिव्रता स्त्रियों ने भी जन्म लिया-जिन्होंने अपने चमत्कारों से भगवान को भी अपने नियम बदलने पर विवश कर दिया। उनके पतिव्रत धर्म के आगे बड़े-बड़े ज्ञानियों को भी अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी। उन स्त्रियों ने अपने पति को भगवान का रूप समझ कर पूजा की ओर अपने आपको उनके प्रति इस प्रकार समर्पित कर दिया कि उनके सुख-दुःख को ही वे अपना सुख-दुःख समझने लगीं और उनकी खुशी के लिए कुछ भी यहां तक कि अपनी जान पर खेलने से भी पीछे नहीं हटती थीं। पति की मृत्यु के बाद वे पति की चिता के साथ जल कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेती थीं। ऐसी पतिव्रता नारियों ने देवियों तथा कुल देवियों का स्थान प्राप्त किया। उनके श्रद्धालुओं

या परिवार के लोगों ने उनकी याद में मंदिर तथा देहरियां बनाई और समय समय पर वहां मेलों तथा भंडारों का आयोजन किया जाने लगा।

भारत के अन्य भागों की तरह जम्मू क्षेत्र में भी ऐसी हजारों पतिव्रता स्त्रियों ने जन्म लिया जिन्होंने पति की मृत्यु के बाद उसकी चिता में बैठ कर अपने प्राण, त्याग दिए। ऐसी दिव्य शक्ति रखने वाली नारियों ने अपने क्रोध से शत्रुओं का सर्वनाश कर दिया। उन पर अत्याचार करने वालों को तरह तरह के कष्ट उठाने पड़े और यहां तक कि उनका जीना मुश्किल हो गया। उन अत्याचारी लोगों को विवश होकर सतियों के दरबार में अपना शीश झुकाकर अपने गुनाहों की क्षमा मांगनी पड़ी। तब जाकर सतियों के क्रोध की अग्नि शांत हुई। ऐसी ही पतिव्रता नारियों में दाती टोडी का नाम भी बड़े आदर से लिया जाता है जिनका मंदिर जम्मू से लगभग 27 किलोमीटर दूर बिश्नाह तहसील के एक गांव रतनाल में स्थित है जो अपने पति मियां केसरू की चिता में बैठकर सती हो गई थी। इस मंदिर में दाती टोडी तथा उनके पति मियां केसरु के मोहरों की स्थापना की गई है जहां दाती टोडी के श्रद्धालु समय समय पर उपस्थित होकर दाती जी की सेवा में श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और दाती जी का आशीर्वाद प्राप्त करके अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

दाती टोडी के बलिदान तथा उनकी दिव्य शक्ति के बारे में बहुत सी कहानियां हैं। उनके चमत्कारों के बारे में भी बहुत सुना था। एक बार रतनाल जाकर दाती जी के पवित्र स्थान के दर्शन करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। कई सालों से दिल में इच्छा थी कि दाती टोडी जी के जीवन पर एक लेख लिखूं। इसी विचार को लेकर अपने मित्र तथा दाती जी के परम भक्त श्री ज्ञान चंद डोगरा से मुलाकात की। उनसे प्राप्त जानकारी के अनुसार दाती टोडी जी का जन्म आज से लगभग साढ़े चार सौ साल पहले 1556 ई. में किला बाहु के पास नरवाल गांव में एक साधारण चमार परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री संतराम तथा माता का नाम देवकी था। दाती के पिता जी धार्मिक विचारों के थे और घर में भी प्रभु का भजन कीर्तन करते रहते थे।

मेहनत मजदूरी करके अपने परिवार का पेट पालते थे। कन्या के जन्म पर घर में खुशियां मनाई गई। माता पिता ने उसका नाम टोडी रखा। जन्म से ही

उसके चेहरे पर दिव्य प्रकाश था। दाती के दर्शन के लिए दूर दूर से लोग आने लगे। कन्या के माता पिता ने पंडितों को कन्या के भविष्य के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि यह देव कन्या है। आप बड़े भाग्यशाली हैं कि इस कन्या ने आपके घर में जन्म लिया है। इस कन्या की देवी के रूप में पूजा होगी। इसके दरबार में श्रद्धालुओं की भीड़ रहेगी।

छोटी आयु में ही दाती जी इतनी चुलबुली तथा सुन्दर थी कि जो एक बार उनके दर्शन करता उसके दिल में बार बार उनको देखने की इच्छा पैदा होती। उसकी भोली भाली सूरत तथा मासूम चेहरा देखकर माता पिता खुशी से फूले न समाते थे। गांव के पुरुष, स्त्रियां, बच्चे बूढे इस दिव्य ज्योति के दर्शन करके प्रसन्न हो जाते थे। उसे देखकर सभी आनंद विभोर हो उठते थे। दाती जी कुछ बड़ी हुई तो सखियों सहेलियों के साथ खेलना शुरु कर दिया। उनकी सखियां भी उनके साथ बड़ा प्यार करती थीं। जैसे जैसे दाती जी बड़ी होती गई उनकी सुन्दरता में निखार आता गया। दाती जी की वाणी भी बड़ी मधुर थी। उनके स्वभाव में सहनशीलता थी। खेल कूद के अतिरिक्त दाती टोडी जी प्रभु भक्ति में भी लीन रहती थी। दाती जी की आयु चौदहा साल की हो गई थी परन्तु अब भी वह सखियों के साथ गुडियों का खेल खेलना पसंद करती थी। एक दिन वह गांव के पास ही एक जंगल में सखियों के साथ खेल रही थी। उसी समय जम्मू शहर के एक फौजी अधिकारी मियां केसरु भी वहां शिकार खेलने आए हुए थे। सारे दिन की थकावट को दूर करने के लिए वह एक वृक्ष की छाया में आराम करने के लिए बैठना चाहते थे। उसी समय मियां केसरु की नजर दाती टोडी पर पड़ी जो वहां अपनी सहेलियों के साथ खेल रही थी। मियां केसरु दाती की सुन्दरता से बड़े प्रभावित हुए और सब कुछ भूल कर उस देव कन्या को देखने लगे। उनकी आंखे दाती जी के चेहरे से हटने का नाम नहीं ले रही थीं। कुछ समय के लिए वह अपनी सुध-बुद्ध-खो बैठे और दाती जी पर मोहित हो गए।

सोचने लगे यदि मेरा विवाह इस कन्या से हो जाए तो मेरा जीवन सुख से गुजर सकता है। इसी विचार से वह गांव में जाकर टोडी जी के माता पिता से मिले ओर उनसे प्रार्थना की यदि वे अपनी कन्या का हाथ उनके हाथ में दे दें तो

बड़ी कृपा होगी। टोडी के माता पिता चूंकि चमार जाति से सम्बंध रखते थे और मियां केसरु जी राजपूत थे इसलिए उन्होंने सोचा कि उनकी बेटी राजपूत परिवार में कैसे सुखी रह सकेगी।

उन्होंने अपनी बिरादरी के लोगों से सलाह की परन्तु किसी ने हामी न भरी। मियां केसरु ने उनको विश्वास दिलाया कि आपकी कन्या को किसी प्रकार का कोई कष्ट न होगा और वह उनके साथ सुखी जीवन व्यतीत करेगी। उसे हर प्रकार की सुविधा प्रदान की जाएगी और परिवार के सब लोग उस का आदर करेंगे। आखिर किसी न किसी तरीके से मियां केसरु ने टोडी जी के माता पिता को शादी के लिए राजी कर लिया और हिन्दू रीति रिवाज के अनुसार दाती टोडी अपने पति और सास के साथ जम्मू में पुरानी मंडी के पास रहने लगी। मियां केसरु की माता भी दाती टोडी से बहुत प्यार करती थी। उसके दिल में कभी भी यह विचार नहीं आया कि दाती टोडी के साथ विवाह करके मियां केसरु ने कोई अनुचित कार्य किया है। वह भी अपनी बहू से बड़ा प्यार करती थी और उसका चांद सा मुखड़ा देखकर खुशी से फूली न समाती थी।

मियां केसरू राजपूत परिवार से सम्बंध रखते थे और उनके माता पिता हमीरपुर सिद्धड़ में तथा छम्ब के पास एक गांव गढ़ मलतान (पाकिस्तान) के रहने वाले थे। उनका जन्म भी लगभग साढ़े चार सौ साल पहले ही हुआ था। उनके पिता का नाम श्री विजय राम तथा माता का नाम कौशल्या था। उनके पिता ने दो विवाह किये थे। मियां केसरू माता कौशल्या के इकलौते पुत्र थे और उनकी सौतेली माता के चार पुत्र थे। जहां कौशल्या बड़ी सुशील तथा आज्ञाकारी थी वहीं उनकी सौत कठोर स्वभाव की थी। वह हर प्रकार से कौशल्या तथा उसके पुत्र केसरु को तंग किया करती थी और अपने चारों पुत्रों के दिल में केसरू के विरुद्ध जहर भरती रहती थी। केसरू अभी ग्यारह वर्ष का ही था कि उसके सिर से पिता का साया उठ गया। जब तक पिता जी जीवित थे, मां बेटा किसी न किसी तरह दिन काट रहे थे। पिता की मृत्यु के बाद तो उनका जीना मुश्किल हो गया। घर में किसी न किसी बात को लेकर प्रति दिन झगड़ा होता रहता था। सौतेली मां के दिल में विचार आता कि अब तो सारी जायदाद के दो हिस्से होंगे। एक हिस्सा तो अकेला केसरू ले जाएगा और एक हिस्सा उसके

चारों पुत्रों को मिलेगा। केसरू तथा उसकी माता प्रतिदिन की खींचातानी से तंग आ गए। उन्होंने अपना गांव छोड़ दिया और जम्मू आकर पुरानी मंडी के पास कहीं रहने लगे और मेहनत मजदूरी करके अपना पेट पालने लगे। जब मियां केसरु बड़ा हुआ तो बड़ा बहादर और चतुर निकला। एक बार जम्मू के राजा की नजर उस पर पड़ी तो वह भी केसरू की योग्यता से बड़े प्रभावित हुए। जम्मू के राजा ने उसे अपनी सेना में भरती कर लिया। मियां केसरू अपनी कार्यकुशलता के कारण एक साधारण सिपाही से सेना का बड़ा अधिकारी बन गया और राजा ने उसे रहने के लिए एक महल और छोटी सी जागीर भी दे दी।

विवाह के चार साल बाद दाती टोडी तथा मियां केसरु के घर एक लड़के ने जन्म लिया जिसका नाम अंगू रखा गया। बालक का भविष्य जानने के लिए पंडितों को बुलाया गया। पंडितों ने पोथी देख कर बताया कि यह बच्चा अपने पिता पर भारी है। इसलिए पिता पुत्र बारह वर्ष तक एक दूसरे का मुंह न देखें। बारह वर्ष तक बच्चे को घर से बाहर कहीं और रखना पड़ेगा। मियां केसरू ने सोचा कि मां बेटा महल में रहें, इसलिए उन्होंने 12 साल तक घर से बाहर रहने का निश्चय कर लिया। मियां केसरू ने रतनाल जाकर उस स्थान पर रहना शुरू कर दिया जहां इस समय देहरी बनी हुई है। गढ़मलतान में जब केसरू के भाईयों को पता चला कि केसरू ने एक छोटी जाति की कन्या से विवाह कर लिया है तो उनको बड़ा क्रोध अया। सारे सम्बंधी भी केसरू की निन्दा करने लगे कि उसने कुल को कलंकित किया है। उसने चमार जाति की कन्या से विवाह करके सारी बिरादरी के मुंह पर कालिख पोत दी है जब उनको पता चला कि केसरू के घर लड़का पैदा हुआ है तो उसके भाई और भड़क उठे । वे केसरू से नफरत तो पहले ही करते थे परन्तु अब वे केसरू को समाप्त करने का निश्चय करके घर से तलवारें, बर्छे तथा बंदूकें लेकर जम्मू की ओर निकल पड़े। जम्मू पहुंचे तो पता चला कि मियां केसरू अब रतनाल में रहता है। चारों भाई रतनाल पहुंचे और केसरू से मिले। केसरू के साथ उन्होंने बड़े प्यार की बातें कीं ओर कहा कि हम पुरानी नाराजगी को दूर करने आए हैं। तुम से जो गलती हुई है हम उसे भी अब दिल में नहीं रखते। अब तुम्हारे साथ हमारी कोई शत्रुता नहीं। आखिर तुम हमारे भाई हो और अब हम तुम्हारे साथ मिलकर रहना चाहते हैं।

केसरू यह नहीं जानता था कि उसके भाई उसे मारने के उद्देश्य से यहां आए हैं। इसलिए उसने उनका भव्य स्वागत किया और उनके लिए खाने पीने का भी उचित प्रबंध कर दिया। केसरू के भाईयों ने कहा कि वे सब मिलकर तुम्हारे घर बच्चा पैदा होने की खुशी में जशन मनाना चाहते हैं। भाईयों ने खूब शराब पी और फिर सब ने मिल कर केसरू पर आक्रमाण कर दिया केसरू सैनिक अधिकारी था। तलवार चलाना भी जानता था परन्तु अधिक समय तक वह चारों भाईयों का मुकाबला न कर सका। जख्मी होने के बावजूद वह बहादरी से लड़ता रहा। फिर एक भाई ने अपनी बंदूक से उस पर गोली चला दी। मियां केसरू जमीन पर गिर पड़े। उसी समय दाती टोडी के दिल में बुरे विचार आने लगे। महल में अपशगुन भी होने लगे। उनको ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे उनके पति किसी संकट में हैं। मियां केसरू जमीन पर लहूलोहान पड़े थे उसके भाईयों ने मियां जी का सफेद घोड़ा एक वृक्ष के साथ बांध दिया और मियां जी को मृत समझ कर वहां से भाग गए। उस बियावान जंगल में कोई पानी पिलाने वाला भी नहीं था । वह दर्द से कराह रहे थे।

उसी समय सुखा ब्राह्मण का वहां से गुजर हुआ। उसने किसी के कराहने की आवाज सुनी। आवाज सुनकर वह मियां जी के पास गया। मियां जी ने सुखा ब्राह्मण से विनती की कि पुरानी मंडी में मां तथा पत्नी रहती हैं। जल्दी से जल्दी जाकर उनको यह संदेश पहुंचाओ कि मेरी यह हालत है इसलिए आकर मेरी खबर लो। सुखा ब्राह्मण अपने घर का रास्ता छोड़कर सीधा जम्मू गया और माता टोडी को मियां जी का संदेश पहुंचा दिया। दाती टोडी ने अपनी चूड़ियां तोड़ डालीं और सास को भी सुना दिया कि मेरे पति की किसी ने हत्या कर दी है। इसलिए मैं उनके साथ सती होने जा रही हूं। दाती ने अपने सवा साल के बच्चे को गोद में उठाया और पालकी में बैठ कर अपने पिता के घर नरवाल पहुंची और कहा कि वह अपने पति के साथ सती होने जा रही है। इसलिए इस बच्चे का पालन-पोषण अब आप करेंगे।

गरीब माता पिता घबरा गए। सोचने लगे यदि अंगू को अपने पास रखते हैं तो मियां केसरु के सौतेले भाई अंगू के साथ-साथ उसका परिवार भी समाप्त कर देंगे। डर के कारण उन्होंने बच्चे को अपने पास रखने से इंकार कर दिया। फिर

दाती के विलाप करने पर उन्होंने अपने प्राणों का मोह छोड़कर अंगू को अपने पास रख लिया और दाती को उसका पालन पोषण करने का विश्वास दिलाया।

दाती टोडी पालकी पर सवार होकर रतनाल पहुंची। उनके वहां पहुंचने से पहले ही मियां केसरू दम तोड़ चुके थे और उनका सफेद घोड़ा वृक्ष के साथ बंधा हुअ था। दाती टोडी ने अपने हाथों से पति की चिता बनाई वहां अग्नि का कोई साधन न था। इसलिए दाती टोडी ने सूर्य देवता से प्रार्थना की कि हे सूर्य देवता इस समय मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता है। सूर्य देवता दाती जी के पास आए और उसी अग्नि से दाती ने अपने पति की चिता जलाई और स्वयं भी उसी में भस्म हो गई। जब दाती टोडी सती होने के लिए चिता पर बैठी थी तो उसी समय अबदू जोगी तथा एक मरासी वहां से गुजर रहे थे। दाती ने अबदू जोगी से कहा कि तुम ने मेरी कारक बनानी है। उस ने कहा कि मैं तो अनपढ़ हूं कारक कैसे बनाऊंगा तो माता टोडी ने वरदान दिया कि मेरी शक्ति से तुम कारण बनाने के योग्य हो जाओगे। मरासी को गाने के लिए कहा और यह भी कहा कि मेरा जितना भी परिवार होगा मेरे जितने भी श्रद्धालु होंगे वे आप को मानेंगे सुखा ब्राह्मण को कहा कि आपने हमारी बड़ी सहायता की है इसलिए आज के बाद आप हमारे पंडित होंगे और हमारी सारी बिरादरी आपका आदर करेगी।

जिन लोगों ने मियां केसरू का वध किया दाती टोडी उनको तरह तरह के कष्ट देकर समाप्त करने लगी।

उस वंश के लोग एक एक करके मरने लगे उन राजपूतों ने विद्वानों से उपाय पूछा तो उन्होंने कहा कि आप के परिवार वालों ने किसी निर्दोश की हत्या की है। उस निर्दोश की पत्नी भी उसके साथ सती हो गई थी।

उनको मनाओं तब जाकर तुम लोग शांति से रह सकोगे। उन सब ने आकर इस स्थान पर दाती टोडी तथा मियां केसरू की देहरी पर शीश झुकाया और क्षमा मांगी। दाती ने सबको क्षमा कर अपनी शरण में ले लिया। आज दाती के भक्तों के अतिरिक्त वे लोग भी यहां आते हैं जिनके बजुर्गों ने उनके पति का वध किया था।

दाती टोडी के पुत्र अंगू का पालन पोषण ननिहाल में हुआ। उसकी शादी भी चमार जाति में ही हुई। अंगू के चार पुत्र हुए प्रकाश, रुलदू, रांजा तथा जगतू।

प्रकाश नरवाल छोड़कर पंजाब चला गया। रुलदू अखनूर, रांजा उधमपुर और जगतू कठुआ की ओर जाकर रहने लगे और दाती की कृपा से अंगू के परिवार में वृद्धि होती गई। अंगू के परिवार के लोग अंगूराना या अंगूराल कहलाये जो लाखों की संख्या में इस समय जम्मू-कश्मीर पंजाब तथा भारत के अन्य भागों में रह रहे हैं और दाती की कृपा से फल-फूल रहे हैं।

इस पवित्र स्थान पर साल में दो बारे मेलों का आयोजन किया जाता है। बड़ा मेला आषाड़ महीने की पूर्णिमा तथा दूसरा मेला कार्तिक महीने की पूर्णिमा को लगता है। तीन चार साल पहले यहां एक बहुत बड़े मंदिर का निर्माण किया गया था जिसमें दाती टोडी तथा मियां केसरू के मोहरों की स्थापना की गई। एक सराये भी बनाई गई है जहां यात्रियों के ठहरने का उचित प्रबंध है। यूं तो यहां श्रद्धालुओं का आना ज़ाना रहता है परन्तु मेले के दिन यहां बड़ी चहल पहल होती है। जिन लोगों की मनोकामनाएं दाती के आशीर्वाद से पूरी होती हैं वे इस पवित्र स्थान पर बाजों के साथ आते हैं और यथा योग्य चढ़ावा चढ़ाते हैं। लगभग 24 कनाल भूमि पर फैले इस पवित्र स्थान के विकास के लिए एक कमेटी का गठन किया गया है जो इस पवित्र स्थान के विकास तथा इसे और अधिक आकर्षक बनाने के लिए प्रयत्नशील है। इस कमेटी के अध्यक्ष श्री नंदा राम, उपाध्यक्ष श्री प्यारेलाल तथा सैक्रेटरी श्री ज्ञान चंद डोगरा हैं। इस समय यहां की देखभाल तथा पवित्र मोहरों की पूजा करने की जिम्मेदारी पंजाब के श्री सुखदेव अंगूराना निभा रहे है। कमेटी के सभी सदस्य एक दूसरे से विचार विमर्श करके बिरादरी के सहयोग से इस स्थान का विकास कर रहे हैं। ताकि अधिक से अधिक लोग यहां आकर दाती जी का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें।

पवित्र स्थान बुआ दाती-बनी सहारन

भारत के अन्य भागों की तरह जम्मू की पवित्र धरती पर भी स्थान स्थान पर देवी देवताओं के मंदिर देखने को मिलते हैं। यहां के लोग सीधे-सादे तथा छल कपट से दूर नेकी तथा सच्चाई के मार्ग पर चलते हुए अपना जीवन निर्वाह करते हैं। इस धरती पर अनेक साधु संतों तथा पीरों फकीरों ने प्रभु की आराधना की और अपने चमत्कारों से लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। उनके आशीर्वाद से लोगों की मनोकामनाएं पूरी हुईं और लोगों ने उनकी याद में मंदिरों तथा देहरियों का निर्माण किया जहां समय-समय पर मेलों तथा भंडारों का आयोजन भी किया जाने लगा। यह सिलसिला आज तक भी जारी है। महापुरुषों तथा फकीरों के अतिरिक्त इस क्षेत्र में कई स्त्रियों तथा कन्याओं ने भी अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई और अपना बलिदान दिया।

कईयों ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन छेड़े औद दुःखी जनता का मार्ग दर्शन किया और अत्याचार के विरुद्ध संषर्घ करने की प्रेरणा दी। कुछ महान स्त्रियां अपने पतिव्रत धर्म को निभाने और अपने पति के प्रति प्यार की खातिर पति की मृत्यु के बाद उसकी चिता में बैठकर सती हो गईं। जिन लोगों ने इन स्त्रियों से अन्याय किया उनको नाना प्रकार के कष्टों से दोचार होना पड़ा। आखिर में अत्याचारियों ने उन देवियों की देहरियां मंदिर बनवाकर उनकी पूजा की ओर अपनी भूल की क्षमा मांगी। उनको कुल देवियों के रूप में स्वीकार किया तब जाकर उन देवियों का क्रोध शांत हुआ। उन देवियों की याद में भी मेलों का आयोजन किया जाने लगा। ऐसा ही पवित्र स्थान जम्मू से लगभग 20 किलोमीटर तथा गजनसू से तीन किलोमीटर की दूरी पर बनी सहारन में स्थित है। यह बनी दूर तक फैली हुई है। जिसमें कई प्रकार के वृक्ष हैं जिनमें जामन, आम, तुनू, शीशम आदि उल्लेखनीय है। बनी में वृक्षों की ऊंचाई बहुत अधिक है और वे एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े हुए हैं कि इस बनी में सूर्य की किरणें धरती पर बहुत कम दिखाई देती है। इसी सुंदर स्थान पर बशपरिया बिरादरी की कुल देवी बुआ दाती की पवित्र देहरी है जिसमें बुआ, उनके पति तथा कन्या के सुन्दर मोहरे स्थापित किया गए हैं। जिनकी बशपरिया बिरादरी के सदस्य बड़ी श्रद्धा से पूजा करते हैं। गर्मियों में तो विशेष रूप से यहां का वातावरण बड़ा

सुहावना होता है। बनी का वातावरण इतना शुद्ध तथा आकर्षक होता है कि यहां आकर वापिस घर जाने को जी नहीं चाहता।

बुआ दाती की देहरी के अतिरिक्त यहां विभिन्न जातियों के कुल देवताओं के मंदिर तथा देहरियां भी हैं। इस बनी से किसी भी वृक्ष की टहनी या पत्ता तोड़ना वर्जित है। गांव के लोग खासतौर पर इस बनी की रक्षा करते हैं। कोई भी यहां से वृक्ष नहीं काट सकता और न ही यहां से सूखी लकड़ी जलाने के लिए अपने घर ले जा सकता है। कहते हैं कि एक बार किसी व्यक्ति ने यहां से कुछ लकड़ियां काटीं और उनको एक गठ्ठे में बांध लिया। गठ्ठे को सिर पर उठाकर जब वह घर जाने लगा तो उसकी आंखों की रोशनी चली गई। वह अंधा हो गया और उसे चारों ओर अंधकार दिखाई देने लगा। मजबूर होकर उसने लकड़ियों का गठ्ठा जमीन पर रख दिया तो उसे सब कुछ दिखाई देने लगा। कई बार ऐसा हुआ जब भी वह गठ्ठा सिर पर रख कर घर की ओर जाने लगत तो अंधा हो जाता। अंत में उसने लकड़ियों का गठ्ठा बनी में ही छोड़ दिया और बुआ दाती के मंदिर में जाकर अपने अपराध की क्षमा मांगी और फिर ऐसा अपराध न करने की कसम खाई। इस क्षेत्र में भाऊ राजपूत इस बनी के वृक्षों को बहुत पवित्र मानते हैं और उनको पूर्ण सुरक्षा प्रदान करते हैं। न वे स्वयं यहां से लकड़ी काटते हैं और न ही किसी अन्य को काटने देते हैं। वे तो यहां उगे वृक्षों की दातुन भी नहीं करते और न ही उनका कोई पत्ता तोड़ते हैं। वे भी इस बनी को बड़ा पवित्र मानते हैं क्योंकि यहां अनेक देवी देवताओं तथा कुल देवियों और कुल देवताओं का वास है। यहां की लकड़ी का प्रयोग इस बनी में होने वाले यज्ञों तथा भंडारों में किया जा सकता है। कुछ समय पहले तक बनी के वृक्षों की लकड़ी का प्रयोग मृतजनों के अंतिम संस्कार के लिए किया जाता था। परन्तु अब वह भी स्थानीय लोगों ने बंद कर दिया है। एक और घटना के अनुसार एक स्थानीय गुजर इसी बनी से लकड़ी काट कर घर ले तो गया परन्तु लकड़ी के घर पहुंचते ही उसके परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा और सभी लोग पीड़ा ग्रस्त हो गए। कोई पता नहीं चल रहा था कि एकदम सभी को क्या हो गया है। आखिर बजुर्गों ने उसे कहा कि कहीं भूल से पवित्र बनी की लकड़ी तो अपने घर नहीं ले आया। यदि ऐसा हुआ है तो वह लकड़ी वापिस बनी में छोड़ आओ तब

तुम्हारा परिवार कष्ट मुक्त हो सकता है। गुज्जर ने अपनी भूलस्वीकार कर ली और लकड़ी को वापिस बनी में छोड़ आया। ऐसा करते ही उसके परिवार के सभी सदस्य पहले की तरह स्वस्थ हो गए। ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह स्थान प्राचीन काल में ऋषियों मुनियों की तपस्या स्थली रहा हो जो शहरों तथा गांवों के शोर से दूर एकांत में स्थित था जहां वे बिना किसी विघ्न के ईश्वर की आराधना कर सकते थे।

श्री दीवान चंद डोगरा के अनुसार बुआ दाती के पति बाबा बिद्दो जी बाड़ी ब्राह्मणा के पास एक गांव बाजपुर में रहते थे। वह बड़े नेक तथा सच्चे व्यक्ति थे। बात के बड़े धनी थे और जो कहते कर दिखाते थे। उनका संबधं कश्यप राजपूत बिरादरी से था और बाजपुर में रहने के कारण उस वंश के लोग बशपरिये कहलाते थे। जिनका गोत्र भारद्वाज था। बाबा जी धर्मकर्म पर विश्वास रखते थे और सबसे अच्छा व्यवहार करते थे।

दान पुण्य तथा गरीबों की सहायता करने में उनको आनंद प्राप्त होता था। काम काज के लिए उनको अक्सर बाहर जाना पड़ता था। जहां भी वह जाते लम्बे समय तक रहते और बहुत सा रुपया जमा करके घर लोटते थे। उनको जो भी काम मिलता उसे वह पूरी मेहनत तथा लगन से करते और अपने मालिकों का दिल जीत लेते थे। जहां भी वह जाते लोग उनकी ईमानदारी से प्रभावित हुए बिना नहीं रहते थे। सब उनका आदर करते थे। एक बार बाबा जी जस्वां परयाल गांव में काम काज के लिए गए। बहुत समय तक वह वहां रहे। कुछ दिनों की छुट्टी लेकर उन्होंने घर जाने का निश्चय किया। मालिकों ने बाबा जी की कार्य कुशलता पर प्रसन्न होकर उनको बहुत सा धन दिया जो चांदी के सिक्कों की शक्ल में था। बाबा जी को अपने घर जाने की खुशी थी। उन्होंने दिल ही दिल में बहुत कुछ सोच रखा था कि जाते ही वह अपनी पत्नी को खुश कर देंगे। नन्ही बच्ची के लिए खिलौने तथा नये वस्त्र खरीदेंगे। परिवार के अन्य सदस्यों को भी उनकी इच्छा अनुसार यथायोग्य उपहार देंगे। उन्होंने चांदी के सिक्कों को एक थैली में डाला और घोड़े पर रखा और स्वयं भी उस पर सवार होकर घर की ओर चल पड़े। एक युवक को इस बात का पता चल गया कि बावा जी बहुत सा धन लेकर अपने घर जा रहे हैं। उसने एक और युवक को भी

अपने साथ मिला लिया। दोनों ने बाबा जी को मार कर उनके धन को आध-आधा बांट लेने की योजना बनाई और बाबा जी के पीछे पीछे चल पड़े। कुछ दूर चलने के बाद जब बाबा जी वृक्षों के एक झुंड में से गुजरे तो एक युवक ने तलवार के एक ही वार से बाबा जी का सिर धड़ से अलग कर दिया और बावा जी का धन लेकर भाग गया। बाबा जी का सिर तो वहीं पड़ा रहा परन्तु धड़ बिना सिर के घोड़े पर ही रहा। जब घोड़ा बनी सहारन के पास से गुजरा तो वहां एक बावली पर कुछ स्त्रियां पानी लेने आई थीं। बिना सिर के धड़ को घोड़े पर सवार देखकर पहले तो वह डर गई फिर इस विषय पर चर्चा करने लगीं। उनकी चर्चा करते ही धड़ घोड़े से जमीन पर गिर पड़ा। बाबा जी ने अपने घर आने की सूचना पहले ही दे दी थी। इस लिए उनकी पत्नी पूरी तरह सज धज कर हार सिंगार करके बावा जी की प्रतीक्षा कर रही थी। दाती जी ने हाथों तथा पावों में मेहन्दी लगाई हुई थी। कलाइयों में कांच की चूडियां और सिर पर कढ़ाई वाला शाल ओढ़ रखा था। दाती जी ने छोटी बच्ची को गोद में उठाया हुआ था । वह बार बार घर के मुख्यद्वार पर आकर दूर तक बाबा जी की राह देखती ओर उन्हें न पाकर वापिस लौट आती। थक हार कर दाती जी कमरे के अंदर चली गई और पलंग पर लेट गई। आंख लगते ही सपने में दाती जी को बाबा जी का शव बनी सहारन में पड़ा दिखाई दिया जिसे देखकर दाती जी डर गई। फिर एक अनजानी शक्ति ने दाती जी को पलंग से नीचे गिरा दिया। एक आवाज उनको सुनाई दी कि तू हार सिंगार करके बैठी है और मैं यहां जंगल में पड़ा हूं जहां मेरी सुध लेने वाला कोई नहीं। यह आवाज किसी ओर की नहीं बल्कि बाबा जी की ही थी। आवाज सुनते ही दाती जी की चीख निकल गई और साथ ही आंख भी खुल गई। वह जोर-जोर से विलाप करने लगी। घर के अन्य सदस्य भी जाग गए। सबने दाती जी को ढाढस दी परन्तु दाती जी के आंसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। वह रो-रो कर कह रही थी कि मेरे पति संकट में हैं। वह जंगल में पड़े हैं।

वहां उनकी देख भाल करने वाला कोई नहीं। दाती जी ने अपनी छोटी सी बच्ची को उठाया और पति की तालाश में निलक पड़ी। फिर दाती ने सोचा कि मैं इस नन्ही जान को लेकर कहां दर-बदर होती रहुंगी। इसलिए बच्ची को अपने

किसी संबंधी के पास छोड़ जाती हूं। वह अपने सभी सम्बंधियों के पास गई परन्तु कोई भी छोटी बच्ची को अपने पास रखने पर राजी न हुआ। उल्टा दाती जी पर झूठे आरोप लगाने लगे कि बच्ची को यहां छोड़कर न जाने कहां जाने लगी है। दाती जी यह सब सहन न कर सकीं।

इस कठिन समय में बजाए दाती जी का साथ देने के सम्बंधी तरह-तरह की बातें करने लगे। दाती जी ने बच्ची को गोद में उठाया और पति की तालाश के लिए चल पड़ी। ढूंढते-ढूंढते वह उस स्थान पर पहुंच गई जहां बाबा जी का शव पड़ा था। दाती जी ने अपने पति के साथ चिता में सती होने का निश्चय कर लिया था। दाती ने बनी से लकड़ियां इक्ट्ठी कीं और चिता तैयार की। छोटी कन्या को एक साफ सुथरे स्थान पर गोबर पोतकर लिटा दिया और स्वयं चिता पर बैठ गई। स्थानीय लोगों ने बावा जी के सिर को ढूंढने में दाती जी की सहायता की। कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने दाती जी को सती होने से रोकने का यत्न किया परन्तु दाती जी नहीं मानी,। दाती जी ने कहा कि अब मेरा जीना व्यर्थ है। पति के बिना स्त्री कैसे जीवन का सुख भोग सकती है।

रही बात बच्ची की उसकी देख-भाल ईश्वर करेंगे जिसने हमें इस संकट में डाला है। दाती जी ने चिता को आग लागई और देखते ही देखते पति के साथ जल कर भस्म हो गई। बाल कन्या जो धरती पर लेटी थी वहीं धरती में समा गई। जिस लाल रंग की चुनरी में कन्या को लपेटा हुआ था उसका कुछ भाग बाहर रह गया था जिससे लोगों को पता चल गया कि कन्या इसी स्थान पर धरती में समा गई है।

तीनों की मृत्यु के बाद बावा जी तथा दाती जी के सम्बंधियों का बुरा हाल होने लगा जिन्होंने बच्ची को अपने पास रखने से इंकार कर दिया था। उनको सोते जागते बुरे-बुरे विचार आते। हर काम में विघ्न पड़ने लगे। घर में पड़े कपड़ों को अपने आप आग लगने लगी। सारे सम्बंधी बड़े दुखी हो गए। आखिर उन्होंने ज्योतिषियों तथा जादू-टोना जानने वालों का सहारा लिया और उनसे पूछा कि यह सब क्या हो रहाह है। परन्तु उनके दुःखों का अंत न हो सका। वे सब एक देवस्थान पर गए। वहां शीश झुकाया और बैठ गए। वहां एक चेला देवता की चौकी दे रहा था। उन्होंने चेले से प्रश्न किया कि हमारे साथ यह सब

क्या हो रहा है तो चेले ने उत्तर दिया कि आप लोगों ने बड़ा अत्याचार किया है। आपके परिवार में कोई स्त्री अपने पति के साथ सती हुई है और उसकी कन्या भी धरती में समा गई थी। ऐसा लगता है कि आप को उन तीनों की हत्या लगी है जिस कारण आपको यह कष्ट उठाना पड़ रहा है। वह स्त्री तो बड़े धार्मिक विचारों की थी। प्रभु भक्ति पर उसे पूर्ण विश्वास था। वह बड़ी नेक तथा अच्छे स्वभाव की थी परन्तु आपने उस पर झूठे आरोप लगाए। इसलिए जाओ और उस स्थान की तालाश करो जहां वह सती हुई है और जहां बाल कन्या धरती में समाई है। उस स्थान पर एक मंदिर या देहरी बनाकर वहां उनके मोहरे रखो, श्रद्धा पूर्वक उनकी पूजा करो और अपने अपराध की क्षमा मांगो।

चेले के आदेश अनुसार परिवार के सदस्य उस स्थान की तालाश में निकल पड़े। चलते चलते वे बनी सहारन पहुंचे तो वहां के लोगों से पूछताछ करने पर पता चला कि कुछ समय पहले यहां बावली पर कुछ स्त्रियां पानी भर रही थी उन्होंने बिना सिर के धड़ को घोड़े पर सवार देखा जो वहीं गिर पड़ा था। फिर एक स्त्री हार सिंगार किए अपनी छोटी सी बच्ची को गोद में उठाएं यहां आई और कहने लगी कि यह उसके पति का शव है। उसने बनी से लकड़ियां इकट्ठी कीं। चिता बनाई और उस शव के साथ सती हो गई। छोटी कन्या भी धरती में समा गई। दु:खी परिवार के लोगों ने तीनों के मोहरे बनवाकर एक देहरी में स्थापित किए। वहां हवन यज्ञ तथा भंडारा किया। सब सम्बंधियों ने अपने अपराध की क्षमा मांगी और प्रार्थना की कि जैसा दाती काआदेश होगा हम वैसा ही करेंगे और उसे कुल देवी मानते हुए सभी रीति रिवाजों का पालन करेंगे।

इस पवित्र स्थान पर अब साल में दो बार मेल लगती है एक कार्तिक महीने की पूर्णिमा तथा दूसरी आषाढ़ महीने की पूर्णिमा को जिसमें जम्मू कश्मीर तथा भारत के अन्य भागों में रहने वाले बाशपरिया बिरादरी के लोग अपने परिवारों के साथ यहां आकर बावा जी दाती जी तथा बुआ जी की पूजा करते हैं और मनचाही मुरादें प्राप्त करते हैं। देहरी में स्थापित मोहरों तथा संगलों की पूजा करने से पहले श्रद्धालु उस पवित्र बावली में स्नान करते हैं जो देहरी के पास ही है।

बाशपरिया बिरादरी के लोग उन जातियों से मेल मिलाप नहीं रखते जिन लड़कों ने बाबा जी का वध किया था। बशपरिया परिवार के लड़के का विवाह मन्नी परिवार में नहीं किया जाता क्योंकि दाती जी का संबंध मन्नी परिवार से ही था। बशपरिया वंश के लोग अपने पहले बच्चे के मुंडन संस्कार इसी पवित्र स्थान पर आकर करते हैं और लड़के की शादी के बाद नया जोड़ा यहां आ कर दाती जी की देहरी की परिक्रमा कर दाती जी का आशीर्वादं प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त बिरादरी के और भी कई नियम हैं। जिनका पालन अनिवार्य है। मनोकामनाएं पूर्ण होने पर श्रद्धालु यथा शक्ति चढ़ावा चढ़ाते हैं। जिसमें फल, मिठाई, झंडे, वस्त्र खिलौने, गुड़ियां पटोले होते हैं।

दाती जी के परम भक्त श्री हंस राज तथा अशोक जी के साथ इस पवित्र स्थान की यात्रा का सुअवसर मिला। इस स्थान के विषय में जैसा सुना तथा पढ़ा था उससे भी अधिक सुन्दर तथा आकर्षक पाया। यहां के शांत वातावरण में दिल को असीम शांति का अनुभव हुआ। अब तो और भी कई स्थानों पर दाती जी के मोहरो की स्थापना की गई है और अपनी अपनी सुविधा के अनुसार बिरादरी के कुछ लोगों ने मोहरे बनवा कर उनको यहां के प्राचीन मोहरों का स्पर्श कराने के बाद अपने अपने इलाके में बाबा जी, दाती रामो जी तथा बुआ रानी के मोहरे घरों या देहरियों में स्थापित कर लिए हैं। परन्तु उन देहरियों पर न तो नए जोड़े परिक्रमा कर सकते हैं और न ही वहां परिवार के पहले लड़के के मुंडन किए जा सकते हैं। विशेष अनुष्ठानों तथा रीति रिवाजों को दाती के बनी सहारन स्थित पवित्र स्थान पर ही सम्पूर्ण किया जाता है। बेशक यह पवित्र स्थान बशपरिया बिरादरी का है परन्तु दाती के दरबार में सभी धर्मों के लोगों को आने की अनुमति है क्योंकि दाती सबका कल्याण करती है। सबके भंडारे भरती है और सबकी मनोकामनाएं पूरी करती हैं। दाती का गुणगान करने से सबके कष्ट मिटते हैं। दाती सब को सुख तथा समृद्धि प्रदान करती है।

बाबा भजन दास जी

जम्मू की पवित्र धरती पर कई साधु संतों ने जन्म लिया जिन्होंने यहां के लोगों को आपस में मिल जुल कर रहने की शिक्षा दी और अपने चमत्कारों से उनके दुख दूर किए। उन महात्माओं की कुटिया में भक्तों की भीड़ रहती थी और हर समय वहां भजन कीर्तन होता रहता था। संतों के आशीर्वाद से भक्तों को आध्यात्मिक शांति मिलती थी और जीवन सुखमय होता था। संतों की कृपा से सब के बिगड़े काम बनते थे। नि:संतान दंपत्तियों को संतान का सुख प्राप्त होता था और गरीबों को धन मिलता था। उनके मार्ग दर्शन में लोगों को भक्ति मार्ग पर चलने तथा दीन दुखियों की सहायता करने की प्रेरणा मिली।

इस देव भूमि पर जिन महान संतों ने जन्म लिया उन में उदास, सम्प्रदाय के 21वें गुरु बाबा भजन दास जी का नाम बड़े आदर से लिया जाता है जिन की पवित्र समाधि आर.एस.पुरा तहसील के गांव दरसोपुर में है जहां प्रतिवर्ष 15 जून को बहुत बड़े भक्ति सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। जिसमें हजारों की संख्या में बाबा जी के भक्त शामिल होते हैं। इस अवसर पर हवन-यज्ञ सत्संग तथा भंडारे का आयोजन भी किया जाता है।

बाबा जी का जन्म 10 आषाढ़ 1941 विक्रमी को हीरानगर तहसील के गांव गराहस्तूरा में हुआ। उनका नाम ऊधोराम रखा गया। उनकी माता का नाम श्रीमती निक्की देवी तथा पिता का नाम भगत हीरा दास था। बाबा जी के माता पिता धार्मिक प्रवृति के थे इसलिए घर का वातावरण बड़ा स्वच्छ तथा पवित्र था। बाबा जी के जन्म पर सारे गांव में सुशियां मनाई गईं और कई दिनों तक लोग भगत हीरा दास जी को मुबारक देने के लिए आते रहे। बालक के मुख पर दिव्य तेज तथा नराली चमक थी जिससे प्रतीत होता था कि यह बालक कोई साधारण बालक न होकर ईश्वर का ही कोई रूप है। एक बार जो बालक की झलक देख लेता उसके दिल में बार बार देखने की इच्छा पैदा होती थी। घर के धार्मिक वातावरण तथा अच्छे मित्रों की संगत के कारण बचपन से ही बाबा जी पर प्रभु भक्ति का रंग चढ़ चुका था। उसी गांव का एक ब्राह्मण लड़का वासुदेव बाबा जी का प्रिय मित्र था जिसके साथ वह प्रतिदिन तालाब के किनारे पर बने मंदिर में स्थापित शिव लिंग की पूजा किया करते थे। कुछ बड़े हुए तो उन्होंने

संस्कृत तथा हिन्दी विषयों का ज्ञान पं० ज्योति राम जी से प्राप्त किया और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि हुई। वह सांसारिक कामों से विमुख प्रभु भक्ति में लीन रहते थे। उनको अपनी सुध नहीं रहती थी और कई बार वह घरवालों को सूचित किए बिना तालाब पर शिवलिंग की पूजा के लिए निकल जाते और घंटों वहां ध्यान में मग्न रहते थे। गांव में जब कभी, साधुओं की टोली आती तो वह तन मन से उनकी सेवा करते थे और घंटों उनसे ज्ञान की बातें सुनते रहते थे।

एक बार बाबा जी अपने मित्र वासुदेव के साथ शिवलिंग की पूजा के लिए तालाब पर गए। पूजा समाप्त करके जब वह घर लौट रहे थे तो अचानक वासुदेव के पेट में पीड़ा होने लगी। बाबा जी ने कुछ लोगों की सहायता से वासुदेव को घर पहुंचाया। वासुदेव पीड़ा से चिल्ला रहा था। गांव के हकीम को बुलाया गया। कई दवाइयां उसे दी गई परन्तु पीड़ा कम होने का नाम ही नहीं ले रही थी। वासुदेव मछली की भांति तड़प रहा था। चंद ही घंटों के बाद बाबा जी का प्रिय मित्र उनको अकेला छोड़ कर दूसरी दुनिया में चला गया। वासुदेव जो कुछ समय पहले बाबा जी के साथ शिवलिंग की पूजा कर रहा था सदा के लिए उनसे बिछुड़ गया था। क्यों चले जाते हैं लोग यह संसार छोड़कर ? क्यों भगवान उन लोगों को अपने पास बुला लेते हैं जिनकी इस संसार में भी आवश्यकता होती ? जिन्होंने अभी इस संसार की रूप रेखा को भी नहीं समझा होता। इस संसार की प्राकृतिक सुन्दरता के आनंद का अनुभव भी नहीं किया होता। ऐसे कई सवाल बाबा जी के मन में आए जिन से इस संसार के प्रति उनका मन उचाट हो गया। अपने मित्र की जुदाई का आघात वह सहन न कर सके। सारा दिन वह चुपचाप रहते। किसी ने खाने को दे दिया तो खा लिया नहीं तो भूखे ही भक्ति में लीन रहते थे। बाबा जी को घरेलू काम धंधों में लगाने तथा सांसारिक मोह-माया में जकड़ने के लिए घर वालों ने 19 वर्ष की आयु में उनका विवाह कर दिया परन्तु इस का बाबा जी के जीवन पर अधिक प्रभाव न पड़ सका। इसके बाद घर वालों ने उनको सेना में भर्ती करवा दिया। उनकी डयूटी सेयालकोट छावनी में एक द्वार पर थी। डयूटी के दौरान भी वह प्रभु का सुमिरण करते रहते थे। एक बार बैरिक के पास कुछ साधुओं ने डेरा जमा लिया। वे सुबह शाम भजन कीर्तन करते और

राम नाम की धुन से सारा वातावरण गूंज उठता था। बाबा जी डयूटी के बाद अधिक समय साधु संतों की संगत में ही गुजारते थे। एक बार साधुओं का सत्संग सुनने तथा प्रभु भजन करने में वह इतने मस्त हो गए कि डयूटी पर जाना ही भूल गए। शाम को जब सत्संग समाप्त हुआ तो वह बैरक में गए। अपनी डयूटी पर उपस्थित न होने का उनको दुख था इसलिए वह अपने आफिसर के पास गए और सिर झुकाकर खड़े हो गए। आफिसर ने आने का कारण पूछा तो बाबा जी बोले, साहिब मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं साधुओं का सत्संग सुनने में इतना मस्त हो गया था कि डयूटी पर उपस्थित न हो सका। भविष्य में ऐसी भूल कभी नहीं होगी। बावा जी की बात को सुनकर कमांडेंट बड़ा हैरान हुआ और बोला, जवान मेरे साथ मजाक क्यों कर रहे हो। तुम तो डयूटी पर थे। मैंने स्वयं अपनी आंखों से तुम्हें बैरक के मुख्य द्वार पर देखा था। यह सुनकर बाबा जी वापिस बैरक में लौट आए परन्तु एक सवाल बार-बार उनको परेशान कर रहा था कि डयूटी के समय तो वह सत्संग सुन रहे थे। फिर उनके स्थान पर किस ने डयूटी दी। वह समझ गए कि यह सब प्रभु का ही चमत्कार है। उन्होंने उसी समय नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और साधुओं की टोली में शामिल हो गए। उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब वह उसी की नौकरी करेंगे जिसने उनके स्थान पर डयूटी दी थी। जो सबका पालनहार है और जिसकी आज्ञा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। साधुओं की उस टोली का नेतृत्व उदास मार्ग के 20वें गुरु बाबा बिशन दास जी कर रहे थे। उन्होंने बाबा बिशन दास जी से प्रार्थना की कि उनको नाम दान देकर अपना शिष्य बना लें तो बाबा जी ने उत्तर दिया, बेटा साधु जीवन बड़ा कठिन है। साधु बनने के लिए बहुत बड़ा त्याग करना पड़ता है। बाबा जी ने जब विश्वास दिलाया कि वह उदास मार्ग तथा साधु समाज के सभी नियमों का पालन करेंगे तो बाबा बिशन दास जी ने उनको गुरुमंत्र देकर अपना शिष्य बना लिया। बाबा जी चूंकि हर समय प्रभु भजन में लीन रहते थे। इसलिए बाबा बिशन दास जी ने उनका नाम भजन दास रखा और अपने शिष्यों में एक उच्च स्थान दे दिया। बाबा जी इसी नाम से प्रसिद्ध हो गए।

बाबा बिशन दास जी के शिष्य बनने के बाद बाबा जी ने भारत के कई तीर्थ स्थानों की यात्रा की। साधुओं की टोलियां अकसर आबादी से दूर जंगलों या

नदियों के किनारे अपने डेरे जमाती थीं। बाबा बिशन दास जी ने कई बार बाबा जी की परीक्षा ली और हर बार बाबा जी परीक्षा में सफल रहे। 12 साल तक उन्होंने साधुओं के साथ भ्रमण किया। एक बार वह साधुओं की एक टोली में जा मिले। उन साधुओं का सम्बंध देश के विभिन्न प्रांतों से था। बाबा जी की बोली से साधु भांप गए कि यह कोई डोगरा साधु है। सब ने मिलकर बाबा जी की परीक्षा लेने की योजना बनाई। उन्होंने कुएं में एक लौटा फैंक दिया और बाबा जी से कहा कि यदि तुम में शक्ति है तो इस लौटे को कुएं से निकाल दो। बाबा जीने उत्तर दिया। कि मुझमें इतनी शक्ति नहीं तो साधु बोले यदि तुम इतना भी नहीं कर सकते तो तुम्हें भगवे वस्त्र पहनकर साधु बनने का कोई अधिकार नहीं । उतार दो इन वस्त्रों को और लौट जाओ अपने घर। उस समय बाबा जी ने अपने गुरु बाबा बिशन दास का ध्यान किया और मन ही मन उनसे प्रार्थना की, गुरु जी अब मेरी लाज आपके हाथ में है। थोड़ी देर के बाद कुएं का जल खौलने लगा और लौटा अपने आप बाहर आ गया। बाबा जी का यह चमत्कार देखकर सभी साधु हैरान रह गए और सब ने माना कि बाबा जी पहुचें हुए संत हैं। सबको अपनी गलती का एहसास हुआ और सब ने बाबा जी से क्षमा मांगी।

जब बाबा बिशन दास जी ने महसूस किया कि बावा भजन दास जी उदास सम्प्रदाय का प्रचार करने तथा इसके नियमों का पालन करने में समर्थ हैं तो उन्होंने बाबा जी को संत मिशन का प्रचार करने तथा सेवक बनाने और उनको गुरुमंत्र देने की आज्ञा दे दी।

सभी पवित्र स्थानों की यात्रा के बाद बाबा भजन दास जी अपनी जन्म भूमि हीरा नगर में आ गए। वह रमते योगी थे और गांव गांव शहर शहर घूम कर उदास सम्प्रदाय का प्रचार करते थे।

उनका कहना था कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए सच्ची मेहनत तथा लगन की आवश्यकता है-

साधु वह जो साधे काया।
ऐसा नाम साधु को हो।।
पास न रखे कौड़ी माया।
लेना एक और देना दो।।

ऐसा नाम साधु का हो..

बाबा जी किसी से कुछ नहीं मांगते थे और न ही रुपए पैसे को हाथ लगाते थे। अपनी इच्छा से यदि कोई कुछ देता तो उसे स्वीकार कर लेते थे।

बाबा जी कहते थे कि साधु की इच्छा भक्तों को मालूम होती है।

घर का त्याग करने के बाद बाबा जी कभी उधर नहीं गए। जहां जा कर वह बैठते थे वहीं भक्तों की भीड़ जमा हो जाती थी।

हर स्थान पर बाबा जी के लिए कुटिया बनी हुई थी जहां आ कर वह ठहरते थे। हजूरी बाग जम्मू ,सिम्बल मोड़, आर.एस.पुरा, दरसोपुर, मांडा, केरन करंगी, सोहल, भलवाल, मुटठी बरनाई, जिन्दलैड़, बटैड़ा, मखनपुर, सलामेचक, डोक खालसा, जोड़ा,जालन्धर में बस्ती बाबा खेल आदि स्थानों पर उनकी यादगरें बनी हुई हैं। बाबा जी अक्सर पैदल ही यात्रा किया करते थे।

जब बाबा जी कमजोर हो गए और अधिक चलने के कारण थकावट महसूस करने लगे तो उन्होंने स्थाई रूप से मीरां साहिब के पास एक झौंपड़ी में रहने का निश्चय किया। नहर के किनारे ठंडी वायु से उनका मन शांत रहता था। दूर दूर से बाबा जी के दर्शन करने के लिए भक्त यहां आते थे और कुटिया के पास हर समय चहल-पहल रहती थी। बाबा जी कहते थे कि स्त्री हो या पुरुष सब में प्रभु का नूर है।

अब्बल इक्को नूर है सब में।
नर है चाहे नारी।।
चार वर्ण संसार के अन्दर।
एक ही खलकत सारी।।
एक ओंकार निराकार है।
जिस दा कोई आकार नहीं।।
वह जाने जो ब्रहाज्ञानी।
हर इक को उस दी सार नहीं।।
मस्तक अन्दर द्वारा है दसवां।
पार ब्राह्म का वास।।
भजन दास उसको सुमिरो।

स्वास, स्वास, स्वास।।

बावा भजन दास जी 20 चैत्र 2012 विक्रमी को यह दुनिया छोड़कर ब्राह्मलीन हो गए। मृत्यु से तीन दिन पहले उन्होंने सभी शिष्यों को अपने पास बुलाया और उनको आदेश दिया कि मेरी मृत्यु पर रोने धोने की बजाए प्रभु का कीर्तन करें। बाबा जी की याद में हर साल तीन बड़े भक्ति सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं। 13 जून को आर.एस.पुरा में 14 जून को सिम्बल मोड़ तथा 15जून को बाबा जी की समाधि पर दरसोपुर में। उस दिन यहां खूब चहल-पहल होती है। समाधि के विकास तथा इस का प्रबंध चलाने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया है।

बाबा जी के सेवक श्री सेवा राम भगत, डा. मनोहर लाल जी तथा श्री साईं दास भगत के अनुसार बाबा जी की समाधि पर आ कर सच्चे दिल से प्रार्थना करने से भक्तों की हर मनोकामना पूरी होती है। बाबा जी के बताए हुए रास्ते पर चलकर जीवन की हर एक खुशी प्राप्त की जा सकती है। बाबा जी ने अपने जीवन काल में भक्तों को जो चमत्कार दिखाए उनसे प्रभावित होकर दूर दूर से श्रद्धालु उनकी शरण में आए और उनके शिष्यों में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती गई। बाबा जी ने सब को प्यार का संदेश दिया और मिल जुलकर रहने की प्रेरणा दी।

गुरु ज्ञागी जी महाराज

जम्मू की पावन धरती पर कई संतों पीरों फकीरों तथा महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने यहां के भूले भटके लोगों को अज्ञानता के अंधेरे से निकाल कर प्रभु भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनके बताए हुए रास्ते पर चलकर लोगों ने अपने जीवन को सुखमय बनाया। उन महापुरुषों के जीवन का लक्ष्य ही मानव जाति का कल्याण करना था, ऐसे महापुरुष इस संसार में रहकर भी संसार से मोह नहीं रखते थे। उनके लिए सांसारिक बंधन तथा रिश्ते नाते कोई महत्व नहीं रखते थे। उनका रिश्ता तो केवल उस प्रभु से होता है जो सबका पालनहार है जो सबको एक निश्चित काम के लिए इस संसार में भेजता है और काम पूरा होने के बाद उन्हें वापिस अपने पास बुला लेता है। उसके दरबार में सब बराबर हैं। वहां जात, पात, छोटा बड़ा अमीर गरीब, काला गोरा नहीं बल्कि मनुष्य के व्यवहार और उसकी भक्ति को देखा जाता है। भगवान उसी को चाहते है, उसी से प्यार करते हैं जो उसके पैदा किए हुए बंदों से प्यार करता है। उस के दरबार में दिखावे या ढोंग का कोई स्थान नहीं। उसे कोई धोखा नहीं दे सकता। समय समय पर यहां ऐसे महापुरुषों ने जन्म लिय जिनके आशीर्वाद से मानव को आध्यात्मिक शांति का अनुभव होता है। जब जब इस धरती पर रहने वाला मानव अपने रास्ते से भटक जाता है तब तब कोई ज्ञानी पुरुष, संत या महात्मा इस धरती पर जन्म लेता है। ऐसे ही थे गुरु ज्ञानी जी जिन्होंने अपना सुख तथा आराम त्याग कर प्रभु भक्ति का कठिन मार्ग अपनाया और अपने शिष्यों को सदमार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

गुरु ज्ञानी जी का जन्म 1954 विक्रमी की माघ पूर्णिमा को जम्मू से आठ किलोमीटर दक्षिण पश्चिम क़ी ओर तहसील जम्मू के एक गांव सजादपुर में बटवाल समुदाय के कैथ परिवार में हुआ। श्री महंगा राम जी के अनुसार उनके पिता जी का नाम श्री काका राम तथा माता का नाम श्रीमती मसां था। श्री काका राम जी के तीन पुत्र थे। यह प्रतिष्ठित परिवार गांव में बड़े अच्छे ढंग से सच्चाई, नेकी तथा ईमानदारी के रास्ते पर चलते हुए अपना जीवन निर्वाह करता तथा दान पुण्य के लिए भी प्रसिद्ध था। किसी को हानि नहीं पहुंचाता था और सबका

भला चाहता था। परिवार के सदस्य मेहनत करके जो प्राप्त करते उसी को भगवान का प्रसाद समझ कर ग्रहण करते थे।

बाबा जी के जन्म पर घर में खुशी की लहर दौड़ गई। पिता काका राम जी ने बाबा जी के जन्म पर भगवान का धन्यवाद किया और बच्चे के ग्रह संस्कार देखने के लिए पंडित जी को बुलाया। पंडित जी ने जंतरी देखी तो बोले की यह लड़का साधु होगा, ईश्वर का भक्त होगा अपनी जाति ही नहीं बल्कि समस्त मानव जाति का कल्याण करेगा।

सब इसके दर्शन के लिए आएंगे। ऐसे लगन में तो किसी महापुरुष का ही जन्म होता है। यह बालक ज्ञान की बातें करेगा और सांसारिक बंधनों से दूर रहेगा। अंधेरे जग में प्रकाश फैलाएगा और दीन दुखियों के कष्ट दूर करेगा। काका राम जी पंडित जी की भविष्य वाणी सुनकर बड़े प्रसन्न हुए। पंडित जी को गुढ़ की रोड़ी तथा श्रद्धा अनुसार दक्षिणा देकर विदा किया। पंडित जी के कहने पर बालक का नाम गागी रखा गया जो बाद में गुरु ज्ञागी के नाम से प्रसिद्ध हुए। कुछ बड़े हुए तो उनको पाठशाला भेजा गया। माता पिता ने उनको शिक्षा दी कि स्कूल में सब बच्चों को अपना भाई समझना और उन सबसे मिलजुल कर रहना। स्कूल में पढ़ते समय बाबा जी तख्ती पर भी अपने पाठ के स्थान पर ॐ ॐ ही लिखते रहते थे। सब हैरान थे कि यह बच्चा, कब अपनी शिक्षा पूर्ण करेगा। वह घर के काम काज में रुचि नहीं लेते थे। उनका कहना था कि स्कूल में शोर होता है इसलिए एकांत की तलाश में वह गांव से बाहर वृक्षों के झुण्डों में ईश्वर की आराधना करते थे। जब गांव के लड़के गाय, भैंसें चराने के लिए जाते थे तो बावा जी भी उन के साथ चले जाते परन्तु वह अपनी ही मस्ती में इधर उधर घूमते रहते थे। कभी कभी तो वह अपने गांव से दूर निकल जाते और घर वाले उन को तलाश कर के लाते थे।

श्री महंगा रामजी के अनुसार जब बाबा जी ने घर से किनारा किया तो हम सदा उनके आस पास ही रहते थे। उनका ध्यान रखते थे ताकि वह कहीं दूर न चले जाएं। बाबा जी के पिता ने बहुत यत्न किए कि वह घरेलू कामों की ओर ध्यान दें परन्तु उनको साधु संतों की संगत पसंद थी। कई कई दिन वह घर से गायब रहते थे। इस प्रकार पांच साल तक उनकी रखवाली करते रहे। एक दिन

वह सब की नजरों से बच कर कुम्हारों के साथ जम्मू की ओर निकल गए और फिर वापिस नहीं आए। उनकी इच्छा थी कि संतों के दर्शन करें यहां क्या रखा है। बाद में पता चला कि वह मथुरा–वृन्दावन की ओर चले गए हैं। वहां साधु संतों से मिले और विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा की। वह सभी रिश्ते नाते तोड़ कर भाई बहन का प्यार दिल से मिटा कर पूरी लगन से प्रभु भक्ति करने लगे। उनकी साधना के ढंग को देखकर सब हैरान थे कि यह कैसा फकीर है न शरीर पर भभूत मलता है न जटाएं रखी हैं। चुपचाप एकांत में ईश्वर भक्ति करता है। बाबा जी का विश्वास था कि झूठे ढोंगों से ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता। ईश्वर को बाहर खोजना बेकार है। उसको प्राप्त करने के लिए हृदय की शुद्धता आवश्यक है। छल कपट तथा झूठ को दिल से निकाल कर सत्य मार्ग पर चल कर ही प्रभु को पाया जा सकता है। बाबा जी कई सालों तक बाहर साधु संतों की संगत में रहे। उनके साथ पवित्र स्थानों की यात्रा की और जहां से भी हो सका ज्ञान प्राप्त किया। एक दिन उनके दिल में विचार आया कि बाहर रहने से तो अच्छा है कि अपने गांव चलकर वहां के लोगों के दिलों में प्रभु नाम की जोत जगाएं। वह अपने गांव सजादपुर आ गए परन्तु घर नहीं गए। घर से बाहर ही छोटी सी कुटिया बनाकर रहने लगे। इन के शिष्य भी वहीं उनके दर्शन करने तथा उनका सत्संग सुनने आ जाते थे।

महंगा राम जी के अनुसार घर वालों ने बहुत यत्न किए कि बाबा जी परिवार में रहें परन्तु वह न माने। उनका कहना था कि अब वह भिक्षा मांग कर भोजन खाएंगे। घरवालों को यह अच्छा न लगा। घर वाले कहने लगे कि आप भिक्षा मांग कर खाएं यह कैसे हो सकता है। हम आपको भिक्षा नहीं मांगने देंगे। यदि ऐसी बात है तो आपको यहां नहीं आना चाहिए था। यहां रह कर हम आपको मांगने नहीं देंगे। भोजन आपको घर से आ जाया करेगा। आप यहां इस कुटिया में रहकर प्रभु भक्ति में मग्न रहें। महंगा राम जी के पिता मंगू राम जी ने भी उनको समझाया कि भिक्षा मांगने का विचार दिल से निकाल दें। बाबा जी ने उत्तर दिया कि मैंने मांग कर ही खाना है यह मेरे गुरु जी की आज्ञा है। बाबा जी के गुरु का नाम बाबा मंगल दास था। वह बाहर के थे परन्तु उन दिनों वह यहीं रहते थे सजादपुर में। जब बावा जी न माने तो मंगू राम जी स्वयं लोहारों के घर गए और

एक लोहे का चिमटा बनवा कर ले आए। एक झोली सिला दी और बावा जी के कंधे पर लटका कर साथ वाले गांव में राजपूतों के घरों से भिक्षा मांगी और वापिस यहां आ गए। मंगू राम जी ने बाबा जी से कहा कि आप की प्रतिज्ञा पूरी हो गई है। अब आप यहां बैठकर राम नाम की माला जपें। गुरु ज्ञागी जी वर्तमान समाधि स्थान पर बैठ गए।

उन्होंने घर वालों को कह दिया कि यदि यहां मेरे पास आना हो तो मुझे अपना भाई, बेटा या संबंधी समझ कर न आएं। भरजाइयों को कह दिया कि मुझे अपना देवर न समझें। भतीजों तथा भतीजियों से कहा कि मुझे लाला नहीं कहना। मेरे लिए सब एक सामान हैं। में अब आपके घर का नहीं सबका हूं। मेरे पास आना हो तो एक सत्संगी के रूप में आना।

एक बार बावा जी रियासी की ओर चले गए। वहां उनको कुछ मनचले नौजवानों ने पकड़ लिया और शोर मचाने लगे बाबो आयो, बाबो आयो। उन्होंने ज्ञागी जी से सद्व्यवहार न किया और गर्मियों की धूप में उनको गर्म गर्म रेत पर बिठा दिया। वे देखना चाहते थे कि इस बाबे में कितनी शक्ति है और गर्म रेत में वह कितने समय तक रह सकता है। वह गर्म रेत पर चौकड़ी लगाकर बैठ गए। साधना में वह कई बार ऐसी परीक्षाओं में से गुजर चुके थे। वह आंखें बंद करके ध्यान मगन हो गए।

वे नौवजान वृक्ष की छाया में बैठकर दूर से यह तमाशा देखने और आपस में बातें करने लगे कि इस बावे ने पाखंड बनाया है। यह बाबे काम काम तो करते नहीं और लोगों को अपने पीछे लगा लेते है। लोग भी आंखें बंद करके बिना सोचे समझे इनकी बातों में आ जाते हैं।

उसी समय गुज्जर परिवार के एक बजुर्ग वहां से गुजरे। उन्होंने नौजवानों की बातें सुनीं और गर्म रेत में चौकड़ी लगाकर बैठे गुरु ज्ञागी जी को भी देखा। ज्ञागी जी के चेहरे पर नूरइल्लाही देखकर वह हैरान रह गए। उस बजुर्ग ने नौजवानों से कहा कि क्यों ऐसी मूर्खाता कर रहे हो। इस संत को क्यों कष्ट पहुंचाते हों।

यदि इसे क्रोध आ गया तो सबको भस्म कर देगा। बेहतर है कि उसे मर्ग रेत से उठाकर वृक्ष की छाया में बिठाओ और इस के पैरों को छू कर उससे क्षमा मांगों। कुछ ही क्षणों में आस पास के डेरों के लोग भी इक्ट्ठे हो गए। बजुर्गों के

कहने पर नौजवानों ने बाबा जी से क्षमा मांगी और उनका यथायोग्य आदर सत्कार किया और भोजन खिलाया।

एक बार बावा जी तवी क्षेत्र मंडाल की ओर गए। वहां अभी अभी सड़क बनी थी। वहां एक मोड़ का नाम तरबूज मोड़ है। उन दिनों वहां एक व्यक्ति ने खेत में तरबूज उगाए हुए थे। खेत में ही उसने एक साधारण सा कमरा बनाया हुआ था। उसे तरबूज बेचकर अच्छी अमदनी हो जाती थी। इसलिए उसे कुछ घमंड सा हो गया था। बाबा जी खेत के पास ही एक वृक्ष की छाया में आराम करने बैठे। उन को प्यास लगी तो उस व्यक्ति से पानी का गिलास मांगा परन्तु उसने कोई ध्यान न दिया। बावा जी चुप चाप बैठे रहे। फिर उन्होंने खेत के स्वामी से एक तरबूज लाने को कहा। उस व्यक्ति ने खेत से एक तरबूज तोड़ा। चाकू से जब तरबूज को चीरा तो वह कच्चा निकला। बाबा जी ने कहा कि कच्चा तरबूज तो में नहीं लूंगा। वह पुनः खेतों में गया और दूसरा तरबूज तोड़कर लाया। उसे चीरा तो वह भी कच्चा निकला। इस प्रकार आठ दस तरबूज उसने तोड़े जो सभी कच्चे निकले।

बाबा जी उस व्यक्ति की परेशानी को भांप गए। उन्होंने एक तरबूज की ओर संकेत करते हुए खेत के स्वामी को कहा कि उसे तोड़ कर लाओ। जब उसे चीरा गया तो वह तरबूज लाल रंग का निकला। वह व्यक्ति समझ गया कि बाबा जी कोई साधारण व्यक्ति नहीं। उसको अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने बाबा जी से क्षमा मांगी।

उसके बाद जितने तरबूज भी उसने तोड़े वे सभी पके हुए थे। बाबा जी ने कहा अब तुम जिस तरबूज को तोड़ो गे वह पक्का हुआ ही होगा।

बाबा जी का यह चमत्कार देखकर वहां बैठे लोग भी हैरान रह गए और बाबा जी की जय जय कार करने लगे।

बावा जी के चमत्कारों का वर्णन करते हुए श्री महंगा राम जी ने कहा कि एक कहावत है 'घर की मुर्गी दाल बराबर' या 'घर का जोगी जोगड़ा बाहर का जोगी सिद्ध' अर्थात जो चीज घर में हो उसका आदर नहीं होता। अपने गांव में चाहे कितना भी पहुंचा हुआ संत क्यों न हो लोग उसका यथा योग्य सम्मान नहीं करते और बाहर से आने वाले संत महात्मा को ही महान समझा जाता है। यहां के लोग बाबा जी को केवल एक सिद्ध समझते थे ओर कभी कभी उनकी हंसी भी उड़ाते

थे। बावा जी ने उनके इस व्यवहार का कभी बुरा नहीं मनाया। समाधि के दाई ओर एक खेत है जहां किसी समय रेत होती थी। बाबा जी गर्मियों के दिनों में वहां दोपहर को 12 बजे बैठते थे और तीन घंटे तक समाधि लगाते थे। गांव के लोग तरह तरह की बातें करते थे। कुछ कहते यह वही गागी है जो जगह जगह फिरता रहता था। आज बड़ा संत बना फिरता है। जितने मुंह उतनी बातें। कुछ लोग उनको पत्थर मारते थे परन्तु बाबा जी ने किसी को कुछ नहीं कहा। उन्होंने लोगों की बातों का कभी बुरा नहीं मनाया।

बावा जी गांव की दुकान पर अक्सर आया करते थे। वहां एक दिन कुछ मंचले युवक बैठे थे। बाबा जी को दुकान की ओर आते देख आपस में बातें करने लगे, सुना है बाबा जी गर्म रेत पर बैठ कर तपस्या करते हैं। क्या वह रात भर खड़े भी रह सकते हैं। बाबा जी ने उनकी बात सुन ली और कहा, क्यों नहीं जिस प्रभु की कृपा से में तीन घंटे तक गर्म रेत में बैठ सकता हूं उसी की शक्ति से में रात भर खड़ा भी रह सकता हूं। देखते रहना कल से मैं यहीं इस दुकान पर रात भर खड़ा रहूंगा।

अगले दिन बाबा जी एक छोटी सी लकड़ी को लेकर, शाम के समय दुकान पर आए और उसके सहारे रात भर दुकान के सामने खड़े रहे। सुबह वह उस लकड़ी को दुकान पर ही छोड़कर कुटिया में जाते थे। लोग छुप छुप कर उनको देखते थे कि रात में वह कितनी बार इधर उधर जाते हैं। खड़े रहते भी हैं या नहीं। तीन महीनों तक ऐसा होता रहा परन्तु कोई भी यह न कह सकता कि बाबा जी रात के समय बैठते हैं या इधर उधर जाते हैं। जिन लोगां ने उनकी हंसी उड़ाई थी उनको अपने आप से घृणा होने लगी कि क्यों एक महान आत्मा को दुख दिया। उन सब ने बाबा जी से क्षमा मांगी और बाबा जी के शिष्य बन गए। इस प्रकार के चमत्कारों को देख लोग उनकी शरण में आने लगे और जो उनका मजाक उड़ाते थे वे भी अपने किए पर पछताने लगे।

आस पास के गांवों के लोग छोटी मोटी बीमारियों के उपचार तथा घरेलू संकटों के निवारण के लिए बाबा जी के पास आने लगे। बाबा जी धूने की भभूत की एक चुटकी तथा पांच छुहारों पर मंत्र पढ़कर लोगों को देते थे जिससे उनको संकट से मुक्ति मितली थी और बीमारियों से छुटकारा मिलता था।

अब तो बड़ी संख्या में लोगों का बाबा जी की कुटिया में आना जाना शुरु हो गया।

दिन रात अब वहां सत्संग होने लगा। एक कीर्तन मंडली भी बनाई गई जो विभिन्न क्षेत्रों में जाकर भजन कीर्तन तथा सत्संगों का आयोजन करती थी। यह कीर्तन मंडली रणवीर सिंह पुरा, जीन्दड़, मेलू, लसवाड़ा, दयोली, सलामेचक,चोहाला, बिश्नाह, महमूदपुर जीदंड़े, कोटली अर्जुन सिंह आदि गांवों में कीर्तन आदि करती थी।

जब इन जगहों के लोग भी यहां आने लगे तो इस स्थान पर भंडारों का आयोजन किया जाने लगा। पहले तो साल में दो बार भंडारा होता था। परन्तु अब साल में एक ही बार गुरु ज्ञागी जी के जन्म दिन पर माघ महीने की पूर्णिमा को होता है। जिस में बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं। एक अनुमान के अनुसार उस दिन कई मन चालव तथा 35 शगले दाल बनाई जाती है। इसके अतिरिक्त अन्य त्यौहारों जैसे शिव रात्रि, जन्माष्टमी, गुरुपूर्णिमा के अवसर पर भी भजन कीर्तन तथा भंडारों का आयोजन किया जाता है। माघ महीने का भंडारा तो बाबा जी के जीवन काल में ही आरंभ हो गया था। बावा जी यहां पक्का कमरा नहीं बनाने देते थे। लोगों ने उनसे प्रार्थना की कि भंडारे का राशन खराब हो जाता है। उनके कहने पर एक छोटा सा कमरा बनाया गया। बावा जी ने अपने जीवन में ही समैलपुर के श्री बरलाकी राम जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।

गुरु ज्ञागी जी 1974ई में प्रभु को प्यारे हो गए और यहां ही उनकी समाधि बना दी गई। उनकी समाधि के पीछे श्री बरलाकी राम जी की समाधि तथा उनकी मूर्ति की स्थापना की जाएगी।

एक हाल का निर्माण भी किया गया है, जहां समय समय पर धार्मिक सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। इस परिसर में बेरी का वह वृक्ष भी है जिसके नीचे बैठकर बाबा जी तपस्या किया करते थे।

गुरु ज्ञागी जी की समाधि तथा आस पास के वातावरण को ओर अधिक सुन्दर तथा आकर्षक बनाने के लिए कमेटी का गठन किया गया है। कमेटी के सदस्य समय समय पर यहां इकट्ठे होकर इस स्थान पर विकास कार्यों के बारे में सोच विचार करते हैं। कमेटी के अध्यक्ष श्री थोड़ू राम जी को गुरु ज्ञागी जी ने ही चुना था जो पिछले 20-25 सालों से पूरी निष्ठा से इस पवित्र स्थान की देख भाल कर रहे हैं। सबके सहयोग से इस समाधि मंदिर परिसर को सुंदर बनाने का यत्न किया जा रहा है।

बेड़े वाला बाबा-काला काम

जम्मू क्षेत्र के वासी धर्म प्रेमी तथा आपस में मिलजुल कर रहने में विश्वास रखते हैं। यह सारा क्षेत्र आपसी मेल मिलाप तथा हिन्दू, मुस्लिम एकता की एक मिसाल रहा है और सदियों से यहां तमाम धर्मों को मानने वाले भाईयों की तरह रहते आ रहे हैं। यहां रहने वाले अपने धर्म के सिद्धांतों पर चलते हुए अन्य धर्मों का भी आदर करते हैं। यह पवित्र धरती एक गुलदस्ते की भांति है जहां सब एक दूसरे की शोभा बढ़ाने के प्रयास में हैं और सबका अपना अपना रंग है जो इस पवित्र धरती के आकर्षण में वृद्धि करता है। रंग बिरंगे फूलों से सजी यह धरती यहां आने वाले हर व्यक्ति को अपनी महक से मंत्र मुग्ध कर देती है। पीरों फकीरों साधु संतों तथा महापुरुषों की इस धरती पर समय समय पर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होते हैं।

जम्मू प्रांत के हर भाग में हमें स्थानीय देवी देवताओं तथा कुल देवताओं के मंदिर और देहरियां दिखाई देती हैं जिनकी लोग अपने अपने ढंग तथा रीति रिवाज के अनुसार पूजा अर्चना करते हैं। यहां के लोगों को पूर्ण विश्वास है कि उनकी उन्नति, समृद्धि तथा परिवार की खुशहाली इन्हीं देवी देवताओं की कृपा दृष्टि से है। यही कारण है कि यहां के लोग कोई भी शुभ कार्य करने से पहले इन देवी-देवताओं के दरबार में उपस्थित होकर अपने कार्य की सिद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं और कार्य सम्पूर्ण होने पर या मनोकामना पूर्ण होने पर यहां यथा शक्ति चढ़ावा चढ़ाते हैं। इन स्थानीय देवी देवताओं के मंदिरों तथा पीरों फकीरों की दरगाहों पर सभी धर्मों के लोग श्रद्धा सुमन अर्पण करने आते हैं। इन देवी देवताओं तथा पीरों फकीरों को विभिन्न नामों से याद किया जाता है। उदाहरण के तौर पर जम्मू क्षेत्र में राजा मंडलीक को हिन्दू तथा मुस्लमान अलग अलग नाम से याद करते हैं। हिन्दु राजा मंडलीक तो मुस्लमान उसे गोगा पीर कहते हैं। जम्मू के धर्मप्रेमियों ने अन्य क्षेत्रों के लोक देवताओं को भी बड़ी प्रसन्नता से अपने स्थानीय लोक देवताओं में स्थान दिया और उनकी पूरी श्रद्धा से उपासना की। राजा मंडलीक यद्यापि राजस्थान के थे परन्तु उनकी पूजा डुग्गर क्षेत्र में लोग देवता के रूप में लगभग पांच सौ साल से हो रही हैं। जम्मू क्षेत्र में राजा

मंडलीक के बहुत से मंदिर हैं। मुस्लमान भाई राजा मंडलीक को गोगा पीर के नाम से पुकारते हैं और अपने ढंग से उनकी पूजा करते हैं।

राजा मंडलीक या गोगा पीर का एक पवित्र स्थान जम्मू से 14 किलो मीटर जम्मू-घरोटा-अखनूर सड़क पर भलवाल जेल से थोड़ा आगे पुरखू जाने वाली सड़क की दाईं ओर बसे एक छोटे से गांव काला काम में हैं। यहां राजा मंडलीक को बेड़े वाला बाबा भी कहते हैं। यह शायद इस लिए कि यहां पर एक बेड़ का वृक्ष है जो लगभग पांच सौ साल का है। लोगों का विश्वास है कि इस क्षेत्र में भ्रमण करते समय राजा मंडलीक ने कुछ समय के लिए इस वृक्ष के नीचे विश्राम किया था। इस स्थान के विकास के लिए स्थानीय लोग तथा राजा मंडलीक के श्रद्धालु पूरी लगन से प्रयत्नशील हैं। मुख्य स्थान पर राजा मंडलीक की पिंडियां, मोहरे, झुंडे तथा उनका एक बड़ा चित्र रखा हुआ है। पिंडियों तथा मोहरों को लाल रंग के सुन्दर कपड़ों से ढ़का हुआ है। इसके चारों ओर छोटी सी दीवार बना दी गई है ताकि इस पवित्र स्थान को सुरक्षित रखा जा सके। चारों कोनों में रंग बिरंगे झंडे लगे हुए हैं जिसे झंडियों तथा रंग बिरंगी रोशनियों से भी सजाया गया है पास ही प्राचीन बेड़ वृक्ष है। यहां के लोगों का कहना है कि इस प्राचीन वृक्ष को एक ही बार एक बहुत बड़ा फल लगा था और फिर उसके बाद कोई फल नहीं लगा परन्तु यह वृक्ष साल भर हरा रहता है और इसकी शीतल छाया में यात्री तथा पशु पक्षी विश्राम करते हैं। इस स्थान के साथ जितनी भूमि है उसमें उगे हुए वृक्षों को काटना मना है। यदि कोई गलती से लकड़ी काट कर ले जाता हैं तो वे सांपों में बदल जाती है। लकड़ी तो क्या वहां के वृक्षों से कोई पत्ता भी नहीं तोड़ सकता। कुछ साल पहले एक व्यक्ति इस वृक्ष की सूखी, लकड़ी को घर ले गया। यूं ही उस ने खाना बनाने के लिए आग जलाई तो धुऐं से वह अंधा हो गया। जब उसके अंधा होने के रहस्य की खोज पड़ताल की गई तो पता चला कि उसने राजा मंडलीक के पवित्र स्थान पर उगे वृक्ष की लकड़ी घर ला कर जलाई थी। बजुर्गों ने उसे राजा मंडलीक के स्थान पर जा कर अपनी गल़ती की क्षमा मांगने को कहा। उस व्यक्ति ने उस स्थान पर आकर क्षमा मांगी तो उसकी आंखों की रोशनी लौट आई। लोगों का कहना है कि मंदिर परिसर से कोई भी व्यक्ति सूखी या हरी लकड़ी काट कर घर नहीं ले जा सकता परन्तु इस स्थान पर होने वाले हवन यज्ञ या भंडारे के लिए

उसका प्रयोग किया जा सकता है। इस स्थान की पवित्रता को कायम रखने के लिए हर संभव यत्न किया जाता है। यहां पर यदि कोई गंदगी फैलाए तो उसे उसी समय इसका दंड भी भुगतना पड़ता है।

काला काम तथा आस पास के लोग नई फसल का कुछ भाग राजा मंडलीक, गोगापीर या बेड़े वाले बाबा के दरबार में चढ़ाने के बाद ही परिवार में उसका प्रयोग करते हैं। राजा मंडलीक असल में राजपूतों का नेता था जिसने विदेशी हमलों के समय राजपूतों की सेना का नेतृत्व किया था। उसका सम्बंध राजस्थान के बीकानेर क्षेत्र से था। विदेशी हमलों का सिलसिला बहुत समय तक राजस्थान में चलता रहा इस लिए अधिकतर लोग राजस्थान से पलायन करके पंजाब, वर्तमान हरिणया तथा हिमाचल प्रेदश और उत्तर प्रदेश आदि के सुरक्षित स्थानों पर आ कर रहने लगे होंगे। जहां जहां वे गए गोगा पीर की बहादुरी की गाथाएं भी वहां गाई जाने लगी होंगी। हो सकता है कि उनमें से कुछ लोग जम्मू क्षेत्र में भी आए हों और डुग्गर क्षेत्र में उस बहादुर नायक की पूजा भी एक लोक देवता के रूप में होने लगी होगी।

इस गांव के निवासी श्री परमानंद जी ने बताया कि सच्चे दिल से मांगी गई हर मुराद यहां पूरी होती है। असंख्य लोग यहां अपने कष्टों से मुक्ति प्रास करने यहां आते हैं। एक बार उनके पिता श्री आज्ञा राम जी किसी काम से अखनूर गए। वह तम्बाकू पीते थे और एक लम्बी सी मिट्टी की बनी (स्थानीय भाषा में टोपी) वह हर समय अपने पास रखते थे। एक छोटी सी पोटली में तम्बाकू भी उनके पास होता था। जब भी तम्बाकू पीने को जी चाहता तो उसमें चिलम भरकर पीने लगते। चिनाब नदी को किश्ती द्वारा पार करके जब वह अपने घर आ रहे थे तो उनको रास्ते में एक महात्मा जी मिले। महात्मा जी ने उनको कहा, बच्चा हम भी तम्बाकू पीने के इच्छुक हैं, हमे भी दम लगवाओ। पिता जी क्रोध में आकर बोले यह चिलम मैंने अपने लिए भरी है न कि तुम्हारे लिए, फिर मैं तुम्हें कैसे दे दूं। महात्मा जी बोले, बच्चा तूने एक महात्मा का अपमान किया है। तुम शीघ्र ही कष्ट भोगोगे परन्तु जब तुम पर कोई मुसीबत आए तो सच्चे दिल से हमें याद करना हम तुम्हारी सहायता के लिए आएंगे। उन्होंने कहा कि पिता जी घर आकर बीमार हो गए। उनको अपनी कोई सुधबुद्ध न रही। सारा दिन जंगल जाड़ में धूमते रहते। रोटी मिल गई तो खाली

नहीं तो कई कई दिन भूखे ही रहते। उनकी यह दशा देखकर परिवार के सदस्य भी दुखी हो गए। बहुत उपचार करवाया परन्तु वह ठीक न हुए। आखिर किसी बजुर्ग ने सलाह दी कि राजा मंडलीक के स्थान पर जाकर उनसे अपनी भूल की क्षमा मांगें जो अनजाने में हो गई हो। वह अवश्य ठीक हो जाएंगे। हमारे सारे परिवार ने राजा मंडलीक के दरबार में जाकर पिता जी के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना कि और उनसे यदि कोई भूल हो गई है उस के लिए क्षमा मांगी। कुछ ही दिनों में पिता जी ठीक हो गए। परमानंद जी ने कहा कि उसके कुछ समय के बाद यहां खाना बदोशों के कुछ कबीले आए। उन्होंने इस पवित्र स्थान के आस पास डेरा लगा दिया। उनके पास कुछ गधे भी थे। उन्होंने गधों को भी यहां बांध दिया। गधे यहां गंदगी फैलाने लगे। यहां के लोगों ने उनको मना किया परन्तु खाना बदोश लोग नहीं माने। परिणामस्वरूप उनके सारे गधे मर गए। कोट भलवाल के वासी श्री बिहरी लाल जी राजा मंडलीक के परम भक्त हैं। उनको राजा मंडलीक के चमत्कारों तथा उनकी आध्यात्मिक शक्ति पर पूर्ण विशवास है। उन्होंने राजस्थान में उस स्थान की यात्रा भी की है, जहां के राजा मंडलीक रहने वाले थे। उन्होंने कहा कि राजा मंडलीक के स्थान पर जाकर उन्हें असीम आन्द का अनुभव हुआ। बिहारी लाल जी ने राजा मंडलीक की जो कहानी सुनाई उसका सार कुछ इस तरह है। यह कहानी आम लोगों में यहां प्रचलित है जिसका वर्णन जोगी अपनी कारकों में भी करते हैं। जोगियों तथा स्थानीय डोगरी कवियों ने कहानी में कई स्थानों पर अपनी कल्पना के रंगों से कहानी को ओर अधिक रोचक बनाने का यत्न किया है। उनके अनुसार राजा मंडलीक की माता का नाम बाछला था। वह गुरु गोरख नाथ जी की भक्त थी और उनकी कृपा से राजा मंडलीक का जन्म हुआ था। राजा मंडलीक बचपन से ही तेजस्वी तथा वीर था। पिता की मृत्यु के बाद उनके सम्बंधियों ने उनको परेशान करना शुरु कर दिया। वह शादी करने के लिए बंगाल गए। वहां रानी सुरगला से शादी की तो वह रानी सुरगला के मोहजाल में ऐसे फंस गए कि अपनी मां तथा बहन को भूल गए । उनके साथ उनके दो बजीर नाहर सिंह तथा कालीबीर थे। रानी सुरगला जादूगरनी थी, जिसने राजा मंडलीक को अपने जादू से पूरे तौर पर अपनी कैद में कर लिया था। वह उसके साथ चौपड़ खेलती रहती और इधर-उधर की बातों में उलझाए रखती थी। राजा मंडलीक के बजीर भी मजबूर

थे। उन्होंने भी राजा मंडलीक को कई बार घर वापिस जाने को कहा। परन्तु वह हर बार अपने बजीरों की बात को टाल जाते। उधर राजा मंडलीक की मां तथा बहन के सगे संबंधियों ने उनका जीना हराम कर रखा था।

आखिर तंग आकर उसकी बहन ने राजा मंडलीक को पत्र लिखने का फैसला किया। बहन ने सोचा कि पत्र ऐसे ढंग से लिखा जाए कि वह आने के लिए मजबूर हो जाए। उसने पत्र में लिखा कि मां की मृत्यु हो गई है। हम जहां परेशान हैं और तुम वहां मस्त हो गए हो। 'उंगली बड्डी बुआ कलमा बनांदी, लहू दे अक्खर पाई।' राजा की बहन ने वह पत्र एक कौवे के गले में बांधकर उसे बंगाल की ओर छोड़ दिया। कौवा रानी सुरगला के दरबार में आया और पत्र उस स्थान पर रख दिया जहां रानी राजा के साथ चौपड़ खेलती थी। अगले दिन चौपड़ खेलते हुए राजा की नजर पास पड़े पत्र पर पड़ी। पत्र को खोल कर पढ़ा तो उसकी आंखों में आंसू आ गए। रानी सुरगला राजा मंडलीक की आंखों में आंसू देखकर उदास हो गई और पूछा-

'कुन्नै तुगी मंदा बोलेया, कुन्नै बोली लाई'।

जे तुगी कुसै मंदा बोलया, उदी छोड़ा जान गो आई।।

अर्थात तुझे किस ने बुराभला कहा है, मुझे बताओं मैं उसे मरवा दूंगी।

राजा मंडलीक ने कहा, मुझे जहां आए हुए बहुत समय हो गया है। मेरे गम में मेरी मां की मृत्यु हो गई है। मैं घर जाना चाहता हूं। इसलिए तुम अपने पिता से कहो कि जाने की तैयारी करें। सात डोले रानी की सहेलियों तथा नौकरानियों के और एक डोला रानी सुरगला का तैयार किया गया। डोले राजस्थान की ओर चल पड़े। राजा मंडलीक के घर से तीन मील पहले एक बाग आता था वहीं तम्बू लगाए गए और वहीं राजा मंडलीक अपनी बहन की प्रतिक्षा करने लगा। मंडलीक की बहन को रानी सुरगला पर बड़ा क्रोध था। वह उसे मारना चाहती थी। रानी को पता चला तो वह डर गई। उसने कालीबीर के पैरों में गिरकर प्रार्थना की कि जिस तरह भी हो मुझे बचाओ। तुम मेरे देवर हो। मैं तुम्हारी भाभी हूं। कालीबीर ने कहा कि जब बहन छुरा लेकर तुम्हें मारने के लिए आए तो हरी घास के दो तीन तिनके मुंह में डाल लेना वह कुछ नहीं कहेगी। रानी ने ऐसा ही किया और मंडलीक की बहन ने उसे क्षमा कर दिया। राजा मंडलीक घर आए तो मां जीवित थी। मां बेटा गले

मिले। मां ने रोते हुए कहा कि तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारी मौसी के लड़कों अर्जुन तथा सुर्जन ने बहुत दुख दिए। वे आधा राज्य मांग रहे थे। राजा मंडलीक ने क्रोध में आकर दोनों की गर्दने काट दी। मां को भी मंडलीक पर क्रोध आ गया और उसने कहा कि एक राजा को ऐसे कार्य शोभा नहीं देते। मां ने उसे घर से निकाल दिया। दिन को वह बाग में चला जाता और रात को रानी सुरगला के पास महल में आ जाता। रात को दोनों साथ रहते, झूला झूलते और प्यार की बातें करते। मां ने देखा कि प्रतिदिन रानी सुरगला हार-सिंगार करके शाम के समय किसी की प्रतीक्षा करती है। एक दिन मां ने उसे पूछा कि मेरा बेटा यहां नहीं फिर तू किस के लिए सझती है। रानी सुरगला ने कहा कि वह प्रतिदिन यहां आते हैं परन्तु आपको उस समय दिखाऊंगी जब वह वापिस जा रहे होंगे। मां ने बेटे को वापिस जाते हुए देखा तो आवाज लगाई परन्तु राजा मंडलीक के स्थान पर उसे सांप दिखाई दिया। इसके बाद राजा मंडलीक, कालीबीर तथा नाहर सिंह के साथ देश भ्रमण के लिए निकल पड़े और घूमते इस क्षेत्र में भी आ गए। जिस-जिस स्थान पर गए और जहां जहां उन्होंने विश्राम किया वहां उनकी याद में मंदिर बनाए गए और श्रद्धालुओं ने उनके मोहरे, झुंडे ओर पिंडियों की पूजा शुरू कर दी। लोगों का विशवास है कि राजा मंडलीक समृद्धि के लोक देवता हैं। जहां जहां उनके पवित्र कदम पड़े वहां वहां पर लोग खुशहाल हो गए और उनको कष्टों से मुक्ति मिली और लोग पूरी श्रद्धा से उनकी पूजा करने लगे। काला काम गांव के पास भी उन्होंने बेड़ के वृक्ष के नीचे विश्राम किया था। उसके साथ उनके बजीर नाहर सिंह तथा कालीबीर भी थे। वह बेड़ का वृक्ष आज भी काला काम गांव में उनके पवित्र स्थान के पास मौजूद है और शायद इसी कारण इस स्थान को बेड़े वाले बाबा का स्थान कहते हैं। जम्मू-कश्मीर राज्य के राजे, महाराजे तथा उनके अधिकारी भी यहां आते रहें हैं। अब तो इस स्थान के साथ कई कनाल भूमि भी लगा दी गई है और इसके विकास के लिए श्रद्धालुओं में बड़ा उत्साह है। यहां जन्माष्टमी के अगले दिन गोगा नवमी को बहुत बड़ा भंडारा होता है। जिसमें काला काम तथा आस पास के गांव के लोग बड़ी संख्या में बाबा जी के दर्शन करने को आते हैं। उस दिन एक बड़े मेले का आयोजन भी होता है। जिन लोगों की मनोकामनाएं बाबा जी के आशीर्वाद से पूर्ण होती हैं वह भी यहां आकर भजन कीर्तन करते हैं और चढ़ावा चढ़ाते हैं।

समाधि बाबा बूटा राम जी

जिन महापुरुषों, साधु संतों तथा पीरों फकिरों को ईश्वर से लगन लग जाती है वे इस दुनिया में रहते हुए भी दुनिया के बखेड़ों से अपने आपको दूर रखते हैं। उनको इस दुनिया से मोह नहीं रहता। ईश्वर भक्ति तथा ईश्वर के बंदों से प्यार तथा उनकी सेवा ही उनके जीवन का लक्ष्य होता है। वे अपनी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा ऐसे ऐसे चमत्कार दिखाते हैं कि देखने वाले चकित रह जाते हैं। ईश्वर की कृपा किसी एक व्यक्ति विशेष या समुदाय पर नहीं सब पर होती है। उस की बनाई हुई वस्तुओं पर सब का एक जैसा अधिकार होता है। उसके दरबार में सब बराबर हैं। जिसने भी सच्चे दिल से भगवान की आराधना की उसी ने भगवान को पाया। भगवान तो प्रेम के भूखे हैं। ईश्वर ने सबको एक जैसा बना कर दुनिया में भेजा है। जात-पात ऊंच नीच के बंधन तो मनुष्य के बनाए हुए हैं। जात-पात के आधार पर किसी से घृणा करना सभी धर्मों के नियमों के विरुद्ध है। जिन जातियों या समुदायों को हमारे समाज में छोटा समझा जाता है उन जातियों में भी कई ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने ईश्वर भक्ति तथा मानव कल्याण के रास्ते पर चल कर उच्च स्थान प्राप्त किया और आज सभी लोग उन को भगवान का रूप मान कर पूजते हैं।

ऐसे ही एक महान संत थे बाबा बूटा राम जी जिनकी समाधि जम्मू से15 किलो मीटर दक्षिण की ओर स्थित छोटे से गांव मीरां साहिब में है। इस समाधि पर अब एक मंदिर का निर्माण किया गया है। समाधि मंदिर के सामाने महाशा बिरादरी की ओर से एक बड़ा हाल बिरादरी के सदस्यों के सहयोग से बनाया गया है। मंदिर की देख भाल तथा इस पवित्र स्थान के विकास के लिए यद्यपि एक कमेटी का गठन किया गया है परन्तु समाधि की पूजा तथा धूप दीप जलाने तथा यहां आने वाले श्रद्धालुओं के सुख सुविधा का ध्यान रखने की जिम्मेदारी पूरे तौर पर श्री बुआ दित्ता जी निभा रहे हैं जो पिछले कई सालों से मंदिर के पास ही अपने परिवार के साथ रहते हैं। बाबा बूटा राम जी के जीवन तथा उनके चमत्कारों के विषय में उनको बहुत जानकारी है। क्योंकि वह बहुत समय तक बाबा जी के साथ रहे और उनकी हर प्रकार से सेवा की।

बुआ दित्ता जी के अनुसार बाबा बूटा राम जी सीधे सादे तथा सच्चे सुच्चे व्यक्ति थे जो हर समय प्रभु भक्ती में लीन रहते थे। वह कुछ भी कर रहे हों, खाना खा रहे हों, चाय पी रहे हों या सिग्रेट के कश लगा रहे हों या किसी से बाते कर रहे हों उनका ध्यान सदा उस परमपिता परमात्मा की ओर रहता था। वह चंद शब्दों में ही बहुत कुछ कह जाते थे। बहुत कम लोग उनकी बात को समझ पाते थे। हर समय उनके पास लोगों की भीड़ रहती। बाबा जी के आशीर्वाद से सबके कष्ट दूर हो जाते थे। सच्चे दिल से जो उनकी सेवा करता था वह कभी निराश नहीं लौटता था। वह झूठी शान तथा दिखावे के विरुद्ध थे ओर साधा जीवन व्यतीत करने और ईश्वर भक्ती पर विश्वास करते थे।

बाबा बूटा राम जी मस्तपुर मलानेयां जिला सेयालकोट के रहने वाले थे। उनका जन्म लगभग सौ साल पहले हुआ। बचपन में ही उनके पिता का स्वर्गवास हो गया इसलिए उनका पालन पोषण फुफा ने किया। जवान हुए तो उनका विवाह हो गया। एक बच्चा भी हुआ जो सदा अस्वस्थ रहता था। कुछ समय के बाद बच्चे की मृत्यु हो गई। घरेलू परेशानियों के कारण बाबा जी का दिल उदास रहने लगा। वह हर समय चिंता में डूबे रहते । एक दिन उनका सम्पर्क एक फकीर से हुआ तो उनके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया। उस संत ने बाबा जी का मार्ग दर्शन किया और वह प्रभु भक्ति में लग गए। अब वह अपने घर कम और उस संत के पास अधिक समय गुजारते थे। एक दिन उस कुटिया में एक महात्मा पधारे और सरदाई पीने की इच्छा प्रकट की। संत ने अपने शिष्य बूटा राम से सरदाई बनाने को कहा। बूटा सरदाई घोटने लगा तो महात्मा ने कहा कि मैं महाशे के हाथ की बनी वस्तु नहीं खाता। संत ने महात्मा की बात का बुरा मनांया और कहा कि महात्मा होकर आपको यह शोभा नहीं देता। ईश्वर की नजर में सब जन एक समान हैं। बूटा राम को भी गुस्सा आ गया। उस ने सरदाई बनाना छोड़ दिया परन्तु जो डंडा उसने ऊपर बांधा हुआ था वह चलता रहा। महात्मा इस चमत्कार को देखकर चकित रह गए और अपने कहे शब्दों पर शरमिन्दा हुए। बाबा जी का दिल भी उचाट हो गया और वहां से निकल आए।

बूटा राम जी प्रतिदिन कई मील पैदल यात्रा करते थे परन्तु उन्हें कोई

थकावट नहीं होती थी। वह सेयालकोट से एक नदी के साथ साथ चलते हुए अरनिया गांव तक आते और फिर वापस चले जाते। लम्बे समय तक वह इस रास्ते से आते जाते रहे और इस प्रकार उनका लोगों से सम्पर्क होता रहा। लोग उनसे प्यार करने लगे। 1947ई. में देश के विभाजन के बाद वह पाकिस्तान में ही रह गए। चार-पांच साल वहां रहने के बाद उन्होंने पाकिस्तान छोड़ने का निश्चय किया। क्योंकि उनको वहां घुटन महसूस होने लगी थी। उनके सभी संगी साथी पाकिस्तान छोड़ चुके थे। एक दिन वह सीमा पार कर इस ओर आ गए। सीमा पर नियुक्त सिपाहियों ने उनको पकड़ लिया। पूछने पर उन्होंने कहा कि वह सेयालकोट से आए हैं क्योंकि अब वह वहां नहीं रहना चाहते । फिर भी उनको जेल भेज दिया गया। जेल के अधिकारियों ने उनको कई बार जेल से बाहर घूमते फिरते देखा। जब वे जेल में देखते तो बाबा जी जेल के अन्दर होते थे। बाबा बूटा राम के इस चमत्कार को देखकर सभी चकित थे। उन अधिकारियों को विंश्वास हो गया कि बाबा जी पहुंची हुई हस्ती हैं इसलिए उनको छोड़ दिया गया।

जेल से छूटने के बाद उन्होंने गांव कूल, रणवीर सिंह पुरा तथा आस पास के गांवों के लोगों से सम्पर्क किया। एक नदी के पास ही एक कुटिया बना कर रहने लगे। वह सारा दिन भगवान की आराधना में लगे रहते। गौओं की सेवा करने के लिए कुटिया के पास ही एक गौशाला बना रखी थी। उनके पास आने जाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने लगी। कई लोगों को यह देख कर जलन होने लगी और वे उनके विरुद्ध दुष्प्रचार करने लगे। एक बार कुछ लोग उनको जान से मारने के लिए आए। जब वे कुटिया के पास पहुंचे तो क्या देखते हैं कि बाबा जी का सिर एक ओर पड़ा है, बाहें दूसरी ओर तथा धड़ कुटिया के बाहर पड़ा है। वे दिल ही दिल में प्रसन्न हुए कि हमारा काम कोई दूसरा कर गयाहै परन्तु डर भी गए कि कहीं यह अपराध हमारे सिर न लगे और हम पकड़े न जाएं वे सब वहां से भाग गए। उन लोगों ने सारे इलाके में यह समाचार फैला दिया कि बाबा जी को किसी ने मार दिया है।

अगले दिन बाबा जी के चाहने वाले, उनसे प्यार करने वाले, जब उनकी कुटिया में आए तो बाबा जी को जीवित देख कर प्रसन्न हुए और भगवान का

धन्यवाद करने लगे। वहां रह कर भी बाबा जी ने भक्तों को कई चमत्कार दिखाए। इस घटना के कुछ दिन बाद बाबा जी वह स्थान छोड़कर मीरां साहिब आ गए।

श्री बुआ दित्ता जी ने कहा कि बाबा जी के चमत्कारों के विषय में सुना तो था परन्तु बाबा जी को देखा नहीं था। पहली बार जब उनको देखा तो बड़ी प्रसन्नता हुई एक साधारण से व्यक्ति कन्धे पर कंबल और पैरों से नंगे थे। आते ही चाय पीने के लिए कहा। मैंने दुकानदार से चाय बनाने के लिए कहा। चाय का कप लेकर पास पड़े बैंच पर बैठकर पीने लगे।

दिन गुजरते गए। अब तो बाबा जी के पास मीरां साहिब में वे लोग भी आने लगे जो जो उन के विरुद्ध थे वे लोग बाबा जी के पास घंटों बैठे रहते और जी जान से उनकी सेवा करते। बाबा जी के प्रति अपने पिछले व्यवहार से वे शरमिंदा थे। जो भी बाबा जी के पास आता वह अपने साथ जरूर कोई खाने पीने की चीज लाता। बाबा जी उसमें से कुछ खा लेते और बाकी प्रसाद के रूप में भक्तों में बांट देते थे। कई भक्त उनको मालिश भी करते थे वह कहते मालिश हो जाए तो बाबा जवान हो जाता है।

एक दिन बुआ दित्ता जी बाबा जी को मालिश कर रहे थे। आकाश पर बादल छा गए और देखते ही देखते जोरदार वर्षा शरू हो गई। कुछ देर पहले जहां धूप थी वहां अब चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देता था। बाबा जी बोले, "देखो इंद्र भगवान भी मेरा शत्रु हो गया है।" उन्होंने एक भक्त को छड़ी लाने को कहा। फिर छड़ी हाथ में लेकर उसे हवा में लहराया, उस पर कोई मंत्र पढा और कहा। "अब तो पीछा छोड़ो, बहुत हो चुका, गुस्सा गिला क्षमा करो इंद्र देवता जी, क्यों तंग कर रहे हो।" इतना कहना ही था कि वर्षा बंद हो गई।

एक दिन बाबा जी का एक सेवक जम्मू जाने के लिए तैयार हुआ। उसने बाबा जी से पूछा क्या आप भी चलेंगे तो बाबा जी ने उत्तर दिया, "जाना तो है परन्तु गाड़ी पर नहीं, पैदल जाऊंगा।" सेवक के बार बार जोर देने पर भी उन्होंने गाड़ी पर चढ़ने से इंकार कर दिया। सेवक गाड़ी पर बैठकर जम्मू चला गया। जम्मू शहर में घूमते घूमते सेवक शहीदी चौक की ओर निकल गया। क्या देखता है कि सामने से बाबा जी आ रहे हैं। सेवक यह देकर हैरान रह गया कि

बाबा जी कब चले होंगे और कब जम्मू पहुंचे होंगे।

बुआ दित्ता जी के अनुसार ही बिरादरी के एक व्यक्ति के बच्चों को सोकड़े की बीमारी थी। उसने बहुत उपचार किया परन्तु लाभ न हुआ। किसी वृद्ध ने उसे कहा कि ऐसी बीमारियों का उपचार डाक्टरों या वैद्यों के पास कम और साधु संतों के पास अधिक होता है। वे अपनी आध्यात्मिक शक्ति तथा मंत्रों से ही कई बीमारियों का उपचार कर देते हैं। इतनी देर में बाबा बूटा राम जी भी 'औलख' करते वहां से गुजरे और भक्त का नाम लेकर कहा "क्या बात है,परेशान दिखाई देते हो।" भक्त ने बाबा जी को नमस्कार किया और उत्तर दिया, "महाराज मैं बहुत दुखी हूं, मेरे बच्चों को सोकडे की बीमारी से मुक्ति नहीं मिल रही, बहुत उपचार करवाए परन्तु कोई लाभ नहीं होता। एक एक करके मेरे बच्चे मरते जा रहे हैं। आप ही बताएं क्या कंरु ? किस प्रकार मुझे इस कष्ट से मुक्ति मिलेगी।" बाबा जी ने उसे 'लसूडे' के हरे वृक्ष का एक मोटा सा डंडा काट कर लाने को कहा।

बाबा जी वहीं बैठ गए। थोड़े समय के बाद वह भक्त मोटा सा डंडा काट कर ले आया। बाबा जी ने डंडे को उल्टा सीधा करके देखा, उस पर कोई मंत्र पढ़ा और भक्त को यह कहा कि इसको अपने आंगन में किसी स्थान पर लटका दे। जैसे जैसे यह डंडा सूखता जाएगा तुम्हारे बच्चों की बीमारी दूर होती जाएगी। भक्त ने ऐसा ही किया और 10-15 दिनों में बच्चा पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया। बच्चा स्वयं उठ कर बैठ गया और एक महीने में ही उसने चलना शुरू कर दिया। इस के बाद होने वाले बच्चों को यह बीमारी नहीं लगी। इस प्रकार बाबा जी के चमत्कारों की चर्चा दूर दूर तक फैलती गई और आस-पास के इलाकों से भी लोग दुःख से मुक्ति प्रास करने के लिए बाबा जी के पास आने लगे।

संतों तथा फकीरों को पता चल जाता है कि उनके जाने का समय आ गया है। इसलिए वे खुशी-खुशी अपने जाने की तैयारी करते हैं और अपने भक्तों को आवश्यक सामग्री इक्ट्ठा करने का निर्देश देते हैं। ऐसे महापुरुषों को इस संसार को छोड़ने पर कोई कष्ट नहीं होता। वे तो प्रसन्न होते हैं कि अब उनका मिलाप उस परम पिता से होगा जिसने सारे संसार की रचना की है। वे तो प्रसन्न होते हैं

कि उनको ईश्वर का बुलावा आया है। वे अपने भक्तों को भी यही कहते हैं कि उनके जाने पर शोक व्यक्त न करें बल्कि खुशी मनाएं कि वे इस नाशवान शरीर को छोड़ रहे हैं।

जिस दिन बाबा जी ने शरीर त्यागना था उस दिन वह दिन निकलते ही एक नाले के किनारे पर चले गए। हाथ मुंह धोया, फिर स्नान करके वहीं एक छोटी सी पुली पर बोरी बिछाकर बैठ गए। कुछ भक्त भी उनके पास आ गए थे। बाबा जी बोले यदि मेरा लंगोट साफ हो जाए और तरागड़ा नया बन जाए तो मौज है। एक भक्त ने उन का लंगोट साबुन से धोया और सुखा दिया। बाबा जी ने लंगोट तथा तरागड़ा पहना तो बहुत प्रसन्न हुए। उस दिन बुआ दित्ता जी अपने घर रामगढ़ जाना चाहते थे परन्तु बाबा जी ने मनाकर दिया। सर्दियों के दिन थे बाबा जी धूप में ही लेट गए। बुआ दित्ता उनके शरीर को दबाते रहे। बाबा जी ने अपनी आंखें बंद कर लीं, भगवान को याद किया और दो लम्बे सांस लेने के बाद इस दुनिया को छोड़कर चले गए।

जिस स्थान पर बाबा जी की समाधि है वहां पर 12 फुट गहरा गड्ढ़ा खोद कर उनके शरीर को उसी प्रकार रखा गया जैसे साधु संतों के शरीरों को रखा जाता है। फिर उनकी समाधि बनाई गई और अब समाधि पर ही एक मंदिर का निर्माण किया गया है। मंदिर के सामने एक बड़ा हाल है जहां समय समय पर बिरादरी के लोग इक्ट्ठे हो कर बाबा जी को याद करते और बिरादरी की भलाई बेहतरी के लिए सोच विचार करते हैं। त्यौहारों के मौकों पर धार्मिक सभाओं का आयोजन किया जाता है। इस पवित्र स्थान पर साल में दो बार 13 आषाढ़ तथा 13 पौष को मेला लगता है और भण्डारा होता है। जिसमें महाशा बिरादरी तथा अन्य समुदायों के लोग सपरिवार शामिल होते हैं। इस स्थान के विकास के लिए एक कमेटी का गठन किया गया है जो इस स्थान को अधिक सुन्दर तथा आकर्षक बनाने के लिए प्रयत्नशील है। इस शुभ कार्य में कमेटी को सभी वर्गों के लोगों का सहयोग प्राप्त है।

नागदेवता-बावा सुरगल

जम्मू क्षेत्र संतों महंतों, पीरों फकीरों तथा महात्माओं की धरती है जिन्होंने यहां रहने वालों को मिलजुलकर रहना सिखाया। उनके आशीर्वाद से डुग्गर वासियों के दिलों में धर्म तथा प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम जागृत हुआ और यही कारण है कि हमें इस क्षेत्र में स्थान स्थान पर कई धर्मों के पवित्र स्थान देखने को मिलते हैं। इस पवित्र धरती पर जन्म लेने वाली महान आत्माओं ने समस्त मानव जाति का कल्याण किया और सबको नेकी तथा सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनके दरबार में सब बराबर होते थे। वे बिना किसी भेदभाव के सबके कष्टों को दूर करते ओर सब से एक जैसा व्यवहार करते थे। ऐसी महान आत्माओं के दर्शन करके भक्तों को आध्यात्मिक शांति प्राप्त होती थी और वे अपनी मनोकामनाएं पूरी करने के लिए दूर दूर से चलकर संतों के आश्रमों तथा उनकी याद में बने मंदिरों, स्मारकों तथा समाधियों पर उपस्थित होते थे। उनके प्रति लोगों के दिलों में सच्ची भावना थी इसलिए उनको देवताओं के रूप में पूजा जाने लगा और उनकी प्रतिमाएं, मोहरे तथा लोहे के झुंडे, त्रिशूल तथा मोरपंख आदि पवित्र स्थानों पर रखकर निश्चित तिथियों पर वहां हवन यज्ञों तथा भण्डारों का आयोजन किया जाने लगा।

भारत के अन्य भागों की तरह डुग्गर प्रदेश में भी अनगिनत लोक देवताओं की पूजा होती है जिनमें नागराज वासुकि के पुत्र बावा सुरगल को यहां के लोक देवताओं में विशेष स्थान प्राप्त है। बावा सुरगल को नागदेवता के रूप में हर डुग्गर वासी श्रद्धासुमन अर्पण करके कष्टों से मुक्ति प्राप्त करता है।

एक प्रचलित दंत कथा के अनुसार नागराज वासुकि के बाईस पुत्र तथा चौरासी पौत्रे थे। वासुकि के पुत्रों में भैड़, काई, धलड़, नैहरा, चानना, सिन्दूरिया, गौर बंद, चोरसू, कालसू, लूनसू, धनसर, मानसर, चिलक, मिलक, हल्लन, तल्लन तथा सुरगल आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सब बड़े चतुर तथा आज्ञाकारी थे।

बैरी नागिनी, कपूरी नागिनी, सिन्दूरी नागिनी, नेवला नागिनी आदि नागराज वासुकि की रानियां थीं। काई की माता का नाम कपूरी नागिनी था और भैंड़ की माता का नाम बैरी नागिनी था। सभी रानियों की संतान थी परन्तु नैंवला नागिनी निसंतान थी। वह भगवान शिव की परम भक्त थी और उनसे यही प्रार्थना तथा

विनती करती थी कि उसके हां भी संतान हो। जब सभी रानियों पर प्रभु की कृपा है फिर उसकी झोली क्यों खाली है। उसने क्या पाप किया है जो उसे संतान का सुख प्राप्त नहीं हो सका। संतान न होने के कारण बाकी रानियों तथा राजा के दिल में उस के प्रति आदर की भावना कम होती जा रही है। एक दिन वासुकि ने नैवला नागिनी को ताना मारा, तू शिव भक्त है परन्तु वह तो किसी की सुनते ही नहीं।

अपने शरीर पर भभूत लगाकर तपस्या में लीन रहते हैं। क्या देंगे वह तुझे। रानी नैवला भगवान शिव के प्रति अपने पति के विचारों से बहुत दुःखी हुई और अपना महल छोड़ साधु का रूप धारण करके शिव की आराधना के लिए पाताल लोक में चली गई। वहां उसने भगवान शिव की घोर तपस्या की। भगवान शिव उसकी भक्ति से प्रसन्न हुए और नंदी गण पर सवार होकर 33 करोड़ देवताओं के साथ कजली वन में गए जहां माता नैवला भक्ति कर रही थी। भगवान शिव ने माता नैवला से कहा, हम तुम्हारी तपस्या तथा भक्ति भाव से प्रसन्न हैं और तुम्हें जो दुख है वह भी जानते हैं परन्तु अपने शरीर को इस प्रकार कष्ट देना भी उचित नहीं। माता नैवला ने भगवान शिव को प्रणाम किया और कहा, प्रभु मैं अपने आपको धरती पर बोझ समझ रही हूं। संतान के बिना स्त्री का जीवन अधूरा है। वह तो मां बनकर ही पूर्ण स्त्री कहलाती है। मैं चाहती हूं कि सब सुखी रहें और मेरी गोद भी हरी हो। निसंतान होने के कारण मुझे लोगों की बातें सुननी पड़ती हैं। मेरे पति भी मुझ से दूर दूर रहते हैं। भगवान शिव ने माता नैवला को आशीर्वाद दिया और कहा, नैवला, तू ने अपनी भक्ति से मुझे ही नहीं सभी देवताओं को प्रसन्न किया है। इसलिए अब तुम्हारे दुखों का अंत हो गया है। तुम्हारे घर शीघ्र ही पुत्र का जन्म होगा। उसका नाम सुरगल रखना। तुम्हारा पुत्र सुरगल अपने वंश का नाम रोशन करने के साथ साथ जगत का भी कल्याण करेगा। सांप कीड़े से काटे जाने वाले उसके दरबार से स्वस्थ होकर लौटेंगे। उसकी कृपा से हर घर में धन दौलत तथा अन्न-दाने की भरमार होगी। राजमहल की बजाए इस का वास बांबी (बर्मी) में होगा। जिस घर में बांबी होगी वह परिवार बड़ा भाग्यशाली होगा। उस परिवार पर तेरे पुत्र की बड़ी कृपा होगी। वे लोग धर्म प्रेमी तथा पूजा पाठी होंगे। तेरे पुत्र के आशीर्वाद से उस घर के लोग या उस पवित्र स्थान का चेला लोगों के दुःख दूर करेगा। यह कहकर भोले नाथ ने गंगा जल, भभूत तथा शेषनाग का विष लिया और तीनों वस्तुओं को

मिलाकर माता नैवला की झोली में डाल दिया। भगवान शिव के साथ-साथ अन्य देवताओं ने भी माता नैवला पर पुष्प बरसाए।

भगवान शिव के बरदान से नौ महीने के बाद आश्विन महीने में शनिवार के दिन माता नैवला के घर पुत्र ने जन्म लिया। रविवार के दिन मंगलगान हुआ जिसमें बैरी नागिनी, कपूरी नागिनी तथा सिन्दूरी नागिनी ने भी मंगल गीत गाए। उन्होंने भी नैवला के पुत्र के लिए दीर्घायु की भगवान से प्रार्थना की। सारे महल में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। राजा बासुकि ने हीरे जवाहरात दान किए। मंगलमय वातावरण में वहां हर ओर चहल-पहल थी और सभी के चेहरों पर खुशी नाच रही थी। बच्चे के गृह देखने के लिए पंडितों को बुलाया गया। भगवान शिव के आदेशानुसार बच्चे का नाम सुरगल रखा गया और उसे सोने के पालने में सुलाया गया।

माता नैवला ने भी बच्चे को प्यार किया। बावा सुरगल तो शेष नाग अवतार थे। वह तो नाग देवता थे। दुनियावी संबंधों से उन्हें कोई रूचि नहीं थी। इसलिए बारह वर्ष की आयु में उन्होंने घर को त्याग कर तीर्थ यात्रा आरम्भ कर दी। तीर्थ करते समय उन्होंने मनुष्य का रूप धारण किया और सफेद धोती, कुर्ता, पगड़ी तथा खडाएं पहन हाथ में कमंडल लेकर भारत के सभी तीर्थ-स्थानों पर गए। बावा सुरगल देखने में भी बड़े सुंदर थे इसलिए एक प्रेतात्मा उनका पीछा करने लगी जो उनको अपने वश में करना चाहती थी। विभिन्न तीर्थ स्थानों की यात्रा करने के बाद जब बावा सुरगल हरिद्वार पहुंचे तो उन्होंने वहां तपोवन में गुरु गोरख नाथ जी के चेले बावा सिद्धगौरिया को तपस्या करते देखा। बाबा सिद्ध गौरिया को देख बावा सुरगल का पीछा करने वाली प्रेतात्मा भाग गई। बावा सिद्धगौरिया ने पूछा, तुम कौन हो और कहां से आए हो ? उत्तर में बावा सुरगल ने कहा कि वह गढ़ जम्मू के, राजकुमार हैं। उनकी माता का नाम नैवला तथा पिता का नाम नागराज वासुकि है। बावा सिद्ध गौरिया ने बावा सुरगल को गले लगाया और कहा, मैं भी गढ़ जम्मू का हूं। फिर दोनों ने पगड़ियां तबदील कीं और धर्म भाई बन गए। वहीं मल्लदेवी भी स्नान के लिए आई हुई थी। वह दोनों मल्ल माता के चरणों में गिर गए और बोले, माता आज से तुम हमारी बहन हो। हम तीनों की पूजा एक ही स्थान पर होगी। जहां कहीं भी सुरगल देवता का दरबार होगा वहां सिद्ध गौरिया का झंडा, बावा सुरगल की बर्मी तथा माता मल्ल

के झुंडे तथा लोहे की संगलें होंगी। उस स्थान पर आने वालों के सब कष्ट दूर होंगे। यात्रा समाप्त करने के बाद बावा सुरगल रणवीर सिंह पुरा तहसील के एक गांव में किसी के घर प्रगट हुए। वे लोग बावा जी को पहचान न सके। जिस वर्मी (बांबी) में बावा जी प्रगट हुए उन्होंने उसे उखाड़कर बाहर फैंक दिया। नागों को मार दिया और वहां आग लगा दी। इस प्रकार उस परिवार ने बावा जी का निरादर किया। जिसके कारण परिवार वालों को कई प्रकार के कष्ट उठाने पड़े। इसके बाद बावा जी जम्मू के अन्य स्थानों पर प्रगट हुए जहां लोगों ने उनका बड़ा आदर किया और वहां बनने वाली वर्मियों को पवित्र स्थानों के रूप में मान्यता दी और बावा जी की जय जय कार होने लगी।

वर्तमान युग में बाबा सुरगल के दर्शन नाग देवता के रूप में ही होते हैं। बाबा जी के पवित्र स्थान पर भक्तों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं। जिन स्त्रियों पर जलवीर की छाया होती है या जिन के घर संतान नहीं या घर में कलेश हो या कोई भूत प्रेत की छाया से दुःखी हो उन सब के दुःख बावा जी के दरबार में दूर होते हैं। इसके अतिरिक्त यदि किसी को सांप ने काट लिया हो और वह व्यक्ति समय रहते बावा जी के दरबार में पहुंच जाएं तो बावा जी का चेला घाव वाले स्थान पर मुंह रख कर सांप का सारा विष चूस लेता है। उपचार के दौरान नमकीन तथा मीठी वस्तुओं का खाना वर्जित है। एक वृक्ष के पत्ते तथा फटकड़ी आदि को उबाल कर उस पानी से घाव को साफ किया जाता है। फिर उस पर बावा सुरगल की भभूत लगाकर चेला मंत्र पढ़ता है और पट्टी बांध देता है। इस प्रकार सुबह शाम पट्टी बांधने तथा भभूत लगाने से कुछ ही दिनों में रोगी स्वस्थ हो जाता है। श्रीचगर नाथ गारड़ी के अनुसार नाग देवता बावा सुरगल का पवित्र स्थान (वर्मी) घरों, खेतों या जंगलों में देखी जा सकता है। इन वर्मियों के सामने श्रद्धालु शीश झुकाते हैं और उनमें लस्सी डालते हैं। वर्मियों के आस पास भी नागों का फेरा रहता है परन्तु वे अपने भक्तों को कुछ नहीं कहते। जिस घर में वर्मी निकलती है उस घर वाले या गांव वाले आस पास के गारड़ी को सूचना देते हैं। गारड़ी ढोल बजाकर बावा जी की स्तुति करते हैं और सात दिन तक कारकों द्वारा बावा जी की कथा भक्तों को सुनाते हैं। आठवें दिन मंत्रों के साथ विधि पूर्वक वर्मी की स्थापना की जाती है। आमतौर पर बावा जी पुरुषों में ही खेतले हैं और जिस घर में वर्मी निकलती है उस घर का कोई पुरुष चेला बनता है। यदि

किसी स्त्री ने बावा जीका निरादर किया हो उसमें भी बावा जी खेल सकते हैं। नागों को मारने वाले या उनकी बर्मी को नष्ट करने वाले से बावा जी नाराज हो जाते हैं। यूं तो बावा सुरगल जी के स्थान पर प्रति दिन श्रद्धालुओं का आना जाना लगा रहता है। परन्तु नाग पंचमी के दिन तो बावा जीके पवित्र स्थानों पर मेलों तथा भण्डारों का आयोजन किया जाता है।

कहते हैं कि एक बार नागराज वासुकि त्वचा रोग से पीड़ित हुए। बहुत उपचार किया गया परंतु वह स्वस्थ न हो सके। सोच विचार के बाद विद्धानों ने सलाह दी कि यदि कैलाश कुंड से नदी बहा कर लाई जाए और उसके जल में नागराज वासुकि स्नान करें तो रोग मुक्त हो सकते हैं। वासुकि ने एक सभा बुलाई और अपने पुत्रों से कहा कि जो सब से पहले कैलाश पर्वत से नदी लाएगा उसको जम्मू का राज दिया जाएगा। सबसे पहले भैड़ नदी को जम्मू लाया।

इसलिए उसे जम्मू का राज मिला। काई को अखनूर का और बावा सुरगल को 'ठेडा गंग' का एक बार बावा सुरगल अपने क्षेत्र में घूम रहे थे कि उनको दूध का मटका उठाए एक गुजरी मिली। उन्होंने गुजरी से दूध पिलाने को कहा। गुजरी ने मटके में से बावा जी को दूध पिलाया तो बावा जी उस पर बड़े प्रसन्न हुए और वरदान दिया कि आज के बाद तुम्हारे घर में दूध की कमी नहीं रहेगी और तुम्हारे घरों में भी मेरा वास रहेगा। गुजर सम्प्रदाय फले फूलेगा और उनको किसी वस्तु की कमी नहीं होगी। हम देखते हैं कि गुजर परिवार भी बावा सुरगल को उतना ही मानते हैं जितना अन्य लोग। डुग्गर प्रदेश में नागदेवता, लोक देवता तथा कुल देवताओं तथा देवियों की भी अन्य देवी देवताओं के साथ पूजा की जाती है। यह देवता डुग्गर समाज तथा संस्कृति का महत्व पूर्ण अंग हैं जिनकी पूजा के बिना हमारा कोई कार्य आरंभ नहीं होता। यह देवता लोगों की आस्था, विश्वास तथा श्रद्धा के प्रतीक है। डुग्गर वासी अपनी उन्नति तथा समृद्धि के लिए इन्हीं लोक देवताओं की शरण लेते हैं। ऐसा विश्वास है कि यह कुल देवता हर संकट की घड़ी में अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। लोक देवताओं के पुजारी आमतौर पर देवताओं के पवित्र स्थानों में बैठकर रोगियों का उपचार करते हैं। नई फसल पर श्रद्धालु इन देवताओं के मंदिरों में चढ़ावा चढ़ाने के बाद ही स्वयं अनाज या अन्य वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। यही कुल देवता गांव वासियों के पशुओं को रोग मुक्त करते हैं और धन दौलत के साथ साथ वंश वृद्धि में भी सहायक होते हैं।

समाधि बावा मौज गिरि जी

महाराजा प्रताप सिंह जी का जन्म 18 जुलाई 1848 ई. को जम्मू-कश्मीर राज्य के महाराजा रणवीर सिंह की बड़ी रानी सीबा के गर्भ से हुआ था। महाराजा रणवीर सिंह की मृत्यु के पश्चात 1885ई. में उनके बड़े पुत्र मियां प्रताप सिंह जम्मू-कश्मीर के महाराजा बने थे। महाराजा प्रताप सिंह बड़े विद्धान थे। उन्होंने संस्कृत, फार्सी तथा अंग्रेजी भाषाएं सीख ली थीं। एक कुशल शासक होने के साथ साथ वह धर्म प्रेमी भी थे और अधिक समय तक पूजा-पाठ में ही लगे रहते थे। वह तीर्थ यात्रा भी करते थे और पर्वों के अवसर पर दिल खोल कर दान पुण्य करते और गरीबों को भोजन खिलाते थे। अपने पूर्वजों की तरह उन्होंने भी राज्य के अतिरिक्त देश के प्रमुख तीर्थ स्थानों पर यात्रियों के रहने के लिए सराएं बनवाईं और वहां सदावर्त का प्रबंध किया। वह विद्धानों का बड़ा आदर करते थे। उन का यह यत्न होता था कि बाहर से उच्च कोटि के पढ़े लिखे लोगों को राज्य में बुला कर राज्य के लोगों में जागृति पैदा की जाए। देवी देवताओं के मंदिरों में पूजा अर्चना करने से उनको आध्यात्मिक शांति मिलती थी। वह सभी धर्मों का आदर करते थे ओर सभी धार्मिक स्थानों की यात्रा पर जाते थे। उनके शासन काल में कई संत महात्मा तथा पीर फकीर जम्मू पधारे जिन्होंने यहां रहने वाले लोगों को मिलजुल कर रहने की प्रेरणा दी। समय समय पर वह स्वयं महात्माओं और फकीरों के दरबार में उपस्थित होकर उनका आशीर्वाद प्रास करते थे। धर्म के प्रति पूर्ण रूप से निष्ठावान होने के कारण उनको 'भारत धर्म मार्तण्ड' की उपाधि से अलंकृत किया गया था। उनके शासन काल में बहुत से धार्मिक स्थानों का निर्माण हुआ। वह साधु संतों तथा महात्माओं को अपने राज्य विशेष रूप से जम्मू शहर में रहने के लिए हर प्रकार की सुविधा प्रदान करते थे।

महाराजा प्रताप सिंह के शासन काल में ही बावा मौज गिरि जी जम्मू पधारे और जोगी गेट के पास एक छोटी सी कुटिया बनाकर रहने लगे। बावा जी कहां से और किस राज्य से आए इस का किसी को पता नहीं परंतु अपने नाम के अनुसार वह सदा मौज मस्ती में रहते थे। उनको खाने पीने तथा पहनने की कोई

चिंता नहीं होती थी। किसी ने दे दिया तो खा लिया नहीं तो भूखे रहते थे।

जम्मू के लोगों को जब उस सिद्ध महापुरुष के बारे में जानकारी मिली तो बड़ी संख्या में धर्म प्रेमी उनके दर्शन को जोगी गेट में उनकी कुटिया पर जाने लगे। जब वह मस्ती में होते तो भक्तों से प्रभु भक्ति की बातें करते परन्तु कभी कभी क्रोध में आकर भक्तों को गालियां भी निकालते थे। लोगों का विश्वास था कि जिसको बुरा भला कहते थे उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती थी। जब उनके चमत्कारों का महाराजा प्रताप सिंह जी को पता चला तो वह भी बावा मौज गिरि के दर्शन करने उनकी कुटिया पर पहुंचा। महाराजा साहिब बावा जी के मुख पर दिव्य तेज देखकर बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने बावा जी को ईश्वर की आराधना करने के लिए तिल्लो तालाब के पास दो कनाल भूमि दे दी। बावा जी के भक्तों ने वहां एक कुटिया का निर्माण किया। यहीं बावा मौज गिरि जी एक वट वृक्ष के नीचे बैठे रहते थे।

उनके भक्त उनके लिए खाना ले आते थे। भक्तों से बातें करते हुए भी वह ईश्वर भक्ति में लीन रहते थे। वह दिखावे की भक्ति या साधना पसंद नहीं करते थे। उनका कहना था कि ईश्वर प्राप्ति के लिए हृदय की पवित्रता जरूरी है। यदि हृदय साफ नहीं, यदि मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार के वश में है तो ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं। सर्दी तथा गर्मी में वह अपने शरीर पर एक चादर या कंबल ओढ़कर तालाब तिल्लो क्षेत्र में घूमते और लोगों से हंसी मजाक भी करते थे। कभी कभी वह लोगों के घरों में भी चले जाते थे। लोग उनका आदर करते और श्रद्धा पूर्वक उनको भोजन खिलाते थे। बावा जी बहुत कम बोलते थे। जब कभी वह किसी हलवाई की दुकान के पास से गुजरते तो दुकानदार से कहते हैं, "भैया एक पकौड़ा खा लूं।" दुकानदार कहता, "महाराज सब कुछ आपका है जो चाहे ले लें"। इस प्रकार जिस किसी से जिस वस्तु की इच्छा करते उनको प्राप्त हो जाती थी। उन दिनों तालाब तिल्लो के आस पास आबादी बहुत कम थी। दुकानें भी कम थीं परंतु बावा जी के पास भक्तों का आना जाना लगा रहता था। शाम होते ही लोग अपने अपने घरों को लौट आते थे। बावा जी भी भक्तों से विदा होकर विश्राम के लिए कुटिया में चले जाते थे। वह प्रति दिन स्नान करते परन्तु उनको स्नान करते किसी ने नहीं देखा था। वह सारा दिन

अपनी ही दुनिया में मस्त रहते और किसी से व्यर्थ बातचीत नहीं करते थे। सभी धर्मों के लोग उनके पास आते और वह सबके कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना करते थे।

1908 ई. में जब बावा जी ब्रह्मलीन हुए तो उनकी समाधि उसी स्थान पर बनाई गई जहां वह वट वृक्ष के नीचे प्रभु भक्ति किया करते थे। बाद में समाधि पर शिवलिंग की स्थापना की गई और मंदिर की पूजा तथा इसका प्रबंध प. बिशंबर नाथ जी को सौंपा गया। महाराजा प्रताप सिंह जी अक्सर बावा जी के दर्शन करने के लिए तालाब तिल्लो भी आते थे। एक बार कुंभ के अवसर पर महाराजा प्रताप सिंह जी ने बावा मौज गिरि को हरिद्वार यात्रा पर जाने के लिए कहा तो बावा जी बोले, आप जाएं, हम फकीरों का क्या है जब इच्छा होगी चले जाएंगे। बहुत यत्न करने पर भी बावा जी हरिद्वार जाने के लिए तैयार न हुए तो महाराजा साहिब राजपरिवार के सदस्यों तथा कुछ अधिकारियों के साथ कुंभ स्नान के लिए हरिद्वार चले गए। जब महाराजा साहिब हरिद्वार में गंगा तट पर हर की पौड़ी पर स्नान कर रहे थे तो क्या देखते हैं कि बावा मौज गिरि जी भी वहां स्नान कर रहे हैं। महाराजा साहिब को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। जब वह बावा जी को मिलने की इच्छा से उनके पास गए तो बावा जी गायब हो गए। उन्होंने जम्मू संदेश भेजा कि अधिकारियों को भेजकर पता लगाया जाए कि बावा मौज गिरि जी तालाब तिल्लो अपनी कुटिया में हैं या नहीं आज्ञानुसार सिपाही तालाब तिल्लो पहुंचे तो क्या देखते हैं कि बावा जी वट वृक्ष के नीचे भक्तों के साथ बैठे हैं। जब यह सूचना महाराजा साहिब को मिली तो वह बड़े हैरान हुए।

स्थानीय लोगों का कहना है कि एक बार राजपुरा या गोल का लड़का कहीं से गिर गया और सख्त जख्मी हो गया या किसी कारण उसकी मृत्यु हो गई तो लोग उसे चारपाई पर उठाकर बावा जी के पास ले गए। चारपाई को पास ही रखकर कुछ लोग बावा जी के पास आए तो बावा जी क्रोध में बोले, "थू, साले इसे इधर क्यों लाए हो, भागो यहां से। बावा जी को क्रोध में देख सब लोग भाग गए। फिर बावा जी ने मृत बालक को पैर से ठोकर लगाई और कहा तू भी भाग साले, यहां पड़ा पड़ा क्या कर रहा है।" कहते हैं कि यूंही बावा जी के पैर

बालक को लगे वह उठकर बैठ गया और भागने की वजाए बावा जी के चरणों में आ गिरा। बालक को जीवित देख परिवार के लोग बड़े प्रसन्न हुए और बावा जी की जय जयकार करते वापस घर लौट गए।

उन दिनों तालाब के पास भक्त राम रखा जी अपने परिवार के साथ रहते थे और तालाब तिल्लो के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में गिने जाते थे। उनकी पत्नी का नाम परू था। वह भी बड़ी नेक तथा ईश्वर भक्त थी। उन दिनों मशीनें बहुत कम होती थीं। इसलिए गांवों में आटा पीसने के लिए प्रायः चक्कियों का प्रयोग किया जाता था। भक्त जी की पत्नी सुबह सवेरे उठकर चक्की से आटा पीसती थी। बावा जी भी सुबह उठकर तालाब तिल्लो के आस-पास घूमते थे। जब वह मौज में होते थे तो वह भक्त राम रखा के घर जाकर चक्की चलाने तथा आटा पीसने में उनकी पत्नी का साथ देते थे। ऐसा सुनने में आया है कि हर स्थान पर लोगों को बावा जी के दर्शन होते थे। कोई कहता मैंने बावा जी को फलां स्थान पर देखा तो कोई कहता मैंने उनको कहीं दूसरे स्थान पर देखा। बावा जी तो एक थे परन्तु अपने भक्तों को विभिन्न स्थानों तथा विभिन्न रूपों में दिखाई देते थे।

अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास स्थित गांव के एक व्यक्ति के दो बच्चे भटक कर भूल से पाकिस्तान में प्रवेश कर गए और पाकिस्तानी रेंजरों ने उनको पकड़ लिया। बच्चों के पिता ने नजदीकी पुलिस स्टेशन में बच्चों के पाकिस्तान प्रवेश होने की रिपोर्ट लिखवा दी और साथ ही भारत सरकार के सम्बंधित अधिकारियों से भी बच्चों की सकुशल वापसी के लिए प्रार्थना की। सारा परिवार दुःखी था। बच्चों के माता पिता प्रतिदिन बावा मौज गिरि जी की समाधि पर आकर प्रार्थना करने लगे। बावा मौज गिरी जी की कृपा तथा भारत सरकार के यत्नों से एक दिन लड़कों के पिता को पत्र मिला जिसमें कहा गया था कि वह वाघा सीमा पर आ कर बच्चों को ले ज़ाएं। इस प्रकार बावा जी की आराधना करने तथा उनका नाम जपने से उस परिवार की मनोकामना पूरी हुई और दोनों बच्चे सकुशल घर पहुंचे।

यही नहीं बावा मौज गिरि जी ने यहां रहते हुए सबकी मनोकमना पूरी की जिसके कारण स्थानीय लोग उनकी पूजा करने लगे। जुलाई 1908 ई. को बावा जी ब्रह्मलीन हुए और उनकी समाधि उसी स्थान पर बनाई गई जहां वह तपस्या

किया करते थे। शिवलिंग की स्थापना समाधि पर बाद में की गई थी। मंदिर के भीतर पश्चिमी दीवार पर भगवान शिव, माता पार्वती जी की मूर्तियां तथा उत्तरी दीवार में श्री गणेश जी की छोटी सी मूर्ति है। मंदिर परिसर की पश्चिमी दीवार पर शीतला माता की सुन्दर मूर्ति है। साथ ही एक बड़े मंदिर में राधा कृष्णा जी की मूर्तियों की स्थापना की गई है। भीतरी दीवारों को रंगदार शीशों तथा रोशनियों से सजाया गया है। दाईं दीवार में वासु देव जी को टोकरी में भगवान श्री कृष्ण जी को रख कर यमुना नदी पार करते दिखाया गया है और बाईं दीवार पर भगवान श्री कृष्णा जी गौ माता के साथ नजर आते हैं। साथ ही अष्टभुजी मां दुर्गा का मंदिर है। मां की मूर्ति के बाईं ओर बड़ा सा त्रिशूल है। यहीं एक दीवार पर माता महाकाली तथा दूसरी दीवार पर मां सरस्वती जी के शीशे से बने बड़े-बड़े चित्र हैं। यह मंदिर अन्य मंदिरों से बड़ा है। साथ ही हनुमान जी की सुन्दर मूर्ति है। जिसके बाएं हाथ पर पर्वत तथा सिर पर मुक्ट है। हुनमान जी की मूर्ति को सुन्दर वस्त्रों से सजाया गया है। दीवार पर भगवान राम, माता सीता तथा लक्ष्मण जी के चित्र हैं। एक ओर छोटे से मंदिर में शिवलिंग की स्थापना की गई है कहते है कि इस स्थान पर बावा जी की कुटिया थी। मंदिर की दीवारों पर भगवान शिव, शिव परिवार, मां दुर्गा, महालक्ष्मी, मां सरस्वती तथा गणेश जी की सुन्दर टायलें लगी हुई है। बावा जी की समाधि के सामने छोटे मंदिरों में श्री धर्मराज जी तथा शनि देवता की मूर्तियां स्थापित की गई हैं जिनके मध्य सफेद संगमरमर के नंदीगण जी विराजमान हैं। बाबा जी की समाधि तथा श्री राधा कृष्ण मंदिर के मध्य शिव परिवार, गणेश जी कार्तिकेय, नन्दीगण तथा शिव लिंग की स्थापना भी की गई है। मंदिर में समय-समय पर पर्वों का आयोजन भी किया जाता है जिनमें राज्य से बाहर के धर्म प्रचारकों तथा कीर्तन मंडलियों को भी बुलाया जाता है। उन दिनों मंदिर की शोभा देखते ही बनती है। मंदिर के पुजारी राजेंद्र जम्वाल के अनुसार मंदिर में सबसे बड़ा आयोजन सावन महीने की एकादशी शुक्ल पक्ष को किया जाता है। जिस दिन बावा मौज गिरि जी ब्रह्मलीन हुए थे।

रामायण का अखंड पाठ होता है और भण्डारे का आयोजन भी किया जाता है। श्री माता दुर्गा जी की मूर्ति का स्थापना दिवस 20 फरवरी को प्रति वर्ष बड़े

हर्षोल्लास से मनाया जाता है। उस समय हवन यज्ञ और विशाल भण्डारा किया जाता है। 14, फरवरी को प्रति वर्ष शनि देवता तथा धर्मराज जी का दिवस मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त हर संक्रान्ति, पुरुषोतम मास, जन्माष्टमी, तुलसी विवाह तथा अन्य सभी धार्मिक पर्व मंदिर में बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। तालाब तिल्लों का यह सबसे बड़ा मंदिर परिसर है। साथ ही गोलपुली के पास हनुमान जी का प्राचीन मंदिर भी भक्तों की श्रद्धा का केंद्र है।

1980 ई. से इस मंदिर का प्रबंध, इसकी देख-रेख तथा इस पवित्र स्थान का विकास कार्य पं. बिशम्बर नाथ चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। ट्रस्ट के सभी अधिकारी तथा सदस्य्य स्थानीय लोगों के सहयोग से मंदिर परिसर की शोभा को बढ़ाने तथा इसे अधिक सुन्दर तथा आकर्षक बनाने में विशेष रूचि ले रहे हैं ताकि अधिक से अधिक भक्त जहां आएं और बावा जी के आशीर्वाद से अपनी मनोकामनाएं पूरी करें।

केवल कृष्ण 'शाकिर'

जन्म- 11 नवम्बर 1936 ई.

जन्म स्थान - आर.एस.पुरा।

माता जी का नाम- श्रीमती राम प्यारी

पिता जी का नाम- पं० जगन्नाथ शर्मा

शिक्षाः एम.ए (इतिहास, राजनीति शास्त्र, एवं उर्दू) बी.ऐड।

व्यवसायः जम्मू कश्मीर सरकार के शिक्षा विभाग से सीनियर लैक्चरर के पद से सेवा निवृत। वर्तमान में लेखन तथा पत्रकारिता।

सम्मान

1. 1969 में महात्मा गांधी शताब्दी समारोह आयोजन समिति द्वारा प्रथम गाँधी मैडल तथा प्रशास्ति पत्र से अलंकृत।
2. 1978 में जम्मू कश्मीर सरकार के शिक्षा विभाग की ओर से सर्वश्रेष्ठ अध्यापक का पुरस्कार।
3. 1990 में सर्वश्रेष्ठ अध्यापक का राष्ट्रीय पुरस्कार।
4. 2015 में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत।

प्रकाशित पुस्तकें

पंजाबी- 1. परछांवां (1974)
2. धरती दे गीत (1985)
3. झांझरा (1986)

उर्दू- 4. गुलशन-गुलशन (1987)
5. यह लोग (1988)

डोगरी- 6. सरकंडे (1986)
7. हिरखै दी डोर (2014)

इंगलिश- 8. Changing Faces (1969)
9. Jammu Heritage and Culture (2014)

हिन्दी- 10. जम्मू के प्राचीन मन्दिर (2012)
11. जम्मू के धार्मिक स्थल (2013)
12. जम्मू दर्शन (2014)
13. जम्मू के पवित्र स्मारक (2016)

मंदिर दाती शीलावंती जी - दुभुज

मंदिर बाबा बड़गाल जी - कोट भलवाल
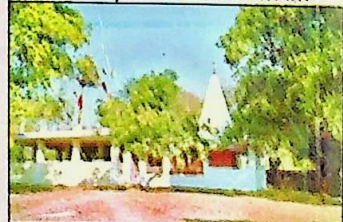
मंदिर बुआ दाती तृप्ता जी- अम्बारा
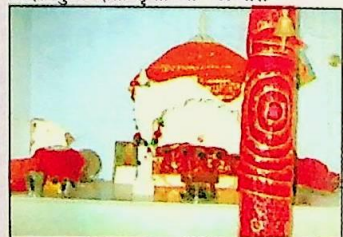
मंदिर बाबा बाज जी- पखियां

मंदिर बाबा रोची राम जी-रांजन

मंदिर बाबा बिरपा नाथ जी- बीरपुर

अक्षय प्रकाशन

4C- अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002